डा. बनारसी दास चतुर्वेदी के पत्र

— वृन्दावन दास

डा० बनारसी दास चतुर्वेदी उन साहित्यकारों में से हैं जो महीने में २०, २५ दिन केवल पत्र-लेखन का कार्य करते हैं। चतुर्वेदी जी के पत्रों की विशेषता है उनकी सहज स्वाभाविकता। उनको इससे पूर्व आभास भी न था कि उनके पत्रों का संग्रह कभी छपेगा, अतः सहज स्वाभाविक ढंग से लिखे हुए उनके पत्रों में कृत्रिमता का सर्वथा अभाव है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों में शहीदों, उपेक्षित साहित्यिक बन्धुओं, अनेक लेखकों, कवियों, कलाकारों यहाँ तक कि साधारण से साधारण कार्यकर्ताओं पर सहृदयतापूर्ण चर्चा मिलेगी और मिलेंगी आपको उनकी स्मृति और कीर्ति रक्षा के निमित्त अनेक मौलिक योजनायें। ब्रजक्षेत्र, जनपदीय भाषाऐं और हिन्दी प्रचार-प्रसार भी उनके प्रिय विषय हैं।

चतुर्वेदी जी केवल धुरन्धर विद्वान् ही नहीं हास्यव्यंग के भी आचार्य हैं। अतः चतुर्वेदीजी के पत्रों में पाठकों को मनोरंजन और ज्ञान वर्द्धन की अपूर्व सामग्री मिलेगी।

चतुर्वेदीजी के पत्रों का साहित्यिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक महत्व क्या है यह आपको पुस्तक की भूमिका से विदित होगा। भूमिका में चतुर्वेदीजी के पत्रों के महत्व पर हिन्दी के शिखरस्थ विद्वानों का अभिमत संकलित है। प्रस्तुत संग्रह में कुछ ऐसे पत्र भी हैं जिनके चमत्कारी प्रभाव ने दिग्गजों को भी हिला दिया और कुछ ऐसे काम अनायास ही ही हो गये जो शायद अन्यथा सम्भव न थे।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

संपादक :

बा० वृन्दावनदास
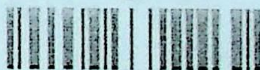
साहित्य प्रकाशन
नई सड़क, मालीवाड़ा, दिल्ली-६

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

—वृन्दावनदास

प्रथम संस्करण	३ जून सन् १९७१ (गंगादशहरा)
*	*
मूल्य	५०-००
*	*
प्रकाशक	साहित्य प्रकाशन नई सड़क मालीवाड़ा, दिल्ली--६
मुद्रक	अजन्ता फाइन आर्ट प्रिन्टर्स, मथुरा

शुभाशंसा

(कविवर श्री अमृतलाल चतुर्वेदी)

जामें नेंक न ठकुर सुहाती।
प्रिय बनारसीदास लही है लिखि लिखि पाती ख्याती ।।
नौतम भाव नवीन योजना लिखति न कलम थकाती।
सुन्दर स्वच्छ लिखावट इनकी पढ़ि छाती उमगाती ।।

हिन्दी औ अंगरेजी भाषा स्याही हू द्वै भाँती।
रुपा पचासक प्रति महीना में यह बीमारी खाती ।।
चित्र खेंचिवौ दूजी व्याधा जेऊ सब खैराती।
जब देखौ तब लिखत रहत हैं इनकें ना दिन राती ।।

जानें कैसें यह सब इनकों सहज भाव पुसियाती।
नव लेखक नवीन कवियन की सदाँ बढ़ावत छाती ।।
एक गधा के वोझ डाँक इन नित प्रति आती जाती।
इनकें पत्रन कौ संग्रह लखि तवियत खुस है जाती ।।

देसभक्त, नेता, कवि, कोविद, लेखक, ऊँचे पांती।
सबके पत्र भरे ट्रंकन में सुरुचि सुरच्छित भाँती ।।
अमृत इनके जीवन भर की जई कमाई थाती।
विन्द्रावन जू पात्र बधाई छाप्यौ संग्रह पाती ।।

श्रीयुत पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी दीर्घजीवी हों ।

[श्री भगवानदत्त चतुर्वेदी, गजापाइसा, मथुरा]

कलाकार पत्रकार साहित्यिक सत्रकार,
सदाचार सद्विचार पालक महान हैं ।
गांधीजी रवीन्द्र अरविन्द के उपासक हैं,
मित्र ऐंडरूज के, स्वयं चरित्रवान हैं ।।
गुणी गतिशील गुण ग्राहक निवाहक हैं,
पीड़ितों के परम सहायक प्रधान हैं ।
विश्व बंधुत्व भाव प्रेरक बनारसी जी,
विप्र चतुर्वेदियों के गौरव के गान हैं ।।

दोहा— हिन्दी भाषा का किया, तुमने अधिक विकास ।
जन-जन के हित चिर जियो ! श्री बनारसीदास ।।

स्वस्थ रहो सच्ची कहो, गहो न्याय की राह ।
बहो न समय प्रवाह में, रखिये उर उत्साह ।।

शिक्षाविद शिक्षा प्रवर, सम्पादक शिर मौर ।
ग्रन्थकारिता में नहीं, तुमसा कोई और ।।

जन-सेवक तुमको सदा, है दुखियों से प्यार ।
किया सतत श्रीमान ने, दीनों का उपकार ।।
विविध कला साहित्य में, हो तुम निष्ठावान ।
सत्य अहिंसा का तुम्हें, प्रिय सिद्धान्त महान ।।

मिला केन्द्र से आपको, राजकीय सनमान ।
जनपद के साहित्य का, किया अधिक उत्थान ।।

सदा सुखद जीवन रहे, जन-सेवा से प्यार ।
"भगवन् !" मन वच कर्म से, करो लोक उपकार ।।
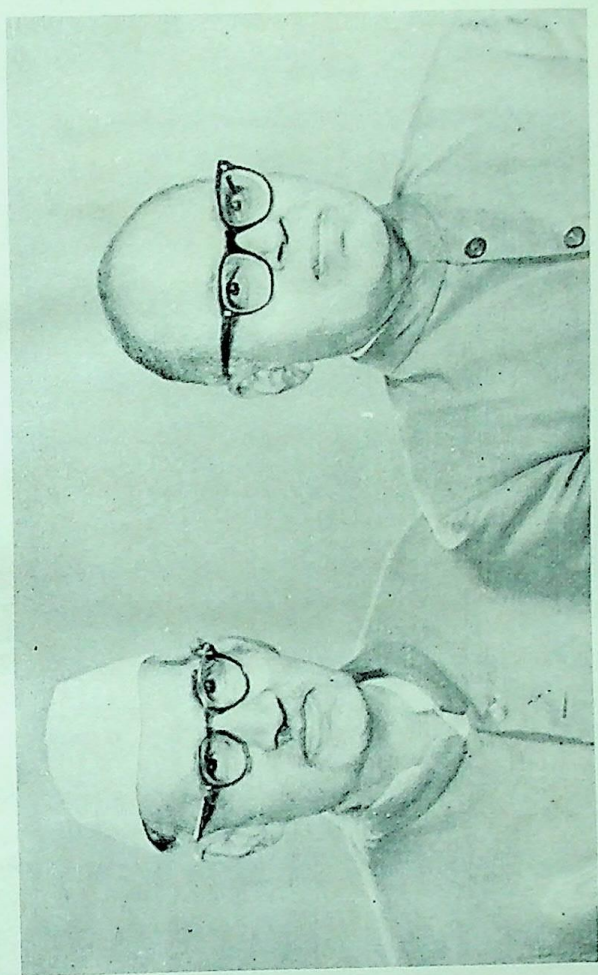
डा० बनारसीदास चतुर्वेदी तथा बाबू वृन्दावनदास

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

पत्रों में लेखक का व्यक्तित्व अनायास ही प्रतिबिम्बित हो जाता है—खासतौर से उन चिट्ठियों में जो कभी छपने के ख्याल से न लिखी गई हों बल्कि सर्वथा स्वाभाविक ढङ्ग पर ही जिनमें हृद्गत भाव प्रकट कर दिये गये हों।

वकौल डाक्टर जानसन किसी लेखक की आत्मा का नग्न रूप आप उसके पत्रों में ही देख सकते हैं।

चतुर्वेदी जी को पत्र लिखने का व्यसन ही है और शायद कोई ऐसा दिन बीतता हो जब दस बारह पत्र वे न लिखते हों और यह क्रम पचास पचपन वर्ष से निरन्तर चलता रहा है।

आज भी ४०-४५ रु० महीने वे इसी व्यसन पर खर्च कर देते रहे हैं। पर यह सौदा घाटे का नहीं रहा। परिणाम स्वरूप उनके संग्रहालय में सहस्रों ही उपयोगी पत्र इकट्ठे हो गये हैं, सौभाग्य से जिनका मुख्य भाग दिल्ली के राष्ट्रीय अभिलेखागार (National archives) जनपथ नई दिल्ली में सुरक्षित हो गया है।

पर स्वयं चतुर्वेदी जी के सहस्रों ही पत्र यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। उनमें से कुछ का ही संग्रह इस पुस्तक में कर दिया गया है। चतुर्वेदी जी को अपनी ब्रज-भूमि के प्रति अनन्य भक्ति है। उसके पशु, पक्षी, वृक्ष, वन, उपवन, नदी नद, सरोवर, मानव इत्यादि से और उनके जनपद प्रेम की एक मनोहर झांकी पाठकों को इस पत्र-संग्रह में मिल जायगी।

—**प्रकाशक**

प्राक्कथन

एक अंग्रेज लेखक का कथन है कि वे ही पत्र वास्तव में सुरक्षित रहने योग्य हैं जो कभी न लिखे जाने चाहिये थे और जिन्हें तुरन्त नष्ट कर दिया जाना चाहिये। ए. जी. गार्डनर ने अपने एक निबन्ध में पत्र-लेखन कला की सफलता का रहस्य बताते हुए कहा था कि वह घरेलूपन से भरी छोटी-छोटी बातों में ही छिपा हुआ है। डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्रों की उत्कृष्टता का रहस्य उनके पत्रों की सहज स्वाभाविकता में निहित है।

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी पत्र लेखन कला के आचार्य हैं। अनेक विद्वान् मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर चुके हैं कि चतुर्वेदी जी पत्र लिखने में अग्रगण्य एवं अद्वितीय हैं। चतुर्वेदी जी के महान व्यक्तित्व की झलक उनके पत्रों में स्पष्ट दिखाई देती है वास्तव में चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुभ्र विचारों के दर्पण हैं। चतुर्वेदी जी ने अपने पत्रों की सततधारा से साहित्योद्यान का अविरल सिंचन किया है।

चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुद्ध मनोभावों की सात्विकता के प्रतिबिंब हैं। समाज में शुभ संस्कारों और सद्वृत्तियों की स्थापना एवं विकास के लिए चतुर्वेदी जी के पत्र सहायक हो सकते हैं। साहित्यिक महत्व तो इन पत्रों का है ही।

चतुर्वेदी जी ने अपना सात्विक जीवन बड़े उन्मुक्त भाव से बिताया है। उनके मनमौजीपन की प्रकृति ने हास्य व्यंग को खूब अपनाया है। पाठकों को इन पत्रों में मनोरंजन की भी प्रचुर सामग्री उपलब्ध होगी।

चतुर्वेदी जी के पत्रों की पंक्ति-पंक्ति से उनकी उत्कट देशभक्ति उद्-भासित होती है। विदेशों में की गई चतुर्वेदी जी की प्रवासी-सेवा से प्रभावित होकर एक बार राइट आनरेविल श्रीनिवास जी शास्त्री जी ने जो स्वयं एक विश्वविख्यात महान पत्र-लेखक थे चतुर्वेदी जी को लिखा था, "जीवन में आप सदृश देशभक्त मुझे कोई विरला ही मिला होगा, यह बात बावन तोले पाव रत्ती सही है, इसे मैं आपकी खुशामद करने के लिये नहीं लिख रहा हूँ।"

एक ग्रन्थ का मुद्रण छोटे पैमाने पर एक भवन के निर्माण के समान है। जिस प्रकार एक भवन के निर्माण होने पर ही उसका स्वरूप दिखाई देता उसी प्रकार एक ग्रन्थ के छप चुकने पर ही उसके विषय में पाठकों को ज्ञातव्य

जानकारी दी जा सकती है। स्थिति के इस संदर्भ में पाठकों के लिये लिखा गया प्राक्कथन वास्तव में पुस्तक का मुद्रणोपरान्त कथन है।

इस पुस्तक में हमने १५० पत्र तो वे ही दिये हैं जिन्हें चतुर्वेदी जी ने हमको समय-समय पर भेजने की कृपा की है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में ७१ उन पत्रों को स्थान प्राप्त हुआ है जो चतुर्वेदी जी ने अन्य साहित्यिक बन्धुओं को भेजे हैं। चतुर्वेदी जी के मित्रों में अनेक ऐसे सौभाग्यशाली हैं जिनको उनके जीवन में चतुर्वेदी जी से इनसे भी दुगने ढाईगुने पत्र प्राप्त हुए हैं। यदि इन बन्धुओं में से किसी का एकाध संग्रह और भी प्रकाशित हो तो हिन्दी के हित की बात होगी। मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापना की दिशा में भी चतुर्वेदी जी के पत्रों की उपयोगिता अनुपमेय है।

पत्र संग्रह की पुस्तकों में हिन्दी और हिन्दीतर साहित्य की पत्र-विधाओं पर विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं। हमने उन्ही बातों की पुनरावृत्ति कर पिष्टपेषण को उचित न समझा और अपनी ३२ पृष्ठीय भूमिका में चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व और उनके पत्र साहित्य की खूबियों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है।

जैसा कि भूमिका में लिखा है पहिले हमारा विचार पुस्तक में उन्हीं पत्रों को देने का था जो हमें प्राप्त हुए हैं परन्तु वेदमंत्र 'केवलाघो भवति केवलादी' (जो अकेला खाता है पाप खाता है) के न्यायानुसार हमने कुछ पृष्ठ अन्य साहित्यिक बन्धुओं को प्राप्त पत्रों को भी दिये हैं। जैसा कि देखने से ज्ञात होगा इन बन्धुओं में हिन्दी के शिखरस्थ विद्वान् सम्मिलित हैं।

इस संक्षिप्त प्राक्कथन को हम आचार्य किशोरीदास बाजपेयी के इस छन्द के साथ समाप्त करते हैं—

अति दुरूह विस्तृत जीवन जो, ग्रन्थों में है नहीं समाता।
वही किसी के एक पत्र में, ज्यों का त्यों पूरा बँध जाता।।

आशा है प्रस्तुत पत्र-संग्रह को हिन्दी जगत का स्नेह मिलेगा।

मथुरा.
दि० १५–५–७१

—वृन्दावनदास

बाबू वृन्दावनदास
संपादक

भूमिका

आजकल कुण्ठाओं का युग है। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक सभी क्षेत्रों में कुण्ठाएँ वर्तमान हैं। समाज ही कुण्ठाग्रस्त है। चारित्रिक ह्रास युद्धोत्तर समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या है। हम नैतिक अधः पतन और क्षुद्र स्वार्थपरता के गहरे गर्त में गिरे हुए हैं। पारस्परिक सौहार्द की अत्यन्त कमी है। देश तथा जाति के प्रति प्रेम का अभाव है। राष्ट्र, देश, समाज की चाहे जितनी हानि हो जाय, हमारा पड़ौसी, भाई, मित्र भले ही नष्ट हो जाय पर हमारे स्वार्थ की सिद्धि होनी चाहिये। जिस समाज ने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर इतनी प्राणाहुतियाँ दीं उसी में आज स्वार्थपरता का यह नग्न नृत्य देखते हुए दुःख और विस्मय दोनों ही होते हैं।

आज देश-सेवा का नाम लेकर केवल स्वार्थ सिद्धि ही हमारा ध्येय रह गया है। आज हम जनता को अनेक प्रलोभन देकर, अनेक वायदे करके विधान सभाओं और लोक सभा में जाते हैं किन्तु वहाँ जाकर किस प्रकार अपना सारा समय और ध्यान केवल पदप्राप्ति और निजी स्वार्थों को साधने में लगा देते हैं यह सब किसी से छिपा नहीं रह गया है। हमारा न कोई सिद्धान्त है और न हमारी कोई आत्मा। हमारी आत्मा की आवाज स्वार्थसिद्धि के लिए केवल दल-बदल करते रहने को ही प्रेरित करती रहती है। आजकल किसी पद के लिए योग्यता का कोई माप दण्ड नहीं है। आजकल केवल दल-बदल और धमकी ही मन्त्रिपद तक के लिए सबसे बड़ी योग्यता है। हम यह भी नहीं देखते कि एक राज्य में कितने मन्त्री बनने चाहियें, सभी मन्त्री-पद प्राप्त करने को आतुर हो जाते हैं। परिणाम में मेंढ़कों को तोलने की सी स्थिति हो जाती है और संतुलन के अभाव में अक्सर विघटन ही होता नजर आता है। इस प्रवृत्ति ने राजनीतिक क्षेत्र में कितनी अव्यवस्था और अस्थिरता उत्पन्न कर दी है यह किसी से छिपा नहीं है।

क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए सिद्धान्तविहीन दौड़ के परिणाम स्वरूप ही देश में अनेक दलों का विभाजन हो गया है। एक कांग्रेस की दो कांग्रेस, एक समाजवादी दल के दो समाजवादी दल तथा इसी प्रकार कई अन्य दलों के भी टुकड़े हो गये हैं। झूँठे नारे देकर जनता को भुलावे में डालते रहने के अतिरिक्त इन दलों के अनेक प्रतिनिधियों ने कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे देश की पीड़ित मानवता को कोई राहत पहुँचती अथवा देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होता।

साहित्यिक क्षेत्र में पारस्परिक सौहार्द कम ही दृष्टिगोचर होता है। हमारे साहित्यिक बन्धु आत्मकेन्द्रित हो गये हैं। अपेक्षाकृत छोटे भाइयों को प्रोत्साहन देने की प्रवृत्ति का अभाव है। उपेक्षित छुटभइयों की चिन्ता किसी को नहीं है। हिन्दी की संस्थाओं की दशा शोचनीय है। वे आर्थिक अभाव से ग्रस्त तो हैं ही उनको साहित्यिकों का सहयोग भी प्राप्त नहीं हो रहा है। उनकी निष्क्रियता और प्राणहीनता का यही सब से बड़ा कारण है। हमारे धनीमानी बन्धु साहित्यिक कार्यों पर व्यय करना अपना कर्तव्य नहीं मानते, वे इसे पुण्य कार्य न समझ कर इस पर व्यय करना नहीं चाहते। उनकी वदान्यता की परिधि में तो ईंट चूने से बनी धर्मशालाएँ और मन्दिर ही आते हैं। साहित्यिक अनुष्ठानों पर उनको कानी कौड़ी भी खर्च करना दूभर है।

समाज की इस बिगड़ी हुई दशा के संदर्भ में चतुर्वेदी जी के पत्र अपना एक विशेष महत्व रखते हैं। चतुर्वेदी जी के पत्र जिन मनोभावों से प्रेरित होकर लिखे गये हैं उनसे मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना होती है। चतुर्वेदी जी की परदुःख-कातरता, उनका हृदय-औदार्य, उनकी परोपकार वृत्ति, छुटभइयों को प्रोत्साहन और प्रश्रय देने का गुण, शहीदों की कीर्तिरक्षा के लिए बलवती इच्छा, शहीदों के आश्रितों के लिए तड़पन, हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए आकांक्षाएँ तथा ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण के स्वप्न आदि अनेक ऐसे तत्व हैं जिनकी झलक उनके पत्रों में मिलती है। चतुर्वेदी जी के पत्र उनके शुभ्र विचारों के दर्पण हैं। इन पत्रों का केवल साहित्यिक महत्व ही नहीं है अपितु इनसे समाज में शुभ संस्कारों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

चतुर्वेदी जी के पत्र लेखन को कला के रूप में परखने के साथ-साथ उसके महत्वपूर्ण स्वरूप का अध्ययन करने की भी आवश्यकता है। चतुर्वेदी जी के परहित चिन्तन की प्रवृत्ति प्रेरणादायक है। चतुर्वेदी जी का पत्र-साहित्य उनका एक चिन्तन, एक दर्शन प्रस्तुत करता है। नागार्जुन जी ने उनको 'योजना विहारी महास्थविर' की उपाधि दी। चतुर्वेदी जी की योजनाएँ तो भूले बिछटे देश-भक्तों अथवा साहित्य सेवियों के जीवन वृत्तों से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करने की थीं। उनकी योजनाओं के अन्तर्गत वे छुटभइये, उपेक्षित अथवा दबे हुए लोग आये जिन्होंने अपनी साधनाओं और प्रयासों में जीवन को खपा दिया और प्रत्युपकार स्वरूप कभी कोई इनाम न चाहा।

चतुर्वेदी जी की अपनी लेखनी से अथवा उनकी प्रेरणा से जिस साहित्य का सृजन हुआ उससे हिन्दी साहित्य में तपःपूत साधना, बलिदान, आत्मत्याग,

देशभक्ति, साहित्य सेवा आदि पर गौरवमय पृष्ट ही सम्मिलित हो गये हैं। बहुत लोगों को इस बात का आभास भी नहीं कि चतुर्वेदी जी के अथक प्रयासों से ऐसा साहित्य निर्मित हो गया है जिसने न केवल हिन्दी की ही वृद्धि की है अपितु अनेक मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना भी कर दी है और देश के वर्तमान और भावी साहित्यकारों को एक दिशाबोध प्रदान किया है।

योजनाऍं बनाकर उनको कार्यान्वित करते हुए आगे बढ़ने की क्षमता कुछ प्रखर मस्तिष्क वाले व्यक्तियों में होती है। संसार में सदैव कुछ ऐसे व्यक्ति होते आये हैं जिन्होंने अपने प्रखर मस्तिष्क की विलक्षण सामर्थ्य से जीवन में बड़े-बड़े कार्य किये हैं। ईश्वर-प्रदत्त इस गुण के बल पर अपने जीवन में कोई व्यक्ति बड़ा उद्योगपति बन जाता है तो कोई महान साहित्यिक, कोई महान नेता अथवा कोई महान् सत्ताधीश। परन्तु चतुर्वेदी जी तो योजनाऍं बना बनाकर प्रवासियों, शहीदों, उपेक्षितों अथवा छुटभइयों को ही संसार के सम्मुख लाये हैं, उनके इस ध्यानाकर्षण प्रयास से उनके इन प्रियभाजनों का कितना कल्याण हुआ है वह वर्णनातीत है।

चतुर्वेदी जी की इन योजनाओं के प्रति श्रद्धावनत होकर एक बार बाबू शिवपूजन सहाय ने उन्हें लिखा था; "जान पड़ता है आपका मस्तिष्क असंख्य योजनाओं का भाण्डार है और आपका हृदय उनको कार्यान्वित करने के लिए व्यग्र है। अपनी भाषा और साहित्य की सच्ची उन्नति के लिए इसी तरह दस बीस के हृदय में भी लगन और व्यग्रता होती तो कितना बड़ा काम होता। मगर मैं देखता हूँ कि आजकल लोग साहित्य और कला की परिभाषा तथा व्याख्या एवं विश्लेषण करने में ही व्यस्त हैं, ठोस काम करने की प्रवृत्ति बहुत ही कम दिखाई देती है। मैं आपके कार्य क्रम को श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखता हूँ। हिन्दी का भविष्य मंगलमय है क्योंकि आप जैसा अनन्य सेवक उसे मिल गया। परमात्मा आपको दीर्घायु करे कि हिन्दी का उपकार हो, यही कामना है।" चतुर्वेदी जी की योजनाओं द्वारा हिन्दी की किस प्रकार ठोस सेवा होती है इसका वर्णन जिन मधुर शब्दों में बाबू शिवपूजनसहाय ने किया है उससे अधिक कुछ कहने की हमारे भीतर सामर्थ्य नहीं है।

प्रेरक साधक—

जब चतुर्वेदी जी के प्रशंसकों, मित्रों और साहित्यिक बन्धुओं ने उनके सम्मान में उनको एक ग्रन्थ समर्पण करने का निश्चय किया तब बन्धुवर यशपाल जैन ने हमसे लिखकर पूछा कि ग्रन्थ का क्या नाम रक्खा जाय। हमने सीधे

साधे शब्दों में उनको लिख दिया कि ग्रन्थ का नाम "श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ" रक्खा जाय। उन्होंने उसका नाम यही रक्खा परन्तु एक छोटा नाम और भी जोड़ दिया और वह था "प्रेरक साधक।" वाह, कैसा उपयुक्त और सार्थक नामकरण किया भाई यशपाल जैन ने उस ग्रन्थ का। चतुर्वेदी जी वास्तव में प्रेरक साधक ही हैं। उनकी साधनाएं अनन्त हैं, मूलतः वे आजन्म साधक रहे हैं परन्तु असंख्य पत्र लिख-लिख कर उन्होंने लेखकों और साहित्यिकों से उन साधनाओं का क्रियान्वयन कराया हैं। उनके पत्रों में उनकी साधनाएं मूर्तिमती हो गई हैं। वास्तव में मूर्तमन्त साधनाओं ने ही उनके प्रेरक रूप को प्रस्फुटित किया है।

चतुर्वेदी जी आज प्रेरक के रूप में वर्तमान हैं परन्तु अपने इस स्वरूप की भूमिका का निर्माण तो वे ५० वर्ष पहले ही कर चुके थे। आज वे ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण के लिए प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं तो कल वे घासलेटी साहित्य के विरुद्ध अभियान चला रहे थे। आज यदि वे शहीदों के श्राद्ध के लिए प्रयत्नशील हैं तो कल वे विकेन्द्रीकरण का नारा बुलन्द कर रहे थे। आज यदि वे किसी एक साहित्यिक का जीवन-वृत्त संग्रह कर प्रकाशित कराना चाहते हैं तो दस वर्ष पहले वे स्वर्गीय गणेशशंकर जी विद्यार्थी के भाषणों, लेखों और सम्पादकीय टिप्पणियों के संग्रह के लिए छटपटा रहे थे। बीस वर्ष पहले उन्होंने पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों का संग्रह प्रकाशित करा दिया तो आज उन्होंने स्वर्गीय डा० हरिशंकर जी शर्मा के ३०० पत्रों की पाँच-पाँच प्रतियाँ टाइप कराई हैं। वर्षों पहले उन्होंने अपने पास आये हुए डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के लगभग ७५ पत्र सम्मेलन पत्रिका के दो अङ्कों में प्रकाशित करा दिये थे। लगभग दो वर्ष से वे अपने अनेक पत्रों में हमको डा० वासुदेवशरण जी के पत्रों का संग्रह करने को लिखते रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप हम स्वर्गीय डा० अग्रवाल के लगभग ३०० पत्र एकत्रित भी कर चुके हैं।

स्वर्गीय डा० हरिशंकर जी शर्मा को चतुर्वेदी जी अपना परम आत्मीय मानते थे। तथा उनसे चतुर्वेदी जी के घरेलू सम्बन्ध थे। चतुर्वेदी जी ने अनवरत पत्र लिखकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री को सत्परामर्श दिया कि स्वर्गीय पं० हरिशकर जी की स्मृति में उनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप एक ग्रंथ निकाला जाय। एक योजना भी बनी परन्तु आर्थिक व्यवस्था न होने के कारण उसके क्रियान्वयन में विलम्ब हो रहा है। चतुर्वेदी जी का मत है कि यदि ग्रंथ का प्रकाशन सम्भव न हो तो एक महाविद्यालय की पत्रिका के विशेषांक का उपयोग तो उनके पत्रों के प्रकाशन के लिए किया

जाय और दूसरे महाविद्यालय की पत्रिका का विशेषांक उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर निकले। यद्यपि यह सुझाव बहुत अच्छा है बन्धुवर बालकृष्ण जी गुप्त तथा हम इस विकल्प पर अभी सहमत नहीं हो रहे हैं, हम लोगों को आशा है कि देर-सबेर ग्रंथ का प्रकाशन ही सम्भव हो सकेगा।

चतुर्वेदी जी के पत्रों में अनेक ऐसी योजनाएँ विद्यमान हैं जिनमें से अनेक का कार्यान्वयन तो वे अपने जीवन में ही देख चुके हैं। ऐसी अन्य भी बहुत सी हैं जिनको यदि क्रियान्वित किया जाय तो हिन्दी के हित की बात होगी। चतुर्वेदी जी का मस्तिष्क योजनाओं की उर्वराभूमि है। चतुर्वेदी जी ने संख्यातीत मौलिक विचार दिये हैं। परन्तु ये विचार उन्हीं लोगों के पास तो हैं जिनके पास उनके पत्र सुरक्षित हैं। हम चाहते हैं कि वे विचार जनता की सम्पत्ति बनें और उन पर काम हो। कोई तो उत्साही कर्मठ व्यक्ति कभी मैदान में आवेंगे ही जो उन विचारों के कार्यान्वयन की दिशा में अपना योगदान देंगे।

स्वयं चतुर्वेदी जी ने अनेक विद्वानों के पत्र छपाये हैं। उन्होंने स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों को पुस्तक के रूप में तथा स्वर्गीय डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों को सम्मेलन पत्रिका के दो अङ्कों में प्रकाशित कराया है। बाबू शिवपूजनसहाय के लगभग ३० पत्र भी चतुर्वेदी जी ने 'वे पत्र दे दिन' के शीर्षक से छपाये हैं। आज ही चतुर्वेदी जी का एक लेख सम्मेलन पत्रिका के नवीनतम अङ्क में देखा जिसमें स्वर्गीय पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी के ३६ पत्र संकलित हैं। इनके अतिरिक्त चतुर्वेदी जी (१) सैय्यद अमीर मीर (२) पीर मुहम्मद यूनिस (३) मुंशी अजमेरी जी (४) रामनरेश त्रिपाठी (५) नवीन जी आदि के पत्रों को मुद्रित करा चुके हैं।

पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता

चतुर्वेदी जी ने मुझको लिखा कि उनके पत्रों के मुद्रण और प्रकाशन का समय अभी नहीं आया है। परन्तु मेरी भावना यह है कि चतुर्वेदी जी का पत्र-साहित्य तो एक महोदधि के समान है (चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में ६०, ७० हजार पत्र तो लिखे ही होंगे) उनके सब पत्रों को एक दम एक ही संग्रह में छापा जाना तो एक असम्भव कार्य है। चतुर्वेदी जी के पत्रों पर तो कई ग्रन्थ निकल सकते हैं। ऐसी दशा में इस साहित्य पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा अनेक संग्रहों के प्रकाशन की आवश्यकता है। स्थिति के इस संदर्भ में एकाध संग्रह यदि अभी प्रकाशित हो जाय तो कोई हानि नहीं अपितु जैसा कि हमारे कुछ वरिष्ठ मित्रों का मत है अग्रगामी यह संग्रह अन्य संग्राहकों को एक

उदाहरण प्रस्तुत करेगा। आवश्यकता तो साहित्यिक बन्धुओं में वांछित आकर्षण उत्पन्न करने की है और इसकी पूर्ति इस संग्रह से होगी ऐसी आशा है।

ऐसी बात तो नहीं है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों का प्रकाशन अद्यतन हुआ ही न हो। स्वयं 'प्रेरक साधक' में उनके लगभग १५० पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इन पत्रों के प्रकाशन के सम्बन्ध में मुझे जानकारी उस समय ही हो पाई जब कि ग्रन्थ मेरे हाथ में आ गया। उससे पूर्व मुझे पता ही न था कि ग्रंथ में चतुर्वेदी जी के कुछ पत्र भी प्रकाशित हो रहे हैं।

यद्यपि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ की योजना में पहल हमारे ही द्वारा हुई थी और बन्धुवर यशपाल जी चित्र में उस समय आये जब कि हम इस प्रस्ताव को लेकर उनके पास पहुँचे थे तथापि जब एक बार काम हाथ में ले लिया गया और ग्रंथ-निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया तब यह बन्धुवर यशपाल जी की कार्यकुशलता और प्रबन्ध पटुता को ही श्रेय है कि उन्होंने हमारे ऊपर तो केवल ब्रजभूमि खण्ड का भार ही रक्खा और शेष कार्य की व्यवस्था स्वयं ही की अथवा अन्य साहित्यिक बन्धुओं से कराई। ब्रजभूमि खण्ड के अतिरिक्त अन्य खण्डों की लेखादि के रूप में जो सामग्री हमारे पास आई हम तो केवल उसे उनके पास भेजते रहे। ब्रजभूमि खण्ड का सारा काम बहैसियत सम्पादक हमारे ही द्वारा हुआ था। ऐसी दशा में अभिनन्दन ग्रन्थ में पत्रों का भी प्रकाशन हो रहा है यह हमें पता भी न था अन्यथा हम भी अपने पास आये चतुर्वेदी जी के महत्वपूर्ण पत्रों का समावेश करा देते। प्रसिद्ध साहित्य मर्मज्ञ डा० रामविलास शर्मा का तो अभिमत यह था कि यदि अभिनन्दन ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के पत्र ही अधिकांश रूप में रहते तो ग्रन्थ अद्वितीय बनता।

अभिनन्दन ग्रन्थ में चतुर्वेदी जी के जो भी पत्र प्रकाशित हुए हैं उनका विषय उन पत्रों से कुछ भिन्न ही है जिनको कि पाने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। हमको लिखे पत्रों में चतुर्वेदी जी ने अन्य विषयों के अतिरिक्त ब्रजमण्डल सम्बन्धी समस्याओं और इसके सर्वांगीण विकास पर अधिक प्रकाश डाला है। पौरुष ग्रन्थि की शल्य क्रिया के बाद उन्होंने अपना यह संकल्प लगभग घोषित ही कर दिया था कि शेष जीवन में वे ब्रजभूमि की सेवा में ही अपना चिन्तन व लेखन अर्पित करेंगे।

चतुर्वेदी जी के पत्रों के विषय में किसी-किसी विद्वान् का मत है कि उन्होंने लाख सवालाख से भी ऊपर पत्र लिखे होंगे। श्री शिवनारायण जी श्रीवास्तव का मत है कि चतुर्वेदी जी ५५ वर्ष से पत्र लिखते रहे हैं तथा महीने

में २५ दिन वे पत्र-लेखन पर व्यय करते हैं इस हिसाब से उन्होंने जीवन में लगभग सवा दो लाख पत्र लिखे होंगे। साधारणतया लोगों का ख्याल है कि उनके पत्रों की संख्या ६०, ७० हजार तक अवश्य पहुँचेगी। वहरहाल पत्रों की संख्या वहुत बड़ी है। ऐसे भी अनेक व्यक्ति हैं जिनको चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में तीन-तीन सौ चार-चार सौ पत्र लिखे हैं। हम भी उन सौभाग्य-शालियों में एक हैं। भाई विद्याशंकर जी ने एक स्थान पर लिखा है कि उनके पिता जी (स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा) ने ४५ वर्ष की अवधि में चतुर्वेदी जी को लगभग ३०० पत्र लिखे होंगे परन्तु चतुर्वेदी जी ने उनको इससे ड्योढ़े तो लिखे ही होंगे।

हमारी धारणा है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों के मुद्रण और प्रकाशन की प्रक्रिया चलती ही रहेगी। उनके पत्र-साहित्य पर अनेक ग्रन्थों का निर्माण हो सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ से यदि अन्य बन्धुओं को भी एतदर्थ प्रेरणा मिली तो हम अपने प्रयास को धन्य समझेंगे। हिन्दी में पत्र-साहित्य का अभाव हृदय को खटकने वाली चीज है। चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में जितने पत्र लिखे हैं उतने शायद ही अन्य किसी साहित्यिक ने लिखे हों। ऐसी दशा में चतुर्वेदी जी के पत्रों के कई संग्रह प्रकाशित कर क्यों न इस अभाव की पूर्ति की दिशा में एक ठोस कदम उठाया जाय।

चतुर्वेदी जी परदुःख कातरता, सौहार्द और सदाशयता की प्रतिमूर्ति हैं। उनकी लेखनी से निकले हुए उनके उच्चभाव जन साधारण में अधिकाधिक प्रचलित हों और शुभ संस्कारों का निर्माण हो इन्हीं कारणों से उनके पत्रों के प्रकाशन की आवश्यकता है।

आज परोपकार और त्याग की भावना का अभाव है, आज तो क्षुद्र स्वार्थपरता का नंगा नाच है, आज स्वार्थ की पूर्ति के लिए हम कितने निम्न स्तर पर उतर आते हैं कि देश और जाति का हित किसमें है इसकी हमें कतई परवाह ही नहीं है। जिन शुद्ध विचारों से प्रेरित होकर चतुर्वेदी जी ने अपने मित्रों को अगणित पत्र लिखे उनके प्रचार प्रसार की आज महती आवश्यकता है। चतुर्वेदी जी ने अपने हित की कामना से तो कभी-कोई काम किया ही नहीं यहाँ तक कि परोपकार की धुन में लगे हुए चतुर्वेदी जी ने अपनी लिखी कई पुस्तकों को भी अधूरी छोड़ रक्खा है। लोग यह तो जानें कि विश्व में ऐसे प्राणी हैं जो अनेक कष्ट सहकर भी अपने स्वार्थ की कभी कोई बात न सोचकर परहितचिन्तन में ही रत रहते हैं। हमारी तो यही

धारणा है कि चतुर्वेदी जी के पत्रों का प्रकाशन आज के संदर्भ में एक वांछनीय ही नहीं आवश्यकीय कार्य है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों में सन्निहित उनकी विचारधारा साहित्यिकों के लिए आदर्शरूप है, उनके मनन, अवगाहन करने योग्य हैं। आजकल कितने साहित्यकार ऐसे हैं जो निःस्वार्थ भाव से बिना किसी आकांक्षा के पत्र तो क्या एक लाइन भी लिखने को तैयार हैं? और फिर चतुर्वेदी जी ने तो सहस्रों पत्र लिखे हैं।

अभिनन्दन ग्रंथ

चतुर्वेदी जी अपने अभिनन्दन को अव्यापार समझते थे। उन्होंने अनेक पत्रों में लिखा कि इससे किसी को कुछ लाभ न होगा। उन्होंने इस सम्बन्ध में मुझे निरुत्साहित करने की भरसक चेष्टा की। उन्होंने उन सभी महानुभावों को जिन्होंने उस ग्रंथ के निमित्त आर्थिक सहायता देने का वचन दिया था निषेधात्मक पत्र लिखे और उन्हें स्पष्ट रूप से उस 'अव्यासार' में सम्मिलित होने से मना किया। परन्तु चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की महानता के प्रति उनके सभी मित्र और प्रशंसक नतमस्तक थे, चतुर्वेदी जी के प्रति उनकी श्रद्धा अपार थी। चतुर्वेदी जी के इस वर्जन पर किसी ने ध्यान न दिया और अभिनन्दन ग्रंथ सम्बन्धी योजना पूर्णरूप से सफल हो गई, किसी प्रकार का कोई विघ्न अथवा व्यवधान उपस्थित न हुआ।

कुछ लोग चतुर्वेदी जी पर 'प्रोपेगेण्डिस्ट' होने का आरोप लगाते हैं। अभिनन्दन ग्रंथ सम्बन्धी उपरोक्त घटना के परिप्रेक्ष्य में यह आरोप किस हद तक ठहर सकता है इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उस ग्रन्थ में जो पृष्ठ ब्रजसाहित्य एवं संस्कृति के लिए सुरक्षित थे चतुर्वेदी जी उन्हीं को लाभदायक समझते थे। अपने ऊपर लिखे गये 'व्यक्तित्व और कृतित्व' सम्बन्धी लेखों को वे अब भी तारीफों के पुल की संज्ञा देते हैं।

अपने अभिनन्दन पर वे कम से कम व्यय करने को कहते थे। सप्रू-हाउस के चयन पर उन्होंने अपना विरोध प्रगट किया कारण उसमें खर्च अधिक पड़ता। वे इस प्रकार के समारोहों पर कम से कम खर्च करने के पक्षपाती हैं।

इस बात को मानते हुए कि संयत भाषा में अपने गुण दोषों का विवेचन अत्यन्त कठिन कार्य है तथा आत्म विज्ञापन से सर्वथा दूर रहकर अपनी शल्य चिकित्सा खुद ही करना कोई आसान कार्य नहीं उन्होंने भाई

चन्द्रगुप्त और यशपाल जी के आग्रह पर आत्म चरित लिखना स्वीकार कर लिया। यह आत्म-चरित उस अभिनन्दन ग्रन्थ का एक विशिष्ट अंग है।

कविरत्न सत्यनारायण

सत्यनारायण कविरत्न के प्रति चतुर्वेदी जी का विशेष लगाव रहा है। कविरत्न ब्रजकोकिल के नाम से विख्यात थे तथा अपने समय के ब्रजभाषा के सर्वोत्कृष्ट कवि थे। उन्होंने बड़ी सरस एवं हृदयग्राही कविताओं की रचना की। चतुर्वेदी जी ने सत्यनारायण जी की जीवनी के रूप में एक अमूल्य साहित्यिक कृति हिन्दी संसार को भेंट की है। चतुर्वेदी जी की लेखनी से यह कृति बड़ी ही सुन्दर बन पड़ी है। चतुर्वेदी जी रेखा चित्र संस्मरण और जीवनी-लेखन में अद्वितीय हैं अतः यह स्वाभाविक ही है कि कविरत्न की जीवनी साहित्येतिहास की एक अनुपम निधि है। सत्यनारायण के ग्राम धाँधूपुर में उनकी स्मृतिरक्षार्थ उनके घर का जीर्णोद्धार हो जाय और उस भूमि का सत्यनारायण जी के स्मारक के रूप में विकास हो यह चतुर्वेदी जी की हार्दिक इच्छा है। उन्होंने संदर्भ रूप से अपने उद्गार अनेक पत्रों में व्यक्त किये हैं। देखिये, उनकी यह अभिलाषा कब पूर्ण होती है?

चतुर्वेदी जी ने सत्यनारायण जी के जीवन-संबंधी महत्वपूर्ण सामग्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन को सुरक्षित रखने के हेतु भेंट कर दी थी। वह सामग्री वहाँ से लुप्त हो गई। चतुर्वेदी जी को इससे मार्मिक कष्ट हुआ और उन्होंने अपनी यह वेदना अनेक पत्रों में व्यक्त की है।

चतुर्वेदी जी के ही अथक प्रयत्नों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राङ्गण में एक विशाल भवन का निर्माण हुआ था जिसका नाम सत्यनारायण कुटीर रक्खा गया। सत्यनारायण जी की हिन्दी-सेवा के प्रति इससे अच्छी श्रद्धांजलि क्या हो सकती थी कि उनकी स्मृति में एक भव्य भवन सम्मेलन के कार्यालय से सटा कर ही बना दिया जाय, सम्मेलन अनिवार्यतः हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिनिधि संस्था है।

चतुर्वेदी जी ने कविरत्न सत्यनारायण की स्मृति रक्षार्थ तीन काम और सोचे (१) कविरत्न की कविताओं का संग्रह (२) भारती भवन फीरोजाबाद में उनके चित्र का उद्घाटन (३) उनके समस्त ग्रन्थों का एक साथ प्रकाशन। उनके सोचे हुए यह काम किसी हद तक पूरे भी हुए।

शहीदों तथा क्रान्तिकारियों की सेवा

शहीदों का श्राद्ध चतुर्वेदी जी का अत्यन्त प्रिय व्यसन है। अनेक शहीदों के परिवारीजन चतुर्वेदी जी के द्वारा लाभान्वित हुए हैं। यह तो हाल की ही घटना है कि चतुर्वेदी जी के आग्रह पर उत्तरप्रदेश सरकार के तत्कालीन वित्तमन्त्री श्री लक्ष्मीरमण आचार्य ने शहीद अशफाक अहमद के भतीजे को ५०) मासिक की पेंशन दिला दी थी।

चतुर्वेदी जी साहित्यसेवियों को सहायता मिले इस बात के तो पक्षपाती हैं परन्तु स्वाभिमान के विपरीत अपमानजनक तरीके से सहायता प्राप्त करने के सर्वथा विरोधी हैं। स्वाभिमान का बलिदान करके साहित्यसेवी खपरा लेकर सरकार के आगे भीख माँगें यह उन्हें स्वीकार नहीं है। वे उस प्रश्नावली को घृणा की दृष्टि से देखते हैं जिसे साधनहीन साहित्यसेवियों को अपने जीवन-निर्वाह के निमित्त सहायता लेने के हेतु सरकार को भरकर भेजना पड़ता है। उन्होंने अपने पत्रों में उस प्रश्नावली में आवश्यक परिवर्तन करने के हेतु अनेक बार लिखा है।

यह चतुर्वेदी जी के अगणित पत्रों को ही श्रेय है कि वे अनेक क्रान्तिकारियों और उनके सम्बन्धियों को पेंशन आदि के रूप में सरकारी प्रश्रय दिलवाने में समर्थ हुए। इस कार्य में चतुर्वेदी जी को सफलता अपने अनवरत पत्र-व्यवहार के कारण ही प्राप्त हुई। जिन क्रान्तिकारियों अथवा उनके सम्बन्धियों को चतुर्वेदी जी पेंशन दिलवाने में समर्थ हुए उनकी नामावली इस प्रकार है :—

१. अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद की माताजी को पचास रुपये मासिक की पेंशन दिलवाई और चन्दे द्वारा पच्चीस सौ रुपया भी।
२. शहीद बिसमिल की बहन को चालीस रुपये मासिक तथा कई सहस्र की सहायता।
३. बाबा तीरथराम को पचास रुपये की पेंशन तथा दो हजार की सहायता।
४. कविवर लालचन्द फलक को डेढ़ सौ रुपये महीने की पेंशन तथा कुछ आर्थिक सहायता भी।
५. श्रीमती कृष्णादेवी गोसेविका-पचास रुपये मासिक पेंशन।
६. श्री लद्धाराम-नब्बह रुपये मासिक पेंशन।
७. श्री रियासतुल्लाखाँ-पचहत्तर रुपये मासिक पेंशन तथा शहाजहाँपुर स्टेशन पर चाय की दुकान।

८. राजस्थान के एक साम्यवादी कार्यकर्ता को ७५) मासिक पेंशन।

९. काशीराम जी की पेंशन ४०) से ७५ रु० करादी गई।

१०. शहीद मेवाराम की पत्नी फूलवती की पेंशन ३०) से ४५) कराई
उपर्युक्त पेंशनों को चतुर्वेदी जी अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मानते हैं। राज्यसभा की अपनी सदस्यता के काल में किये गये कार्यों में चतुर्वेदी जी क्रान्तिकारियों की इस सेवा को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं।

पत्रिकाओं के विशेषांङ्क

आगरा तथा बुन्देलखण्ड के क्षेत्रों की अनेक शिक्षा संस्थाओं के प्रधानाचार्य चतुर्वेदी जी से सम्पर्क बनाए रखते हैं। वे अपनी संस्थाओं की पत्रिकाओं के लिए चतुर्वेदी जी से मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं। चतुर्वेदी जी से सदैव उन लोगों को उत्तम परामर्श प्राप्त होता है। चतुर्वेदी जी ने शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से अनेक शहीदों और साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व सम्बन्धी विशेषाङ्क ही प्रकाशित करा दिये। हिन्दी साहित्य को चतुर्वेदी जी का यह अप्रतिम योगदान है। सामान्यतया स्कूलों की पत्रिकाऐं बचकाने ढङ्ग की कहानियों, कविताओं और निबन्धों से भरी रहती हैं और छोटे विद्यार्थियों के क्षणिक मनोरंजन के अतिरिक्त उनकी उपयोगिता ही संदिग्ध होती है। परन्तु चतुर्वेदी जी ने इस दिशा में एक क्रान्ति ही उपस्थित कर दी है। उन्होंने अनेक क्रान्तिकारियों, साहित्यकारों आदि की ऐतिहासिक महत्वपूर्ण जीवनियाँ इन पत्रिकाओं के विशेषाङ्कों के रूप में प्रकाशित करा दी हैं। कई विशेषाङ्कों के सम्पादक स्वयं चतुर्वेदी जी ही रहे हैं। इस महत्वपूर्ण साहित्योद्यान का सिंचन चतुर्वेदी जी की अविरल पत्र-धारा द्वारा ही सम्भव हुआ है।

चतुर्वेदी जी अनेक सम्पादकों को, विशेष रूप से साप्ताहिक एवं पाक्षिक पत्रों के सम्पादकों को अपने पत्रों के जनपदीय अंक निकालने के लिए प्रेरित करते रहते हैं, परिणाम स्वरूप कई महत्वपूर्ण विशेषांङ्क निकले भी हैं। उन्होंने कई पत्रों से बुन्देली लोक संस्कृति अंक निकलवाए हैं। वे बुन्देली लोक संस्कृति को ब्रज संस्कृति का पूरक मानते हैं।

शहीदों पर अब तक जितने ग्रन्थ तथा विशेषाङ्क छप चुके हैं उनका ब्यौरा इस प्रकार है।

शहीद ग्रन्थमाला (आत्माराम एण्ड सन्स)········६ किताबें

विशेषांक : नर्मदा—शहीद अंक, आजाद अंक, गणेशशंकर स्मृति अंक

मानव धर्म—बलिदान अंक
विन्ध्यवाणी — शहीद अंक
आर्य इन्टर कालेज एटा की पत्रिका—महावीरसिंह अंक।

स्वामी केशवानन्द ग्रन्थ, सगरिया (राजस्थान)
गणेश शङ्कर स्मृति ग्रन्थ, कालपी
युवक, शहीद अंक, आगरा
अमर शहीद अशफाक उल्लाखाँ की जीवनी (हिन्दी तथा उर्दू)
श्री परमानन्द शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ आदि।

साहित्यिक बन्धुओं से सहज स्नेह

श्रीमती सत्यवती मलिक को पत्र लिखते हुए चतुर्वेदी जी ने जो भावपूर्ण विचार व्यक्त किये थे उनसे उनकी साहित्यिक बन्धुओं के प्रति शुभ भावनाओं और संवेदनशीलता का पता चलता है। उन्होंने लिखा था "अब तक जो सेवा मुझसे बन पड़ी है वह अत्यल्प ही है—भविष्य में इससे दुगना तिगना काम हो सकता है। मेरे मन की इच्छा है कि अनेक लेखकों तथा लेखिकाओं के व्यक्तित्व के विकास में सहायक बनूँ। यदि मेरे पास समय और साधन होते तो मैं घूम-घूमकर परिव्राजक की हैसियत से यही साहित्यिक भिक्षु का काम करता, पर मेरे बन्धनों की कमी नहीं और समय का सदुपयोग भी नहीं कर पाता।" यह पत्र चतुर्वेदी जी ने आज से तीस वर्ष पहले लिखा था और तब से अब तक उन्होंने अगणित लेखक लेखिकाओं को प्रोत्साहन देकर कृतार्थ किया है।

श्री शिवनारायण श्रीवास्तव को लिखे हुए एक पत्र में चतुर्वेदी जी ने लिखा था "लोकसंग्रह की नीति तो गाँधी जी से सीख लेनी चाहिये। यथासम्भव प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनाया जाय। छोटे-छोटे मतभेदों पर जाति बाहर कर देना ठीक नहीं।" चतुर्वेदी जी ने अनवरत पत्र लिखकर साहित्यिक बन्धुओं में सौहार्द की भावना उत्पन्न की। इस दिशा में उनकी निस्पृह सेवा से अनेक बन्धुओं ने प्रेरणा ग्रहण की।

हिन्दी-लेखकों की सेवा की धुन चतुर्वेदी जी के मस्तिष्क में हर समय रहती है। एक बार एक पत्र में उन्होंने आकांक्षा व्यक्त की थी कि सन् २००१ का हिन्दी अन्वेषक उनके रेखाचित्रों से—और चित्रों से भी—आज के हिन्दी लेखकों तथा कवियों के रहन-सहन, स्वभाव, रुचि इत्यादि का पता लगा सके। चतुर्वेदी जी का ख्याल है कि साहित्यिकों के लिए सम्भाषण निहायत जरूरी है

जिसके विना उनकी राय में अक्ल की धार भोंथरी हो जाती है। चतुर्वेदी जी पत्र-व्यवहार में इसलिए विश्वास करते हैं कि उसके द्वारा सम्भाषण की कमी की पूर्ति कुछ अंशों में तो हो ही जाती है।

चतुर्वेदी जी का मत है कि आज जो हिन्दी के इतिहास कालेजों में पढ़ाये जाते हैं उनमें समय विभाजन इत्यादि की टैकनीकल चीजें इतनी ज्यादा भरी होती हैं कि उनमें किसी के हृदय का स्पन्दन नहीं सुनाई पड़ता। उनका विश्वास है कि इतिहास को अब साधारण जनता तक पहुँचाने के लिए नवीन पद्धति से लिखना होगा, उसमें ऐसी घटनाओं का वर्णन हो जो लेखक या कवि के चरित्र पर प्रकाश डालने वाली हों।

चतुर्वेदी जी का संग्रह

चतुर्वेदी जी के पास अनेक साहित्यकारों के जीवन सम्बन्धी सामग्री उनके पत्रों और कृतियों के रूप में विद्यमान है। एक दफा उन्होंने राजा लक्ष्मण सिंह जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर मुझे लिखा था कि राजा साहब के जीवन सम्बन्धी अनेक कागजात उनके पास सुरक्षित हैं। डा० हरिशङ्कर शर्मा के ३०० पत्र चतुर्वेदी जी के पास साहित्य की अमूल्य निधि के रूप में सुरक्षित हैं। स्वर्गीय डा० हरिशङ्कर जी पत्र लेखन में अद्वितीय थे। उनके पत्रों में अनेक साहित्यिक विषयों का प्रतिपादन तो होता ही था, वे जीवन के अनेक पहलुओं पर भी बड़ा विशद प्रकाश अपने पत्रों में डालते थे। चतुर्वेदी जी ने डाक्टर साहब के तीन सौ पत्रों की ५-५ कापियाँ टाइप कराईं तथा एक-एक प्रति उन्होंने कृपाकर मेरे संग्रहालय के लिए अर्पित कर दी।

अपने उस पत्र में जो उन्होंने डा० हजारी प्रसाद जी द्विवेदी को लिखा है चतुर्वेदी जी ने उन सभी विभूतियों के नाम उन पत्रों की संख्या सहित लिखे हैं जो उन्हें उन महान् व्यक्तियों से प्राप्त हुए हैं। चतुर्वेदी जी के पास सुरक्षित पत्रों का विवरण इस प्रकार है—

महात्मागाँधी के १०१ मूलपत्रों में १८७ पृष्ठ चतुर्वेदी जी के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

दीनबन्धु सी. एफ. एन्ड्र्यूज की १९२१ तक की सम्पूर्ण सामग्री : पचासों पत्र।

रोम्यां रोलां के तीन पत्र

भारत के सर्वश्रेष्ठ पत्र-लेखक श्रीनिवास शास्त्री के ४० पत्र

मौलवी अब्दुलहक साहब के ४० पत्र

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के ७० पत्र

नवीन जी के ६ पत्र

प्रेमचन्द जी के २० पत्र

श्रीधर पाठक के जीवन चरित्र की सामग्री

स्व० गुप्त बन्धुओं के दर्जनों पत्र

डा० हरिशंकर शर्मा के ३०० पत्र

बंशीधर जी के ३०० पत्र

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के सभी पत्र

स्व० वासुदेव शरण जी, मुंशी अजमेरी जी, माखनलाल जी, पीर मुहम्मद यूनिस, शिवपूजनसहाय जी, सैयद अमीर अली मीर प्रभृति के पत्र मुद्रित हो चुके हैं। अन्य लेखकों के सहस्त्रों पत्र हैं। चतुर्वेदी जी के निवास स्थान के ५ कमरे पत्रादि से भरे पड़े हैं। चतुर्वेदी जी के भवन में हिन्दी लेखकों के ६० वर्ष तक की अवधि का हृदय-स्पन्दन उस भवन के कमरों में सुरक्षित है।

चतुर्वेदी जी के गृह का अधिकांश भाग उस साहित्य एवं संग्रह से भरा पड़ा है जिसे चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन भर की कमाई के रूप में एकत्रित किया है। चतुर्वेदी जी के संग्रहालय का ऐसा चिरस्थायी प्रबन्ध होना चाहिए जिससे भविष्य में राष्ट्र की यह निधि नष्ट न होने पाये तथा उसकी सामान्य जनता के लिए उपयोगिता बनी रहे।

चतुर्वेदी जी ने हाल ही में निश्चय किया है कि उनके पास सुरक्षित महत्व-पूर्ण पत्रों को राष्ट्रीय संग्रहालय National archives को समर्पित कर दिया जाय। इसके लिए आवश्यक पत्रव्यवहार का क्रम चल रहा है और आशा की जाती है कि वे पत्र बहुत शीघ्र राष्ट्रीय संग्रहालय की भेंट कर दिये जायेंगे।

चतुर्वेदी जी का व्यापक प्रभाव

वर्षगाँठ पर छोटी पुस्तिका निकाल कर साहित्यकार की स्मृति रक्षा की पद्धति भी हिन्दी में चतुर्वेदी जी ने चलाई। ता० १२-५-५१ को बाबू शिवपूजन सहाय ने चतुर्वेदी जी को लिखा—

"पं० पद्मसिंह जी की बरस गाँठ पर जो यादगार के तौर पर एक छोटी सी पुस्तिका निकली है उसकी एक प्रति मुझे भी आपने भेजने की कृपा की है। उसे देखकर मन में हुआ कि हर साल की जयंती या निधन तिथि

पर यदि स्वर्गीय साहित्यकार की स्मृति में ऐसी छोटी पुस्तक माला भी निकला करे तो कुछ दिनों बाद सब मिलाकर एक सजिल्द ग्रन्थ तैयार हो जाय। थोड़ा-थोड़ा काम भी हर साल होता चले तो बहुत सा काम हो सकता है। विशाल ग्रन्थ में अधिक समय, परिश्रम और द्रव्य लगने की सम्भावना है, परन्तु प्रतिवर्ष पुस्तकमाला का एक गुच्छ तैयार करने में विशेष प्रयास और खर्च नहीं है। आपने श्रद्धांजलि पुस्तिका निकाल कर मार्ग-दर्शन कर ही दिया। अब आगे बराबर उसका क्रम जारी रखना है। जिस प्रकाशक से आपने वह पुस्तिका छपवाई है उससे आप साहित्यिकों के स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित करा सकते हैं और प्रतिवर्ष की तिथि पर पुस्तकमाला के क्रमशः खण्ड निकलवा सकते हैं। आपका सरोकार और प्रभाव बहुत व्यापक हैं। आप ही यह कर और करा सकते हैं। अब ऐसे ग्रन्थों अथवा पुस्तकमालाओं के एक दो हजार ग्राहक थोड़े ही प्रयास से मिल सकते हैं। इनकी बिक्री का क्षेत्र अब धीरे-धीरे उर्वर होता जा रहा है।''

बाबू शिवपूजन सहाय ने इस पत्र में एक बात बड़े मार्के की लिखी और वह यह है, ''आपका सरोकार और प्रभाव बड़ा व्यापक है, आप ही यह कर और करा सकते हैं।'' वास्तव में चतुर्वेदी जी ने अपने शील, सौजन्य, सद्व्यवहार और संपर्क से एक प्रभाव अर्जित किया है जो बड़ा व्यापक है और अपने प्रभाव की इस व्यापकता का उन्होंने सार्वजनिक हित में भरपूर उपयोग किया है। अपने इस व्यापक प्रभाव के कारण ही वे शान्ति निकेतन में हिन्दी भवन, कुण्डेश्वर में गाँधी भवन, प्रयाग में सत्यनारायण कुटीर और दिल्ली में हिन्दी भवन बनवा सके। चतुर्वेदी जी इन महान संस्थाओं के निर्माण का समस्त श्रेय अपने ऊपर नहीं लेते परन्तु तथ्य यह है कि इनका अस्तित्व चतुर्वेदी जी के अथक प्रयासों के फल स्वरूप ही सम्भव हुआ। ये चारों ही संस्थाएँ निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं। ब्रजसाहित्य मण्डल की स्थापना भी चतुर्वेदी जी के आन्दोलन का शुभ परिणाम थी।

चतुर्वेदी जी ने पत्रों द्वारा अपने प्रभाव को काम में लाकर एक और महान् कार्य किया और उसे श्री भगवानसिंह जिलाधीश रायबरेली की जुबानी सुनिये, ''द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद सेना से मुक्त होकर मैं भारतीय प्रशासन सेवा में चला आया। सन् १९५०-५१ के दौरान जब मैं रायबरेली के जिलाधीश पद पर काम कर रहा था, तब चतुर्वेदी जी के साथ अनेक वर्षों के बाद फिर से मेरा सम्बन्ध स्थापित हुआ। चतुर्वेदी जी के बारे में एक

बात प्रसिद्ध है और वह यह कि उन्होंने स्वर्गीय साहित्यकारों की कीर्तिरक्षा, क्रान्तिकारियों और अनेक देश सेवकों के श्राद्धकर्म पर एकाधिपत्य कायम कर रक्खा है। रायबरेली में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के स्मारक के निर्माण के लिए चतुर्वेदी जी बड़े व्यग्र थे। वह द्विवेदी जी के गाँव में एक पंचायत घर भी बनवाना चाहते थे। यह बात बहुत कम लोगों को ज्ञात होगी कि आचार्य द्विवेदी जी अपनी गाँव के पंचायत के सरपंच थे और इस हैसियत से उन्होंने जो फैसले लिखे थे, वह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व का नया पहलू उनके लिखे इन फैसलों से प्रकट होता है। चतुर्वेदी जी की इच्छा थी कि इन फैसलों को एकत्र करके उस पंचायत घर में रक्खा जाय। मुझे उन्होंने अनेक बार इस बारे में पत्र लिखे। मेरे लिए यह गौरव की बात है कि इस साहित्यिक यज्ञ में जो कुछ मुझसे संभव था, मैंने अपना योग दिया। इसके परिणाम स्वरूप रायबरेली में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के स्मारक के रूप में एक पुस्तकालय की स्थापना हुई और उनके गाँव में पंचायत घर की, जिसमें द्विवेदी जी के लिखे फैसले सुरक्षित हैं।"

अब इन्हीं महाशय की जुबानी एक दूसरी कहानी भी सुनिये। इससे हिन्दी भवन दिल्ली के निर्माण का रहस्योद्घाटन होता है। श्री भगवानसिंह लिखते हैं, "सन् १९५२ में केन्द्रीय ट्रैक्टर संगठन का अध्यक्ष होकर मैं दिल्ली आ गया था। इन्हीं दिनों चतुर्वेदी जी राज्यसभा के सदस्य होकर दिल्ली में विराजमान थे। दिल्ली आकर उन्हें यह बात खटकी कि राजधानी में कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ साहित्यकारों का स्वागत-सत्कार किया जा सके। इस उद्देश्य से उन्होंने 'हिन्दी भवन' की स्थापना की चर्चा चलायी। इस सम्बन्ध में सबसे पहली बैठक कनाट सर्कस में श्रीमती सत्यवती मलिक के यहाँ हुई, जिसमें मुझे भी निमंन्त्रित किया था। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी ने चतुर्वेदी जी के इस काम में पूरा सहयोग दिया और उनकी कृपा से हिन्दी भवन की स्थापना का स्वप्न साकार होने लगा। फिर सरकार से थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिग में 'हिन्दी भवन' के लिए कमरे लेने का सवाल सामने आया। सरकार ने 'हिन्दी भवन' के लिए जमानत माँगी। चतुर्वेदी जी ने उस काम के लिए मुझे ही आगे कर दिया। वह तो अब दिल्ली छोड़कर फीरोजाबाद जा बसे किन्तु हिन्दी भवन के जमानती के रूप में मेरा नाम ऐसा पक्का लिखा गये हैं कि 'काटे न कटे'।

श्री भगवानसिंह जी जिलाधीश के सुन्दर शब्दों में आपने पढ़ा कि चतुर्वेदी जी किस प्रकार रायबरेली में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम

पर पुस्तकालय और द्विवेदी जी के गाँव में पंचायतघर बनवाने में समर्थ हुए। हिन्दी भवन दिल्ली की भीतरी कहानी भी कुछ इससे ज्ञात हो जाती है।

चतुर्वेदी जी की आत्मीयता

प्रस्तुत पत्र संग्रह के अनेक पत्रों में आपको विदित होगा कि चतुर्वेदी जी ने मेरा परिचय अनेक महानुभावों से कराया है। ब्रजभारती की प्रति अनेक सज्जनों को भिजवाने में चतुर्वेदी जी का उद्देश्य केवल उनसे मेरा साहित्यिक परिचय कराना है।

ब्रजसाहित्य मण्डल के एक विनम्र कार्यकर्ता और ब्रजभारती के सम्पादक की हैसियत से जो कुछ सेवा मुझसे बन पड़ी है चतुर्वेदी जी ने मुझे उसका बड़ा भारी पुरस्कार दे डाला है। उन्होंने मुझे साहित्यिक कमिश्नर की उपाधि से विभूषित किया है जैसा कि उनके अनेक पत्रों में तद्विषयक उल्लेख से विदित हो जाता है। चतुर्वेदी जी के पत्रों में आप ब्रजभूमि की अनेक नवोदित प्रतिभाओं, पुरातन साहित्यिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और हिन्दी सेवियों के नामों की चर्चा देखेंगे, अनेक संस्थाओं, विद्यालयों, बनों, उपवनों का उल्लेख पाएँगे और उनके लिए क्या करना चाहिये इसके लिए बड़े बहुमूल्य सुझाव भी। ब्रज की अनेक सस्थाओं के प्रति चतुर्वेदी जी का ममत्व दर्शनीय है। चतुर्वेदी जी का मत है कि ब्रजभूमि में जहाँ कहीं कुछ अच्छा काम हो रहा हो उसका लेखा जोखा रहना चाहिये और उसकी चर्चा होनी चाहिये। चतुर्वेदी जी कोटला इन्टर कालेज जिसके प्रबन्धक श्री बालकृष्ण गुप्त हैं और होलीपुरा के दामोदर इण्टर कालेज जिसके प्रबन्धक श्री शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी हैं से बड़े प्रभावित हैं और अपने पत्रों में अक्सर उनकी चर्चा करते रहते हैं। वे आगरा के सेकसरिया कालेज और रत्नमुनि जैन कालेज के भी प्रशंसक हैं। आचार्य जीवनदत्त शर्मा नरवर के संस्कृत महाविद्यालय के संस्थापक थे। चतुर्वेदी जी ने उनके स्मृतिग्रन्थ प्रकाशित करने का विचार संस्कृत भाषा के विद्वानों के समक्ष रक्खा है। उस दिशा में कुछ सफल प्रयत्न भी हो रहे दिखाई पड़ते हैं। मेरे माध्यम से उन्होंने स्व० डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के पत्रों का संग्रह भी किसी हद तक करा ही दिया है। चतुर्वेदी जी इटौरा के उद्यान की भी अपने पत्रों में अक्सर चर्चा करते हैं। इस समुन्नत उद्यान के स्वामी बा० प्रतापनारायण अग्रवाल (राजाबाबू हैं)।

चतुर्वेदी जी मेरे निजी संग्रहालय में भी बड़ी रुचि रखते हैं, उन्होंने कई पत्रों में ऐसे उपयोगी और महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं जिनको यदि कार्यान्वित

कर दिया जाय तो संग्रहालय निस्संदेह अत्यन्त समृद्ध बन सकता है। चतुर्वेदी जी ने कुछ पत्रों में मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ की भी चर्चा चलाई है। इस विषय में तो मेरा उनसे यही नम्र निवेदन है, "श्रीमान्! शत शत धन्यवाद! मैं इस योग्य नहीं।"

चतुर्वेदी जी का सम्मान

चतुर्वेदी जी ने आजन्म अपने सौजन्य और सद्व्यवहार से अगणित हृदयों पर अपना स्नेह पूर्ण अधिकार जमा लिया है। उनसे प्रश्रय और प्रोत्साहन प्राप्त कर संख्यातीत साहित्यिक बन्धुओं ने अपने जीवन को सफल बनाया है। जो लोग जीवन में चतुर्वेदी जी से उपकृत हुए हैं उनकी संख्या बहुत बड़ी है। चतुर्वेदी जी ने बड़े दीर्घ काल तक बड़ी आत्मीयता से सर्वत्र स्नेह बिखेरा है। कोई आश्चर्य नहीं कि चतुर्वेदी जी की दीर्घ कालीन सेवाओं से उपकृत जगत कृतज्ञता ज्ञापन में एक साथ सस्वर हो उठे और चतुर्वेदी जी के अनुपम कार्यों की सर्वत्र सराहना होने लगे। सबसे पहले उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित हुआ। ग्रन्थ के संस्मरणखण्ड में लेखकों ने स्नेह, श्रद्धा और सम्मान की जो त्रिवेणी प्रवाहित की है वह अन्यत्र दुर्लभ है। फिर एक वर्ष के भीतर ही तीन महान संस्थाओं ने उन्हें अपनी-अपनी सर्वोच्च उपाधियों से विभूषित किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने **साहित्य वाचस्पति,** उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने **साहित्य वारिधि** और आगरा विश्वविद्यालय ने **डी॰ लिट्** की उपाधि से चतुर्वेदी जी को अलंकृत किया। चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व महान् है, वह इन अलंकारों से ही प्रकाशित होता हो ऐसी बात नहीं है। मेरी तो धारणा है कि ये अलंकार ही चतुर्वेदी जी के व्यक्तित्व की दीप्ति से प्रकाशित होते हैं।

चतुर्वेदी जी की संवेदनशीलता

अभिनन्दन ग्रन्थ को आद्योपान्त पढ़ने के उपरान्त मुझे उस श्रेष्ठ ग्रन्थ में एक अभाव बड़ा खटका। चतुर्वेदी जी के आत्म चरित में प्रातःस्मरणीया उनकी श्रीमती का कहीं भी उल्लेख न था। मैंने यह सोचकर कि चतुर्वेदी जी की महान साधना उस महिमामयी महिला के अक्षुण्ण सहयोग के बिना असम्भव ही होती चतुर्वेदी जी को लिखा कि आत्मचरित में यह कमी मुझे उसका दोष प्रतीत होती है। चतुर्वेदी जी ने मुझे तुरन्त लिखा कि मेरा यह प्रश्न प्रासङ्गिक था तथा निस्संदेह वह एक खटकने वाली कमी रह गई। उन्होंने मुझे एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी पत्र लिखा जो कि इस संग्रह में वर्तमान है और जिसको इस

संग्रह में सम्मिलित करने की उन्होंने मुझे अनुमति भी दे दी है। वास्तव में वे निर्दोष हैं परन्तु संवेदनशील होने के कारण उनका निश्छल व्यक्तित्व दूसरों के दोष भी अपने ऊपर ओटने को तैयार रहता है।

ब्रजभारती में प्रकाशित लेख

हमने ब्रजभारती के अंक ३ सम्वत् २०२४ में प्रकाशित अपने एक लेख में जिसका शीर्षक था "पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र" चतुर्वेदी जी के कुछ पत्रों पर विचार प्रस्तुत करते हुए उनके अनेक पत्रों को उद्धृत कर दिया है। पुनरावृत्ति के भय से उन पत्रों को अब हम इस संग्रह में स्थान नहीं दे रहे हैं। हाँ, इस पुस्तक में हम परिशिष्ट में उस लेख को ज्यों का त्यों मुद्रित कर रहे हैं।

हमारे इस संग्रह में सामान्यतया उन्हीं पत्रों की विद्यमानता है जिन्हें चतुर्वेदी जी ने हमारे पास भेजने की कृपा की है। कुछ अन्य पत्र भी जिनकी प्रतिलिपियाँ चतुर्वेदी जी ने हमारे पास भेज दी हैं इस संग्रह में सम्मिलित कर दिये हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है चतुर्वेदी जी ने अपने जीवन में लगभग एक लाख पत्र लिखे होंगे। अपने वर्तमान प्रयास में हमारा लक्ष्य व्यापक रूप से अनेक श्रोतों से पत्र इकट्ठा करने का न था। चतुर्वेदी जी के सभी पत्रों को जो यत्र तत्र सर्वत्र बिखरे पड़े हैं एकत्रित करना एक कठिन कार्य है। हाँ, यदि कोई महानुभाव अथवा संस्था इस महान कार्य को अपने हाथ में ले तो हम उन्हें अपने सक्रिय सहयोग के प्रति आश्वस्त करते हैं।

ब्रजभूमि का पुर्ननिर्माण

ब्रजभूमि का पुर्ननिर्माण चतुर्वेदी जी का सुख स्वप्न है। उन्होंने हमें अनेक पत्र इस सम्बन्ध में लिखे हैं और उन पत्रों में ब्रजभूमि की उन्नति और विकास से सम्बन्धित अनेक सुझाव विद्यमान हैं। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ में इस विषय पर एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है "ब्रजभूमि का पुर्निर्माण : चतुर्वेदी जी की दृष्टि में।" वस्तुतः वह लेख उनके उन पत्रों पर ही आधारित सामग्री का प्रस्तुतीकरण करता है जो चतुर्वेदी जो ने हमें समय-समय पर लिखे हैं। हमने उस लेख में उनके तद्विषयक अनेक पत्रों का उल्लेख किया है तथा उनमें से प्रचुर उद्धरण भी दिये हैं। हम उस लेख को अक्षरशः इस ग्रन्थ के परिशिष्ट 'ब' में छाप रहे हैं। उस लेख में चतुर्वेदी जी के जिन पत्रों का उल्लेख हो चुका है उन्हें हम पुनरावृत्ति के भय से इस ग्रन्थ में नहीं दे रहे हैं।

अब हम चतुर्वेदी जी के पत्र संग्रह, उनके पत्र-लेखन की प्रवृत्ति और उनके पत्र-साहित्य पर विद्वानों के अभिमत को प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे चतुर्वेदी जी के पत्र-साहित्य के महत्व पर पुष्कल प्रकाश पड़ता है।

विद्वानों का अभिमत

डा० रामविलास शर्मा—"इन दो कार्यों के अतिरिक्त तीसरा काम उन्होंने साहित्यकारों और राजनीतिज्ञों के पत्र संग्रह का किया है। हिन्दी-लेखकों की साधारण प्रवृत्ति पत्र-संग्रह के विरुद्ध रही है। इसमें इतिहास और साहित्य की भारी क्षति हुई है। चतुर्वेदी जी ने पत्रों का संग्रह ही नहीं किया उनमें से कुछ छपवा भी दिये हैं। इस उदारता के लिए उनका कोटिश: अभिनन्दन।

वे स्वयं भी बहुत अच्छे पत्र-लेखक हैं। उनके अभिनन्दन ग्रंथ में यदि उनके पास की संचित सामग्री छाप दी जाती तो यह ग्रन्थ अविस्मरणीय हो जाता। चतुर्वेदी जी के कुछ पत्र इसमें छापे गये हैं जिनसे मालुम होता है कि वह नये लेखकों को प्रोत्साहन देने में इतने व्यस्त रहते हैं कि स्वयं संस्मरण लिखने का समय नहीं निकाल पाते।"[1]

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'—"चौबेजी को पुस्तकें जुगाने का मोह नहीं है, किन्तु चिट्ठियाँ जुगाने का उन्हें रोग है। वह सफाई से रहने पर खर्च नहीं करते, खर्च करते हैं अल्मारियाँ और ट्रङ्क खरीदने पर, जिनमें चिट्ठियों के पुलिन्दे बन्द रहते हैं। उनके पास पुराने साहित्यकारों से लेकर नये से नये कवियों और लेखकों के पत्र हिफाजत से रक्खे हुए हैं।"[2]

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद—"श्री यशपाल जैन अपने पत्र में लिखते हैं, 'पत्र लेखक के रूप में तो श्रद्धेय चतुर्वेदी जी अद्वितीय हैं।" मैं श्री यशपाल जैन के साथ सहमत हूँ, क्योंकि अनुभव के आधार पर मेरी भी यही धारणा बनी है। १९६९ के इस साल के ६ महीने के अन्दर-अन्दर दादा जी ने कोई ३० पत्र मुझे लिखे हैं। कई पत्र तो एक-एक करके रोज मिले और उनमें से कुछ तो एक-एक हजार शब्दों के हैं। मेरे बारे में लम्बे-लम्बे लेख भी उन्होंने समाचार पत्रों में लिखे हैं। पिछले अप्रैल मास में १० दिन तक मैं फीरोजाबाद में उनके बहुत निकट संपर्क में आया। मैंने अपनी आँखों से देखा कि साहित्यकार के नाते वह कितने प्रखर साधक एवं तपस्वी हैं। जैसे वे देश के शहीदों पर फिदा हुए हैं वैसे ही मैं उन पर फिदा हुआ हूँ और वैसे ही उन्हें देखकर

---

१. श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ ४७
२. " " पृष्ठ ३२

मेरी यह पक्की धारणा बनी है कि हमारे वर्तमान समाज के प्रखर लेखकों ने उन्हें पूर्ण सहयोग दिया होता तो आज हमारे समाज का वातावरण ही कुछ और होता।"[१]

श्री विष्णु प्रभाकर—"(चतुर्वेदी जी के पास) पत्रों का सचमुच अद्भुत संग्रह है। किसी दिन उनका प्रकाशन हो सका तो पत्र साहित्य की निधि प्रमाणित होंगे। (उनसे) पत्र पढ़ते-पढ़ते पत्र लिखने की कला पर भी बहुत बातें हुईं। पण्डित पद्मसिंह शर्मा, श्रीयुत श्रीनिवास शास्त्री और महात्मा गांधी आदि कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो सचमुच पत्र लिखना जानते हैं। बहुत दिन बाद एक साहित्यकार ने मुझसे कहा था कि पत्र लिखते समय शायद चतुर्वेदी जी भी इस बात को नहीं भूलते।"[२]

श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'—"श्री बनारसीदास चतुर्वेदी न माली हैं न किसान, वह बादल हैं और (पत्र रूपी मेघों द्वारा) जीवन भर विचार सुझाव और सहयोग के बीज बरसाते रहे हैं।

वह योजना-पुरुष हैं पर कभी योजना पूर्वक नहीं जिये, यह उनके जीवन की अनिष्टता है और यही उनके जीवन की विशिष्टता है। उनका विश्वास है जीवन की उन्मुक्तता और इसके लिए वह जीवन भर पूरी कीमत चुकाते रहे—सुख सुविधाओं की कीमत, अवसरों की कीमत, यह कीमत इतनी अधिक है कि करोड़ पति का भी दिवाला निकल जाय, पर उनके अट्टहासों का खजाना कभी खाली न हुआ और उनकी मस्ती की तिजोरी सदा भरी रही, यही उनका व्यक्तित्व है।"[३]

पं० सूर्यनारायण व्यास—"पत्र व्यवहार में तो चौबे जी बेजोड़ रहे हैं। ढेरों पत्र लिखे और संगृहीत भी किये। चौबे जी ने कई पत्र बड़े सुन्दर और अपनी आलस्य वृत्ति पर लज्जा व्यक्त करने वाले लिखे। चौबेजी की तरह मुझे भी पत्र संग्रह का शौक है। सात आठ हजार पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। चौबे जी के पत्र भी उस पत्र-सागर में कहीं डुबकी लगाये हुए पड़े हैं।"[४]

श्री भगवानसिंह—"चतुर्वेदी जी पत्र-लेखन कला के आचार्य ही कहे जा सकते हैं। जब कभी चतुर्वेदी जी के पत्र आते हैं दफ्तर की मशीनी दुनियाँ से

---

१. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ४६
२. " " पृ० ५०
३. " " पृ० ५३
४. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ५७

निकाल कर वह सहज मानवीय उदात्त भावनाओं के सरोवर में नहला देते हैं।''[१]

श्री सीताराम सेकसरिया—''चतुर्वेदी जी ने शायद जितने पत्र लिखे हैं, जितने लोगों को लिखे हैं, तथा जितने कामों और विषयों के लिए लिखे हैं उतने किसी और ने लिखे हों यह मैं नहीं जानता। उनका पत्र व्यवहार हिन्दी अंग्रेजी में और देश के छोटे बड़े सभी लोगों से होता रहा है। पूज्य गाँधी जी और गुरुदेव से लेकर देश विदेश के अनेक लोगों के साथ उनका पत्र व्यवहार चलता रहा। उनके पास उन पत्रों का अभूतपूर्व संग्रह है। यह इतनी अधिक और महत्वपूर्ण सामग्री है कि वह एक इतिहास है पिछले पचास वर्षों की हालतों का, चिन्तनों का, परिवर्तनों का। चतुर्वेदी जी की इच्छा रही है कि उसका कोई सांगोपांग उपयोग होता और उसकी सुरक्षा होती, उसको प्रकाश मिलता, वह सार्वजनिक उपयोग की चीज बनती। चतुर्वेदी जी की पचास वर्ष की जीवन साधना का प्रयत्न और फल है यह संग्रहालय और यदि कोई सम्पत्ति कही या मानी जाय तो यही है चतुर्वेदी जी की कमाई। पर, इसके अलावा मेरी निगाहों में हजारों हृदय मन भी हैं या होंगे जो किसी न किसी रूप में उनके साथ जुड़े हैं।[२]

श्री रामइकबालसिंह राकेश—''चतुर्वेदी जी एक दुर्लभ कुशल लेखक हैं। उनके पत्रों में काल्पनिक उड़ान नहीं, बल्कि होती है मजमून की सफाई और हृदय से जोड़ देने वाली एक कड़ी। उनके पढ़ने से प्रतीत होता है, जैसे वे मेरे चिर दिन के आत्मीय हैं। अपने २४-६-४७ के पत्र में उन्होंने मुझे लिखा था—''सुरम्य प्रकृति के निकट मैं किसी ऐसे आश्रम की कल्पना कर रहा हूँ जहाँ के 'मेन हाल' में भारत के भिन्न जनपदों के नकशे होंगे और प्रत्येक जनपद के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ता का विवरण (सचित्र) जहाँ सुरक्षित होगा, जहाँ कभी हारी थकी आत्माओं को क्षणिक विश्राम की व्यवस्था होगी, जहाँ उनकी यात्राओं का व्यौरा रहा करेगा और जहाँ का द्वार प्रत्येक समझदार लेखक के लिए खुला रहेगा और स्त्रियों के मायके के समान जहाँ उनका हार्दिक स्वागत होगा। ऐसे आश्रम भारतवर्ष में और पाकिस्तान में कभी न कभी स्थापित होंगे। प्रारम्भ में वे प्रायः असफल ही होंगे, पर आगे चलकर उनमें अवश्य सफलता मिलेगी। मैंने छोटी सी चीज यहाँ स्थापित की

---

१. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ६१
२. " " पृ० ६४

थी, वह नष्ट हो गई, पर वकौल कविवर बच्चन 'नीड़ का निर्माण फिर फिर।' अगले अक्टूबर या नवम्बर में मैं ब्रज में किसी नीम के नीचे बैठकर अपनी क्षुद्रतम साहित्यिक साधना का पुनः आरम्भ करूँगा। यहाँ का उपवन तो अब छोड़ ही रहा हूँ—पर 'मन चंगा तो कठोठी में गंगा'। मुझको बुला रही है ब्रज की करील कुंजें।'

मेरी राय में यदि सिर्फ उनके ऐसे पत्रों का ही ठीक रूप में संपादन किया जाय, जिन्हें अपनी कलम से उन्होंने दूसरों को लिखा है, तो यह उनके साहित्यिक जीवन तथा भावना के अध्ययन की दृष्टि से एक तथ्य पूर्ण वस्तु होगी तथा हिन्दी संसार के लिए एक रोचक और सजीव कृति। हिन्दी संसार में ऐसे कितने हैं जो अपने जीवन के चिन्तनशील क्षणों में व्यस्त रहते हुए भी दूसरों को स्नेह-पूर्वक संबोधन करते हैं और जो मार्ग से अनभिज्ञ अपने छुट-भइयों को ईमानदारी के साथ बतलाते हैं कि उनकी अपनी सफलता के भेद तथा साहित्यिक कार्यों के तरीके क्या हैं ?''[1]

श्री धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री—"चतुर्वेदी जी को पत्र संग्रह का शौक है। अभी कुछ दिन हुए उन्होंने मेरे तीस-चालीस पुराने पत्र दिखलाए। उनके पास गांधीजी के, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के और सी. एफ. एन्ड्रयूज के न जाने कितने पत्र संग्रहीत हैं।······· मैं बहुधा सोचता हूँ चतुर्वेदी जी के साथ ऐसी आत्मीयता का क्या कारण हो सकता है ? खास कर आजकल की दुनियाँ में यह होता है कि परस्पर आदान-प्रदान से घनिष्ट सम्बन्ध बढ़ने पर आत्मीयता हो जाती है। कभी-कभी यह आदान-प्रदान सच्चाई के आधार पर होता है, अर्थात् जब कभी कोई व्यक्ति हमारे साथ भलाई या उपकार करे तो कृतज्ञता पूर्वक उसे याद रखते हुए उसके लिए प्रत्युपकार करने की चेष्टा करने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे स्थल पर किया गया आदान-प्रदान भी एक अनुकरणीय बात है, क्योंकि कृतज्ञता सच्चे मानव हृदय का एक विशेष गुण है। हाँ, जहाँ यह आदान-प्रदान केवल इसी स्वार्थ बुद्धि से होता है कि हम किसी का काम करें और वह हमारा करे और उससे दोनों को ही पारस्परिक लाभ हो वहाँ वह आदान-प्रदान केवल दुकानदारी की ही बात होती है, उसमें कोई सुन्दरता नहीं होती। चतुर्वेदी जी के विषय में इस सिद्धान्त को मैंने इसलिए कुछ स्पष्ट किया है कि चतुर्वेदी जी के साथ तो मेरा किसी प्रकार भी (उत्कृष्ट या निकृष्ट) आदान-प्रदान का सम्बन्ध रहा ही नहीं। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है,

---

१. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० ७०-७१।

मैंने उनसे कभी अपने निजी काम के विषय में प्रार्थना नहीं की और चतुर्वेदी जी मुझे कभी कोई निजी काम बताते इसका तो प्रश्न ही नहीं उठता । इसीलिए यह प्रश्न स्वाभाविक होता है कि चतुर्वेदी जी के प्रति इतनी आत्मीयता का अनुभव क्यों कर हुआ ?

"ऊपर जो आदान-प्रदान की बात लिखी गई है, उसमें जो उत्कृष्ट प्रकार की है अर्थात् कृतज्ञता पर आश्रित आदान-प्रदान वह भी एक प्रकार से निकृष्ट ही है, क्योंकि उसमें भी प्रदान के साथ-साथ आदान भी लगा रहता है। जीवन का सर्वोत्कृष्ट रूप विशुद्ध प्रदान ही है जहाँ हम दूसरों के प्रति भलाई, केवल भलाई करने के भाव से करते हैं, जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ की गंध भी नहीं रहती। संसार में ऐसे महान् पुरुष, पैगम्बर, सन्त हुए हैं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव-जाति के लिए अर्पण कर दिया था। परन्तु ऐसे महापुरुषों को छोड़कर साधारण व्यक्तियों में भी यह बात बहुधा पाई जाती है। दूसरों के प्रति भलाई करना, कष्ट में पड़े हुए व्यक्ति का कष्ट दूर करना, यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। केवल निजी स्वार्थ की भावना इस प्रवृत्ति को रोके रहती है। साधारण व्यक्तियों में भी कुछ व्यक्ति ऐसे पाये जाते हैं जिनके अन्दर सर्व-जन-हित की भावना ओत-प्रोत रहती है जो निजी स्वार्थ की बिना सोचे मन से वचन से और कर्म से दूसरों के हित के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के प्रति प्रत्येक मनुष्य के अन्दर आत्मीयता की भावना उत्पन्न हो जाती है, यदि वह उन्हें गहराई से देख ले। चतुर्वेदी जी के विषय में मेरे ऊपर इसका गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपनी कलम को किसी निजी स्वार्थ के लिए नहीं उठाया, प्रत्युत सदैव किसी विशेष आदर्श के लिए उसका उपयोग किया। इसीलिए चतुर्वेदी जी के प्रति मेरे जैसे कितने ही व्यक्तियों के हृदय में आत्मीयता का भाव उत्पन्न हो जाता है और विशेषकर साहित्यिक क्षेत्र के व्यक्तियों में।"[1]

श्री रामधन राम—"चतुर्वेदी जी प्रतिदिन इतनी चिट्ठियाँ लिखते हैं कि पचास साठ रुपये मासिक पोस्टेज में खर्च हो जाते हैं। किसी नये आदमी को भी चतुर्वेदी जी इस तरह पत्र लिखते हैं मानो वर्षों से जान पहिचान हो। परिचित अपरिचित शत्रु मित्र सब को आत्मीयता के साथ चिट्ठी लिखते हैं।"

श्री विद्याशङ्कर शर्मा—"अपने साहित्य मित्रों में पिताजी (स्व० डा० हरिशंकर जी शर्मा) स्वर्गीय पं० श्रीराम शर्मा और दादा जी (पं० बनारसीदास चतुर्वेदी)

---

१. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० ८६

को अपना परम आत्मीय मानते थे, और दिल खोलकर इनके साथ बातचीत करते थे। ४५ वर्ष की अवधि में पिताजी ने कोई ३०० पत्र दादाजी को भेजे थे, जो उनके पास सुरक्षित हैं, मेरा ख्याल है इससे ड्यौढ़ी संख्या में दादाजी ने पिताजी को पत्र भेजे होंगे। इनमें कितने सुरक्षित हैं मैं सम्हाल कर गिनती नहीं कर पाया। पत्रों में साहित्य चर्चा अधिक रहती थी, घरेलू बातें कम। लेकिन दादाजी के साथ घरेलू सम्बन्ध बराबर बने रहे। १० वर्ष पूर्व जब बड़े भाई डा० दयाशंकर शर्मा ने अपना मकान बनवा लिया तो पिताजी ने उसके उद्‌घाटन के लिए दादाजी को विशेष रूप से आमन्त्रित किया था। वह अपने साथ पितामह (महाकवि शंकर) का एक बड़ा चित्र दिल्ली से बनवा कर लाये जिसका नवीन 'शंकर सदन' में उन्होंने उद्‌घाटन किया। उसी दिन नये मकान में वृक्षारोपण भी हुआ। बाउन्ड्री के सहारे, एक कतार में जो अशोक के पौधे लगाये गये उनमें पहला दादाजी ने लगाया था और दूसरा स्वर्गीय पं० श्रीराम शर्मा ने। अन्तिम गुलमुहर का पौधा पिताजी ने लगाया था। १० वर्ष के अन्दर ये पौधे बढ़कर अब पेड़ बन गये हैं। दादाजी के अशोक के पेड़ और पिताजी के गुलमुहर की अपनी विशेषता है। हरीतिमा से आच्छादित 'शंकर सदन' इन दोनों की छत्रछाया में अपने को धन्य मानता है।"[१]

स्वयं चतुर्वेदी जी का श्री रामनारायण उपाध्याय खँडवा को लिखा हुआ पत्र दिनांक १२-१-६१ दिल्ली से:—

"आपका कृपा पत्र मिला। बात दर असल यह है कि पत्र-व्यवहार मेरे लिए एक व्यसन हो गया है और बावजूद घोर प्रयत्नों के मैं उसे छोड़ नहीं पाता। महीने में २४-२५ दिन चिट्ठियों को लिखने में ही व्यतीत कर देता हूँ। स्व० पद्मसिंह जी शर्मा का जीवन चरित कई वर्षों से अधूरा ही पड़ा है। तुर्गनेव जब मरणासन्न थे, तब भी उन्होंने किसी युवक ग्रन्थकार के लिए सिफारिशी चिट्ठी किसी प्रकाशक को लिख दी थी और स्टीफन ज्विग भी इसी आदर्श का पालन करते रहे थे। रोम्यां रोलां को भी सहस्रों पत्र लिखने पड़े थे। मैं इन तीनों का प्रशंसक हूँ, इसलिए यह सम्भव नहीं कि मैं किसी संकटग्रस्त सज्जन के पत्रों का उत्तर न दूँ, बल्कि नवीन प्रतिभाओं के स्वागतार्थ तो मैं और भी प्रयत्नशील बनना चाहता हूँ, पर फालतू चिट्ठियों का जवाब देना मेरे लिए असम्भव हो गया है।

---

१. श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १३२।

अन्तर्जनपदीय परिषद् का उद्धार होना चाहिए। उसकी मीटिंग भले ही न हो, पर पत्र-व्यवहार तो निरन्तर होते ही रहना चाहिये।[1]

श्री शिवनारायण श्रीवास्तव–"श्री चतुर्वेदी जी का सम्पर्क महापुरुषों से रहा है। इतना ही नहीं, बल्कि वह विश्व विख्यात साहित्यकारों, कवियों और कलाकारों में महाकवि गेटे, कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रोम्यां रोलां, स्टीफन ज्विग, टालसटाय, एमर्सन, थोरो, चेखव, मैक्सिम गोर्की, तुर्गनेव, क्रॉपॉटकिन इत्यादि मनीषियों के ग्रन्थों का अध्ययन करके उनकी विचारधाराओं के प्रशंसक बन चुके हैं। पत्र-लेखकों में चतुर्वेदी जी श्रेष्ठ माने जाते हैं। पत्रों के उत्तर टाइप न कराकर नीली और कहीं-कहीं लाल स्याही में स्वयं अपने हाथ से सुन्दर अक्षरों में लिखकर भेजते रहते हैं। पत्रों का उत्तर भेजने में वह किसी प्रकार की ढिलाई नहीं करते, बल्कि तत्काल उत्तर भेजते हैं।

पत्र-व्यवहार का व्यसन उन्हें लगभग ५५ वर्ष से है। यदि हिसाब लगाया जाय तो इस अनुपात से उन्होंने अब तक सवा दो लाख के लगभग पत्र लिखे होंगे।

पत्र-लेखन के विषय में वह एक जगह लिखते हैं: "कोई भांग पीता है, कोई तमाखू खाता है, किसी को अफीम की लत है तो किसी को गांजे का शौक है। सुरों की प्रिय सुरा पीने वालों का क्या कहना। और चाय के पियक्कड़ों की संख्या तो दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है।............

"पर इन सब नशों की तरह, उतना ही मादक, एक नशा और भी है और वह है चिट्ठियों को भेजने का" (पद्मसिंह शर्मा के पत्र भूमिका पृ० १५)

नवीन लेखकों को सहयोग देने में चतुर्वेदी जी रूस के दो महान साहित्यकारों मैक्सिम गोर्की और टालसटाय का उदाहरण देते हुए एक जगह लिखते हैं:

"मैक्सिम गोर्की किसी लेखक के पास भोजन भिजवाते थे, किसी के पास किताबें, किसी को पैसा और प्रोत्साहन-पत्र तो उन्हें सैकड़ों लिखने पड़ते थे। टालसटाय के बत्तीस पृष्ठीय पत्र ने जो रोम्यां रोलां को अपनी कुमार अवस्था में मिला था, उनके जीवन को अत्यन्त प्रभावित किया।"

नये पत्रकारों और साहित्यकारों को चतुर्वेदी जी अपने पत्रों द्वारा बराबर उपयोगी सूचनाएँ देते रहते हैं। यहाँ हम उनका एक मात्र पत्र,

---

१. श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १३७।

जो उन्होंने टीकम गढ़ निवासी श्री भैयालाल जी को जिखा था, उद्धृत कर रहे हैं :

नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली
१४-४-५८

प्रियवर,

वन्दे, कृपापत्र तथा लेख मिला। कृतज्ञ हूँ। गाडनर के निबन्ध के के अनुवाद को आप कहीं और छपा सकते हैं, पर इस रूप में तो शायद कोई नहीं छापेगा, क्योंकि कागज के दोनों ओर लिखा होने से कम्पोजीटर को बड़ी कठिनाई होती है।

पत्रकार का प्रथम नियम आप नोट कर लीजिये कि आपको अपनी रचना अच्छे से अच्छे ढंग से स्वच्छ अक्षरों में लिखनी चाहिये, घसीट कर लिखी हुई चीज को पढ़ते हुए चित्त में एक प्रकार की ग्लानि होती है। जब आप मनचाहे ढंग से अत्युच्च कोटि के मनुष्य या प्रभावशाली लेखक बन जाँय तब आप मनचाहे ढंग से घसीट सकते हैं। अभी तो आपको इस विषय में अत्यन्त सावधानी से काम लेना पड़ेगा।

कागज चाहे मामूली तरीके का हो, पर अक्षर तो ठीक होने चाहिए, और हाशिया छोड़ कर लिखने की जरूरत है। स्याही के फीके पन की क्षमा चाहने पर सम्पादक की असुविधा थोड़े ही दूर हो जायगी। अध्यापक होकर भी आप ऐसी भूल क्यों करते हैं ? यद्यपि मेरे पास इतना समय नहीं कि अंग्रेजी से मिलाकर आपके अनुवाद को देखूँ, तथापि किसी न किसी प्रकार मैं ऐसा कर भी देता, यदि चीज साफ ढङ्ग से लिखी गई होती।

मुझे विश्वास है कि आप बुरा न मानेंगे और भविष्य में अपने लेख इत्यादि सुन्दर अक्षरों में लिख कर भेजेंगे। अपने बारे में इम्प्रेशन क्यों खराब करते हैं ? हस्त कम्पन के कारण मैं अधिक नहीं लिख सकता, फिर भी आप जैसे उत्साही व्यक्ति को लिखे विना रह नहीं सकता।

जो थोड़ी सफलता मुझे अपने पत्रकार जीवन में मिली है उसमें अक्षरों का विशेष हाथ है। लापरवाही से लिखी हुई कोई रचना मैंने पिछले तीस वर्षों से किसी सम्पादक को नहीं भेजी। इस स्पष्टवादिता के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

विनीत
बनारसीदास चतुर्वेदी

चतुर्वेदी जी का पत्र संग्रह बड़ा समृद्ध है। वह विख्यात व्यक्तियों के अलावा साधारण व्यक्तियों से पत्रव्यवहार करते हैं। उन्होंने शान्ति निकेतन (कलकत्ता) की हरियाली में विश्वबन्धु कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर को निकट से देखा ही नहीं; बल्कि उनसे कुछ पत्र भी प्राप्त किये। साबरमती आश्रम में गाँधी जी के सहवास में रहकर न केवल उनकी आत्मीयता पाई, अपितु बाद में उनके लगभग सौ पत्र भी।

फ्राँस के अमर साहित्यकार रोम्यां रोलां से पत्र-व्यवहार किया और उस महान लेखक के तीन पत्र उनके पास सुरक्षित हैं। इसी तरह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, मुंशी प्रेमचन्द, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, पण्डित पद्मसिंह शर्मा, श्रीधर पाठक इत्यादि के अनेक पत्र उनके संग्रहालय को ऐतिहासिक महत्व प्रदान करते हैं।

हम कह सकते हैं कि हिन्दी के ही नहीं, बल्कि भारत के किसी भी भाषा के पत्रकार साहित्यकार के पास इतने मूल्यवान् पत्रों का सग्रह नहीं है।''[१]

श्री यशपाल जैन—''पत्र-लेखन में दादाजी का कोई मुकाबिला नहीं कर सकता। पत्र-लेखन को वह एक कला मानते हैं और वह उस कला के महान आचार्य हैं। उन्हें महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महावीरप्रसाद द्विवेदी, पद्मसिंह शर्मा, प्रतापनारायण मिश्र प्रभृति के निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। उनके पास भारतीय नेताओं, साहित्यकारों, समाजसेवियों तथा अनेक विदेशी चिंतकों के पत्रों का संग्रह है। इतना ही नहीं, उन्होंने स्वयं एक लाख से अधिक पत्र लिखे हैं। अपने पत्रों में वह अपना हृदय खोलकर रख देते हैं। उनके पत्रों ने न जाने कितने निराश व्यक्तियों को आशा का सन्देश दिया हैं। उनके पत्र हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। उनका जैसा प्रखर और तेजस्वी पत्रकार आज के युग में ढूंढे भी नहीं मिलता। इस क्षेत्र में उनकी सेवाऐं अद्वितीय हैं।''[२]

श्री शिवपूजन सहाय—'' 'जागरण' और 'हिमालय' की परम्परा आप नहीं चला रहे, बल्कि आपकी ही विशाल भारत वाली परम्परा को 'जागरण' और 'हिमालय' ने अपनाया था। पथप्रदर्शक तो आप ही हैं। आत्मकथा

---

१. श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १५५-५६
२. श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० २०३

रेखा चित्र, संस्मरण, पत्रावली आदि के प्रकाशन की परम्परा हिन्दी में बस पहले पहल आपकी ही चलाई हुई है। इतिहास इस बात का साक्षी रहेगा '[1]

स्वर्गीय साहित्य सेवियों के श्राद्ध कर्म में आप दिन रात व्यस्त रहते हैं, यह आपके ही योग्य है। जितना कुछ आप कर जायेंगे उतना ही रैकर्ड रहेगा। आपके इस पवित्र कर्म में मैं यथायोग्य सहयोग करने को तैयार हूँ। जिन चार संस्थाओं की स्थापना आपके द्वारा हुई, उनसे आगे की पीढ़ी सदा प्रेरणा लेती और लाभ उठाती रहेगी। संस्मरण और इन्टरव्यू तथा साहित्यिक पत्र संग्रह की प्रथा आपने ही चलाई है। इन कामों से अब तक साहित्य का महान् उपकार हुआ है।[2]

श्री भैयालाल शर्मा—"पत्रों के लिखने में वह (चतुर्वेदी जी) बड़े उदार हैं और उनके पत्रों का यदि संग्रह किया जाय, तो उनकी संख्या हजारों तक पहुँच सकती है। उनके पचासों पत्र तो मेरे पास सुरक्षित हैं। यदि उनके संपादकीय लेखों का संग्रह किया जाय तो कई बड़े ग्रन्थ बन सकते हैं।

चतुर्वेदी जी ने एक पत्र में मुझे लिखा था—"हास्यरस हमारे जीवन के लिए षट्-रसों से भी अधिक आवश्यक है, लोगों को आनन्द देना और सदैव प्रसन्न रहना, इसी में दीर्घायु का नुसखा है।

"संस्था किसी एक व्यक्ति की विस्तृत छाया का नाम है, यदि अकेला एक आदमी भी जम कर बैठ जाय और अपनी अन्तरात्मा की पुकार के अनुसार काम करे, तो यह विशाल संसार उसके निकट आ जायगा।" एमर्सन के इस कथन का उन्हें विश्वास है, फिर भी लोग उन्हें केवल प्रोपेगेण्डिस्ट ही समझते हैं।

चतुर्वेदी जी सीधी-साधी भाषा लिखने के पक्षपाती हैं। उनकी भाषा बोझिल नहीं है, उसमें प्रभाव तथा प्रसाद-गुण है। उनकी लेख शैली पाठकों के लिए भार स्वरूप नहीं। एक अच्छे अध्यापक के समान उनके लेख खेल-खेल में ही बड़ा सन्देश दे जाते हैं। वह अपनी बात जबर्दस्ती गले उतारने का व्यर्थ प्रयत्न नहीं करते। उन्हें जो कुछ कहना होता है सरल भाषा में स्वाभाविक ढङ्ग से कह देते हैं।"[3]

---

१. श्री शिवपूजनसहाय के चतुर्वेदी जी को लिखित ता० १८-५-५१ के पत्र से
२. श्री शिवपूजनसहाय के चतुर्वेदी जी को लिखित १६-१०-५४ के पत्र
३. श्री बनारसीदास अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १६३

श्री मोहनसिंह सेंगर—"चतुर्वेदी जी से मेरा पत्र-व्यवहार 'विशालभारत' के प्रकाशन के साथ १६२८ से ही शुरू हो गया था। उन दिनों मैं हाईस्कूल का छात्र था। 'विशाल भारत' केवल हिन्दी मासिकों में एक नया इजाफा ही न था, वरन वास्तव में जैसे ताजी हवा का एक नया झोंका था। न जाने कितने साहित्य रसिकों और पिपासुओं को उसने परम्परागत साहित्य-कृतियों के मुकाबले कुछ बहतर किस्म का मानसिक भोजन दिया। मैं उसका ग्राहक तो बना ही लेखकों में भी पाँचवाँ सवार बनने का हौसला रखता था। सो विशाल भारत में प्रकाशित सामग्री को लेकर चतुर्वेदी जी से पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। छप तो शायद एकाध चीज ही पाई होगी—बाकी सारी चीजें सधन्यवाद वापस लौट आईं पर जिस धैर्य, सान्त्वना, सहानुभूति और अपनत्व से चतुर्वेदी जी मेरे अज्ञतापूर्ण पत्रों का उत्तर देते थे, उससे में बड़ा प्रभावित हुआ और कभी उनके दर्शन करने की लालसा पोषने लगा। एक वार तो मजाक में मैंने लिख भी दिया था कि यदि मैं इसका संपादक होता, तो इसे और भी अच्छे रूप में निकालता। पता नहीं, चतुर्वेदी ने इसे कैसे लिया होगा।"[1]

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे—"पत्र-लेखन की विधा साहित्यकी एक जानी पहिचानी विधा है। पर वे निजी, आत्मीयपत्र जो साहित्य सर्जना के उद्देश्य से नहीं अपितु अपने परिचित एवं निकटस्थ व्यक्तियों को तात्कालिक आवश्यकताओं अथवा आकांक्षाओं से प्रेरित होकर किसी बात को उन तक पहुँचाने के लिए लिखे जाते हैं मूल रूप में दैनन्दिनी चर्य्या की साधारण सूची में होते हुए भी कभी-कभी साहित्य की मूल्यवान् निधि बन जाते हैं। तब हमे मालुम होता है कि उनको लिखने वाला व्यक्ति कितना महान्, कितना प्रेरणाप्रद, कितना संवेदनशील और कितने हृदय संस्पर्शी व्यक्तित्व वाला था। पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी गाँधी, टैगौर, रोम्यां रोलां, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज तथा अन्य न जाने कितने स्वनामधन्य महापुरुषों के सम्पर्क में आये हैं। अपने दीर्घ जीवन में साहित्य और समाज की सेवा के अनगिनत संकल्प उन्होंने जगाये और पूरे किये, कराये। पीड़ा और करुणा ने कहाँ-कहाँ उनके कोमल हृदय को कचोटा, किन-किन तेजस्वी भावनाओं ने, किन-किन जीवन्त मूल्यों ने किन-किन श्रद्धार्ह आत्माओं की अन्तरंग चिन्ताओं ने उनके महामानवीय व्यक्तित्व में प्रतिपालित होकर उनकी जीवन की धुरी को उच्चविचारों और उदात्त भावनाओं के ज्योतिस्फुलिंगों को सतत विकीर्ण करने वाली प्रकाश की ज्योति रेखा बना दिया यह यदि जानना

---

१. बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ पृ० १४२-४३

हो तो पिछले पचास वर्षों में उनके द्वारा लिखे गये साठ हजार से ऊपर के व्यक्तिगत पत्रों को पढ़ना अलम् होगा। पर इन अनेकानेक व्यक्तियों को इतनी लम्बी अवधि में लिखे गये इन सहस्रों पत्रों का संकलन कहाँ सुलभ होगा? "भारतीय संस्कृति के विविध परिदृश्य" पुस्तक में बाबू वृन्दावनदास जी ने प्रथम बार उनके कतिपय महत्वपूर्ण पत्रों की झाँकी हमें दी थी। 'अभिनन्दिनी' में चतुर्वेदी जी की विचारधारा को मैंने उन्हीं थोड़े से पत्रों से आकलित किया था। बाबू वृन्दावनदास जी अब चतुर्वेदी जी के शताधिक पत्रों का संकलन पुस्तककार निकालने जा रहे हैं। यह हिन्दी के लिए एक अपूर्व देन होगी। गाँधी, टैगोर, प्रेमचन्द, दीनबन्धु ऐण्ड्रूज, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि अनेक महान् व्यक्तियों एवं यशस्वी साहित्यकारों के पत्र चतुर्वेदी जी के पास संग्रहीत हैं। उन पत्रों का अपना मूल्य है। पर स्वयं चतुर्वेदी जी ने जो पत्र लिखे हैं उनकी उदात्त प्रेरणा जीवन के चिरन्तन मूल्यों की पोषिका है। हिन्दी अंग्रेजी दौनों में साथ साथ, नीली और लाल स्याही में लिखे गये उनके पत्र सीधी, सहज पर अचूक, जागरूक शैली के प्रतीक तो हैं ही, जीवन का मनमौजीपन और बड़ी-बड़ी चीजों को करने कराने और कर गुजरने की हौंस से भरा वर्चस्व उनका अद्भुत आकर्षण है। उनका संग्रह एक विशाल युग के विशाल हृदय की जीवन्त प्रेरणाओं का देदीप्यमान भाण्डागार है। हिन्दी जगत बाबूजी की इस कृति की उत्सुकता से प्रतीक्षा करेगा।"

साहित्याचार्य श्री श्यामसुन्दर बादल—"प्राचीनकाल में—रेलों के प्रचलन के पूर्व—समुचित सुविधा न होने के कारण सन्देशों का आदान प्रदान विश्वस्त दूतों द्वारा सम्पन्न किया जाता था सो भी बड़ी आवश्यकता होने पर। अतः संस्कृत साहित्य में पत्रों की चर्चा बहुत कम हुई है। महाकवि बाण (वि० सं० ६२९-६४४) ने कादम्बरी में कुछ पत्रों की चर्चा की है और डाकिए को 'लेख हारक' कहा है। पत्र की शैली संक्षेप में इस प्रकार है:

स्वस्ति! उज्जयिनीतः परम माहेश्वरः महाराजः तारापीड़ः सर्व सम्पदां आयतनं चन्द्रापीड़ं उत्तमाङ्गे चुम्बन् नन्दयति। कुशलिन्यः प्रजाः। कियानपि कालः भवतो दृष्टस्य गतः। बलवदुत्कंठितं नो हृदयम्। ततः लेखन-वाचन-विरतिरेव प्रयाणकालतां नेतव्या।"

हिन्दी में पत्रों का प्रारम्भ इसी शैली में हुआ। धीरे-धीरे पत्रों में नई शैली का प्रादुर्भाव हुआ। इसमें अनावश्यक शिष्टाचार-प्रदर्शन का नितान्त ही अभाव रहता है। छोटे से प्रिय संबोधन के साथ—कभी उसे भी छोड़कर काम की बात लिखदी जाती है। इस प्रकार कभी-कभी एक ही पंक्ति में पत्र

की समाप्ति हो जाती है। आवश्यकतानुसार इस शैली में भी बड़े-बड़े लम्बे पत्र देखे गये हैं। पत्रों के सम्बन्ध में एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि जिस हार्दिकता का परिचय विश्वस्त दूत भी नहीं करा सकते हैं उसे पत्र सामने उपस्थित कर देते हैं। 'पत्री आधा मिलन है' वाली बात सोलहो आना सत्य है।

सौभाग्य से अब पत्रों ने साहित्य के क्षेत्र में भी प्रवेश किया है एवं थोड़े ही समय में निम्न रचनाऐं सामने आ गई हैं—

"बापू के पत्र" 'विनोवा के पत्र', द्विवेदी पत्रावली, स्वामी विवेकानन्द पत्रावली, श्रद्धेय पं० बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र' नेहरू जी द्वारा संपादित कुछ पुरानी चिठ्ठियाँ एवं पिता के पत्र पुत्री के नाम, श्री बैजनाथ सिंह विनोद द्वारा सम्पादित द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र, एवं स्व० जमनालाल जी बजाज का पत्र व्यवहार तो पाँच भागों में प्रकाशित है। इसके पूर्व 'चन्द हसीनों के खुतूत' तथा और पहिले—भक्तिकाल में पदों में लिखी गई विनय-पत्रिका एवं सूरविनय पत्रिका भी पत्र विधा के ही एक रूप थे।

इस प्रकार हिन्दी गद्य के इस युग में इस नवीनतम पत्रविधा का भी उत्थान हो रहा है। राष्ट्रभाषा की समुन्नति में यह विधा भी अपना महत्व-पूर्ण योग देगी। सौभाग्य से अखिल भारतीय ब्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष साहित्य वारिधि बाबू वृन्दावनदास जी विख्यात पत्र-लेखक दादा जी (श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी) के पत्रों का सम्पादन कर रहे हैं। चतुर्वेदी जी के पत्र कितने शिक्षाप्रद एवं प्रेरणाप्रद होते हैं यह बात 'प्रेरक साधक' ग्रन्थ के पाठकों से छिपी नहीं है। अब यह संकलन पत्र-लेखन कला में हिन्दी प्रेमियों को मार्ग-दर्शन कराने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। सौ डेढ़ सौ पत्र तो उनके मेरे पास भी होंगे—अन्य कई महानुभावों के पास बहुसंख्यक पत्र होंगे, पर अग्रगामी होने का श्रेय तो सौभाग्यशाली को ही मिलता है। माननीय बाबूजी के इस सौभाग्य पर हमें गर्व है।

पत्रों का तिथिक्रम—प्रस्तुत संग्रह में चतुर्वेदी जी के वे पत्र हैं जो हमें सन् १९६७ के अन्तिम चरण से प्राप्त होना शुरू हुए हैं, इनसे पहिले प्राप्त हुए पत्रों पर हम एक लेख ब्रजभारती में प्रकाशित कर चुके हैं जिसको कि हम इस पुस्तक के परिशिष्ट अ में पुनः मुद्रित कर रहे हैं।

प्रकाश भवन, मथुरा.
दिनांक २६ जनवरी सन् १९७१.

—वृन्दाबनदास

डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के
पत्र
श्री वृन्दावनदास के नाम

डा० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

(१)

फीरोजाबाद

११-१०-६७

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी

कृपापत्र मिला और ब्रजभारती का अंक भी। बन्धुवर स्व० अग्रवाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए श्री श्रीराम शर्मा को मेरी ओर से हार्दिक बधाई भेज दीजिये। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि आगरा युनिवर्सिटी ने अग्रवाल जी पर शोधग्रन्थ तैयार करने की स्वीकृति इसलिये नहीं दी कि 'उनकी सृजनात्मक कृति क्या है? आगरा विश्वविद्यालय वालों के इस 'अकल अजीरन रोग' का इलाज होना चाहिये। शायद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा था, "चूरन खाते लाला लोग, जिनको अकल अजीरन रोग' पर अब व्यापार क्षेत्र के अतिरिक्त साहित्य क्षेत्र में भी यह रोग व्याप रहा है।

हिन्दी की ओजस्वी लेख शैली के प्रवर्तक गणेश जी पर भी शोधग्रन्थ तैयार करने की अनुमति नहीं मिली। मैंने सुना है कि इन अपराधों की जिम्मेदारी कुछ सुपरिचित महानुभावों पर है पर पक्की तौर पर पता लगाये बिना नाम कैसे लिए जा सकते हैं?

अमृतलाल जी तथा श्यामसुन्दर जी की कविताएँ छाप दीजिये। श्री बंशीधर शुक्ल मिन्यौरा, पो० आ० कैमहरा, खीरी-लखीमपुर की अवधी कविताएँ मजे की हैं।

सरस्वती ने अमृतलाल जी की कविता छाप दी है। मनोरंजन जी की भोजपुरी कविता 'फिरंगिया' ओजस्वितापूर्ण थी। मित्र जी की बुन्देली कविताएँ बड़ी सजीव हैं।

मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं।

बनारसीदास

(२)

फीरोजाबाद
१२-१०-६७

प्रियवर,

पत्र आपका ६-१०-६७ का प्राप्त हुआ। आप पूज्य बल्देव गुरु से मिल आये यह बहुत अच्छा हुआ और ११) गायों के लिए दे आये यह और भी अच्छा किया। आप उनके पास ब्रजभारती बराबर भेजते रहिये।

श्री श्यामसुन्दर बादल (राठ) का धन्यवाद का पत्र आया है। वे सम्मेलन के साहित्य महोपाध्याय हैं। बुन्देली फाग पर उन्होंने अच्छा शोधकार्य किया है और स्वयं छपाया भी है।

विनीत
बनारसीदास

(३)

फीरोजाबाद
१६-१०-६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

स्व० पं० पद्मसिंह जी शर्मा के संग्रह में नवनीत जी के दो पत्र मिले हैं। उनकी नकल आपको भेज दूँगा। यदि चाहें तो उनके फोटो भी तैयार कराये जा सकते हैं—एक पत्र दो पृष्ठ का है, दूसरा कार्ड है। कुल मिलाकर १०) १२) में कैबीनेट साइज के फोटो तैयार हो जायेंगे।

उनका ग्वाल कवि विषयक लेख, जिसे मीतल जी ने लिपिबद्ध किया था और जो विशाल भारत में छपा था, आपने देखा होगा। उसकी टाइप की हुई प्रति भी भेज सकता हूँ।

दिल्ली से उत्तरराम चरित (स० ना० कविरत्न) पर आधारित एक रूपक श्री रामनारायण जी अग्रवाल ने प्रसारित किया था। अच्छी चीज थी। मैं उन्हें बधाई का पत्र भेज रहा हूँ। आप भी भेजिये। मेरे मित्र श्रीव्रजशङ्कर वर्मा (सम्पादक योगी) अस्वस्थावस्था में हरिदास कम्पनी में पड़े हैं। वे कलकत्ते में मेरे साथ रहते थे। काम के आदमी हैं। उन्हें मिलकर मेरा आशीर्वाद कहिये। वे विहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान रह चुके हैं।

मैं चिन्तित हूँ। मेरे भानजे की बहू का पथरी का आपरेशन परसों आगरे में होने वाला है।

विनीत
बनारसीदास

(४)

फीरोजाबाद
२३-१०-६७

प्रियवर,

आप एक पत्र सादाबाद निवासी श्री पाराशर जी एम. ए. हिन्दी-विभाग एस० आर० के० कालेज फीरोजाबाद को डाल कर पूछ सकते हैं कि उन्होंने डा० वासुदेव शरण अग्रवाल पर शोध ग्रन्थ तैयार क्यों नहीं किया। यह सम्भव है कि वे संकोचवश स्पष्ट उत्तर न दे सकें। उन्हें अन्य्री विषयक कोई नीरस सब्जैक्ट दिया गया है। उन्होंने मुझे बतलाया कि यह तर्क विश्वविद्यालय वालों ने ही किया कि अग्रवाल जी में सृजनात्मक शक्ति नहीं थी।। ठीक-ठीक शब्द वे ही बतावेंगे।

श्री सरदारसिंह 'सैनिक' की पुत्री जो एम. ए. हैं गणेश जी पर शोध करना चाहती थी। उनसे कहा गया, "गणेश जो का कोई भी पाठ पुस्तकों में नहीं आता।" सरदारसिंह का पता आगरे में लग जायगा—शायद स्वदेशी बीमा नगर में रहते हैं।

सत्यनारायण कविरत्न पर अपना लेख भेज रहा हूँ। किदवई अंक भिजवाऊँगा। आजकल अशफाकुल्ला पर काम चल रहा है।

बनारसीदास

(५)

फीरोजाबाद
२५-१०-६७

प्रियवर,

यह आपने अच्छा किया कि श्री दिव्य जी से मिल आये। अर्द्ध शताब्दी का कार्यक्रम व्ययसाध्य न होना चाहिये, क्योंकि चन्दा करना आजकल बहुत कठिन है। सवासौ पृष्ठ की एक पुस्तक सत्यनारायण जी पर छप जाय तो गनीमत है।

हाँ, पन्द्रह-पन्द्रह रुपये के एन्लार्जमैण्ट (कविरत्न जी के चित्र के) ब्रजमण्डल के अनेक केन्द्रों पर रखवाये जा सकते हैं। भाषण भी हो सकते हैं। यू० पी० सरकार धाँधूपुर में उनकी कोठरी का जीर्णोद्धार ही करा दे तो बहुत समझिये। तुला (धाँधूपुर के पास के ग्राम) में हाईस्कूल की नींव

पड़ जानी चाहिये और उसे कविरत्न जी का नाम दिया जा सकता है। उस अवसर पर ब्रजभाषा तथा ब्रजमण्डल की उन्नति के लिए भी कोई ठोस कदम उठाया जाय।

विशाल हरियाणा का तूफाने बदतमीजी बढ़ रहा है। उन लोगों ने ब्रजभूमि को कोई अनाथ विधवा समझ लिया है जिसे चाहे जहाँ ढकेला जा सकता है। उन लोगों के इस अहमकपन का विरोध तो होना ही चाहिये। इस बहाने ब्रजवासियों में कुछ जाग्रति की जा सकती है।

श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी से भी मिल लिये, यह अच्छा हुआ। ब्रजसाहित्य मण्डल के लिये जो भी कार्य आप कर रहे हैं वह चुंगी के काम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

शेष फिर

बनारसीदास

(६)

फीरोजाबाद
१-११-६७

प्रियवर,

डा० सत्येन्द्र जी की पुस्तक की Free - frank and fair आलोचना होनी चाहिये—विनम्रतापूर्ण, पर बावन तोले पावरत्ती सही। 'दोषो वाच्या गुरोरपि।'

हमें जल्दी में कोई भी चीज न छपानी चाहिये। महत्वपूर्ण ग्रन्थों को प्रेस में देने के पहिले समानशील अधिकारी व्यक्तियों से परामर्श लेने में कोई घाटा नहीं। जब मैं ब्रजसाहित्य मण्डल का सभापति बना था तो अपने भाषण को मैंने पेशगी कई व्यक्तियों को सलाह मशविरे के लिए भेज दिया था। श्री विजय राघवाचार्य ने नागपुर के कांग्रेस प्रेसिडैण्ट बनने के पहिले सी० एफ० एन्ड्रयूज से परामर्श लिया था।

आलोचना के पूर्व यह लिखना न भूलिये कि पुस्तक के महत्व को देखते हुए हमने उसे खरीद लेना ही उचित समझा। दरअसल यह पुस्तक आलोचनार्थ ब्रजभारती में पहुँचनी चाहिये थी।

आगरे वालों ने सत्यनारायण कविरत्न पर मेरी वार्ता मँगाई थी। मैंने अपना लेख जो पोद्दार ग्रन्थ में छपा था, टाइप कराके भेज दिया। उसमें मैंने

ब्रजसाहित्य मण्डल का भी उल्लेख कर दिया है। निस्सन्देह सत्येन्द्र जी ने मण्डल की उल्लेखयोग्य सेवा की है, पर मण्डल के सहयोग से उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विकास में सहायता भी मिली है।

श्री हजारीप्रसाद जी द्विवेदी आगरे गये थे और सैण्टजान्स कालेज में आपकी सुपुत्री से भी उन्होंने बात की थी। मेरा भी उन्होंने उल्लेख किया।

विनीत
बनारसीदास

(७)

फीरोजाबाद
१४-११-६७

प्रियवर,

पत्र मिला। एक प्रश्नावली आप छपा लें—(१) ब्रज प्रान्त का अलग निर्माण होना चाहिये या नहीं ? (२) यदि नहीं तो क्यों नहीं ? यदि हाँ तो उसके लिए क्या क्या उपाय किये जाने चाहिये।

भूमिका में विशाल हरियाणा तथा विशाल दिल्ली का जिक्र आप कर सकते हैं। इस प्रकार कुछ चर्चा ही चलेगी। एक सौ पत्रों में यदि दस उत्तर भी छापने लायक आ गये तो ठीक।

श्री राजेन्द्र रंजन जी का कार्ड मिला है। उत्तर दे दिया है।

मेरा स्वास्थ्य कुछ ऐसा ही चल रहा है। यदि आप इसी प्रकार काम करते रहे तो ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ता बन जायेंगे पर उसमें समय तो लगेगा ही।

विनीत
बनारसीदास

(८)

फीरोजाबाद
४-१२-६७

प्रियवर,

अलग बुकपोस्ट द्वारा ३ दिसम्बर के सैनिक में प्रकाशित अपना लेख भेज रहा हूँ। चूँकि आगरे में मीटिङ्ग भी उसी दिन होने वाली थी, इसलिये समय पर लेख का निकल जाना जरूरी था। भेजा तो था अमर उजाला को भी, पर वह नहीं छाप सका।

ब्रजप्रान्त बने या न बने, पर इस बहाने कुछ साहित्यिक चर्चा तो हो ही जायगी। ब्रजभारती का भी लेख में उल्लेख कर दिया है।

विनीत
बनारसीदास

(९)

फीरोजाबाद
२८-१२-६७

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

आपकी सद्भावनाओं के लिये बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। हम लोगों को मिलकर ब्रज जनपद की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उन्नति के लिए भरपूर प्रयत्न करना चाहिये। यद्यपि ७६ वीं वर्ष में मैं अधिक श्रम तो नहीं कर सकता, तथापि जो भी सहयोग आपको दे सकूँगा दूँगा। आप इस यज्ञ के प्रधान 'होता' बन जावें। आप आगे चल पड़ेंगे तो अनुयायी भी धीरे-धीरे मिलते ही जायेंगे। ध्रुव का किस्सा आपको मालुम ही होगा। आप किसी दिन आगरे के निकट के छलेसर के बबूल वन को जरूर जरूर देखो। श्रीराम जी शर्मा का नवजीवन फार्म आगरे से २१ मील दूर उसाइनी के पास था। भूमि संरक्षण का वह कार्य महत्वपूर्ण है और आपसे एक सचित्र लेख का अधिकारी है। कृपया बनमन्त्री विकल जी को लिखिये तो कि मेरे दो बार प्रार्थना करने पर भी भूमिसंरक्षण अधिकारी ने मुझे पत्रों का उत्तर भी नहीं भेजा। आगरे के पास आमों का भी एक उपवन था। शायद ७ मील दूर। उसे भी देखिये। मुझे एक लेख श्री मीतल जी के कार्य पर लिखना है। Points भेजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१०)

फीरोजाबाद
१६-१२-६७

प्रियवर,

(१) यदि श्री कृष्णानन्द गुप्त पो० गरोठा जिला झाँसी आपकी फ्री लिस्ट में न हो तो अगले अंक से उनका नाम जोड़ दीजिये।

(२) ब्रजप्रान्त निर्माण विषयक मेरा लेख यदि छपे तो कुछ रिप्रिन्ट्स जरूर भेजिये। सैनिक ने नहीं भेजे।

(३) श्री मीतल जी के कार्य पर कुछ Notes मुझे लिख भेजिये।

(४) चर्चिल के पास ६ सहायक लेखक थे, पर मेरे पास एक भी नहीं। हाँ, दो घण्टे के लिए एक सज्जन पधारते हैं, जो कुछ नकल कर देते हैं।

(५) ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण तो कर ही डालना चाहिये।

(६) श्रीधर पाठक जी, सत्यनारायण जी तथा वासुदेव शरण जी के कैबीनेट साइज के चित्र जगह-जगह होने चाहिये।

बनारसीदास

(११)

फीरोजाबाद

३०-१२-६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

नवीन वर्ष आपको सुखप्रद हो।

आपको मेरा लेख पसन्द आया, यह जानकर सन्तोष हुआ। चिरंजीव बुद्धि प्रकाश ने, जो नैनीताल में इतिहास का अध्यापक है, ब्रजप्रान्त निर्माण आन्दोलन के विरोध में मुझे लिखा है। उसे इस आन्दोलन में राजनैतिक गड़बड़ घोटाला की गन्ध आती है। दरअसल कारण यह है कि इस प्रकार के आन्दोलन प्रायः महत्त्वाकांक्षी निराश या Frustrated राजनैतिक नेताओं द्वारा ही उठाये गये हैं। मैं स्वयं ब्रजप्रान्त के अलग बनने का विरोधी था और मैंने मथुरा में यह बात कही भी थी, पर इस बारे में मुझे पुर्नविचार करना पड़ा है। मैं कोई राजनैतिक आदमी नहीं। शुद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से ही विचार करता हूँ।

लोग 'प्रान्तीयता' और प्रान्त प्रेम' में भेद नहीं कर पाते ! ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर प्रदेश आगे चलकर दो भागों में बँटे बिना नहीं रह सकता। तब पश्चिमी भाग का नाम ब्रजप्रदेश किया जा सकता है। पर केवल नाम रखने से तो कुछ काम नहीं चल सकता। ब्रज की जनता में अपने जनपद के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है। जब तक हम लोग जो बुद्धिजीवी हैं, पारस्परिक विचार परिवर्तन करके एक दूसरे के निकट नहीं आते तब तक प्रान्त निर्माण की बात हवा में ही रह जायगी। हम में से सभी को कुछ न कुछ त्याग कुछ न कुछ परिश्रम अपने जनपद के लिये करना पड़ेगा। जिसके प्रेस हैं वह कुछ

छपाई का काम करे, लेखक या कवि कुछ लेख या कविता करें, धनवान धन दें और शारीरिक श्रम करने वाले कुछ मेहनत ही करें।

✓ब्रज के लेखकों तथा कवियों की एक Directory भी तैयार करनी है।

Regionalism पर जो भी साहित्य आपको हिन्दी अंग्रेजी में मिले उसे पढ़िये। आचार्य वासुदेव शरण जी की पृथिवी पुत्र तो हमारी बाइबिल ही है। PROF. Geddes इसके महान प्रवर्तक थे। उनका रेखाचित्र मैंने 'हमारे आराध्य' में प्रस्तुत किया था। उसे कृपया पढ़ लीजिये।

हिन्दी आन्दोलन को रचनात्मक दिशा में प्रवर्तित करना चाहिये, पर कौन सुनेगा? राजस्थान, उत्तर प्रदेश बिहार मध्य प्रदेश तथा हरियाना और दिल्ली मिलकर कोई रचनात्मक काम क्यों शुरू नहीं कर देते? अकेले यू. पी. का बजट ही १ अरब २६ करोड़ का था। क्या वह अग्रसर होकर इन ५।६ राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की मीटिङ्ग नहीं कर सकता? अकेले प्रयाग तथा काशी की संस्थाओं को कुछ मदद देने से काम नहीं चल सकता। ना. प्र. सभा आगरा, ब्रज साहित्य मंडल इत्यादि संस्थाओं को भी भरपूर सहायता मिलनी चाहिये।

मेरा यह सुझाव है कि सत्यनारायण कविरत्न की मृत्यु की अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर इस बारे में एक विस्तृत आयोजना तैयार कर ली जाय। बम्बई में जो ब्रजवासी रह रहे हैं उनसे भी चर्चा कीजिये। और कुछ नहीं तो दस बीस ग्राहक ही ब्रजभारती के बनाइये। ब्रजवासी जहाँ जहाँ रह रहे हैं, वहीं ब्रज, मान लेना चाहिये। बकौल नजीर :

जा पड़े याद में उस शोख की जिस बस्ती में
वही गोकुल है हमें और वही वृन्दाबन।
वही है तख्त, वही फर्श, वही सिंहासन

अलीगढ़ के अक्षय कुमार जी जैन और यशपाल जी जैन से भी इस आन्दोलन में मदद लेनी है—मेरा अभिप्राय नैतिक सहायता से है।

और कुछ लाभ भले ही न हो, पर ब्रजभाषा का Revival या पुनर्जीवन अवश्यंभावी है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के श्री रामप्रसाद त्रिपाठी तो ब्रजभाषा के अनन्य प्रेमी हैं। उन्हें भी फाँसना (!) है—प्रेम जाल में।

मैनपुरी का चतुर्वेदी पुस्तकालय—वहाँ के श्री उमरावसिंह जी पाण्डे—और डा० सत्येन्द्र (जयपुर) से सम्बन्ध स्थापित करना है।

डा० अग्रवाल जी के कुछ पत्र सम्मेलन पत्रिका में छप गये हैं। उनको तथा अन्य पत्रों को भी संग्रह करके छपवाना है। श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार को मैंने पत्र लिखा था, पर वे अस्वस्थ हैं। उत्तर नहीं दे सके। उनके सुपुत्रों ने भी उत्तर नहीं दिया। हाँ उनमें से एक मेरी गैर हाजिरी में यहाँ पधारे अवश्य थे। श्री बल्देवगुरु जी को 'पद्म श्री' दिलवाना तो अब निरर्थक होगा।

आप—बागची साहब, हरिशङ्कर शर्मा, दिव्यजी प्रभृति से निरन्तर सम्पर्क स्थापित रक्खें, क्योंकि स. ना. कविरत्न की अर्द्धशताब्दी के यज्ञ में उनसे मदद मिलेगी। भाई महेन्द्र जी तो बीमार रहते हैं।

इधर मेरा दिमाग भी चकराने लगा है, पर मैं Sir Thomas Lipton का अनुयायी हूँ। लिप्टन साहब एक जहाज में यात्रा कर रहे थे कि उसके डूबने की आशङ्का हो गई। वे सोडावाटर की बोतलों में 'लिप्टन की चाय पियो' 'लिप्टन की चाय पियो' भर भर कर समुद्र में फेंकने लगे— इस उम्मेद में कि वे बोतलें कहीं न कहीं किनारे लगेंगी और उनकी चाय का प्रचार होगा! मैं भी पत्रों द्वारा अपने स्वास्थ्य की इस दशा में भी यही काम अपनी ब्रजभूमि के लिये करना चाहता हूँ। ब्रजभूमि मेरी पितृभूमि भी है। मेरे पिताजी का जन्म सन् १८५२ में चूना कंकड़ मुहल्ले में हुआ था। हमारा मकान अब वकील महेन्द्र जी के पास है।

मैं अपनी डाक्टरी परीक्षा कराने दिल्ली जाने की सोच रहा हूँ। प्रातः काल कुछ पत्र लिख देता हूँ—बस! मुझे विश्राम चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—हमें लोक-संग्रह की भावना से काम लेना है।

एटा के Arya Inter College के प्रिंसीपल श्री मलखान सिंह सीसोदिया उत्साही व्यक्ति हैं। उनसे सम्पर्क स्थापित करें।

यहाँ स. ना. कविरत्न के इकरंगे Enlargement ८-८, १०-१०) रुपयों में तैयार हो सकते हैं। अप्रैल में जगह-जगह उनका उद्घाटन कराइये और ६५) में तिरंगा चित्र भी अपने कार्यालय में टाँगिये।

भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति को भी खट-खटाइये। प्रान्त बने या न बने, पर हम ब्रजवासियों में पारस्परिक सौहार्द्र तो रहना ही चाहिये।

ब्रज में जितने प्रेसाध्यक्ष हैं क्या वे मिशनरी ढङ्ग पर दो चार बुलैटिन भी नहीं छाप सकते?

बिना स्वार्थ त्याग के ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण नहीं हो सकता।

छलेसर का बबूल वन आप जरूर-जरूर देखें और उस पर लिखें भी गोवर्द्धन के वन के विषय में भी लिखिये।

बनारसीदास

(१२)

फीरोजाबाद
२५-१-६८

प्रियवर,

पत्र* छाप देने के लिए कृतज्ञ हूँ। आपके लेख की प्रशंसा में दो चिट्ठियाँ भी मुझे मिली हैं। मैं तो सुधासिन्धु या डोंगरे के बालामृत की तरह विज्ञापित हो चुका हूँ।

अमर उजाला तथा सैनिक को एक छोटा सा लेख—प्रशंसनीय परम्परा कल भेजा है। वह स्थानीय कवियों तथा लेखकों के अभिनन्दन के विषय में है।

सत्यनारायण कविरत्न की अर्द्धशताब्दी के यज्ञ को अब विधिवत् शुरू कर दीजिये। श्री चातक जी C/o श्री हृषीकेश चतुर्वेदी चौबे जी का कटरा किनारी बाजार आगरा को देशभक्त होरेशस की प्रति भेंट कर दीजिये। श्री श्यामसुन्दर खत्री को भी। क्या फीरोजाबाद में ब्रजभारती के १०-१२ ग्राहक नहीं बन सकते ? भाई ओउम् यदि प्रयत्न करें तो मुश्किल नहीं।

आगरा (बाग मुजफ्फर खाँ) के श्री तोताराम पंकज मेरे बारे में साहित्यालोक का एक छोटा सा अङ्क ही निकाल रहे हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१३)

फीरोजाबाद
२८-१-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं नवीन पत्र-ब्रजप्रदेश निकालने के पक्ष में नहीं, क्योंकि वह चल नहीं सकेगा। इस प्रकार के घाटे के सौदे करने से साहित्य प्रेमियों को रोकना

* इससे आशय उस लेख से है जो "श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र" शीर्षक से ब्रजभारती में छपा था और जो इस ग्रन्थ का परिशिष्ट 'अ' है।

चाहिये। हाँ उनके उत्साह की प्रशंसा अवश्य की जाय। जो महानुभाव ऐसा करना चाहें, वे चार छै पृष्ठ ब्रजभारती के सप्लीमेंण्ट के तौर पर अपने खर्च से निकाल सकते हैं, अलग से पैसा क्यों बर्बाद करें ?

ब्रजभारती के घाटे की पूर्ति कैसे होती है ? कहीं आप पर ही तो सारा बोझ नहीं पड़ता ? मण्डल को अपना मकान कब तक मिलेगा ?

कभी यहाँ पधार कर सत्यनारायण जयन्ती के लिये क्षेत्र तैयार कीजिये। मैं यात्राऐं नहीं कर पाता। कविरत्न जी की जयन्ती में क्या श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी से सहयोग नहीं मिल सकता है ? श्री शिवदत्त चतुर्वेदी एम. ए. छिपैटी इटावा से सम्पर्क कीजिये।

एक पत्र केन्द्रीय सूचना मन्त्री श्री के. के. शाह को ब्रजसाहित्य मण्डल की ओर से तुरन्त जाना चाहिये जिसमें रेडियो द्वारा सत्यनारायण कविरत्न पर विशेष प्रोग्राम रखवाने का अनुरोध किया जाय। 'ब्रजभारती' का विशेषाङ्क तो उस समय छपना ही चाहिये। उसकी तैयारी अभी से कीजिये। तीन महीने ही बाकी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१४)

फीरोजाबाद
३०-१-६८
बापू निर्वाण दिवस

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! 'ब्रजभारती' में आपका सुन्दर लेख पढ़ा। आप एक बात भूल गये, जो ब्रज में उत्पन्न एक महापुरुष—भगवान श्री कृष्ण ने कही थी

"दरिद्रान भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरं धनम्"।

'हे कुन्तीनन्दन गरीबों का पालन करो, ऐश्वर्य वालों को धन मत दो"

सो आपने तो मेरे जैसे विज्ञापित व्यक्ति को और भी विज्ञापन देकर भगवान के आदेश की अवहेलना की है ! पेट भरे चौबे को मिठाई खिलाई है !

'ब्रजप्रदेश' मिल गया है। उसे जीवित रहना चाहिये।

आपका विस्तृत पत्र परसों मिला था, आज फिर मिला है।

अब मेरे पास इतनी चिट्ठियाँ आने लगी हैं कि उनका उत्तर बिना किसी पूरे वक्त काम करने वाले सहायक के नहीं दे सकता। क्या किया जाय, लाचार हूँ।

शेष बातें अगले पत्र में लिखूँगा आपका भाषण सर्वथा उचित रहा।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—डा० नगेन्द्र Hindi Dept. Delhi University की शायद ३३ वर्ष पुरानी कविता भेजता हूँ।

इसे आप उन्हें भेज सकते हैं और ब्रजभारती में छापने की अनुमति भी माँग सकते हैं। उनसे कविरत्न अर्द्धशताब्दी पर सहयोग भी लीजिये। वे भी अलीगढ़ जिले के ही हैं जहाँ कविरत्न ने जन्म लिया था।

दूसरे पते भी भेजूँगा।

कविरत्न जी के विषय में मुख्य मीटिङ्ग तो आगरे में ही होनी चाहिये, पर फुटकर सभाएें सभी जगह हो सकती हैं।

डा० सत्येन्द्र ने हृदय तरङ्ग की भूमिका लिखी थी। उन्हें भी लिखिये। बागची जी को भी साथ लेना है।

डा० नगेन्द्र से पूछिये तो कि सत्यनारायण के उत्तर रामचरित तथा मालती माधव को कहाँ छपाया जाये। तोरा वाले हाईस्कूल के लिये चन्दा शुरू कर दें।

भाई अमृत लाल चतुर्वेदी का अभिनन्दन होना चाहिये। यह भी बहुत आवश्यक है, बहुत काम किया है उन्होंने। और उनका विस्तृत परिचय डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी शीतला गली आगरे से लिखवाइये। वे श्री अमृतलाल जी के जामाता हैं। बहुत योग्य हैं। ना. प्र. सभा में जान डाल दी है।

बनारसीदास

अंजलि*

आज हृदय में उथल-पुथल है उठती शोक हिलोर।
किस अतीत की कोर चमकती है अनन्त की ओर॥
कैसे मेरे व्यथित हृदय में उमड़ वेदना आई।
किसकी मधु मूरति आँखों में बनकर चित्र समाई॥

---

* पत्र में उल्लिखित डा० नगेन्द्र जी की कविता

जाना ! जाना ! तुझे अरे जीवन असार ! पहचाना ।
तुझे सदा रहता है बनना बनकर बिगड़ सताना ।।
हे हिन्दी के लाल ! कन्त कविता कामिनि के प्यारे ।
विद्यालय के गर्व ! सदा ही प्रातः पूज्य हमारे ।।
व्रजभाषा की मधुर कोकिले । हे भवभूत्यवतार ।
दीन हीन हम तुझे चढ़ाते अश्रुकणों का हार ।।
कविवर । तेरा चित्र खींच कर चतुर चितेरा लाया ।
मानो सौम्य सुशील प्रेम ही स्वयं मूर्तिधर आया ।।
अथवा हिन्दी प्रीति अनूठी यहाँ सनी लिपटी है ।
किम्वा पुंजीभूत माधुरी व्रज की चित्रपटी है ।।
चुन-चुन अनुपम कुसुम विधाता गूँथ रहा है हार ।
शीघ्र राष्ट्रभाषा हिन्दी को दे देगा उपहार ।।

नगेन्द्र 'अमल'

(सेन्टजान्स कालेज, आगरा में कविरत्न पं० सत्यनारायण के चित्रोद्घाटन के सुअवसर पर पढ़ी हुई)

(१५)

C/o डाक्टर रामगोपाल चतुर्वेदी
मकान नं० १११७ सैक्टर ८ रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली-२२
१-३-६८

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! मैं यहाँ १८ को आ गया था । Prostrate glands की डाक्टरी जाँच करानी थी, सो करा ली । पौरुष ग्रन्थि तो बढ़ी हुई है ही, किडनी में तीन पथरी भी हैं । खैर, यह तो शरीर की व्याधियाँ हैं—लगी ही रहती हैं और ७६ वीं वर्ष में स्वाभाविक भी हैं, पर हिन्दी जगत जिस आधि व्याधि से पीड़ित है, वह निःसन्देह चिन्ता का विषय है । हिन्दी संसार का नेतृत्व गलत हाथों में पहुँच गया है । इस समय हम सबको मिलकर ध्वंसात्मक या खण्डनात्मक नीति का परित्याग करके रचनात्मक कार्य प्रारम्भ कर देने चाहिये । आप **संक्षेप में** अपने विचार **साप्ताहिक हिन्दुस्तान** को लिख भेजें । मैं अभी दो चार दिन यहाँ हूँ । व्रजसाहित्य मँडल के मकान या कोठी का

क्या हुआ ? भाई हरिशङ्कर जी की बीमारी से चिन्ता रही। यह पढ़कर सन्तोष हुआ कि उनकी हालत अब धीरे-धीरे सुधर रही है।

विनीत

बनारसीदास

उपरोक्त पत्र के साथ चतुर्वेदी जी ने हमें साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २५ फरवरी, १९६८ के अंक में प्रकाशित अपने लेख का पुनर्मुद्रण भेजा था उसे हम ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं। इस लेख के माध्यम से हमें चतुर्वेदी जी के उन विचारों का बोध हो जाता है जिनके द्वारा वे हिन्दी आन्दोलन को एक रचनात्मक मोड़ देना चाहते हैं। —सम्पादक

हिन्दी-आन्दोलन को नया मोड़

हमें मातृभाषा हिन्दी में सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि करनी होगी

—बनारसीदास चतुर्वेदी

गतवर्ष हिन्दी के पक्ष तथा विपक्ष में जो आन्दोलन उत्तर तथा दक्षिण भारत में हुए, उनके विरोध अथवा समर्थन में हमें कुछ नहीं कहना, फिर भी हम इतना निवेदन अवश्य करेंगे कि वे दुर्भाग्यपूर्ण थे और उनसे शक्ति का अपव्यय तो हुआ ही—देश के धन तथा समय की भी जबर्दस्त क्षति हुई—पर इन सबसे अधिक भयंकर दुष्परिणाम यह हुआ कि उत्तर तथा दक्षिण की जनता के बीच मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया। इस वक्त किसी पर भी दोषारोपण करने से कुछ भी लाभ न होगा। सर्वोत्तम तरीका यही है कि हम हिन्दी-भाषा-भाषी हिन्दी-प्रचार की चिन्ता छोड़ कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति रचनात्मक कार्यों में लगा दें।

सन् १९३८ में भी, जब मद्रास में हिन्दी-विरोध की आवाज उठाई गई थी, हमने एक लेख इसी आशय का 'प्रताप' में लिखा था। हम यह दावा नहीं करते कि उस समय जो कुछ हमने कहा था, वह बिल्कुल ठीक था, अथवा जो प्रस्ताव हम इस समय रख रहे हैं वही वर्तमान गतिरोध का सर्वोत्तम इलाज है। हमें विनम्रतापूर्वक इतना ही कहना है कि हिन्दी-आन्दोलन के खण्डनात्मक तरीके को हमने आजमा लिया, अब रचनात्मक तरीके को भी मौका दिया जाए। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी यह आवश्यक प्रतीत होता है कि हमारे नवयुवकों में हिन्दी के प्रति जो उत्साह उत्पन्न हुआ है, उसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में कर लेना चाहिए।

सबसे प्रथम हमें गम्भीरतापूर्वक वर्तमान परिस्थिति पर विचार कर लेना चाहिए। यह बात हमें समझ लेनी चाहिए कि कितने ही प्रतिष्ठित अहिन्दी-भाषा-भाषियों के मन में हिन्दी वालों की सद्भावना में ही सन्देह रहा है। उनके मन में यह आशंका रही है कि हम अपनी भाषा को दूसरों पर लाद देना चाहते हैं। स्वयं गुरुदेव (कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर) ने हमसे कहा था—

"आप हिन्दी की तलवार हमारे सिर पर क्यों लटकाते हैं ? अपनी भाषा में आप सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि कीजिए, फिर हम सब लोग हिन्दी पढ़ेंगे।"

स्वर्गीय रामानन्द चट्टोपाध्याय के विचार भी इससे मिलते-जुलते थे। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था—

"कराची कांग्रेस में जब एक सिन्धी सज्जन सिन्ध के विषय में भाषण देना चाहते थे, तब कुछ हिन्दी वालों ने हिन्दी-हिन्दी चिल्ला कर उन्हें बोलने से रोका ! यह तो बहुत गलत बात है कि किसी सिन्धी को अपने प्रदेश में ही अपनी भाषा में न बोलने दिया जाए; और सो भी तब, जब वह सिन्ध के पृथक्-करण के प्रश्न पर बोलना चाहता हो।"

यह बात ध्यान देने योग्य है कि कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर हिन्दी के समर्थक थे, उसके शुभचिन्तक थे और रामानन्द बाबू को तो हिन्दी-पत्र 'विशाल भारत' में पचहत्तर हजार रुपयों का घाटा सहना पड़ा। ऐसे महा-पुरुषों की सद्भावना में हमें कोई आशंका न करनी चाहिए। स्वयं गुरुदेव ने कबीर की एक सौ कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया था और वह हिन्दी के सन्त कवियों के अत्यन्त प्रशंसक थे। शान्ति निकेतन मे उन्होंने हिन्दी-भवन की स्थापना में भरपूर सहयोग दिया था।

गुरुदेव की चुनौती

गुरुदेव की इस चुनौती को "आप लोग अपनी भाषा में महत्वपूर्ण साहित्य की सृष्टि करें, तो हम सभी हिन्दी पढ़ लेंगे" हमें श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए।

आज से पांच-छह वर्ष पूर्व दिल्ली में बन्धुवर चन्द्रगुप्त विद्यालंकार से इसी विषय पर हमारी बातचीत हुई थी और हमारे आग्रह पर उन्होंने रच-नात्मक कार्य के लिए एक आयोजना तैयार की थी, उसकी एक प्रति हमने राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री सम्पूर्णानन्द की सेवा में भेज दी थी !

उनका जो उत्तर आया, उसका सारांश इस प्रकार है। "आप दिल्ली में बैठे-बैठे राज्यपाल पर हुक्म चलाते हैं कि यह कर दीजिए, वह कर दीजिए ! यहाँ आकर बात क्यों नहीं करते ?" खेद है कि अपने प्रमादवश मैं जयपुर नहीं जा सका और मामला जहाँ का तहाँ पड़ा रहा ! अब पांच वर्ष बाद उसी प्रश्न को फिर से उठाना आवश्यक हो गया है।

इस यज्ञ को प्रारम्भ करने के पहले हमें कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लेने चाहिए।

(१) जो लोग खण्डनात्मक प्रवृत्तियों को जारी रखना चाहते हों, वे खुशी से उन्हें जारी रखें, हम उन्हें रोकना नहीं चाहते, क्यों कि हमारे कहने से वे रुकेंगे भी नहीं। हाँ, हम इस रचनात्मक यज्ञ में उनका सहयोग नहीं लेना चाहते। राजनीतिक दलबन्दी से हम इसे बिल्कुल दूर ही रखना चाहते हैं।

(२) इसका संचालन मुख्यतया साहित्यिक तथा सांस्कृतिक व्यक्तियों के हाथ में रहना चाहिए।

(३) पद-लोलुपता से बचने के लिए यही सर्वोत्तम होगा कि किसी एक व्यक्ति को संयोजक बना दिया जाए और वह अपने समानशील तथा परस्पर-पूरक सहयोगियों को चुन ले।

(४) हमारे यहाँ एक कहावत है 'तालाब खुदा नहीं कि मगर आ कूदे।' इस साहित्य-सरोवर को मगरमच्छों से बचाने का भरपूर प्रयत्न किया जाए।

कुछ प्रारम्भिक कार्य

दिल्ली में साहित्यिकों की एक छोटी-सी सभा बुला ली जाए, पर उस से भी पूर्व एक गश्ती चिट्ठी घुमा दी जाए, ताकि हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखकों, कवियों, प्रकाशकों और शुभचिन्तकों के विचारों का पता लग जाए। वाद-विवादों से बचने का सर्वोत्तम तरीका यही है कि समानशील व्यक्तियों का ही सहयोग लिया जाए।

पहले तो हमें सम्पूर्ण हिन्दी-जगत की रचनात्मक शक्तियों का सर्वेक्षण कर लेना चाहिए, जो महान कार्य हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग तथा नागरी प्रचारिणी-सभा, काशी द्वारा हुआ है, वह तो जग-जाहिर है, पर देश भर में फैली अन्य पचासों ही छोटी-मोटी हिन्दी-संस्थाओं के कार्य की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया। उदाहरण के लिए इन्दौर की मध्यभारत - हिन्दी-साहित्य-समिति, हैदराबाद की हिन्दी-प्रचार-सभा, मुजफ्फरपुर का सुहृद संघ,

टीकमगढ़ की वीरेन्द्र केशव-साहित्य-परिषद्, आगरे की नागरी-प्रचारिणी-सभा, आरा की नागरी-प्रचारिणी-सभा और **मथुरा का ब्रजसाहित्य-मंडल तथा** भरतपुर की हिन्दी-साहित्य-समिति आदि के नाम लिए जा सकते हैं। उनके सिवा हिन्दी-जगत में बीसियों ही ऐसी संस्थाऐं विद्यमान हैं, जिनके द्वारा भूतकाल में काफ़ी काम हुआ है और जिनकी अन्तःनिहित शक्ति का यदि सदुपयोग किया जाए तो हिन्दी-जगत में युगान्तर उपस्थित हो सकता है।

ब्रज साहित्य-मण्डल के हाथरस वाले अधिवेशन के समय जो जनपदीय परिषद् कायम हुई थी, उसे भी पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। वस्तुतः वह तो अखिल भारतीय संस्था थी। आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल हमारे पथ-प्रदर्शक थे। उनके निधन से केवल हिन्दी जगत की ही नहीं, समस्त देश की बड़ी हानि हुई है। सौभाग्य से उनका लिखा ग्रन्थ 'पृथिवी पुत्र' मौजूद है और उससे हमें बहुत प्रेरणा मिल सकती है। बिहार की राष्ट्रभाषा परिषद् ने और उत्तर प्रदेश के सरकारी प्रकाशन-गृह ने जो साहित्य-सृष्टि की है, उसकी शतमुख से प्रशंसा करनी चाहिए। यदि अन्य हिन्दी-भाषी राज्य भी उनका अनुकरण करें तो बहुत काम हो सकता है।

हिन्दी-जगत के विश्वविद्यालयों में जो हिन्दी-विभागाध्यक्ष हैं, वे यदि चाहें तो हिन्दी-आन्दोलन को रचनात्मक मोड़ देने में बहुत सहायक हो सकते हैं। यदि पूरी-पूरी तैयारी के साथ इस शुभ कार्य को प्रारम्भ किया जाए तो सर्वश्री हजारी प्रसाद जी द्विवेदी, धीरेन्द्र वर्मा, नगेन्द्र जी, सत्येन्द्र जी, विनय मोहन शर्मा, दीनदयाल गुप्त प्रभृति विद्वान इस यज्ञ के होता बन सकते हैं।

श्रद्धेय पं० झाबरमल्ल शर्मा, भाई हरिशंकर शर्मा और बन्धुवर हरिभाऊ जी उपाध्याय अपने घर के आदमी हैं और उनका सहयोग सुनिश्चित है। पर प्रश्न यह है कि इस यज्ञ का प्रारम्भ कौन करे ? दिल्ली में राष्ट्रकवि दिनकर जी, बन्धुवर बच्चन जी, डा० प्रभाकर माचवे, श्री विष्णु प्रभाकर, श्री यशपाल जैन, श्री मन्मथनाथ गुप्त, भाई जगदीश चतुर्वेदी और श्रीमती सत्यवती मलिक को आगे बढ़कर इस प्रश्न पर विचार तो कर ही लेना चाहिए। भाई चन्द्रगुप्त विद्यालंकार तो अपनी सम्पूर्ण शक्ति इस यज्ञ में लगा सकते हैं। हमें विश्वास है कि सभा इत्यादि के लिए दिल्ली की हिन्दी-संस्थाओं की सेवाऐं इस यज्ञ को समर्पित हो सकेंगी।

हमें किसी से झगड़ा नहीं करना। यदि तमिल प्रदेश वाले अथवा बंगाली भाई अंग्रेजी को अनन्त काल के लिए अपने यहाँ रखना चाहें तो खुशी

से रख सकते हैं। हमें पूर्ण सहिष्णुता तथा दूरदर्शिता की नीति से काम लेना है। किसी पर भी हमें जोर-जबर्दस्ती नहीं करनी और सब की निस्स्वार्थ सेवा में ही अपना कल्याण मानना है।

भारत की सभी मुख्य-मुख्य भाषाऐं राष्ट्रभाषा हैं और उनका गौरव भी सर्वथा समान ही है, पर हिन्दी उनकी बड़ी बहन है और उसका कर्तव्य है कि वह छोटी बहनों की सेवा करे, लेकिन सेवा करने से पूर्व उसे सशक्त तथा समृद्ध बनना है। समस्त हिन्दी-जगत में क्या पन्द्रह-बीस व्यक्ति भी ऐसे न निकलेंगे जो अपने समय तथा शक्ति का एक अंश इस महान यज्ञ को अर्पित कर दें? अपनी मातृ-भाषा हिन्दी में हमें सर्वोत्कृष्ट साहित्य की सृष्टि करनी है और भारत की अन्य भाषाओं से ही नहीं, वरन संसार की मुख्य-मुख्य भाषाओं से भी उच्च कोटि के ग्रन्थों का अनुवाद कराना है। यदि हम तन-मन-धन से बीस वर्ष भी इस पवित्र कार्य में लगा दें तो सारे वातावरण में परिवर्तन आ जाएगा और तब हिन्दी के विरुद्ध भावना समाप्त हो जाएगी और अन्य भारतीय भाषाऐं भी हमारी होड़ करने लगेंगी! तब निरर्थक शत्रुता का स्थान स्वस्थ प्रति-स्पर्धा ले लेगी।

हिन्दी आन्दोलन को रचनात्मक मोड़ देने का यही एक मार्ग है। नान्यः पन्थः विद्यते।

(१६)

मकान नं० १११७ सैक्टर ८,
रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली २२
३-३-६८

प्रियवर,

श्री देवेन्द्रसिंह विद्यार्थी एम. ए. २५१०/१९ सी चन्डीगढ़ (पंजाब) ने ग्वाल कवि पर शोधग्रन्थ प्रस्तुत किया है। कृपया उनसे सम्पर्क स्थापित कीजिये। अगर उन्हें किराया देकर ग्वाल कवि वाले उत्सव पर बुलाया जा सके तो जरूर बुलावें। उन्हें भी आपका पता भेज रहा हूँ।

XRays have revealed 3 Stones (पथरी) in kidney. Prostrate glands and piles are already there. डाक्टर ने दो आपरेशनों की सलाह दी है। फिलहाल मैं एक भी नहीं कराना चाहता। जो होगा, देखा जायगा। भाई हरिशङ्कर जी की तबियत सुधर रही है। उनकी बीमारी से चिन्तित रहा। पत्र लिखना अब कठिन है।

विनीत
बनारसीदास

(१७)

फीरोजाबाद
१६-३-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

प्रणाम। कार्ड मिला, भाई हरिशङ्कर जी का प्रयाण निस्सन्देह बड़ी साहित्यिक दुर्घटना है। अन्तिम सन्देश जो उन्होंने मुझे श्री कुसुमाकर जी के हाथ भेजा था, वह यह था कि अर्द्धशताब्दी पर जरूर-जरूर आगरे पहुँचना है। यद्यपि स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति में मुझे यात्राऐं अत्यन्त कष्टप्रद होती हैं, तथापि आगरे तो पहुँचूँगा ही। आप एक दिन के लिये यहाँ पधारिये। प्रथम बात तो यह है कि आप अपना भाषण लिखकर तैयार कर लें। यदि भाई हरिशङ्कर जी होते तो उनसे उसका संशोधन, परिवर्द्धन करा लिया जाता! अब कोई उस कोटि का विद्वान है ही नहीं—कम से कम अपने ब्रज जनपद में। इस अवसर को ऐतिहासिक महत्त्व देना है। ब्रज प्रेमी जितने भी व्यक्तियों को बुला सकें बुलावें। राजा महेन्द्रप्रताप भी पधार सकते हैं।

श्री उमरावसिंह जी पाण्डे C/o चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी को जरूर बुलाइये। मंडल के प्रारम्भ से ही वे उसके समर्थक रहे हैं।

डाक्टर सत्येन्द्र (जयपुर) को भी आना चाहिए। डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी से सन्देश तो आना ही चाहिए। एटा, भरतपुर, अलीगढ़, हाथरस, मैनपुरी, इटावा, शिकोहाबाद, आदि की यात्रा भी आप कर लें। पालीवाल जी तो उन दिनों आगरे रहेंगे ही। जहाँ-जहाँ ब्रजसाहित्यमंडल के अधिवेशन हो चुके हैं वहाँ के चुने हुए साहित्यिक आने चाहिये। 'सैनिक' तथा 'अमर उजाला' दोनों के सम्पादकों से आप खुद मिलिये। Reporting ठीक हो। यहाँ कविरत्न जी के Enlargement में ८-८) १०-१०) में तैयार कराये जा सकते हैं—तैल चित्र ६०) में। उत्सव पर तो तैल चित्र रहना ही चाहिये। सत्यनारायण और उनके गुरुजी के चित्र का Enlargement मैंने भाई हरिशङ्कर जी के यहाँ रखवा दिया था।

मालती माधव तथा उत्तम रामचरित के छपाने का क्या प्रबन्ध होगा? हृदय तरङ्ग को भी संक्षिप्त रूप में छपाया जा सकता है। क्या आगरे के प्रकाशक कुछ भी सहयोग न देंगे?

ब्रजभूमि में स्थित कालेजों के हिन्दी अध्यापकों को अवश्य निमंत्रित किया जाय।

हमारा पंडाल ब्रजभाषा के कवियों के चित्रों से सुसज्जित रहे। ब्रज-भाषा के मौजूदा कवियों का सम्मान भी किया जाय। विशेषत: श्री अमृतलाल चतुर्वेदी का। उस उत्सव का सभापतित्व श्रीनारायण जी चतुर्वेदी करें। आगरे में डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी (शीतला गली) से आप मिलेंगे ही। मथुरा के ही हैं। अमृतलाल जी के दामाद हैं।

फीरोजाबाद से यदि ओउम चाहैं तो कुछ चन्दा भी हो सकता है। यहाँ के श्री बालकृष्ण गुप्त (हनुमान गंज) बहुत साहित्य रसिक भले आदमी हैं। चुने हुए उर्दू कवियों को भी निमंत्रित करना है। इस ब्रजभूमि में हमैं हिन्दी उर्दू में कोई भेद नहीं करना है। यह स्वर्ण अवसर हम लोगों के हाथ आया है और उसका भरपूर उपयोग कर लेना है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

तौरा ग्राम के हाईस्कूल के बारे में दिव्य जी से पूछिये।

छलेसर की यात्रा अवश्य रक्खी जाय। एक बार पहिले आप छलेसर देख भी लें। आगरे से बहुत निकट है।

यदि ब्रजभूमि के प्रेस वाले कुछ न कुछ त्याग इस वक्त करें तो अत्युत्तम हो। और कुछ नहीं तो ट्रेक्ट ही छपादें। मालूम नहीं कि मीतल जी कुछ करेंगे या नहीं। आप तो 'ब्रजभारती' में काफी कर रहे हैं। यदि ब्रजवासी इस समय त्याग का परिचय दें तो उत्साह की लहर फैल सकती है। ब्रज में प्रचलित खड़ी बोली, ब्रजभाषा या उर्दू में हमें कोई भेद नहीं करना है।

श्री तोताराम पंकज M. A. (बाग मुजफ्फरखाँ) बहुत काम के आदमी हैं। बहुत पहिले उन्होंने भाई हरिशङ्कर जी पर एक विशेषाङ्क निकाल दिया था। एक मुझपर भी निकाल दिया है। उनसे काम लेना है। ना. प्र. सभा आगरा में काम करते हैं।

बन्धुवर हरिशङ्कर जी का तैल चित्र पंडाल में रहना ही चाहिये। भाई श्रीराम जी का तो उनके सुपुत्र रमेश तैयार करा सकते हैं। ६०) ६०) खर्च होंगे।

(१८)

फीरोजाबाद
२९-३-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मैं अब प्रातःकाल में ही थोड़ा सा काम कर पाता हूँ। प्रतिदिन दो चार पत्र लिख लेता हूँ—बस !

जैसा कि मैंने अपने अर्द्धशताब्दी वाले भाषण में कहा था, आपसे मुझे बड़ी बड़ी आशाऐं हैं। मैं चाहता हूँ कि आप ब्रज के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि बनें।

श्री द्वारिकानाथ जी भार्गव ने मुझसे एक बार पूछा था "क्या कारण है कि काशी आगे बढ़ गई और मथुरा पिछड़ गई ?" वस्तुतः काशी को महामना मालवीय जी जैसे महापुरुष का नेतृत्त्व मिल गया, जब कि मथुरा इस बारे में उतनी सौभाग्यशाली न बन सकी। अब हम लोगों का कर्तव्य है है कि जो भी सेवा मथुरा तथा ब्रज की कर सकें करें। मैं तो काफी कमजोर हो गया हूँ—ज्यादा घूम फिर नहीं सकता बजन काफी घट गया है—पर आप अपेक्षाकृत युवक ही हैं। जो परामर्श समझ में आते जावेंगे कभी भेजता रहूँगा।

1. Make new friends. of course we must discriminate between a genuine worker and an insincere worker.
2. Approach श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी and reguest him on my behalf to help us in the revival of ब्रज संस्कृति. He has two presses at his disposal. Let him dictate संस्मरण of डा० हरिशङ्कर शर्मा, मेरे भाषण का अंश उन्हें सुना दीजिए।
3. Do something for your Home संग्रहालय every day. Never make a mistake that I made. Keep your Collections safe at your home. मधुकर की फाइलें किसी को भी न दीजिए। Decorate your Hall with the photos of eminent ब्रजवासी's of different fields. I will send you photos, when I can get them made at cheap rates.
4. Keep in tip-top condition of health. Do not over-work.
5. Appreciate by writing letters, notes or articles about workers in different fields. Follow Bapu's method of hand-

ling people. Genuine praise given at the proper time is a great stimulant.

6. Do visit the इटौरा आम्रोपवन of स्व० प्रयाग नारायण अग्रवाल वकील of रावतपाड़ा । His son श्री प्रतापनारायण (राजा बाबू) will take you in his jeep to the place. It is only 8 miles off. 7 on the Agra Gwalior Road and 1 mile kachcha road. Go early in the morning. छलेसर too desevers a visit. Put your self in touch with D. F. O. Saheb. Possibly he has his quarters in विजय नगर colony. Write about tree plantation in गोवर्द्धन also.
7. I shall try to get a Copy of the photo of बल्देवगुरु with राष्ट्रपति.
8. Note down all the anecdotes of बल्देवगुरु about कुश्तीकला.
9. Send the अर्द्धशताब्दी material to Mr. Chernishov, Moscow.
10. My Agra speech should be given immediately to the press and 250 extra copies taken, send 100 to me.
11. Could you sell ten copies of स. ना.'s biography ?

स. ना. स्मारिका अभी तक नहीं मिली ।

विनीत

बनारसीदास

(१९)

फीरोजाबाद

२-४-६८

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

आपका विस्तृत कृपापत्र मिला । मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि साहित्यिक संस्थाऐं जनसत्तात्मक ढंग पर चलाई ही नहीं जा सकती । आप केवल ऐसे ही आदमियों को साथ रक्खें जो आपके पूरक हों और झगड़ालू न हों । चुनाव की प्रथा ने कांग्रेस, आर्यसमाज और साहित्य सम्मेलन सभी का खात्मा कर दिया ।

मेरे पास कविरत्न जी की जीवनी की प्रतियाँ हैं । प्रत्येक प्रति का मूल्य ४) चार रुपया है, यदि वे तीन तीन रुपयों में भी बिक सकें तो मैं उन्हें बेच देना चाहता हूँ ।

(१) उत्सव में स्वयं अमृतलाल जी के श्रीमुख से स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता (पुनर्जन्म) का अनुवाद पढ़वाना ठीक होगा ।

(२) स्वयं आपके मकान के Hall में ब्रजमण्डल के लेखकों तथा कवियों के चित्र होने चाहिये। दो तीन तैल चित्र, शेष साधारण।

(३) आपका संग्रहालय सर्वथा निजी ही होना चाहिये।

मुझे स्वास्थ्य संपादन करना है।

विनीत
बनारसीदास

(२०)

फीरोजाबाद
२-५-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

पत्र मिला!

(१) सग्रहालय* की बात पढ़कर बहुत खुशी हुई। सम्पूर्ण ब्रजभूमि के लेखकों, कवियों, कलाकारों, पहलवानों इत्यादि के चित्र आपके यहाँ सुरक्षित रहने ही चाहियें। उर्दू वालों के तथा खड़ी बोली के कवियों के भी चित्र रखिये।

(२) जो भी काम आपने किया है तथा कर रहे हैं उसका महत्व आगे चलकर ही आँका जा सकेगा।

(३) चर्नीशोव को अभी तक न आपकी भेजी सामग्री मिली, न मेरी। कल उनका खत आया है।

(४) समय के देखते आगरे के उत्सव अत्यन्त सफल और महत्वपूर्ण रहे। एकाध त्रुटि तो हो ही जाती है।

(५) सबसे जरूरी काम स्वस्थ रहना है। In tiptop condition of health ज्यादा यात्राऐं (सो भी इस ऋतु में) आपकी तन्दरुस्ती को हानि पहुँचा सकती हैं। Beware !

मेरा भाषण तो जल्दी कम्पोज हो जाना चाहिये।

बनारसीदास

*** मैंने चतुर्वेदी जी को ब्रज में एक सार्वजनिक पुस्तकालय एवं संग्रहालय स्थापित करने के अपने विचार से अवगत कराया था। प्रस्तुत पत्र में तथा और भी अनेक पत्रों में चतुर्वेदी जी ने उसके सम्बन्ध में बड़े महत्वपूर्ण मौलिक सुझाव दिये हैं। एतदर्थ मैं उनका आभारी हूँ।**

(२१)

फीरोजाबाद
६-५-६८

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

आपकी पुस्तक की भूमिका मैंने तैयार करली है और उसे मैं कल आपकी सेवा में रजिष्ट्री से भेज दूँगा। प्रूफ बहुत सावधानी से देखिये।

अगर कोई त्रुटि या कमी रह गई हो तो कृपया ठीक कर दीजिये। उक्त भूमिका के एक सौ १०० Reprints मुझे जरूर चाहिये। किसी अच्छे स्कैच के लिए तो ५-७ दिन का सत्सङ्ग अनिवार्यतः आवश्यक है। उसका अवसर भी कभी न कभी मुझे मिलेगा, फिलहाल यह भूमिका ही पर्याप्त होगी। मैंने इसे कई प्रातःकाल के परिश्रम से लिखा है और उससे मुझे सन्तोष है।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

निरन्तर वजन घटते जाने से मैं चिन्तित हो गया था और दिल्ली जाने का निश्चय सा कर चुका था पर अब यहाँ ही रहने की सोच रहा हूँ।

(२२)

फीरोजाबाद
१८-५-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी

स्वर्गीय भाई हरिशङ्कर जी शर्मा के उन पत्रों को तलाश कर रहा था जिन्हें वे पिछले चालीस वर्षों से मेरे पास भेजते रहे थे। अब वे पत्र इकट्ठे कर लिये गये हैं और उनकी संख्या २७८ है। शायद अभी कुछ चिट्ठियाँ और भी निकलेंगी, पर उनकी प्रतीक्षा किये बिना इन २७८ पत्रों को टाइप कराने के लिए मैं दिल्ली भेज रहा हूँ। प्रत्येक पत्र की पाँच-पाँच प्रतियाँ टाइप होंगी।

विनीत
बनारसीदास

(२३)

फीरोजाबाद
२२-५-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

ब्रजभूमि के साहित्यिकों से आपका संपर्क बना रहना चाहिये। अन्य जनपदों के कार्यकर्ताओं से भी सम्बन्ध रखना ही पड़ेगा।

विशाल हरियाणा वालों की महत्वाकांक्षा पर एक छोटा सा पत्र नवभारत टाइम्स में जा सकता है। "अपनी बात" शीर्षक के नीचे।

इस मौसम में आप यात्राएँ यथासम्भव न कीजिये। Conserve every bit of your energy for the great cause. मेरे पूज्य पिताजी जिनका जन्म मथुरा में ही हुआ था, ९२ वर्ष जीवित रहे थे। आपको भी शतायु होना चाहिये। अत्यधिक काम (Over-work) करना भी एक भयंकर दुर्गुण है और झगड़े से हमें दूर ही रहना चाहिये।

लोक संग्रह की भावना से काम लेना है, पर साथ ही साथ फालतू समय बर्वाद करने वालों से दूर ही रहना है। हमारे देश में ऐसे युवक बहुत हैं, जो कुछ काम न करके दूसरों से लाभ उठाने की बात निरन्तर सोचा करते हैं।

एक बात और भी--हिन्दी जगत के अधिकांश नेता जिनके नाम पत्रों में छपते रहते हैं आत्म-केन्द्रित व्यक्ति हैं। दूसरों का शोषण करके अपना उल्लू सीधा करने में वे कुशल हैं। हम लोग उनके चक्कर से बचें, इसी में हमारा कल्याण है।

हिन्दी प्रचार कार्य के साथ-साथ आपका साहित्य रचना का कार्य भी चलता रहे। और घर वालों की उपेक्षा हरगिज न हो।

हमें अपने उत्सव सर्वोत्तम ऋतुओं में ही रखने चाहिये। श्री रमेशचन्द्र जी दुवे को लिखे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

विनीत

बनारसीदास

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे चतुर्वेदी जी के पत्रकी प्रतिलिपि

फीरोजाबाद

२२-५-६८

प्रिय श्री दुबे जी,

सादर प्रणाम।

कल कविरत्न स्मृति-ग्रन्थ की दस प्रतियाँ मिलीं, अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

श्री गिरिजा शङ्कर दुवे ने मुझे तीस रुपये अभी तक नहीं दिये। ऐसी भूल उन्होंने क्यों की, मैं कह नहीं सकता! आप उन्हें एक पत्र तो भेज ही दीजिये।

स्मृति-ग्रन्थ धीरे धीरे पढ़ूँगा। सत्यनारायण कथा सरसरी निगाह से देखली है। आपने खूब लिखा है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि आपके सद्प्रयत्न से स. ना. के ग्रन्थों का भी उद्धार हो जायगा। बड़ा पुण्यकार्य है।

ना. प्र. सभा ने शायद 'हृदय तरङ्ग' को खपाने के लिये पूरा पूरा प्रयत्न नहीं किया! कितनी प्रतियाँ वहाँ बची हैं?

आप श्री वृन्दाबनदास जी के सहयोग से ब्रजमंडल में साहित्यिक तथा साँस्कृतिक कार्य को आगे बढ़ावें। अधिकारी वर्ग यदि चाहें तो वे बहुत जबर्दस्त काम कर सकते हैं। पर हमारी सरकार में इतनी कल्पनाशक्ति नहीं कि उन्हें इस दिशा में प्रोत्साहित करे। मुझे तो यह आशङ्का है कि कहीं सरकार की ओर से आप जैसे सदुद्देश्ययुक्त हिन्दी सेवी के मार्ग में कोई बाधा न आवे। अपनी परिस्थितियों पर ध्यान रखते हुए जो भी कार्य आप कर सकें, करते रहें।

भाई वृन्दाबनदास जी का रेखा चित्र सैनिक में छपवा दिया है। कृपया पढ़ लीजिये।

सत्यनारायण जी के प्रति आपकी भक्ति से मैं गद्‌गद् हो गया हूँ। धाँधूपुर तथा तोरा में उनकी स्मृति रक्षा के लिये कुछ प्रयत्न होना ही चाहिये।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास

(२४)

फीरोजाबाद
८-६-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बिना किसी तरतीब के जैसे विचार मन में आते जायेंगे लिखता रहूँगा।

बिना यजमान-संग्रह के कोई यज्ञ सफलता पूर्वक नहीं हो सकता और यजमानो (जिजमानों) को Humour करना पड़ता है।

अभी हाल में श्री श्यामसुन्दर गर्ग (पता Hindi Printing Press १४६६ शिवाश्रम Queen's Road Delhi) ने उग्र जी की स्मृति में 'ठिठोली' का वार्षिक अङ्क निकाला है। वे अलीगढ़ जिले के हैं। अपने प्रैस द्वारा शुभ कार्यों में वे मदद भी देते रहते हैं। Try to rope him in for our ब्रज-साहित्य मंडल, स. ना. कविरत्न का जन्म तो अलीगढ़ जिले में ही हुआ था।

यहाँ आपके रिश्तेदार ओउम् भी समझदार आदमी है। सौ पचास रुपये खर्च कर सकते हैं।

मालूम नहीं श्री मीतल जी अपने प्रेस द्वारा कुछ सेवा करेंगे भी, या नहीं।

हाँ, अमृतलाल जी चतुर्वेदी का इस शुभ अवसर पर सम्मान हो जाय तो अत्युत्तम हो। वे ७० के करीब पहुँच चुके हैं। काफी अच्छा लिखते हैं। Handle him through his son-in-law डाक्टर राजेश्वर प्रसाद Who belongs to मथुरा ! तोरा में हाईस्कूल (स. ना. कविरत्न के नाम पर) कायम होने की बात थी। उसका क्या हुआ ? उत्तर रामचरित, मालती माधव, और हृदय तरङ्ग तो अब कोई भी छाप सकता है। यदि ब्रजमंडल में ब्रजभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न हो जाय तो इन पुस्तकों को छापने में घाटा न रहेगा।

स. ना. जी के चित्र Cabinet Size से लगाकर वृहदाकार भी इस समय तैयार कराये जा सकते हैं। "जो मोसों हँसि मिलै होत मैं तासु निरन्तर चेरौ" तो उनके हस्ताक्षर में ही विद्यमान है। कुछ प्रति स. ना. जीवनी की विक्रयार्थ मेरे पास हैं। हृदय तरङ्ग की प्रतियाँ ना. प्र. सभा में होंगी।

I have returned rather shoken form Delhi. It is very dangerous for me to move out of my place Whether I go to Agra or not, my heart will be there in your function.

वकौल इकबाल—

"समझो हमें वहाँ ही दिल हो, जहाँ हमारा"

With prostrate glands, three stones in the kidney, as well as old piles, I can not afford to waste my energy now.

विनीत
बनारसीदास

(२५)

फीरोजाबाद
१३-६-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

चिट्ठी मिली। अभी उस दिन राजा बहादुर श्री मधुकर शाह (स्व० महाराज वीरसिंह जू देव के पौत्र, और वर्तमान ओरछा नरेश के पुत्र) यहाँ

कुछ घंटों के लिये पधारे थे। दिल्ली वि. वि. से इतिहास में M. A. पास किया है और अब Regular किसान बन गये हैं। उन्होंने अपने खेतों से ७५० क्विटल गेहूँ पैदा किया है। बड़ी मीठी बुन्देलखंडी बोलते हैं तबीयत खुश हो गई। वे कहते थे "टीकमगढ़ में युवक अब बुन्देली बोलने के बजाय खड़ी बोली बोलने लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बुन्देली बीस वर्ष में खतम हो जायगी।"

यह सुनकर हृदय को धक्का लगा! ब्रजभाषा बोलने वाले भी कम होते जाते हैं। इस अनाचार को रोकना चाहिये। घर पर और आपस में ब्रजभाषा का व्यवहार करना ही चाहिए।

आप अपने गाजियाबाद वाले भाषण में इस बात का भी जिक्र कर दें।

गाजियाबाद के भाषण की तैयारी के लिये समय तो कम ही रह गया है फिर भी सहयोगियों तथा मित्रों से परामर्श तुरन्त मँगावें। श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी सरस्वती सम्पादक को लिखें। श्री उमराव सिंह पाण्डे, चतुर्वेदी पुस्तकालय मैनपुरी को भी। मीतल जी से मिलकर बातचीत कर लें और श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी जी से भी। श्री श्यामसुन्दर गर्ग (हिन्दी प्रेस, दिल्ली) अलीगढ़ के रहने वाले हैं। भले आदमी हैं। बहुत बढ़िया प्रेस है। उनसे भी कभी मिलें। अपना परिचय पत्र श्री अक्षय कुमार जैन को भेज दिया होगा। वे भी अलीगढ़ जिले के हैं और यशपाल जैन भी। दिल्ली जाने पर आप सौ० बहिन सत्यवती मलिक 5/90 कनाट सर्कस नई दिल्ली से जरूर जरूर मिलें। Rivoli Cinema के सामने जो सड़क मदरास होटल को जाती है, उसी पर दूसरा मकान है, जीना चढ़कर जाना होता है। दिल्ली के हिन्दी भवन की स्थापना में सबसे बड़ा हाथ उन्हीं का था। उनके पूज्य पति श्री रामलाल मलिक वकालत करते हैं। केशव मलिक उनका सुपुत्र बहुत योग्य है, दूसरा सुभाष मलिक आर्कीयोलोजीकल विभाग में उच्चपद पर है। श्री कपिला वात्सायन (लड़की) शिक्षा विभाग में उच्चपद पर हैं। मेरी पुस्तक रेखा चित्र में सत्यवती जी का स्कैच पढ़ लें। यशपाल जी (सस्ता साहित्य मंडल) आपको उनसे मिलाने ले जावेंगे।

हाँ, रामराज्य ने भी आपका स्कैच छाप दिया है। उसके सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त—आर्य नगर कानपुर—बहुत आदर्शवादी पत्रकार हैं। मिलने लायक आदमी हैं। वर्षा होने पर कभी कानपुर जाकर उनसे जरूर मिलें।

(१) एक पत्र श्री मधुकर शाह (राजा बहादुर) M. A. वैकुण्ठी टीकमगढ़ को भेजें। उन्हें ब्रजभारती का पिछला अङ्क भी। यह भी उन्हें

लिखें कि उनके पितामह महाराज वीरसिंह जू देव ने ब्रजभाषा के लिये जो कुछ किया, हिन्दी जगत तदर्थ उनका ऋणी है। उनके पूर्वज महाराज वीरसिंह जू देव ने मथुरा में जो कुछ किया था उसका भी हाल सुनादें। उन्हें मथुरा निमंत्रित भी करें। वे २२-२३ वर्ष के होंगे।

(२) कैमरे का प्रयोग शीघ्र ही सीखिये। जापानी Reflex कैमरा ४००-५००) में आवेगा। किसी विशेषज्ञ की मार्फत ही खरीदें। क्षणों को स्थायी बनाने का सर्वोत्तम तरीका है।

(३) जहाँ कहीं भी जावें वहाँ से लौटते वक्त निकटस्थ Best natural Scenery के दर्शन करते हुए आवें। यह विचार स्व० भाई माखनलाल चतुर्वेदी का है।

(४) यजमान संग्रह निरन्तर होता रहना चाहिये। चूँकि आपको अपने लिये कुछ भी नहीं चाहिये, इसलिए यह अपेक्षाकृत आसान भी है। और Last but not the least do not over strain your self. हर हालत में पूर्ण स्वस्थ रहना ही है। भोजन के मामले में अत्यन्त सावधान रहें। बल्कि Cooker साथ रक्खें। Henry Ford अरबपति होने पर भी तीन दिन के भोजन का सामान सदैव अपने साथ रखता था और डाक्टर रंधावा I. C. S. अपना घी साथ लेकर चलते हैं। बाहर भोजन करने में अत्यन्त खतरा है। निकृष्ट भोजन मिलता है। Yon must be able to say 'No' to any one, when they give you हानिकारक भोजन। मुझे लेटे रहने के लिये कहा गया है, फिर भी आप जैसे सुहृदों को पत्र लिखे बिना नहीं रह सकता।

बनारसीदास

पुनश्च—

भाई बालमुकुन्द जी चतुर्वेदी से कहदें कि यद्यपि उस समय मुझे बुरा लगा था, पर मेरे हृदय में उनके प्रति सद्भावना ही है। गलत फहमियाँ होती ही रहती हैं। श्री राजाबाबू (प्रतापनारायण अग्रवाल, रावतपाड़ा) का इटौरा Garden अवसि देखिये देखन जोगू।

(२६)

फीरोजाबाद

८-७-६७

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! मैं अब तारनुमा पत्र ही लिखूंगा, क्योंकि समय अब कम मिल पाता है—ज्यादातर विश्राम ही करना होता है—और मतलब की बात

संक्षेप में लिखने का अभ्यास मुझे करना है। नव भारत टाइम्स के बम्बई संस्मरण ने आपका स्कैच छाप दिया है, यह बड़ी खुशी की बात है।

दरअसल अच्छे रेखाचित्र के लिये एक सप्ताह साथ रहना जरूरी है। वह मौका कभी न कभी आवेगा ही।

मेरी तबियत सुधर रही है। वजन दो पौण्ड बढ़ा है—पहले तो २०-२५ पौण्ड कम हो गया था। और तीन-चार महीने में स्वस्थ हो जाने की आशा बँध गई है। आप सब की सद्भावना तथा अशीष तो सदैव साथ में हैं ही।

आवश्यक कार्य

(१) एक पत्र श्री डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी **M. A. Ph. D. D. Lit** शीतला गली, आगरा को लिखकर उनसे श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी, के स्वास्थ्य की बावत पूछिये। राजेश्वर जी उनके जामाता हैं। उन्हें शिकायत है कि उन्हें गाजियाबाद अधिवेशन का निमंत्रण भी नहीं मिला! अमृतलाल को भी नहीं मिला! वे तो मथुरा के ही हैं। निमंत्रण पत्र उन्हें जाना ही चाहिये। उनकी तबीयत अब ठीक हो रही है।

(२) एक पत्र श्री प्रतापनारायण अग्रवाल (राजा बाबू) रावतपाड़ा आगरा को लिखिये। उनके २७० पक्के बीधे वाला उपवन आपको देखना ही है। उस पर सैनिक में मेरा एक लेख १०-११ दिन पहले छपा था। उसे पढ़ लीजिये। राजाबाबू के पास जीप है। वे उसे आपको दिखला देंगे। ६½ हजार आम के पेड़ हैं। तीर्थ तुल्य है। "अवसि देखिये देखन योगू"।

(३) नरवर में राजघाट के पास एक संस्कृत महाविद्यालय है। वहाँ की भी तीर्थयात्रा आप को करनी है। स्वर्गीय जीवनदत्त की अमर कीर्ति का वह स्मारक है। संस्कृत के अनेक विद्वान वहाँ से निकले हैं।

(४) श्री अक्षय जी के पिताजी के ग्रन्थ मिल सकें तो तलाश करके उन्हें भेजिये। उन्होंने अपने पत्र में इस बात पर बहुत हर्ष प्रकट किया हैं कि आपके साथ उनका सम्बन्ध इतना पुराना निकला।

(५) ब्रजभूमि में जहाँ जहाँ जो भी अच्छा काम हो रहा हो उस पर आपकी दृष्टि जानी ही चाहिये। सिरसागंज में एक गुरुकुल खुला है। ६० विद्यार्थी पढ़ते हैं। २५० बीघा जमीन एक जमींदार ने दी है। छलेसर का बबूल वन (आगरे से ७ मील दूर) जरूर देखिये। रेल का स्टेशन है। श्रीराम जी शर्मा का उसायनी का नव-जीवन फार्म आगरे से २१ मील की दूरी पर है—

फीरोजाबाद से ७ मील। हरिभजन शर्मा, बल्का बस्ती आगरा से पत्र-व्यवहार कीजिये, श्रीराम जी उनके बहनोई थे।

(६) भाई हरिशङ्कर जी का एक महत्वपूर्ण पत्र नकल कराके Reg. भेज़ता हूँ। ५ प्रतियाँ टाइप करा लीजिये। एक प्रति श्री विद्याशङ्कर शर्मा, शङ्कर-सदन, लोहामंडी Agra को भेज दीजिये।

अभी भाषण को इधर-उधर से देख लिया है। आपने मेरी जो प्रशंसा की है उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न करूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(२७)

फीरोजाबाद
१०-७-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! ब्रज के पचासों फलते फूलते वृक्षों की पुकार आप तक पहुँचाना मेरा कर्तव्य है। मैं तो चौकीदार मात्र हूँ— कमिश्नर तो आप ही हैं। चाहे परिणाम कुछ न निकले पर 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' की बात तो ब्रजराज ने ही कही थी।

मेरी तीर्थ यात्रा शीर्षक लेख संलग्न है।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी का लेख बा० प्रयागनारायण अग्रवाल के उपवन पर

मेरी तीर्थयात्रा

आगरा जनपद का सर्वोत्तम उपवन

—बनारसीदास चतुर्वेदी

कई वर्ष पहले की बात है जब भाई श्रीराम जी शर्मा ने मुझसे बाबू प्रयागनारायण जी वकील के इटौरा वाले बाग का जिक्र किया था और यह बतलाया था कि आगरा जिले का वह सबसे बड़ा बगीचा है। तभी मेरे हृदय में उसके दर्शन करने की इच्छा उत्पन्न हो गयी, जो गत् अप्रैल महीने में पूरीं हो सकी।

उपवनों को मैं तीर्थ तुल्य मानता रहा हूँ। मैंने बौद्ध ग्रन्थों में पढ़ा था कि भगवान गौतम बुद्ध अपनी यात्राओं में प्रायः आम्र-उपवनों में ही ठहरा करते थे। दिल्ली से बीस-पच्चीस मील दूर राठौल में फरीदी साहब का एक बगीचा है, जिसमें तीन हजार आम के पेड़ सुने जाते हैं। मैं उसके दर्शन के लिये जाना चाहता था और उसके मालिक से मैंने पत्र-व्यवहार भी किया था, पर मैं वहाँ जा नहीं सका।

इस बार मैंने भाई अमृतलाल जी चतुर्वेदी से जब इटौरा वाले बाग का जिक्र किया तो उन्होंने बतलाया कि वे उसके मालिक राजा बाबू को भली-भाँति जानते हैं और मेरी यात्रा का प्रबन्ध कर देंगे। तदनुसार मैंने वहाँ की तीर्थयात्रा की। श्री राजाबाबू स्वयं ही अपनी जीप ले आये थे। अमृतलाल जी भी साथ में थे। इटौरा आगरे से आठ मील की दूरी पर है जिसमें सात मील तो पक्की सड़क है और लगभग एक मील कच्ची।

उपवन को देखकर मैं दंग रह गया। इस बाग का क्षेत्रफल २७० पक्के बीघा है। जिसमें कुल अठारह बीघा में खेती होती है और बाकी में आम, अमरूद, शहतूत, कटहल, केला, पपीता, जामुन, कमरख, कचनार, अलूचा, लीची, बिना बीज का नीबू, चकोतरा, मिट्ठा, मौसम्बी, आड़ू, चीकू, स्ट्राबेरी इत्यादि के वृक्ष हैं। फालसे भी काफी होते हैं। बनारसी आंवले के दुर्लभ पेड़ भी हैं और खाने लायक ईख भी पैदा हो जाती है। अमरूद १५ बीघे में होते हैं और फालसे २४ बीघे में।

मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि इस उपवन में ढाई सौ मन गुलाब हर साल उतरता है। नीचे लिखे किस्म के आम वहाँ होते हैं—

लंगड़ा, दसहरी, नौदा (गोला), शुक्ल, कृष्ण भोग, गुलाबखास, चीनी बम्बई, फज़ली, चौंसा, सफेदा, गोपाल भोग, अमनिया, पीली बहती बम्बई और नारायण पसंद। इस उपवन में आमों के छः हजार पेड़ हैं।

पर जिस चीज को देखकर मैं सबसे अधिक प्रभावित हुआ, वह है कई फलाँग लम्बी जामुनों की कतार। यह आगरा कैण्ट से ग्वालियर जाने वाली रेल की सड़क के किनारे है।

यह बात आश्चर्यजनक है कि इतने बड़े बगीचे में कुल बारह आदमी पक्के नौकर हैं। हाँ, खेतों की गुड़ाई के वक्त सौ-सौ आदमी तक रख लिये जाते हैं। यह उपवन स्वावलम्बी है अर्थात् अपना खर्चा स्वयं ही चलाता है।

कृषिशास्त्र में ट्रेण्ड कोई बी० एस-सी० यहाँ नहीं है और न कोई फार्म सुपरिण्टेण्डेंट। यह सारा काम राजाबाबू खुद ही कर लेते हैं।

शहतूतों की लम्बी कतारों को देखकर मैं पूछ बैठा कि इतने शहतूत क्यों लगा दिये हैं तो श्री राजाबाबू ने बतलाया कि शहतूत का पेड़ जल्दी लग जाता है और अपनी घनी छाया द्वारा दूसरे पौधों को लू से बचाने में सहायक होता है।

इस उपवन के लिये सबसे बड़ा सवाल पानी का है। यद्यपि आज सारे गांव में ट्यूब-वैल की व्यवस्था हो गयी है और बिजली से पानी मिल जाता है, लेकिन इस बड़े बगीचे के लिये यह सम्भव नहीं हो सका।

एक बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि किसी भी सरकारी अफसर ने यहाँ आज तक पधारने की कृपा नहीं की। हाँ, एक बार श्री चरनसिंह जी अवश्य पधारे थे और वह भी उन्हें यहाँ मजबूरन आना पड़ा था। उनकी मीटिंग तो किसी दूसरी जगह रखी गयी थी, पर वहाँ इन्तजाम नहीं हो सका, तो उन्हें यहाँ आना पड़ा। यदि कोई दूसरा देश होता तो इस उपवन की कीर्ति मुल्क भर में फैल जाती। पर इस अभागे देश में ऐसे रचनात्मक कार्य की कद्र करने वाला कोई भी नहीं। एक बार आल इण्डिया रेडियो, देहली ने श्री राजाबाबू को रेडियो पर बुलाया था पर बगीचे के बारे में बातचीत करने के बजाय उनसे अन्य अनावश्यक बातों पर चर्चा कराते रहे।

सबसे अधिक दुःख मुझे यह जानकर हुआ कि पास-पड़ोस के गाँव वाले इस उपवन के महत्व को अब तक नहीं समझ पाये। और उन्होंने इसे नष्ट करने के लिए भरपूर प्रयत्न भी किया। पौने दो वर्ष सशस्त्र पुलिस का प्रबन्ध रखना पड़ा। एक बार तो कारिन्दे को बन्द कर वे सारा अनाज लूट ले गये। भला हो कलक्टर रैना साहब का जिनकी बदौलत यह बाग बच गया।

बाग के सामने एक संकट उपस्थित हो गया है। बाग सैंट्रल रेलवे के किनारे हैं और सरकार की ओर से उसे नोटिस मिला है कि डबल रेलवे लाइन पड़ने के कारण इस बगीचे की ५ फर्लांग लम्बी और बीस-पच्चीस फीट चौड़ी भूमि पर सरकार अधिकार कर लेगी। मिट्टी खोदने के लिये बने बनाये उपवन को खंडित करने की यह मूर्खता रेलवे-विभाग करने जा रहा है, जब कि वह दूसरी ओर की जमीन से काम चला सकता है।

मैंने उत्तरप्रदेश के राज्यपाल महोदय की सेवा में निवेदन किया है कि वे इस उत्कृष्ट उपवन को नष्ट-भ्रष्ट होने से बचावें, यद्यपि मैं यह भली-भाँति जानता हूँ कि हमारी सरकार बिना घनघोर आन्दोलन किये कुछ भी नहीं करती। आज के युग में जब कि फलों तथा सब्जी के उगाने पर इतना जोर दिया जा रहा है, किसी फलते-फूलते बगीचे की हत्या करना एक जघन्य अपराध है।

मैं इस बात के लिये बहुत लज्जित हूँ कि इस उपवन की तीर्थ यात्रा मैंने इतने वर्ष बाद की और अब प्रायश्चित स्वरूप प्रतिवर्ष वसंत ऋतु में उसे प्रणाम करने के लिये जाया करूँगा। बौर से लदे ६ हजार आम्रवृक्षों को मैं पेशगी नमस्कार करता हूँ।

आगरा जनपद के जिन सुशिक्षित व्यक्तियों ने इस उपवन को नहीं देखा उन्हें मैं अभागा मानता हूँ और उनके ज्ञान को बिल्कुल अधूरा।

(२८)

फीरोजाबाद
१३-७-६८

प्रियवर,

पत्र मिला। ये काम आप कीजिये।

(१) डाक्टर राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी एम. ए. पी.एच. डी., डी. लिट शीतला गली आगरा से उनका भाई श्रीनारायण जी शीर्षक लेख मँगा लीजिये।

(२) श्री प्रतापनारायण अग्रवाल (राजाबाबू) रावतपाड़ा आगरा से पूछिये कि क्या उनके बाग में जामुन अब भी आ रहे हैं, यदि आते हों तो उन्हीं के भोज के लिए उस उपवन की तीर्थयात्रा कीजिये।

(३) श्री शिवप्रतापसिंह गुरुकुल सिरसागंज जिला मैनपुरी से उनकी संस्था का हाल पूछिये।

(४) श्री कुसुमाकर जी, आर्यनगर फीरोजाबाद और श्री बालकृष्ण गुप्त हनुमान गंज फीरोजाबाद से पूछिये कि स्व० हरिशङ्कर जी की स्मृतिरक्षा का कार्य कहाँ तक आगे बढ़ा है।

(५) श्री श्यामसुन्दर गर्ग हिन्दी प्रेस क्वीन्सरोड दिल्ली अपनी ब्रजभूमि अलीगढ़ के ही हैं। उनसे अनुरोध कीजिये कि सत्यनारायण कविरत्न तथा हरिशङ्कर शर्मा की कीर्तिरक्षा में सहायक हों। वे दोनों अलीगढ़ के ही थे।

(६) श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी तथा मीतल जी से स्वयं मिलकर मेरा प्रणाम कहिये और उनसे यह भी कहिये कि मेरा स्वास्थ्य अब सुधर रहा है। कभी मथुरा वृन्दावन की तीर्थयात्रा करूँगा। मीतल जी के पेड़े वसूल करने ही हैं।

Matter of fact पत्र लिख रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(२९)

फीरोजाबाद
१-८-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कल मैं सिरसागंज गुरुकुल को देख आया। तबियत खुश हो गई। दो पौधे लगा आया—एक गुलमुहर का दूसरा हारश्रृङ्गार का। वह एक ग्रामीण संस्कृत पाठशाला है और उसके पास जमीन भी है। विद्यार्थी ८०-८२ हैं। कई परामर्श भी दे आया हूँ। ट्यूबवैल होने के कारण हरियाली काफी है। कुछ फोटो भी मैंने लिये थे। शायद २/१ ठीक आवें, क्योंकि धूप अच्छी नहीं थी। कभी आप भी देखें।

आप इटौरा वाले उपवन को तो यथासम्भव शीघ्र ही देखें। नरवर की संस्कृत पाठशाला को भी। साहित्यिक कमिश्नरों का यह कर्तव्य भी है। आप अवश्य ही मेरे इन परामर्शों से तंग आ गये होंगे। पर क्या करूँ, लाचार हूँ। सत्परामर्श देने की बीमारी मुझे विरासत में मिली है।

हाँ, श्री श्यामसुन्दर जी सुमन को बुलाकर समझा दीजिये कि ना समझी से भरे पत्र न लिखा करें। उन्होंने टाइप कराकर ८, १० पंक्तियाँ लिख भेजी थीं और यह उम्मेद रखते थे कि मैं उन पर हस्ताक्षर कर दूँ। किसी भी प्रतिष्ठित लेखक का यह अपमान है। जब मैंने उस पर हस्ताक्षर न किये तो मुझे खरी खोटी सुना रहे हैं, "आप नवयुवकों की उपेक्षा करते हैं," इत्यादि। हालाँ कि इस अस्वस्थावस्था में भी मैंने कुछ पंक्तियाँ लिख भेजी थीं। इस तरह के सर्टीफिकेट पाने का मोह वे छोड़ दें।

विनीत
बनारसीदास

(३०)

फीरोजाबाद
१४-८-६८

प्रिय भाई वृन्दाबन दास जी,

कृपापत्र मिला !

महात्मा गान्धी जी एक एक पत्र में बारह बारह चिट्ठियाँ भेज दिया करते थे, यद्यपि वे छोटी-छोटी ही होती थीं। उन्होंने अपने जीवन में एक लाख पत्र तो लिखे ही होंगे, जिनमें कुल जमा २०-२५ हजार सुरक्षित रह सके हैं। [उनमें १०१ मूल पत्र मेरे पास हैं। पत्रों की दृष्टि से मैं लखपती हूँ। सौ वर्ष बाद उन पत्रों का मूल्य इतना तो हो ही जायेगा।]

१९६९ में गांधी शताब्दी मनाई जा रही है। बापू की नकल करते हुए मैं भी तीन-चार पत्र इसी लिफाफे में रखे देता हूँ। नये हिन्दी प्रचार समाचार में आप के शुभनाम का उल्लेख है।

चि० नरेश को ६०)७०) में अच्छा कमरा शायद मिल जायगा। श्री मीतल जी का भी कृपापत्र मिला है। डाक्टर राठौर साहब का भी। डा० राठौर अत्यन्त कुशल सर्जन हैं। मथुरा का यह सौभाग्य है कि ऐसे प्रतिष्ठित सिविल सर्जन वहाँ पहुँच गये हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

(१) श्री पंकज (तोताराम जी, बाग मुजफ्फर खाँ) स. ना. कविरत्न के समस्त ग्रन्थों का संग्रह छाप रहे हैं। साधन हीन होने पर भी उनका यह सत्साहस अत्यन्त प्रशंसनीय है। कृपया उनको सहयोग दीजिये। क्या श्री दुबे जी से सहयोग नहीं मिल सकता ? कार्य महत्वपूर्ण है।

(२) चि० नरेश को उसके पिता (स्व० रामनारायण चतुर्वेदी) का नवनीत जी विषयक लेख पढ़वा दीजिये। उसने शायद न पढ़ा हो। वह आपके यहाँ बैठकर ही पढ़ ले। नरेश सिर्फ तीन वर्ष का ही था—(सन् १९२६ में) जब रामनारायण का स्वर्गवास २८ वर्ष की उम्र में हो गया था। वह History में First Class first था–आगरा कालेज में इतिहास का अध्यापक था। नरेश पितृ-प्रेम से बिल्कुल वंचित रहा।

(३) एक पत्र श्री हरिभजन शर्मा (श्रीराम शर्मा का मकान बल्का बस्ती, आगरा) को भेजिये। स्व० श्रीराम जी के सारे हैं। उन्हें प्रेरित कीजिये कि वे श्रीराम जी विषयक सामग्री को व्यवस्थित कर दें। नव-जीवन फार्म का भी हाल उनसे पूछ लीजिये।

(४) डा० दयाशङ्कर शर्मा, न्यू राजामंडी Agra से स्व० हरिशङ्कर जी शर्मा की जीवनी के कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए कहिये।

(५) श्री प्रकाशवीर जी को मेरा प्रणाम कहिये।

(३१)

फीरोजाबाद
१९-८-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

स्वर्गीय शिवपूजन जी तथा स्व० अग्रवाल जी के पत्रों की नकल आपकी सेवा में रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से कल भेज दूँगा। चूँकि आप साहित्य के प्रेमी हैं इसलिए इसे अपने संग्रह में सुरक्षित रक्खेंगे और पत्र भी समय-समय पर भेजता रहूँगा। आज अखबारों में पढ़ा कि आपके यहाँ बड़े जोर की वर्षा हुई है। आशा है कि आप सकुशल है।

विनीत
बनारसीदास

(३२)

फीरोजाबाद
४-९-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

अपने प्रातः कालीन चायामृत पान के बाद मैं अपने सहयोगियों का ध्यान किया करता हूँ और आज आपके बारे मैं सोचता रहा।

चूँकि ब्रजमण्डल के विषय में मेरी आशाऐं मुख्यतया आप पर केन्द्रित हैं इसलिए आपकी अस्वस्थता मेरे लिये चिन्ता का कारण बन जाती है। चाय के नशे पत्ते में मैं न जाने क्या ऊल जलूल लिख जाता हूँ। उसमें कुछ सार हो तो उसे ग्रहण कीजिये। नहीं तो मेरे पत्रों को रद्दी की टोकरी में डाल दीजिये। आपको राजाबाबू (रावतपाड़ा के श्री प्रतापनारायण अग्रवाल) के इटौरा बाग को अवश्य शीघ्र देखना चाहिये। मूर्ख रेलवे अधिकारी उसकी ५५ फीट

चौड़ी और ६ फर्लांग लम्बी जमीन काट लेना चाहते हैं। इसके बारे में कुछ न कुछ कार्रवाई हमें करनी ही चाहिये। राजाबाबू काफी समझदार व्यक्ति हैं पर वे सरकारी अधिकारियों की खुशामद नहीं कर सकते। आप जब स्वस्थ हो जाँय उनसे अवश्य भेंट करें और तब तक केन्द्रीय रेलवे द्वारा किये गये निर्दयतापूर्ण अतिक्रमण के विषय में उनसे पूछ-ताछ करें।

विनीत

बनारसीदास

(३३)

फीरोजाबाद

१७-९-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

ब्रजभारती के दो अंकों को मिलाकर अगली वसन्त पंचमी पर एक विशेषांक निकाला जा सकता है। ब्रजभूमि में जो भी साहित्यिक, सांस्कृतिक, कृषि सम्बन्धी अथवा अन्य कार्य हो रहा हो उसका उसमें विस्तृत वृत्तान्त दीजिये। उदाहरण स्वरूप आप एक लेख नरवर के संस्कृत महाविद्यालय पर दे सकते हैं। श्रद्धेय करपात्री जी तथा अन्य कई आधुनिक विद्वान् उसके छात्र रह चुके हैं। वह एक महान संस्था है। गुरुकुल सिरसागंज : शिकोहाबाद : पर भी एक छोटा लेख दीजिये। ना. प्र. सभा आगरा और भारती भवन फीरोजाबाद पर भी छोटे छोटे लेख होने चाहिये, छलेसर के बबूल वन और इटौरा के उद्यान का सचित्र विवरण दें। आप श्री बालकृष्ण गुप्त हनुमानगंज फीरोजाबाद से हनुमानगंज काँच उद्योग पर एक लेख के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। निस्संदेह चित्र अथवा ब्लाक तो संस्थाओं द्वारा प्रदत्त होने चाहिए। ब्रजसाहित्य मंडल को इस ग्रंक पर विशेष व्यय न करना पड़े यह आपको देखना है। चूंकि संस्थाओं और भवनों से स्त्री और पुरुषवर्ग का महत्व अधिक है श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी और बल्देव गुरु जैसे महानुभावों के रेखाचित्र तो उसमें होने ही चाहिये। ब्रज के साहित्यिक कार्य के लिए एक दशवर्षीय योजना का उल्लेख एक लेख में होना श्रेयस्कर होगा। इस विशेषांक के लिये आपको चन्दा करना ही पड़ेगा—जो जहर पीने के समान है।

ब्रजभूमि में जहाँ भी जो भी अंकुर उग रहे हैं—जिनमें आगे चलकर वृक्ष बनने की सम्भावना हो—उन्हें पल्लवित करना हमारा कर्तव्य है।

अत्युक्तिमय प्रशंसा किसी की भी न हो। लेख विश्वसनीय तथ्यों तथा आँकड़ों से परिपूर्ण हो।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

एक महिने में १५ पौंड वजन कम हो जाना चिन्ता का विषय बन सकता है इसलिये मुझे पूर्ण विश्राम लेना चाहिये परन्तु मैं आप सदृश मित्रों को विचार देने का लोभ संवरण नहीं कर सकता। जहाज जब डूबने वाला होता है तब भी जहाज का रेडियो वाला S C. S. message भेजता रहता है। परन्तु मैं अभी कुछ दिन तक और जीवित रहने की आशा करता हूँ।

हरिशङ्कर शर्मा स्मृति ग्रन्थ का तख़मीना श्री प्रकाशवीर शास्त्री, एम. पी. १ कैनिंग लेन, नई दिल्ली को भेजा जा चुका है। अब आप उनसे शीघ्रता करने की प्रार्थना कर सकते हैं।

बनारसीदास

(३४)

फीरोजाबाद
१८-६-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

ब्रजभारती के दो अंकों को मिलाकर एक विशेषांक निकालने की बात मैं कल लिख चुका हूँ। उस अंक में ब्रज के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के सचित्र रेखा चित्र होने चाहिए यद्यपि वे संक्षिप्त ही हो सकते हैं।

शिकोहाबाद के श्री भोजराज चतुर्वेदी (Glass Factory), मैनपुरी के श्री उमरावसिंह पाण्डे इत्यादि को भी लिखिये। स्वर्गीय कौशलेन्द्र तथा स्व० हरदयालसिंह को तो श्रद्धांजलि अर्पित होनी ही चाहिये।

हैदराबाद के श्री मधुसूदन चतुर्वेदी से भरपूर सहयोग लीजिये। वे काम के आदमी हैं।

ख्यालगो लोगों के भी वृत्तान्त दीजिये।

अंक चाहे साल भर बाद निकले पर मसाला तो अभी से इकट्ठा करना शुरू कर दीजिये। It may serve as a directory for Braj. It will not be a losing business at all. विज्ञापन खूब लीजिये।

देखिये तो एक 'बामन' वैश्य को व्यापार सिखला रहा है। परन्तु यह न भूलिये कि मेरे बाबा चौबे लक्ष्मणदास चूना कंकड़ मथुरा में एक बजाज थे। गजी गाढ़े की उनकी दूकान थी गदर के दिनों में। So I am spiritually a वैश्य। शेष कुशल।

बनारसीदास

(३५)

फीरोजाबाद
२७-९-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

'ज्ञानदा' के विशेषांक को अच्छे से अच्छा निकलवाइये चाहे कुछ विलम्ब हो जाय। उस हालत में 'ब्रजभारती' के विशेषाङ्क निकालने की जरूरत नहीं। त्रैमासिक पत्रिका को तो वक्त पर निकालना ही चाहिये। अपने लेखों की पुस्तक भिजवाइये।

सम्भवत: भाई ओउम एक मेरा ट्रैक्ट दीनबन्धु सी. एफ. ऐन्ड्रयूज पर छाप दें। उसमें महादेव देसाई का लेख होगा और मेरी श्रद्धांजलि भी। मैं उसमें ऐन्ड्रयूज का चित्र दे देना चाहता हूँ और कृतज्ञता स्वरूप स्व० रतनलाल जी आर्य का भी।

श्री प्रतापनारायण जी के बाग के विषय में गवर्नर साहब को पत्र मैंने भेजा है। मिट्टी खोदने के लिये रेल विभाग उसकी काट छाँट करवा रहा है, जब कि मिट्टी दूसरी ओर से भी ली जा सकती है। हमारे सर्वोत्तम उद्यान का यह विनाश सर्वथा अक्षम्य है। आप भी ब्रजसाहित्य मण्डल के प्रधान की हैसियत से राज्यपाल महोदय को लिखें। अपने पत्र की नकल आगरे से भिजवा दूँगा। अपने लेख की प्रति अलग से भेजता हूँ। स्व० रामनारायण के लेख के Reprints कृपया रजिस्ट्री से भेजिये।

मैं स्वास्थ्य के विषय में सावधानी वर्त रहा हूँ। चिन्ता करने की जरूरत नहीं। दशहरे पर शायद चि० बुद्धिप्रकाश नैनीताल से आवे।

बनारसीदास

(३६)

फीरोजाबाद
८-१०-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! स्व० रामनारायण के लेख का Reprint मिला और श्रीयुत गणेश चौबे के लेख का भी। कृतज्ञ हूँ।

भाई ओउम अपने सुपुत्र तथा आपकी भतीजी के साथ पधारे थे। घण्टे डेढ़ घण्टे रहे। दीनबन्धु सी. एफ. एन्ड्रयूज की शताब्दी के लिए २ फार्म की एक पुस्तिका छपा देने का वचन भी श्री ओउम ने दिया है। आपकी भतीजी

पी.एच. डी., के लिए शोधकार्य करना चाहती है। मध्ययुगीन रीतिकालीन कवियों के समय में सामाजिक अवस्था विषय बहुत अच्छा है। शायद चि० बुद्धिप्रकाश कुछ परामर्श दे सके। मध्यकालीन भारत ही उसका मुख्य विषय रहा है।

बनारसीदास

(३७)

फीरोजाबाद
१३-१०-६८
५ बजे प्रातःकाल

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! अभी मैंने आपकी वह श्रद्धाजलि, जो आपने बन्धुवर अक्षय जी के पिताजी को अर्पित की है, पढ़ी। मुझे इस बात का बिलकुल पता न था कि वे इतने परिश्रमी और सात्विक ग्रन्थकार थे। न तो यशपाल जी ने उनका कभी जिक्र किया और न अक्षय जी ने ही। क्या उनका चित्र प्राप्य है उसका तैल चित्र बनवा लेना चाहिये।

ऐसा प्रतीत होता है कि अलीगढ़ जिला अपने साहित्य सेवियों की कीर्ति रक्षा में बहुत पिछड़ा हुआ है। स्वर्गीय महाकवि नाथूराम 'शंकर' शर्मा के स्मारक के लिये अलीगढ़ वालों ने क्या किया है और सत्यनारायण कविरत्न के लिये जिनका अन्म अलीगढ़ में ही हुआ था। बन्धुवर हरिशंकर जी के लिये भी वे लोग कुछ भी नहीं कर रहे। श्री यशपाल जैन (सस्ता साहित्य मंडल) से जबाब तलब कीजिये। कभी फुर्सत मिलने पर आप अलीगढ़ जिले का दौरा कीजिये। हरदुआगंज की तीर्थयात्रा तो आपको करनी ही है। भाई विद्याशंकर जी को आगरे से साथ ले लीजिये। यदि भाई हरीशंकर जी के जीवन में आप यह कर सकते तो क्या ही अच्छा होता।

लोग शोध-ग्रन्थों के लिये उपयुक्त विषयों की तलाश में रहते हैं। "अलीगढ़ जनपद द्वारा अपने साहित्य साधकों की उपेक्षा" यह एक सजीव विषय होगा।

नरवर के संस्कृत महाविद्यालय को भी आप देख आइये। स्व० जीवनदत्त जी आचार्य भी एक महापुरुष थे। वे भी निस्सन्देह एक स्मृतिग्रन्थ के अधिकारी है।

मैं आज ७॥ बजे कपावली ग्राम के एक वयोवृद्ध सज्जन से मिलने जा रहा हूँ, जिन्होंने एक सौ से अधिक वृक्ष लगाये हैं। इस अभागे नगर ने चूड़ी

की भट्टियों में लाखों ही वृक्षों को भस्म कर दिया है। उसका प्रायश्चित करने वाले व्यक्ति इस जनपद में उत्पन्न होने ही चाहिये।

अब कुछ काम की बातें:—

(१) आगरा के बन्धु हमारे प्रिय कवि श्री अमृतलाल चतुर्वेदी को सम्मानित करने का विचार कर रहे हैं। कृपया श्रीनारायण जी चतुर्वेदी, खुर्शेद बाग लखनऊ और डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी को पत्र लिख कर पूछताछ करें।

(२) श्री तोताराम पंकज, बागमुजफ्फर खाँ, आगरा के पुत्र का क्या हाल है? पंकज जी बड़े काम के आदमी हैं पर विवेकहीन औघड़ दानी। आगरे के रेगिस्तान में उनका दम गनीमत है।

(३) अमर उजाला के सम्पादक डोरीलाल जी अग्रवाल को श्री राजाबाबू के इटौरा वाले उपवन पर एक सम्पादकीय लेख लिखने को कहें।

(४) डी. ए. वी. कालेज फीरोजाबाद में शंकर सदन की स्थापना के लिये वहाँ के प्रधानाचार्य और कुसुमाकर जी को लिखें।

(५) अपने समधी ओउम् जी को सी.एफ. एन्ड्रयूज पर पैम्पलेट छपाने के लिये धन्यवाद दीजिये।

(६) 'रीतिकालीन समय में सामाजिक स्थिति' नामक शोध पर अपनी भतीजी को मदद करने के लिए चि० बुद्धिप्रकाश को लिखिये।

(७) श्री जगन्नाथ लहरी को मैंने आपकी पुस्तक की एक प्रति भेंट कर दी है।

जल्दी में घसीट देने के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

बनारसीदास

(३८)

फीरोजाबाद
१४-११-६८

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

अमरीका के महान लेखक (Dewis Mumford) ने अपनी पुस्तक 'Condition of man' में लिखा है—

"Utopia can no longer be an unknown land on the other side of the globe. It is rather the region one knows and

loves best, re-apportioned, reshaped and recultivated for permanent human occupation."

हमारे जनपदीय कार्यक्रम का यह सर्वोत्तम समर्थन है।

Please look after Naresh considering him as your own nephew, please! Thus you will be doing great service to me.

आपका मैं वैसे भी बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च:—

श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

चतुर्वेदी जी द्वारा श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१४-११-६८

श्रद्धेय ब्रह्मचारी जी,

सादर प्रणाम।

आपके फीरोजाबाद पधारने की सूचना यदि मुझे मिल जाती तो सेवा में उपस्थित होकर दर्शन ही कर लेता। मुझे २ बातें निवेदन करनी थीं।

(१) स्व० हरीशंकर शर्मा का स्मृति ग्रन्थ निकल जाना चाहिये। आप अपने संस्मरण तो लिख ही दें। श्री प्रकाशवीर शास्त्री, १ कैनिंग लेन नई दिल्ली को भी प्रेरित करें कि वे इस श्राद्ध कार्य के लिए साधन जुटा दें।

(२) व्रजभूमि के पुनर्निर्माण के लिये आपसे बहुत सी आशायें हैं। बाबू वृन्दाबनदास जी को आपका सहयोग यदि मिल जाए तो बहुत काम हो।

(३) अपना पत्र निकालने का विचार क्या अब भी है? मैं तो उसके विपक्ष में हूँ। उसमें तो घाटा ही घाटा रहेगा। मौजूदा पत्रों का आश्रय लेना ही ठीक होगा।

(४) हाँ, छोटी-छोटी पुस्तिकाओं तथा ट्रैक्टों को छपाया जा सकता है। आपके पास तो प्रेस है। यजमानों की मदद से ट्रैक्ट छपवाना कठिन न होगा। अधिक क्या लिखूँ।

विनीत
बनारसीदास

(३६)

फीरोजाबाद
१२-६-६८

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

५१-५१ रु० प्रति भाषण व रेल किराया देकर कुछ भाषण पत्रकारिता पर तीन चार केन्द्रों पर कराये जा सकते हैं।

मथुरा, आगरा, फीरोजाबाद, इटावा।

भाषण लिखित लाये जावें और फिर उन्हें पुस्तकाकार भी छपाया जा सकता है। १२ व्याख्यानों में ६१२ रु० व ३०० रु० यात्रा व्यय-लगभग एक हजार का खर्च होगा। जहाँ जहाँ व्याख्यान सर्व प्रथम हो वहाँ वहाँ से पैसा उगाह लिया जाय। इस व्यावहारिक योजना पर भी विचार कीजिये।

३१-३१ रु० तो कम होंगे। आज की महंगी के युग में ५१ रु० तो भेंट करने ही चाहिये। जो न ले उनकी बात दूसरी है।

एक भाषण पत्रकारिता : घाटे का सौदा : इस विषय पर श्री जगन्नाथ लहरी भूतपूर्व एम. एल. ए. गौशाला, फीरोजाबाद से कराया जा सकता है। उन्होंने हजारों रुपये फीरोजाबाद सन्देश में गंवा दिये थे।

उन्हें आप पत्र तो लिखें हीं। इस नगर की वे विभूति है। Best Worker.

विनीत
बनारसीदास

(४०)

४, लाजपत कुन्ज सिविल लाइन्स
आगरा
१६-१२-६८

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! मैं कल शाम को ओल्ड लैप्रौसी हाउस, ताजगंज आगरा में श्री मथुरादत्त शास्त्री एम. ए. से मिला, जो ५ वर्ष से कुष्ठ रोग से पीड़ित हैं। उनके दर्शन करके हार्दिक पीड़ा हुई। हमारे अभागे देश में ५० लाख कुष्ठ रोगी हैं। शास्त्री जी मथुरा जिले में ही संस्कृत अध्यापक रह चुके हैं। वैसे रहने वाले अलमोड़े के हैं।

शिवलाल अग्रवाल एन्ड कं० के श्री राधे मोहन जी ने २१ रु० शास्त्री जी को भेंट किये थे और श्री पदमचन्द्र प्रकाशक ने ५१ रु०। शास्त्री जी से

'आपबीती' लिखवा रहा हूँ। उसे पत्रों में छपवाऊँगा। आपको जब कभी आगरा आना हो तो ताजगंज जाकर शास्त्री जी से जरूर जरूर मिल लीजिये। उन्हें ब्रज भारती इत्यादि भेंट भी कीजिये। उन्हें मानसिक भोजन देने की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ले ली है। उनके ४ बच्चे हैं। जिनमें बड़े बच्चे को, जो १४ वर्ष का है, यही बीमारी हो गयी है।

मूकों को वाणी देना यही लेखक का पवित्र कर्तव्य है। अधिक क्या लिखूं। शाम तक घर पहुँच जाऊँगा।

श्री रमेशचन्द्र दुबे के पत्र से ज्ञात हुआ कि आप २३ को फीरोजाबाद पधारने वाले हैं। २४ की शाम को ठीक रहेगा। क्योंकि तभी श्री बालकृष्ण गुप्त के यहाँ सबसे मिलना हो जायेगा।

गुरू जी भगवानदत्त द्वारा आपका प्रेमपूर्ण सन्देश मिल गया था।

विनीत
बनारसीदास

(४१)

फीरोजाबाद
२०-१२-६८

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

९ ता० का लिखा गया पत्र पड़ा रह गया। अकेले काम करना कठिन ही है। भाषण देने वालों में कुछ तो बिना कुछ लिये ही भाषण दे देंगे, इसलिये कुछ किफायत हो जायेगी। इसके सिवाय ५१ रु० के बजाय ३१ रु० ही प्रति भाषण रक्खे जा सकते हैं। **हर हालत में भाषण लिखित लाना चाहिये यह अगले वर्ष का कार्यक्रम है।**

१. श्रमजीवी पत्रकार संगठन
२. आचार्य द्विवेदी जी
३. शहीद गणेश शंकर जी
४. विलायती पत्रकारों का संगठन : जगदीश चतुर्वेदी
५. बाजपेयी जी, पराड़कर जी, गर्दे जी
६. स्वाधीनता संग्राम और हिन्दी पत्रकार : बनारसीदास
७. बालमुकुन्द गुप्त और कूर्मांचल केसरी बद्रीदत्त पांडे : बनारसीदास चतुर्वेदी

ऐसे ही और भी विषय चुने जा सकते हैं।

पं० झावरमल्ल जी शर्मा जसरापुर वाया खेतड़ी राजस्थान से भी

पत्र व्यवहार कीजिये। श्री शर्मा जी मुझसे भी ४ वर्ष बड़े हैं। उनसे 'हिन्दू संसार' तथा कलकत्ता समाचार के बारे में भाषण दिलाये जा सकते हैं। राजस्थान में पत्रकारिता पर भी वे लिख सकते हैं।

विनीत

बनारसीदास

(४२)

फीरोजाबाद

१७-१-६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! बीमार पड़ना एक अभिशाप है। जुर्म है—और मैं मुजरिम बन गया। शायद अनीमिया या रक्तहीनता के कारण पैरों में सूजन आ गई। टहलना बन्द है। Liver Extract के Injections दिये जा रहे हैं। **चिन्ता की कोई बात नहीं**। १५ दिन में तबियत ठीक हो जायेगी।

इस बीच मैं आप लोगों का चिन्तन करता रहा। इस वसन्त ऋतु को ब्रज मंडल के लिये चिरस्मरणीय बनाना है। बसन्त पंचमी से रामनवमी तक का एक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम बना लेना चाहिए। केवल मथुरा में ही नहीं, फीरोजाबाद, एटा, मैनपुरी, इटावा, अलीगढ़ इत्यादि में साहित्यिक उत्सव होने ही चाहिए। ये उत्सव कम से कम खर्च में हों। ज्याद: खर्च हम ब्रजवासी कर ही नहीं सकते।

१. बसन्त व्याख्यान माला
२. आसपास के सुन्दर स्थलों में गोष्ठियां।
३. छोटे-छोटे ट्रैक्टों का प्रकाशन।
४. हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थों तथा स्मृति ग्रन्थों की तैयारी।
५. ख़यालगो लोगों का संगठन।

इत्यादि विषयों पर विचार कीजिये।

सबसे जरूरी चीज लोक संग्रह है। अच्छे कार्यकर्त्ताओं को जुटाना है। यजमानों का भी सग्रह करना है। स्व०हरिशंकर जी का श्राद्ध कार्य इसी वसन्त ऋतु में पूरा कर देना चाहिए। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी को मैंने पत्र भेजा है कि वे एक सौ रुपये हमारे दिल्ली वाले टाइपिस्ट को भेज दें ताकि पत्रों के टाइप कराने का काम शुरू करा दिया जाए। कुछ तो आप की कृपा से टाइप हो गए। शेष २५० पत्र टाइप होने को हैं।

यहाँ हमने सामूहिक अभिनन्दन की एक योजना बनाई है। सैनिक में उस पर लिखूँगा। केवल राजनैतिक लीडरों या साहित्यकारों का ही अभिनन्दन न होना चाहिये—अच्छे कलाकारों का भी चाहे वे किसी क्षेत्र के क्यों न हों हमें अभिनन्दन करना है।

आपके रिश्तेदार श्रीयुत ओउम् ने सी. एफ. एन्ड्रयूज पर एक ट्रैक्ट छपाने का भार अपने ऊपर ले लिया है। जब एन्ड्रयूज सन् १९२० में यहाँ पधारे थे, श्री रतनलाल जी के मकान में ही ठहरे थे। श्री लहरी जी को आपका पत्र मिल गया है।

अबकी बार जब आप आगरा जाँय तो श्री मथुरादत्त शास्त्री, एम. ए. पुराना कुष्ट चिकित्सालय ताजगंज, आगरे से जरूर मिलें। उनको कुष्ट रोग है। अपने घर के Hall को चित्रों से सुसज्जित कीजिये। १०-१० रु० में Enlargements यहाँ तैयार कराये जा सकते हैं।

बनारसीदास

(४३)

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

कार्ड मिला। ब्रजभूमि के साहित्योपवन में जहाँ कहीं भी आपको प्रतिभा के अंकुर दीख पड़ें, उन्हें पल्लवित कीजिये। जिन किसी से जो कुछ सेवा सहायता मिल सके, लीजिये। यह बड़ा पुण्यकर्म है। जिस पथ पर आप चार पाँच वर्ष से चल रहे हैं वह निस्संदेह कल्याणकारी है।

स्व० हरिशङ्कर जी के पत्र टाइप हो रहे हैं। २४ पृष्ठ कल भिजवा दूँगा। शेष भी ज्यों त्यों जाते आवेंगे भिजवाता रहूँगा।

पंकज जी निस्संदेह बड़े त्यागी कार्यकर्त्ता हैं— पर उनमें विवेक की कमी है। अपनी सामर्थ्य की बाहर के काम वे उठा लेते हैं, और अपने घर वालों की उनके द्वारा उपेक्षा ही होती होगी। ना. प्र. सभा से उन्हें शायद १३०) ही मिलते हैं। उनकी पत्नी बीमार है और बच्चा कालेज में पढ़ रहा है। ईश्वर के यहाँ जब विवेक बँट रहा था पंकज जी कुछ देर से पहुँचे। फिर भी उनका दम गनीमत है। जहाँ लोग कुछ भी दान नहीं करना चाहते वहाँ पंकज जी जैसे उदार व्यक्ति का अस्तित्व अत्यन्त आशाप्रद है।

वे स्वस्थ रहें और दीर्घ काल तक अपनी साधना कायम रख सकें हमारी यही कामना होनी चाहिये।

विनीत

बनारसीदास

(४४)

फीरोजाबाद
२४-१-६९

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! कल डा० भटनागर से मुझे मालूम हुआ कि आप मेरे अभिनन्दन की बात सोच रहे हैं। उसके दो दिन पहिले तक मैंने ब्रज अभिनन्दन पत्र की आयोजना आपकी सेवा में तथा सैनिक पत्र को भी प्रकाशनार्थ भेज दी थी। इस प्रकार हम लोगों के विचार टकरा गये।

गुण ग्राहकता या Appreciation की मैं कद्र करता हूँ। पर हमें विवेक से काम लेना चाहिये। 'दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरं धनं' यह उपदेश एक महान् ब्रजवासी—भगवान कृष्ण का ही है। मेरे जैसे अत्यन्त विज्ञापित व्यक्ति को कीर्तिरूपी मिठाई खिलाने का कोई पुण्य नहीं। यदि ब्रजमंडल की डाइरेक्टरी आप बना सकें तो वह बड़े काम की चीज होगी। व्यापारिक दृष्टि से और व्यावहारिक दृष्टि से वह सफल होगी। तारीफों के पुल बाँधने से कोई फायदा नहीं। हमारे जनपद ब्रज की विभूति के सामने हम सब नगण्य है। ब्रज का सर्वाङ्गीण रूप हमारे सामने आना चाहिये युग धर्म का यही तकाज़ा है। ब्रजभूमि का हमें पुनः निर्माण करना है। इस रेगिस्तान में जहाँ कहीं भी हमें हरियाली दीख पड़े उसकी रक्षा करनी है। फिर चाहे वह साहित्यिक हरियाली हो या कृषि सम्बन्धी। छुटभइयों को प्रोत्साहन सबसे प्रथम मिलना चाहिये। मुझे तो बहुत सम्मान मिल चुका है। और अब उसका अजीर्ण हो जाने की आशंका है।

सम्पूर्ण ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण (सर्वे) हो जाना चाहिये पर उसके साथ साथ कृषि, व्यापार तथा उद्योग धन्धों को भी हमें नहीं भूलना है। जिस किसी क्षेत्र में जो कुछ अच्छा काम हो रहा हो उसकी कद्र होनी चाहिये। यदि ब्रज की डाइरेक्टरी तैयार कर दी जावे तो भविष्य में वह बड़े काम की चीज बन जायेगी। न जाने कितने व्यक्तियों की कीर्तिरक्षा उससे हो जायगी। और कितनों का मार्ग प्रदर्शन होगा।

इसलिये मैं आपसे और आपके मित्रों से करबद्ध प्रार्थना करूँगा कि आप लोग मेरा अभिनन्दन न करके ब्रजजनपद का अभिनन्दन करें। उस वृहद ग्रन्थ को आप १०-१२ ब्रजसेवकों को समर्पित कर सकते हैं। और उन बारह में मेरा नाम भी रख सकते हैं। वेद का एक मंत्र है : केवलाघो भवति

केवलादी : जो अकेला खाता है, पाप खाता है। आप मुझे पाप क्यों खिलाना चाहते हैं।

जस खायो सब जगत को भयो अजीरन तोइ।
अपजश की गोली दऊँ खात तुरत फल होय।

यह बात किसी दिल जले ने कही थी। सो मुझे तो वैसे ही अजीर्ण हो चुका है ?

विनीत
बनारसीदास

पुनश्चः—

बंसल जी को यह पत्र मैंने पढ़वाया सो उन्होंने कहा कि इससे बुद्धि भेद ही पैदा होगा। यह भी न होगा, वह भी न होगा। इसलिये जैसा भी आप लोग मुनासिब समझें करें। मैंने अपनी रुचि की बात लिख दी। मेरा विश्वास नहीं कि कोई व्यक्ति मेरे अभिनन्दन के लिये चन्दा दे सकेगा। सारी स्कीम टांइ टांइ फिस्स हो जायगी। फिर भी आप प्रयोग करना चाहते हैं तो करें। हाँ, हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थ तो २००) २५०) में ही बढ़िया तैयार हो सकता है। मेरे नाम का सहारा लेकर ब्रजजनपद का अभिनन्दन भी हो जाय तो मुझे विशेष आपत्ति न होगी।

(४५)

फीरोजाबाद
५-२-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कृपा पत्र मिला। मैंने चिरंजीव बुद्धिप्रकाश को जो ज्ञानपुर में इतिहास का अध्यापक है, आप लोगों के प्रस्ताव के बारे में लिखा था। वह भी मुझसे पूर्णतया सहमत है कि मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ के कार्य को प्रारम्भ ही न किया जाय। मेरी अब भी यही दृढ़ सम्मति है कि यह "गुनाह वेलज्जत है। मुझे इतना विज्ञापन मिल चुका है कि उससे तबियत ऊब गई है। मैं ईर्ष्या का पात्र नहीं बनना चाहता। जिन्हें कीर्ति की आवश्यकता हो उन्हें वह अवश्य प्रदान कीजिये। ब्रजभूमि के उस महापुरुष की वाणी को आप क्यों भूल जाते हैं जिसने कहा था—

"दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरं धनम्"

हमें ऐश्वर्य वालों को धन न देकर दरिद्रों का ही पालन पोषण करना है।

आचार्य पं० पद्मसिंह जी ने मुझे लिखा था—'इस कूचे में भी मुर्दे मुहताज हैं कफन के' सो उनकी अन्त्येष्टि का प्रवन्ध कीजिये। सर्वप्रथम ब्रजभूमि के स्वर्गीय लेखकों तथा कवियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का कार्य हम लोगों को करना चाहिये। मेरे जैसे अत्यन्त विज्ञापित व्यक्तियों को विज्ञापन देकर उन्हें बदहजमी क्यों कराना चाहते हैं। नहीं; मैं अपने को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किये जाने के विरुद्ध हूँ। मैं अभी कुछ काल तक और जीवित रहना चाहता हूँ। मेरे जाने के बाद लोग जो चाहें करें मैं अपनी अत्युक्तिमय प्रशंसा सुनना पसन्द नहीं करता। यह बड़ा कटु अनुभव है निस्संदेह। श्री हरिशंकर शर्मा स्मृति ग्रन्थ में आप मुझे सहयोग दीजिये। श्री सम्पूर्णानन्द स्मृति ग्रन्थ में भी। श्री बालकृष्ण गुप्त को छोड़कर यहाँ अन्य किसी से भी आपको मदद मिलना सम्भव नहीं। मामला टाँय टाँय फिस्स हो जायेगा। उससे आपके गौरव की हानि होगी और मेरा भी मजाक बन जायेगा। लोगों को यह भ्रम हो जायेगा कि यह सब मेरी स्वीकृति से हो रहा है।

श्री ओउम् ने C. F. Andrews पर एक ट्रैक्ट छपवा दिया है। भेजूँगा। भूमिका आपकी भतीजी ने लिख दी है। छपाई उत्तम है। दीनबन्धु की शताब्दी १२ फरवरी १६७१ से १२ फरवरी १६७२ तक मनायी जानी चाहिये।

"यदि मेरे पास शक्ति तथा साधन होते" शीर्षक लेख सैनिक में पढ़ा होगा। श्री बल्देव गुरू भी चले गये। उन पर लिख रहा हूँ। राष्ट्रपति के साथ उनका चित्र मैंने खिंचवाया था। अवश्य पधारिये। बहुत सी बातें करनी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(४६)

फीरोजाबाद
८-२-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

मैंने सम्पादक स्वराज्य बेलनगंज आगरा को अपने पत्र का आगरा जनपद (कमिश्नरी) अंक निकालने को कहा है और उन्होंने स्वीकार भी कर लिया है हमें ब्रजमण्डल का पक्ष प्रबल करने का हर सम्भव उपाय ढूंढ़ना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि वह विशेषांक एक संदर्भ ग्रन्थ ही बन जाय :

स्वराज्य के सम्पादक महोदय इस बारे में आपसे भी परामर्श माँगेंगे। मेरा उनसे कोई निजी परिचय तो है नहीं, पर जब अमर उजाला तथा सैनिक ऐसा नहीं कर सकते तो फिर जो कोई भी करे उसी को सहयोग देना चाहिए। भाई यशपाल जी के बहनोई का स्वर्गवास हो गया। यह बड़ी भारी दुर्घटना है—बज्रपात है। डा० नरेश चन्द्र (भतीजे) का पत्र मिला है। उसकी पत्नी को रक्तहीनता का रोग है—फिक्र है।

विनीत
बनारसीदास

(४७)

आजाद शहादत दिवस
फीरोजाबाद
२७-२-६६

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

वन्दे! श्री रतनलाल जी बंसल शायद दिल्ली से आज लौटेंगे। उन्हें पत्र भेजकर आप यहाँ पधार सकते हैं। एक पत्र श्री बालकृष्ण गुप्त जी को भी हनुमानगंज, फीरोजाबाद के पते पर भेजिये। उनका कोटले वाला बगीचा भी जरूर देखिये। वहाँ पर वे एक गान्धी-कुटीर का निर्माण कराना चाहते हैं। फीरोजाबाद के पाँच सौ लखपतियों में केवल उनका दम गनीमत है। मुझे विश्वास है कि उनके द्वारा ब्रजमंडल की उल्लेख योग्य सेवा भविष्य में बन पड़ेगी।

बजाय इसके कि आप मेरा अभिनन्दन करें, आप अपने घर पर एक ब्रज संग्रहालय की नींव डाल दें तो अत्युत्तम हो। आपका भवन ब्रजवासियों के लिये कभी तीर्थ बन सकता है। यही बात आप श्री बालकृष्ण जी गुप्त से कह सकते हैं। वे एक इन्टर कालेज जो कोटला में चल रहा है के सर्वेसर्वा हैं।

१६७१ की १२ फरवरी से १६७२ की १२ फरवरी तक दीनबन्धु C. F. Andrews की जन्मशताब्दी मनाई जावे, इसका आन्दोलन मुझे करना है। आपके रिश्तेदार श्री ओउम् ने मेरी पुस्तिका छपाकर बड़ी मदद की है। उस शताब्दी के लिये मुझे जीवित रहना है, यद्यपि बारबार बीमार पड़ जाने से कुछ आशंका हो जाती है। जो भी सामग्री मेरे पास है उसकी नकल आपके निजी संग्रहालय में रहनी चाहिये। यह कोई बहुत व्ययसाध्य कार्य भी नहीं है। चित्रों का तो पूरा-पूरा संग्रह आपको रखना ही है। श्री जगन्नाथ लहरी से मैंने फीरोजाबाद संग्रहालय की नींव डलवादी है।

सरकारी संग्रहालयों में तो चोरी होती रहती है, इसलिये मैं घरेलू संग्रहालय का प्रबल पक्षपाती बन गया हूँ और सबसे अधिक आवश्यक कार्य है—"लोक-संग्रह।" सुप्रसिद्ध अंग्रेजी समालोचक Dr. Johnson ने कहा था–

"श्रीमन्! जिस दिन मैं कोई नवीन मित्र नहीं बना पाता उस दिन को मैं व्यर्थ नष्ट हुआ मानता हूँ" सो हमें भी नवीन मित्र बनाते रहना है—जो हमारे कार्य के पूरक हों। एक पत्र श्री जगन्नाथ लहरी गऊशाला फीरोजाबाद को भी भेजिये। चिंरजीव नरेश से मिलते हुये आइये। ८ मार्च को विद्याशंकर जी ने आगरे बुलाया है पर मेरा पहुँचना बहुत मुश्किल है। आगरे में मेरी पुत्री का आपरेशन होने वाला है, चिन्तित हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(४८)

फीरोजाबाद
१३-३-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपका पत्र मिला। यदि आप वास्तव में किसी महापुरुष से मिलना चाहते हैं तो यहाँ आइये और बाबा पृथ्वीसिंह आजाद से मिलिये। वे यहाँ कल आये थे और अगले रविवार तक ठहरेंगे। वे कदाचित श्री बालकृष्ण गुप्त के यहाँ ठहरेंगे।

बनारसीदास

(४९)

फीरोजाबाद
१३-४-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! अस्वस्थ होते हुए भी मैं वित्तमंत्री महोदय की सेवा में उनसे निवेदन करने के लिये मीटिंग में गया था। जो कुछ मैंने कहा साथ में नत्थी है। ब्रजसाहित्य मंडल का निज का भवन कब तक काबू में आ जायेगा।

चि० नरेश को कोई अच्छा मकान मिल जाय तो मैं भी २, ४ दिन के लिये मथुरा की यात्रा की बात सोच सकता हूँ। अभी परसों जौनपुर म्युनिसिपल बोर्ड के अधिशासी अधिकारी श्री बटुकनाथ अग्रवाल मेरे पास पधारे थे। उनका वृत्तान्त शायद रविवार के सैनिक में छपेगा। कृपया पढ़ लीजिये।

ताजगंज के Old Leprosy Hospital में श्री मथुरादत्त जी पाण्डे जी रहते हैं। उनकी पुस्तिका भी छपवा दी है कभी आगरे जाना हो तो उनसे जरूर मिलिये। श्री आचार्य जी मुझसे मिलने आने वाले थे, पर मैं खुद ही उनकी मीटिंग में हाजिर हो गया। मैं उनकी सहृदयता का कायल हूँ।

विनीत

बनारसीदास

(५०)

फीरोजाबाद

१५-४-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कार्ड अभी मिला। यदि कभी बम्बई जाना हुआ तो अवश्यमेव श्री रनछोड़दास जी के फ्लेट पर चाय पिऊँगा। उन्हें मेरा आशीष कहिये। आशा है कि आपके घर वालों की चिकित्सा ठीक तरह हो जायेगी। ईंट, चूना, कंकड़, पत्थर को मैं भी महत्व नहीं देता।

श्री आचार्य लक्ष्मीरमण जी के सामने जो भाषण मैंने दिया था, उसकी प्रति अलग से भेजता हूँ। आप भी आचार्य जी को उसके Support में लिखें। जौनपुर नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी श्री बटुकनाथ अग्रवाल यहाँ एक दिन के लिये पधारे थे उन्होंने ७ शहीदों की मूर्तियाँ स्थापित की हैं। और आजाद की जीवनी दो जिल्दों में छपाई है। मूल्य ८ रु० है। मिशनरी स्पिरिट के आदमी हैं। उन्हें पत्र लिखिये जरूर जरूर।

विनीत

बनारसीदास

(५१)

फीरोजाबाद

प्रिय भाई वृन्दाबन दास जी,

वन्दे ! मैं १७ ता० की शाम को यहाँ आ गया। विस्तृत पत्र तो फिर लिखूंगा, इस समय दो एक आवश्यक बातें लिखे देता हूँ।

१. कृपया ब्रज भारती की फ्री लिस्ट मैं आप श्री राधेश्याम वर्मा श्याम', टैलीफोन एक्सचेन्ज, बुलन्दशहर का शुभ नाम लिख लीजिये। बजभाषा काव्य का बड़े ही मधुर स्वर से वे पाठ करते हैं। **विभूति हैं।**

२. कल यहाँ आध घन्टे के लिये श्री भक्तदर्शन जी (मंत्री) पधार रहे हैं। उनसे अपने संग्रहालय की रक्षा के विषय में बातचीत करूँगा। दिल्ली में Nehru Museum वालों से बातचीत की थी।

३. श्री बालकृष्ण गुप्त जी आज काशी यात्रा से लौट आये हैं।

४. चिरंजीव नरेसी डाक्टर तक खबर भेज दीजिये कि मैं सकुशल हूँ। १५ तारीख को क्या वह ताज एक्सप्रेस पर गया था। उसकी प्रति मैं गुपलेश के पास दिल्ली रख आया हूँ।

रेल में श्री फूलसिंह एम. पी. भूतपूर्व उद्योग मंत्री यू. पी, से मुलाकात हो गई। फूलसिंह जी ३० एकड़ वाले Ceiling के विरुद्ध हैं। फूलसिंह जी कहते थे कि ३० एकड़ वाली बात पास नहीं हो पावेगी। मेरा वजन ८ पौन्ड कम हो गया है। अब विश्राम ही करना है।

विनीत
बनारसीदास

(५२)

फीरोजाबाद
१२-५-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

ब्रजभाषा के विषय में जो कुछ आपने लिखा है उससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ। श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य ने शिक्षकों का वेतन बढ़ाकर बहुत ही समयानुकूल कार्य किया है। उन्हें मेरी ओर से हार्दिक बधाई भेज दीजिये। वे मुझसे मिलने आने वाले थे। यह सुनकर मुझे हर्ष तथा आश्चर्य भी हुआ। आज के युग में मंत्री लोग साहित्य सेवियों की प्रायः उपेक्षा ही करते हैं। पर मैं स्वयं उनकी मीटिंग में शामिल हो गया था।

उर्दू, अवधी, भोजपुरी, तथा बुन्देलखंडी के लिये भी हमारा मंडल भरपूर प्रयत्न करे क्योंकि ब्रजभाषा सब की बड़ी बहन है, उर्दू की तो माता भी।

दुइ बिटिया ब्रजभाषा की है हिन्दी उर्दू सुन्दर नार।
जेठी महलन में है बैठी लुहरी बैठी जाइ बजार॥

अन्तर्जनपदीय परिषद् का काम जारी रखिये।

मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब चल रहा है। जाँच के लिए आगरे तथा दिल्ली जाना है। डा० जाकिर हुसैन ने मेरे बारे में यू. पी. सरकार को इलाज के लिए लिख दिया था। मैंने कभी उन्हें अपनी बीमारी के बारे में लिखा भी नहीं था। आचार्य जी ने मुझसे पूछा था कि क्या मेरे पास कोई Stenographer है। Stenographer पर तो १५० रु० महीने खर्च होते हैं।

बनारसीदास

(५३)

२१, प्राइवेट वार्ड, एस० एन० हास्पीटल
आगरा
११-६-६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

सरस्वती (जून १६६६) में प्रकाशित अपने लेख (श्री सम्पूर्णानन्द जी जैसा मैंने उन्हें देखा) की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ। आशा है वह आपको पसन्द आवेगा।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उनकी स्मृति में निकाले जाने वाले ग्रन्थ का मामला खटाई में पड़ा हुआ है। ना० प्र० सभा उन पर कोई ग्रन्थ नहीं निकालना चाहती—यह बात मुझे श्रीयुत सर्वदानन्द (बाबूजी के सुपुत्र) ने लिखी है। मुझे इसमें हार्दिक खेद तथा आश्चर्य भी हुआ। कालपी के हिन्दी भवन से श्री परिपूर्णानन्द जी कुछ कराना चाहते थे, पर उनके पास भी साधनों की कमी है। जब सम्पूर्णानन्द जी जैसे महापुरुषों की स्मृति रक्षा की यह उपेक्षा हो रही है तब छुटभइयों को भला कौन पूछेगा।

मैं ७ ता० से यहाँ हूँ। डाक्टरी जाँच हो रही है। कल श्री दुबे जी पधारे थे। चि० नरेश के पुत्र का मुंडन संस्कार १२ ता० को है। डैम्पियर पार्क में, भट्टे वाले के नये मकान में नरेश रहते है। मेरी पुत्रवधू भी वहाँ गई है। भानजा प्रकाश भी। प्रकाश अच्छा अनुवादक है।

बनारसीदास

(५४)

२१, प्राईवेट वार्ड, एस० एन० हास्पीटल,
आगरा
१५-६-६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कार्ड मिल गया। आप चाहें जब पधारिये। हाँ १२ व ४ के बीच में मैं विश्राम करता हूँ। उस वक्त न आइये। अभी तक जो डाक्टरी जाँच हुई है वह सन्तोष जनक हुई है। आशा तो यही है कि आपरेशन सफल होगा। अगर पानी जल्दी बरस जाय तो कष्ट कम हो। फिलहाल आपरेशन में तीन सप्ताह की देर है।

मैं एक लेख 'अपनी ब्रजभूमि में ५ वर्ष' लिखना चाहता हूँ। मुझे खेद बस इस बात का है कि मैं पूरे ५१ वर्ष बाद ब्रजभूमि को लौटा। १९१३ में निकला तो १९६४ में लौट सका। हम लोगों को मिलकर ब्रज के सर्वाङ्गीण निर्माण की एक व्यावहारिक योजना तो बना ही लेनी चाहिये। जनगणना में मातृभाषा, "ब्रजभाषा" अवश्य अवश्य लिखाई जाय। इसमें डर किस बात का है? आखिर संख्या जान लेने का दूसरा उपाय है ही क्या? इस पवित्र कर्तव्य में संकोच किस बात का? इससे राष्ट्रभाषा हिन्दी को कोई हानि नहीं पहुँचती। कोष्टक में हिन्दी लिखाई जा सकती है। जो लोग ब्रजभाषा को मातृभाषा लिखाने में भी डरते हैं या संकोच करते हैं उनकी मोटी अकल पर मुझे तरस आता है। वे व्यर्थ का भूत खड़ा करते हैं। ब्रजभाषा तो खड़ी बोली की मां है। उसे सौत समझना अव्वल नम्बर की नासमझी है। आपका पक्ष इतना प्रवल है कि उसकी विजय निश्चित है।

विनीत

बनारसीदास

(५५)

४ लाजपत कुंज, सिविल लाइन्स
आगरा
२५-६-६९

प्रिय भाई वृन्दावनरास जी,

वन्दे! श्रीयुत बालकृष्ण जी गुप्त तथा श्री बंसल जी यहाँ पधारे थे। आप शायद फिरोजाबाद नहीं जा सके।

श्री हरदयालुसिंह जी के रिश्तेदार श्री जे. एन. गुप्त हैण्डी क्राफ्ट्स ताजमहल आगरा यहाँ Piles के Operation के लिये पड़ौस में रहे थे। उनसे कुछ संस्मरण लिखाये जा सकते हैं।

मेरी डाक्टरी जाँच शायद कल समाप्त हो जायेगी। आपरेशन तो पानी बरसने पर—कुछ ठंडक हो जाने पर ही—हो सकता है। फिर सूचित करूँगा। स्व० डा० अग्रवाल के सुपुत्र पृथ्वी अग्रवाल को लिखिये कि वे पूज्य पिताजी के पत्रों को छपा दें। राजाबाबू के बगीचे के मामले में हम लोगों के प्रयत्न सफल हो जायेंगे। इन्जीनियर ने उन्हें बुलाकर कहा कि हम थोड़ी सी जमीन लेंगे, अपनी ओर से हदबन्दी कर देंगे, आप मुआवजा कुछ भी न मांगे। यह मौखिक वार्तालाप हुआ है। लिखी हुई चीज अभी नहीं मिली। आप इस बारे में राजाबाबू से ही तलाश कर लीजिये।

"ब्रज मंडल में ५ वर्ष" Talk में लिख देना चाहता हूँ।

नेहरू संग्रहालय वालों की दृष्टि मेरे संग्रहालय पर है। अपने संग्रहालय के भविष्य के विषय में चिन्तित हूँ। इतनी बहुमूल्य सामग्री का सदुपयोग होना चाहिये।

बनारसीदास

(५६)

४ लाजपत कुंज, सिविल लाइन्स
आगरा
३-७-६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मेरे लिये आपको किसी से भी हाथ पसारना पड़े यह बात मुझे बहुत खटकती है। खास तौर पर इसलिये भी, कि मैं अपने अभिनन्दन को बिल्कुल ही निरर्थक चीज़ मानता हूँ। उसे अव्यापार समझता हूँ। अव्यापार का किस्सा आपने पंचतंत्र में पढ़ा होगा।

No., a thousand times no. I entirely disagree with this ABHINANDAN business. that leaves me cold.

अभी तक हम हिन्दी वाले स्व० रामानन्द बाबू के लिये कुछ भी नहीं कर सकें, जब कि उन्होंने तथा उनके कुटुम्ब ने १ लाख का घाटा विशाल भारत में सहा था। शहीद गणेश जी के लिये जो कुछ भी किया गया उसका वृतान्त आप जानते ही हैं। सी. वाई. चिन्तामणि की पुण्य तिथि १ जुलाई को थी। उन्हें भी लोग भूल गये। तब फिर मेरे जैसे नाचीज आदमी को सम्मानित करने की बात लगो है। It is worse them useless-positively harmful.

अपनी स्पष्ट सम्मति आप से क्यों छिपाऊँ, फिर जैसा आप समझें करें। डाक्टरी जांच समाप्त हो गई। आपरेशन तो कुछ ठंडक होने पर ही होगा।

विनीत
बनारसीदास

(५७)

२१, प्राईवेट वार्ड, एस० एन० हास्पीटल,
आगरा
६-७-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मैंने उन सभी यजमानों से, जिनसे आपने मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये पैसा मांगा है, प्रार्थना कर दी है कि वे इस (अव्यापार) के लिये एक

पैसा भी न दें। मैं दम्भ नहीं करता पर इस अवसर पर अपने हृद्गत भावों को छिपाना भी नहीं चाहता। मेरे लिये किसी को हाथ पसारना पड़े यह विचार ही मेरे लिये अत्यन्त कष्टप्रद है। इसके सिवाय मुझे तो बहुत काफी विज्ञापन मिल चुका है। मैंने यशपाल जी, बालकृष्ण जी, बंसल जी, ओउम्, राजाबाबू और शंभुनाथ जी, को स्पष्टतया अपनी दृढ़ सम्मति लिख भेजी है और उससे मेरे मन पर का बोझ उतर गया है। आप जैसे मित्रों की गुण-ग्राहकता की मैं कद्र करता हूँ, पर इस उम्र में किसी गलतफ़हमी का शिकार नहीं बनना चाहता।

आप ब्रज अभिनन्दन ग्रन्थ निकालिये मेरी सेवायें आपको अर्पित है।

विनीत

बनारसीदास

(५८)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! मैंने अभी यशपाल जी को पत्र भेजा है जिसका सारांश यह है, "I have all along been opposed to the idea of presenting me an अभिनन्दन ग्रन्थ and to day I am more than ever convinced of its positive harmfulness. इससे गलतफ़हमी भी उत्पन्न हो सकती है और मेरा अहित होगा। लोगों के मन में यह भ्रम उत्पन्न होगा कि चौबे जी स्वयं ही इस बेवकूफी को प्रोत्साहन दे रहे हैं।............Please give up this mad adventure at your earliest.

यदि आप ब्रज का अभिनन्दन करें तो मैं भी आपको भरभूर सहयोग दूँगा और तदर्थ १०१) रुपया भी भेंट कर दूँगा। लेकिन अपने अभिनन्दन का विचार ही मुझे सख्त नापसन्द है। आशा है कि आप लोग मेरी हृद्गत भावनाओं की कद्र करेंगे।

मेरे आपरेशन में अभी कुछ देर है। आशा है कि वह सफल होगा, पर कुछ भी क्यों न हो मैं बिल्कुल निश्चिन्त हूँ। ब्रजभूमि के लिए आप लोग प्रयत्नशील हैं इस आशाप्रद भावना के साथ मैं परलोक यात्रा करना चाहता हूँ। यदि कुछ समय और भी मिल जाय तो ब्रजभूमि की सेवा में ही उसे बिता दूँगा।

अन्य साथियों को भी ऐसा ही पत्र लिख रहा हूँ। राजा बाबू को भी लिख दिया है।

बनारसीदास

(५९)

४, लाजपत कुंज, सिविल लाइन्स,
आगरा
८-७-६९

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! मैं कल सवेरे यहाँ अपनी डाक्टरी जाँच के लिये आ गया था। शायद अभी ५, ६ दिन और भी ठहरना पड़े। अस्पताल के २१ नम्बर प्राइवेट वार्ड में ठहरा हुआ हूँ।

एक खत फीरोजाबाद में आपके लिये लिखा था। पर वहाँ ही पड़ा रह गया। मधुसूदन जी चतुर्वेदी के कार्य की उसमें प्रशंसा थी। उनकी ग्रन्थ माला के ६०० स्थायी ग्राहक हैं। यह करिश्मा उन्होंने कर दिखाया है। इधर के जनपदों में यह बहुत कठिन है।

स्व० हरिशंकर जी के स्मृति ग्रन्थ के विषय में व्यावहारिक कार्य यह होगा कि रत्नमुनि जैन कालेज तथा सेकसरिया कालेज की पत्रिकाओं के Special हरिशंकर अंक निकाल दिये जायें। वे दोनों कालेज दो दो हजार खर्च कर सकते हैं और वहाँ की प्रधानाचार्याएँ हरिशंकर जी की पुत्रवधूएँ ही हैं।

उनके अतिरिक्त जो दो शोध ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं उनमें मदद दी जाए। आर्य मित्र का विशेषांक भी निकाला जा सकता है।

अभी तक केवल एक सौ रुपये आर्यमित्र के प्रेस की ओर से हमारे टाइपिस्ट श्री जय किशन ८७ गुप्ता कौलोनी दिल्ली ९ में भेजे गये हैं। "जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ" यही हमारा मोटो होना चाहिये। आपने तो पचास रुपये दे ही दिये थे।

अपने अभिनन्दन के विषय में मैं क्या कहूँ। जो भी आप लोग उचित समझें करें। Some how I cannot reconcile myself to the idea of my अभिनन्दन। यदि ग्रन्थ का मुख्य भाग ब्रजभूमि की सर्वांगीण उन्नति को अर्पित कर दिया जाए और मेरे बारे में कम से कम रहे तो मैं उसे सहन कर सकता हूँ। अत्युक्तिमय प्रशंसा बिल्कुल फालतू चीज है। यह मैं मान सकता हूँ कि मेरे द्वारा थोड़ी बहुत सेवा हुई है, पर उसका ब्यौरा इकट्ठा करने का वक्त अभी नहीं आया है। हम लोग—मेरे जैसे आदमी—आते हैं और चले जाते हैं, पर हमारा जनपद—ब्रजभूमि—तो रहेगी ही। Let us concentrate on

ब्रजमंडल and its problems, अभी मैंने एक Interview श्री केशवदेव मिश्र कमल, हरिजन निवास Kingway Delhi-9 को भेजा है। उसकी typed copy मेरे टाइपिस्ट द्वारा आपके पास परामर्शार्थ पहुँचेगी—अभी छपने के लिये नहीं—छपावेंगे तो कमल जी जिसमें उन्हें कुछ पैसा शायद कहीं से कुछ मिल जाए। आप और दुबे जी बस इन दो व्यक्तियों पर ही मेरी आशाऐं केन्द्रित हैं।

अभी अमृतलाल जी चतुर्वेदी के घर तक टहल कर आया हूँ। उनकी सर्वोत्तम रचनाओं के सर्वोत्तम अंश सौ सौ पृष्ठों में छपाये जा सकते हैं। सब किताबें तो छपने से रहीं।

मध्य प्रदेश सरकार से लिखा पढ़ी करके देव पुरस्कार के नियमों को ठीक कराना है। महाराज ओरछा ने उसे Alternate years में ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के लिये रक्खा था। उस नियम को बदलने का कोई भी नैतिक आधार या कारण मध्य प्रदेश सरकार के पास कदापि नहीं। दरअसल महाराज साहब तो इसे ब्रजभाषा के लिये ही रखना चाहते थे, पर मैंने ही जिद्द करके उसे एक साल ब्रजभाषा और दूसरी साल खड़ी बोली करा दिया था, अब मध्यप्रदेश सरकार ने उस नियम को भी तोड़ दिया है। इस अनाचार का विरोध जगह जगह से कराना चाहिए। दस बीस पत्र पहुँचेंगे तो शायद शासन के कान पर जूं रेंगेंगी।

आप बद्रीनाथ जी यात्रा पर जा रहे हैं, यह पढ़कर हर्ष हुआ। बहुत सुन्दर प्राकृतिक स्थल सुना जाता है। यशपाल जी भी गंगोत्री तक जा रहे हैं।

मेरी पुस्तक प्रिंस क्रोपाटकिन का आत्मचरित छप रहा है। मंडल ही छापेगा। भूमिका उसकी कल दिल्ली भेज देनी है। युवक का शहीद अंक भी छप रहा है। कोटला कालिज की पत्रिका का विशेषांक भी छपेगा। श्री बालकृष्ण गुप्त की कृपा से कार द्वारा फीरोजाबाद से आगरे १ घन्टे में आ गया तथा पैसों की बचत हो गयी।

इस बीच में बाबा पृथ्वीसिंह आजाद (पोस्ट लालरू जिला पटियाला) के निकट सम्पर्क में आया हूँ। What a marvellous Man with a capital M. Do make a point to pay your respects to him personally. His आत्मचरित: क्रान्ति पथ का पथिक : is a great book indeed. बाबा मुझसे उम्र में ४ महीने बड़े हैं पर काफी स्वस्थ हैं। He can make a century उनको लेखक बनाने के लिये प्रयत्नशील हूँ। उनसे कई लेख लिखवाये भी हैं। "क्रान्ति पथ का पथिक" तो अभी अप्राप्य है, पर ज्ञान

मंडल, काशी ने राहुल जी द्वारा लिखित उनकी जीवनी छापी थी। मूल्य ४ रु० होगा। उसे अवश्य पढ़िये। स्व० जुगलेश का पता लगवाइये। वे पहिले सम्मेलन प्रयाग में काम करते थे। बहुत बढ़िया ब्रजभाषा लिख लेते थे। शायद डा० रामप्रसाद त्रिपाठी उनके बारे में कुछ बतला सकें। उन्होंने अपना काव्य ग्रन्थ स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह को अर्पित किया था।

अपने घर के Central Hall को चित्रों से सुसज्जित कीजिये। बल्देव गुरू तथा राष्ट्रपति का चित्र ५, ६ रुपये में बन जायेगा। बनवा दूंगा। ब्रज के लेखकों, कवियों, पहलवानों तथा अन्य विषयों के ज्ञाताओं के चित्र आपके संग्रहालय में रहने ही चाहिये। अक्षय जी ने अपने पिताजी का चित्र मुझे अभी तक नहीं भेजा। अभी ७½ बज रहे हैं। बल्कि ८—और मैं राजाबाबू की कार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उनके उपवन के दर्शन एक बार फिर भी करने हैं। अमृतलाल जी उनसे कह आये थे। स० ना० कविरत्न के समस्त ग्रन्थों का संग्रह छप जाना चाहिये। धाँधूपुर में भी उनके मन्दिर का जीर्णोद्धार हो जाए, तो क्या कहना है। शेष फिर।

विनीत

बनारसीदास

(६०)

४, लाजपत कुंज, सिविल लाइन्स

आगरा

२४-७-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

प्रणाम! आपका २१ जौलाई का कृपापत्र मिला। उत्तर प्रदेश साहित्य सम्मेलन के उद्धार के लिये जो आप कर रहे हैं, वह बहुत ठीक कर रहे हैं। उसे जीवित जाग्रत संस्था बनाना ही है। वहाँ कार्य करने वाले कौन सज्जन हैं, उनके विषय में कुछ लिखिये।

मेरा आपरेशन अभी स्थगित हो गया। अब आपरेशन अगस्त के दूसरे सप्ताह में होने की आशा है। डा० अग्रवाल जी की पुस्तक पृथिवी पुत्र की समीक्षा लिखिये। वह तो हमारी बाइबिल है। ब्रजमंडल के सर्वांगीण विकास पर हमें अब पूरा पूरा ध्यान देना है। क्षेत्रीय विकास ही हमारा मुख्य ध्येय है। आप सबका मैं बहुत-बहुत ऋणी हूँ।

विनीत

बनारसीदास

(६१)

४, लाजपत कुंज
आगरा
८-७-६६

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! कृपापत्र मिला । मैंने अपनी विनम्र सम्मति आप सबको लिख भेजी—यह मेरा कर्तव्य था —फिर जैसा भी आप उचित समझें करें । हमारा मुख्य कर्तव्य इस समय ब्रज जनपद की सर्वाङ्गीण उन्नति करना है और मेरे क्षुद्र व्यक्तित्व का उपयोग यदि तदर्थ किया जा सके तो मैं अपने ऊपर जुल्म भी सहन कर लूंगा । मैं दरअसल यह अनुभव करता रहा हूँ कि मुझे वहुत विज्ञापन मिल गया है । भाई ओउम् की उदारता का मैं कायल हूँ । उन्हें धन्यवाद का पत्र भेज दूंगा ।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च:—

पानी कुछ पड़ गया है, ठंडक भी हो गई है । अब शायद आपरेशन होगा । डा० राजदान अत्यन्त कुशल सर्जन हैं । गाँधी जी से हम क्या सीख सकते हैं ? इस विषय पर विशेषाङ्क निकालने के लिये मैंने श्री पंकज जी से कहा है ।

बनारसीदास

(६२)

४, लाजपत कुंज
आगरा
२६-८-६६

प्रिय श्री वृन्दाबनदास जी,

वन्दे ! कृपापत्र मिला । आप जिस प्रकार सक्रिय बने रहते हैं उसे देखकर हर्ष होता है—सन्तोष भी ।

Please continue your missionary work as vigorously as you have been doing so far. My operation takes place on 20th and I have every hope that it will succeed. I have, however, decided to retire now and enjoy my life, of course it will be an enjoyment with a Purpose.

ब्रजभूमि की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए यह जरूरी है कि हम लोग कुछ भ्रमण करें । अब की बार फीरोजाबाद यात्रा के अवसर पर कोटला

जरूर जावें। वहाँ भाई बालकृष्ण जी का बढ़िया बगीचा है, जिसके आम गतवर्ष बीस हजार में बिके थे। भाई बालकृष्ण ने फीरोजाबाद में घर से एक मील दूर एक उपवन की नींव डाली है। उस पर वे ५० हजार व्यय करेंगे। स्नानागार भी उसमें होगा। उन्हें बधाई का पत्र तो भेज ही दीजिये। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा पृथिवीसिंह यहाँ पधारे थे। फीरोजाबाद गये हुए हैं। मिलने लायक आदमी हैं। चि० ओउम् से बहुत काम लिया जा सकता है। उनमें क्षमता है।

विनीत
बनारसीदास

(६३)

फीरोजाबाद
१०-१०-६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मुझे इस बात की शिकायत है कि अपनी अस्वस्थता की कोई सूचना आपने मुझे नहीं भेजी। मैं इधर-उधर से सुनता रहा कि आपका आपरेशन हुआ है। मधुमेह में शक्कर त्याज्य हो जाती है सो आप उसे छोड़ ही दीजिये। प्रातःकालीन भ्रमण आपके लिये अनिवार्यतः आवश्यक है। डाक्टरों के आदेश का पालन करना चाहिये।

मैं अब सवेरे ४ फर्लाङ्ग टहल लेता हूँ। स्वस्थ होने में तीन महीने तो लग ही जावेंगे।

भाई चन्द्रगुप्त जी का कहना है कि मैं खुद ५०/६० पृष्ठों का आत्म-चरित इस ग्रन्थ के लिये लिख दूं पर संयत भाषा में अपने गुण दोषों का विवेचन अत्यन्त कठिन कार्य है। आत्म विज्ञापन से सर्वथा दूर रह कर अपनी शल्य चिकित्सा खुद ही करना कोई आसान काम नहीं।

चि० बुद्धिप्रकाश १२ ता० को छुट्टियों में घर आ रहा है वह कुछ लिख सकेगा। आप सब का मैं बहुत ऋणी तथा कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(६४)

फीरोजाबाद
११-१०-६६

आशीष।

पत्र मिला ! आप लोग श्रम कर रहे हैं। मुझ पर अहसान का बोझ लदता जाता है। आप सबका ऋण कैसे चुका सकूंगा ?

मेरे नाम के सहारे यदि ब्रजभूमि की कुछ सेवा हो जाय तो वही मेरे लिए सब से अधिक हर्ष की बात होगी। इस बीमारी में मुझे अपने विस्तृत साहित्यिक कुटुम्ब के स्नेह का पता लग गया। कितने व्यक्ति मेरे स्वस्थ हो जाने के लिए चिन्तित रहे हैं। इससे मेरे मन में दीर्घ जीवन की प्रबल इच्छा होती है। पर मैं जीवन की कला नहीं जानता। अब सीख रहा हूँ।

आत्म चरितात्मक ५० पृष्ठ लिखाने का प्रयत्न करूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(६५)

एस. एन. अस्पताल
आगरा

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

कलकत्ते में श्री सीताराम जी सेकसरिया तथा श्री भागीरथ कानोड़िया ये दो महानुभाव मेरे यजमान हैं और उन्होंने मेरे अनेक यज्ञों में यथेष्ट सहायता प्रदान की थी।

यदि आप और यशपाल जी कलकत्ते की यात्रा करें तो दो तीन हजार रुपये वहाँ से आपको मिल सकते हैं।

इस बहाने ब्रज अभिनन्दन ग्रन्थ आप निकाल सकें तो कुछ बात भी है। मुझे तो स्वयं का अभिनन्दन बड़ा भोंड़ा जँचता है।

भिंड के एक शोधकर्ता हरिशङ्कर जी के पत्रों इत्यादि की देखभाल आजकल यहाँ कर रहे हैं।

स्व० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के पत्रों को छपाने के लिए आप उनके सुपुत्रों पर जोर डालें। श्री पृथ्वी अग्रवाल तो पत्र का उत्तर भी नहीं देते। मैंने उनके लगभग सौ पत्र सम्मेलन पत्रिका में छपा दिये थे। और भी सैकड़ों पत्र यत्र तत्र बिखरे पड़े हैं।

श्रीराम शर्मा जी की पुत्रियों के पास बल्का बत्ती में बहुत से पत्रों का संग्रह अव्यवस्थित पड़ा है।

विनीत
बनारसीदास

(६६)

फीरोजाबाद
२५-१०-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

क्या ही अच्छा हो यदि अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए मेरे संग्रहालय पर दुबे जी (श्री रमेशचन्द्र जी दुबे) एक छोटा सा लेख लिख दें। परन्तु इसके लिए उन्हें किसी रविवार को यहाँ आना होगा।

आत्म चरितात्मक ५० पृष्ठ तैयार कर रहा हूँ आपने जो यज्ञ प्रारम्भ किया है वह सफल हो तदर्थ प्रयत्न करना मेरा कर्तव्य है, यद्यपि मैं उसका पात्र नहीं हूँ। चित्र छाँट लिए हैं भेजूंगा।

हरिशंकर जी शर्मा की ३०० चिट्ठियाँ टाइप होने दिल्ली भेज दी हैं। एक टंकित प्रति आपके संग्रहालय को भी भेंट कर दूँगा। मधुसूदन जी आगरे में मिले थे।

बनारसीदास

(६७)

फीरोजाबाद
२८-११-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मैंने जो पत्र आज डा० कमलेश अग्रवाल को भेजा है, उसकी नकल आपकी सेवा में अर्पित है। उनका पता है राम लक्ष्मण भवन, पथवारी, बेलन गंज, Agra. उनको २९ नवम्बर को पी. एच. डी. की उपाधि मिलेगी। यह बहुत ही अच्छा हुआ। दुर्भाग्यवश उनके गाइड डा० हरिशङ्कर शर्मा अब इस संसार में नहीं हैं।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में जो भूकम्प आया हुआ है उसमें श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य जैसे ब्रज भक्त की भी स्थिति खतरे में पड़ गई है, नहीं तो स. ना. कविरत्न के मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिये उनसे कुछ काम लिया जा सकता था। उन्होंने शहीद अशफाक के भतीजे को ५०) महीने की पेंशन दिला दी, यह बहुत अच्छा किया।

कृपया आप मेरी ओर से श्री लक्ष्मीरमण जी को इस पुण्य कार्य के लिये धन्यवाद दे दीजिये।

भाई यशपाल जी की माता जी का स्वर्गवास हो गया है। वे ८० वर्ष की थीं। उनके जाने का वक्त था, फिर भी मातृ विछोह दुर्घटना है।

यशपाल जी सम्पूर्ण मसाले को (अभिनन्दन ग्रन्थ सम्बन्धी) सम्मेलन कार्यालय प्रयाग को भेज देंगे। छपने में २, २॥ महीने से कम नहीं लग सकते। कोई मुजायका नहीं। यद्यपि मैंने-अपने अभिनन्दन के इस रूप का विरोध किया था, तथापि आप लोगों की श्रद्धा के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ा।

एक लेख उसमें मेरे संग्रहालय पर जरूर जाना चाहिये। उसकी मुझे सबसे अधिक चिन्ता है। भाई महेन्द्र जी ने इस बारे में साहित्य-सन्देश में एक नोट लिखा है, जो श्रद्धा से परिपूर्ण है, पर विवेक की जिसमें भयंकर कमी है। ८० हजार के चन्दे की बात बिल्कुल अव्यावहारिक है—लगो है। पर संग्रहालय के सुरक्षित रखने के लिये मैं चिन्तित 'अवश्य हूँ।'

श्री मीतल जी को मेरा नमस्ते कहिये। इस शुभ अवसर पर मैं वरवधू को बहुत-बहुत आशीष भेजता हूँ। उन्होंने ब्रजभाषा साहित्य के लिये जो महान कार्य किया है उसके कारण हम सब उनके ऋणी तथा कृतज्ञ हैं।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

मेरे संग्रहालय पर भी एक लेख जा सकता है। उसी की मुझे सबसे अधिक चिन्ता है। संग्रहालय पर भी दुबे जी लिख सकते हैं।

चतुर्वेदी जी द्वारा डा० कमलेश अग्रवाल को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

श्रीमती डा० कमलेश अग्रवाल, आशीष,

यह पढ़कर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ कि आपको PH. D. की उपाधि मिलने वाली है। मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ।

कविरत्न सत्यनारायण के स्वर्गवास के बाद लगभग दस वर्ष तक मैं उनकी कीर्ति रक्षा के लिये कुछ न कुछ प्रयत्न करता रहा। उसका विस्तृत व्यौरा आपने उनके जीवन चरित की भूमिका में पढ़ा ही होगा।

स. ना. ने जहाँ तक मैं जानता हूँ साहित्य सेवा से एक पैसा भी नहीं कमाया और जो कुछ किया सर्वथा निस्वार्थ भाव से। उनके लिये—उनकी स्वर्गीय आत्मा के लिये—यह आनंद तथा सन्तोष की बात होगी कि उनके विषय में शोध करने वाले व्यक्ति को PH. D. की उपाधि मिले।

अब मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप जो कुछ भी कर सकें स्व० सत्यनारायण जी की कीर्तिरक्षा के लिये अवश्य करें। श्री रमेशचन्द्र जी दुबे

तथा श्री पंकज जी और सर्वोपरि श्री वृन्दावनदास जी (अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा) को पूर्ण सहयोग देकर स. ना. के ग्रन्थों के पुनः मुद्रण के लिये प्रयत्नशील हों।

आप यदि उचित समझें तो धाँधूपुर की तीर्थयात्रा करके स. ना. के मन्दिर पर कुछ पुष्प जरूर चढ़ावें। एक प्रार्थनापत्र आगरे वालों की ओर से जरूर जाना चाहिये कि धाँधूपुर वाले उनके मन्दिर का जीर्णोद्धार करा दिया जाय। श्री लक्ष्मीरमण आचार्य को इस बारे में लिखा जाय।

यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक होता तो मैं अवश्य सेवा में हाजिर होता पर यात्राएँ मेरे लिये अत्यन्त ही कठिन हैं। गैर हाजिरी के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

अपने ग्रन्थ को छपवाने के लिये विनोद पुस्तक भंडार वालों से कहिये। वे शायद कुछ रुपये माँगेंगे। प्रायः ये लोग ऐसा ही करते हैं। अगर रुपयों का प्रबन्ध आप कर सकें तो कीजिये। शोधग्रन्थ यों ही पड़ा न रह जाय। पुनः पुनः आपको हार्दिक बधाई भेजता हूँ। लोहामंडी जाकर भाई विद्याशङ्कर जी को कुछ फल अवश्य भेंट करें।

विनीत
बनारसीदास

(६८)

फीरोजाबाद
१६-१२-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

माननीय शिक्षामन्त्री उ. प्र. को लिखे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

जो ड्राफ्ट गुरु जी ने बनाकर भेजा था उसका कुछ संशोधन करके मैंने यह पत्र लिख दिया है और आज सीधे लखनऊ भेज भी दिया है। नकल गुरु जी को भी सीधी भेज रहा हूँ। बिचारे यशपाल जी पर बज्रपात हुआ है। उनके बहनोई का आकस्मिक देहान्त हो गया।

मेरा ख्याल है कि इस परिस्थिति में उन्हें इलाहाबाद फिलहाल नहीं जाना चाहिये। पौष सुदी २ [मेरा जन्मदिवस] शायद ६ जनवरी को पड़ेगा। अगर जन्म दिवस पर ही उत्सव करना जरूरी समझा जाय तो २४ दिसम्बर के बजाय ६ जनवरी ठीक रहेगी। वैसे कोई जल्दी तो है नहीं। मैं उन्हें इस बारे में लिख रहा हूँ। वे पहले स्वस्थ चित्त हो लें, उसके बाद अन्य बातें सोची जा सकती हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

आप सम्पादक स्वराज्य वेलनगंज आगरा को उनके आगरा कमिश्नरी अंक के लिए कुछ सुझाव भेज सकते हैं। वे आपको लिखेंगे भी।

प्रतिलिपि पत्र जो चतुर्वेदी जी द्वारा शिक्षामन्त्री को भेजा गया

सेवा में,

श्री शिक्षामंत्री महोदय
सचिवालय
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ

श्रीमान्,

सविनय निवेदन है कि मैं बहुत वर्षों से गुरुवर श्री भगवान दत्त चतुर्वेदी (मथुरा) से व्यक्तिगत तौर पर परिचित हूँ। वे एक वयोवृद्ध साहित्यकार है और खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों पर उनका असाधारण अधिकार है। उनकी गद्य तथा पद्य की रचनाऐं हिन्दी के प्रतिष्ठित पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। स्वयं मैंने विशाल भारत में उनके लेख छापे थे।

अनेक बार उनके श्रीमुख से उनकी कविताओं को सुनने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ है। उनमें ओज है और प्रसाद गुण भी। श्री भगवानदत्त जी का सम्पूर्ण जीवन लोकहित के लिये ही अर्पित रहा है।

उनका सम्मान करके उत्तर प्रदेश सरकार स्वयं अपने को ही गौरवान्वित करेगी।

विनीत
बनारसीदास
भूतपूर्व संसद-सदस्य

फीरोजाबाद, आगरा
६-१०-६६

(६६)

फीरोजाबाद
१०-१२-६६

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री पन्नालाल धूसर झाँसी से भारती नामक पत्रिका निकालते हैं जिसका कुण्डेश्वर विशेषांक अभी हाल ही में उन्होंने निकाला था। उसकी प्रति शीघ्र ही भिजवाऊँगा। अगली दीपावली पर वे लोक संस्कृति अंक

(बुन्देली का) निकालना चाहते हैं और उसके लिये मैंने उन्हें कुछ परामर्श भेजे हैं। नकल आपको भेज रहा हूँ। क्षेत्रीय विकास में ही हमारा कल्याण है। इसका मतलब संकीर्ण दृष्टिकोण को विकसित करने का हर्गिज नहीं है। उदाहरणार्थ 'भूमि कटन' का सवाल लीजिये। वह अन्तर्राष्ट्रीय है। केवल चम्बल तथा जमना के खारों तक सीमित नहीं। अमरीका में भी भूमि कटन का सवाल मौजूद है। प्रेसीडेन्ट आइजन होवर ने उस पर कहा भी था।

बुन्देली लोक संस्कृति अंक ब्रज लोक संस्कृति ग्रंक का पूरक ही होगा। यह भी अन्तर्जनपदीय परिषद् के दायरे में आता है।

मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में ब्रज के लिये जो पृष्ठ दिये गये होंगे वे ही लाभदायक होंगे। उनके Reprint से पुस्तिका तैयार हो जानी चाहिये। मेरी प्रशंसा के जो पुल बाँधे गये होंगे, उनके विषय में क्या कहूँ। सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक H. G. Wells को उनकी ७० वी वर्षगांठ पर जब अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया (या अभिनन्दन ही किया गया) तो उन्होंने अपनी बाल्यावस्था का एक किस्सा सुना दिया। जब वे छोटे बच्चे ही थे, तो उनकी धाय रात शुरू होते ही कहती थी "Henry, it is time to sleep now." सो मेरे भी रिटायर होने का वक्त आ गया है, यही अभिनन्दन का तात्पर्य है।

ब्रजसाहित्य मंडल की भूमि के विषय में क्या हुआ ?

छै रुपये की कीमत की पुस्तक 'मध्यप्रदेश और गान्धी जी' सूचना विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल से जरूर मंगा लें। मेरे भेजे बापू को ११ पत्रों के ब्लाक उसमें हैं।

सबेरे पौने चार बजे उठकर चाय बना लेता हूँ। फिर इसी प्रकार के पत्र घसीट दिया करता हूँ। कम से कम एक लाख फालतू चिट्ठियाँ तो मैंने लिखी ही होंगी।

I burn my candle both the ways,
It gives a beautiful light.
But oh ! my friends and oh ! my foes,
It gives a great delight.

ये कविता शायद Lawrence की है। मुझे शुद्ध याद नहीं। किसी से पूछिये। 'Burning the candle both the ways' वाला expression अर्थपूर्ण है।

यशपाल जी पर दुहरी विपत्ति आ गई। उनके बहनोई का स्वर्गवास हो गया। यदि तिथि तारीख का ही बन्धन माना जाय तो ६ जनवरी (पौष सुदी २) क्यों न रक्खी जाय। हिन्दू हिसाब से वही मेरी जन्मतिथि है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

श्री सीताराम धूसर को लिखे पत्र की नकल संलग्न है।

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री सीताराम धूसर को भेजे गये पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद

१०-१२-६६

प्रियवर,

वन्दे ! कार्ड मिला। लोक संस्कृति अङ्क का विचार बहुत अच्छा है। अवश्य निकालिये।

चूँकि विशेषाङ्कों के लिये विज्ञापन प्राय: मिल ही जाते हैं, इसलिये साल में दो विशेषाङ्क निकालने के प्रश्न पर विचार किया जा सकता है, पर बड़ी मुश्किल यह है 'कि भारती' के मामूली अङ्क प्राय: साधारण कोटि के ही होते हैं, इस कारण उसे विज्ञापन ज्यादा मिल नहीं सकते। यह सवाल खुद आपके ग़ौर करने का है।

लोक संस्कृति अंक—

आप अभी से लेखकों तथा कवियों से सम्पर्क स्थापित करें।

श्री कृष्णानन्द गुप्त गरौठा, झाँसी
श्री श्यामसुन्दर बादल, राठ, हमीरपुर
श्री मित्र जी, झाँसी
श्री विद्रोही जी, भोपाल
श्री दुर्गेश जी, कुण्डेश्वर
श्री द्वारिकेश जी, झाँसी
श्री चतुरेश जी, दतिया
श्री रामइकबालसिंह राकेश भदैई, मुजफ्फरपुर Bihar.
श्री देवेन्द्र सत्यार्थी दिल्ली (पूरा पता तलाश करना है)

इनके अतिरिक्त श्री गौरीशंकर द्विवेदी तथा श्री माहौर जी से भी परामर्श लेने हैं। चित्र इन लोगों के मँगा लेने हैं। मधुकर की पुरानी फाइलों

में कुछ नाम और भी मिल जावेंगे। बादल जी तथा कृष्णानन्द जी से कहिये कि सम्पादकीय मंडल में वे अपने नामों का प्रयोग कर लेने दें। उस विशेषाङ्क में स्व० डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल का चित्र जरूर रहे। स्व० वीरसिंह जू देव का भी।

श्री बाबू वृन्दावनदास जी ब्रज साहित्य मंडल मथुरा से भी सलाह ले लीजिये, इन सबको मेरा नाम लिख सकते हैं कि मेरे आग्रह पर आप उन्हें पत्र लिख रहे हैं। २० पैसे का टिकट लगाकर लिफाफा रख दें तो उत्तर पाने में कुछ आसानी होगी ! इस प्रकार प्रत्येक पत्र पर ४० चालीस पैसे खर्च हो जायेंगे। पार्सल अभी नहीं मिली। आज फिर तलाश कराऊँगा।

विनीत
बनारसीदास

(७०)

फीरोजाबाद
१६-१२-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मेरा भानजा [डा० मिथिलेश चन्द्र] यह पत्र आपके पास ला रहा है। चि० नरेसी की पत्नी के बाल बच्चा होने वाला है इसलिये मेरी पुत्रवधू को लेकर वह मथुरा गया है। नरेसी अब Dampier park में रहता है।

भाई यशपाल जी ने ६ जनवरी को वह Function रक्खा है और श्रीमान् गिरि साहब से प्रार्थना की है। मुझे शायद २-४ दिन पहिले ही दिल्ली पहुँच जाना चाहिये। ग्रन्थ ६०० छै सौ पृष्ठों का है यह बात यशपाल जी ने लिखी है। इसको तैयार करने में—तथा तदर्थ साधन जुटाने में भी—आप सबको कितना परिश्रम करना पड़ा है। मैं भला इस ऋण से कैसे उऋण हो सकूँगा ?

सम्पादक 'स्वराज्य' बेलन गंज आगरा से मैंने आगरा कमिश्नरी पर जनपदीय-अङ्क निकालने का अनुरोध किया है। शायद वे कुछ करें। कोटला कालेज अङ्क भिजवाऊँगा। झाँसी की भारती का कुण्डेश्वर अङ्क मिला क्या ? ब्रजभारती के दो तीन पुराने अङ्क श्री महेन्द्र शास्त्री रतनपुरा जिला सारन को भिजवाइये। वे भोजपुरी के अच्छे कवि हैं। अंतर्जनपदीय परिषद् के कार्य में सहयोग माँगिये।

यू. पी. सरकार इस वक्त कुछ करने के Mood में प्रतीत होती है। ब्रजसाहित्य मंडल की ओर से एक प्रार्थना पत्र आर्थिक सहयोग के लिये शीघ्र ही भिजवाइये। ना. प्र. सभा आगरे को भी मैंने यही अनुरोध किया है।

लगे लग्गा में कुछ कार्य स. ना. कविरत्न के धाँधूपुर वाले मन्दिर के लिये भी हो जाय तो क्या कहना है। मैंने श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य को लिखा तो है।

६) के मूल्य का एक ग्रन्थ 'मध्य प्रदेश और गान्धी जी' सूचना विभाग M. P. Govt. भोपाल ने छपाया है। उसकी प्रति जरूर मँगाइये।

डा० वासुदेव शरण जी अग्रवाल के सुपुत्रों ने पत्रों का उत्तर न देने की कसम खाली है। अग्रवाल जी के सौ पत्र मैंने छपवा दिये थे और सैकड़ों ही पत्र बिखरे पड़े हैं—हिन्दी जगत में—पर उनकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं। डा० सत्येन्द्र को भी याद दिलाइये। उनके पास बहुत से पत्र हैं। श्री मीतल जी का प्रेस उन्हें नहीं छपा सकता।

श्री मीतल जी को मेरा नमस्ते कहिये। हम सबको आचार्य वासुदेव शरण जी अग्रवाल के ऋण से उऋण होना है। यथाशक्ति जो जिससे बन पड़े, करें। जिनके पास प्रेस है वे तो बहुत काम कर सकते हैं।

विनीत

बनारसीदास

(७१)

फीरोजाबाद

२१-१२-६६

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

वन्दे! मुझे उत्तर प्रदेश सरकार की अदूरदर्शिता का पता नहीं था, जिसने कुल जमा ५००) की सहायता प्रदान की है। पिछली बार जब श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य पधारे थे तो चुंगी की सार्वजनिक मीटिङ्ग में मैंने उनसे अनुरोध किया था कि ब्रजसाहित्य मंडल तथा ना. प्र. सभा आगरा को आर्थिक सहायता दिलवावें। उसी के कारण यह पत्र-व्यवहार चल पड़ा है। शायद इसका कुछ भी परिणाम न निकले। पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय सभी पार्टियाँ कुछ कर गुजरने के Mood में हैं। सम्भवतः वे इस वक्त कुछ विशेष उदारता से काम लें। श्री लक्ष्मीरमण जी ने एक प्रार्थना तो मेरी स्वीकार कर ही ली—यानी शहीद अशफाक के भतोजे को ५०) पचास रुपये महींने की पेंशन दिला दी। इसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

पुराने जमाने से एक प्रश्नावली चली आ रही है—वह अंग्रेजी में है और Indigent मुफलिस साहित्य सेवियों को उससे मदद मिलती है। वह निस्सन्देह अपमान जनक है। कोई भी स्वाभिमानी साहित्यसेवी खपरा लेकर किसी सरकार के सामने इस प्रकार भीख नहीं माँग सकता। सरकार यदि किसी साहित्यसेवी की कुछ सहायता करना ही चाहती है तो निजी तौर पर उसकी स्थिति का पता लगाया जा सकता है और सारी चीज gracefully की जा सकती है।

श्री सम्पूर्णानन्द जी ने बिना मेरे कहे और बिना मुझे सूचित किये श्रीमती सुचेता कृपलानी को लिख दिया था कि यू. पी. सरकार मुझे पेंशन दें। साल भर वह मुझे १५०) महीने के हिसाब से मिली भी। श्री सम्पूर्णानन्द जी का आग्रह था कि मैं उसे अस्वीकार न करूँ। फिर वह प्रश्नावली मेरे पास लखनऊ से आई, जिसका उत्तर देना अगौरवजनक होता। इसलिये वह पेंशन बन्द हो गई। मैं उसके जारी करने के लिये नहीं कहता। मेरा काम तो किसी न किसी प्रकार चल ही जाता है पर दूसरे साधनहीन साहित्य सेवियों की सहायता उनके गौरव की रक्षा के साथ होनी चाहिये। क्यों न इस बारे में आप आचार्य जी को लिखें ? इसमें तो पैसे का सवाल है नहीं। उस प्रश्नावली को मंसूख कर देना चाहिये, दूसरा काम और भी जरूरी है। देव पुरस्कार के नियम स्वयं ओरछा नरेश से मैंने ही बनवाये थे—यानी वह एक वर्ष ब्रजभाषा काव्य पर मिलने को था, दूसरे वर्ष खड़ी बोली काव्य पर। चूंकि मध्य प्रदेश सरकार ने ओरछा तथा अन्य राज्यों को विलीन कर लिया था, इसलिये उनकी जिम्मेवारियों को निभाने का नैतिक कर्तव्य उस पर पड़ा।

काफी प्रयत्न करने पर मध्यप्रदेश सरकार ने देव पुरस्कार तो चालू कर दिया पर नियमों में परिवर्तन कर दिया। यह चीज बहुत गलत हुई। ओरछा महाराज काव्य प्रेमी थे—विशेषतः ब्रजभाषा के पक्षपाती—दरअसल वे देवपुरस्कार ब्रजभाषा काव्य पर ही देने के पक्षपाती थे। मेरे आग्रह पर उन्होंने alternate year पर उसे देना स्वीकार किया था। उनके बनाये हुए नियमों में परिवर्तन करने का कोई भी नैतिक अधिकार M. P. govt. को नहीं है। आप ब्रजसाहित्य मंडल के प्रधान की हैसियत से श्री श्यामाचरण शुक्ल को लिखें। मैं भी लिखूंगा। भाई श्रीनारायण चतुर्वेदी से भी लिखवावें। गरज यह कि **हाँका** होना चाहिये। यह शब्द शिकार क्षेत्र का है। तीन तरफ से जब हाँके वाले खुट्ट-खुट्ट की आवाज करते हैं तो जानवर घबरा कर चौथी तरफ (जहाँ से आवाज नहीं आ रही) जाता है और वहाँ खड़े शिकारी उस पर निशाना लगा देते हैं।

श्री रामचरण ह्यारण मित्र की पुस्तक 'बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य' छप गई है। मूल्य १५) है। राजकमल ने छापी है। मैंने मित्र जी को लिखा है कि आपको भिजवावें। वह निस्सन्देह विस्तृत आलोचना की अधिकारी है।

हाँ, ९ जनवरी के लिये यशपाल जी ने राष्ट्रपति महोदय को लिखा है। उनका उत्तर अभी नहीं मिला।

६०० पृष्ठों के पोथे की सामग्री में क्या क्या है उसका मुझे बहुत कम पता है। हाँ, श्री प्रकाश जी ने अपने लेख की नकल मुझे भी भेज दी थी। श्री अमृतलाल चतुर्वेदी का लेख मेरे द्वारा भेजा गया था। सुना है कि अमृतलाल जी की पुस्तक गालिब अमृत छप गई है। मुझे अभी तक नहीं मिली।

भाई ओउम् ने तीन तैल चित्र (हरिशङ्कर शर्मा, श्रीराम शर्मा और C. F. Andrews) के बनवाने का आर्डर दे दिया है। श्रीराम जी तथा हरिशङ्कर जी के चित्र भारती भवन में लगेंगे और ऐण्ड्रयूज का उनके घर पर ही।

नौ तारीख के उत्सव में विशेष तौर पर बालकृष्ण जी गुप्त, ओउम्, राजाबाबू, शम्भुनाथ जी प्रभृति दानियों को निमंत्रित करना है। यह कार्य आपके सुपुर्द है।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

२० ता० का कार्ड अभी मिला। मेरा ख्याल है कि हमें तिथि इत्यादि के बन्धन में न बंधना चाहिये, सप्रू हाउस इत्यादि में तो बहुत खर्च पड़ जायगा। व्यर्थ में एक पैसा भी व्यय न किया जाय। आप डा० नरेश से मिल आये यह अच्छा किया। कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(७२)

फीरोजाबाद (आगरा)
२९-१२-६९

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! यशपाल जी को मैंने लिख दिया है कि उत्सव पर अधिक खर्च न करें। किसी बड़ी जगह के किराये पर लेने से बहुत खर्च पड़ जायगा। यदि

राष्ट्रपति गिरि जी को फ़ुर्सत न हो तो श्री जगजीवनराम जी से प्रार्थना की जा सकती है। वे भी मुझे जानते हैं। यशपाल जी का आदेश मिलने पर मैं तीन दिन पहिले दिल्ली पहुँच जाऊँगा।

बन्धुवर रामचरण हयारण 'मित्र' की पुस्तक 'बुन्देलखण्ड का साहित्य और संस्कृति' मूल्य १५) निकल गई है। अच्छी चीज है। मैंने उन्हें लिखा है कि एक प्रति आपकी सेवा में भिजवा दें। भाई अमृतलाल जी की गालिब अमृत अभी देखने में नहीं आई। श्री रमेशचन्द्र जी दुबे का तबादिला ब्रजमंडल के लिये एक दुर्घटना है। Stefan Zweig की 'परिवर्तन' नामक एक कहानी मधुसूदन जी छाप रहे हैं। वह मेरी अत्यन्त प्रिय कहानी है। छपने पर अवश्य पढ़िये। वे भेजेंगे।

श्री श्यामचरण शुक्ल जी को देव पुरस्कार के मूल नियमों के बारे में आप लिखिये—मैं भी लिखूँगा। वह Alternately ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के काव्य पर दिया जाने वाला था। उस नियम में परिवर्तन करने के मानी है स्व० ओरछेश की अन्तरात्मा का सर्वथा विरोध! यह तो एक नैतिक अपराध है।

श्री लक्ष्मीरमण जी आचार्य को Indigent वाली प्रश्नावली को मंसूख करने के बारे में लिखना है। वह तो किसी भी स्वाभिमानी साहित्यिक के लिये घोर अपमान-कारक है।

सम्भव है कि वर्तमान बदली हुई परिस्थिति में यू. पी. सरकार कुछ उदारता से काम ले। श्रीमती इन्दिरा जी ने बुद्धि जीवियों का आह्वान किया है, पर उनकी प्रायः उपेक्षा ही होती है—हाँ राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू के जमाने में उनकी ओर अवश्य कुछ ध्यान दिया गया था—सो भी चोटी के साहित्य-सेवियों के प्रति। साधारण बुद्धिजीवी तो घोर संकट में दिन व्यतीत करता रहा है। पोस्टेज की बढ़ी हुई दरों ने पुस्तक व्यवसाय को चौपट ही कर दिया है। 'स्वराज्य' नामक एक साधारण साप्ताहिक बेलनगंज Agra से निकलता है। मैंने उसके सम्पादक आनन्द शर्मा से आगरा कमिश्नरी का जनपद अङ्क निकालने के लिये कहा है। वे राजी तो हो गये हैं।

इटावे के श्री सूर्यनारायण जी अग्रवाल यहाँ पधारे थे। वे श्रीमन नारायण जी के चाचा हैं। पुराने लेखक हैं—८० वर्ष के होंगे इटावे में अच्छा काम करते रहे हैं। Eye Hospital खोल दिया है और स्कूल भी चला रहे हैं।

उदी इटावे से स्व० शिशु जी के सुपुत्र कुशलपालसिंह जी पधारे थे। ११ जनवरी को शिशु जी का जन्मदिवस है। मैंने उन्हें लिखा है कि उनके विषय में संस्मरण इकट्ठे करें। क्या Kotla College Magazine का विशेषाङ्क मिला ? साथ की कविता भाई श्यामसुन्दर जी खत्री ने भेजी है। अत्युक्ति-अलङ्कार का एक जीता जागता उदाहरण है। इसे छपने के लिये नहीं भेज रहा, आपके देखने भर के लिये है।

विनीत

बनारसीदास

(७३)

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी

वन्दे ! उत्सव फरवरी के प्रथम सप्ताह तक के लिये टल गया, यह अच्छा ही हुआ। तब तक दिल्ली में Influenza का प्रकोप भी कम हो जायेगा।

स्व० हरिशंकर जी के ३०० पत्रों की टाइप की हुई ५ प्रतियाँ चिरंजीव रामगोपाल, मकान नं० १११७ सैक्टर ८ रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली २२ के पास पहुँच गई हैं। श्री प्रकाशवीर जी ने १०० रु० आर्य मित्र की ओर से भिजवा दिये थे। ११३ रु० और भेज देंगे। ४०० से ऊपर पृष्ठ हैं। एक टाइप्ड प्रति आप अपने संग्रहालय के लिये ले लीजिये। भाई हरिशंकर जी के लिए स्मृति ग्रन्थ तैयार कराना इस समय तो अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी में ही चन्दा करने की शक्ति है सो वे कुछ नहीं कर सके। अब व्यावहारिक बात यही होगी कि रत्नमुनि जैन कालेज, आगरा तथा सेकसरिया कालेज, आगरा की वार्षिक पत्रिकाओं के हरिशंकर अंक निकलवा दिये जावें। उन दोनों महाविद्यालयों में हरिशंकर जी की पुत्रवधूऐं ही प्रिन्सीपल हैं। यह श्राद्ध कर्म आसान है। भिन्ड के कोई अध्यापक उन पर Research भी कर रहे हैं। उन्हें भी सहायता दी जानी चाहिये।

क्या ब्रजखण्ड (अभिनन्दन ग्रन्थ) के Reprints ले लिये गए ? मुझे तो पता भी नहीं कि ग्रन्थ में क्या क्या छपा है। श्री बालकृष्ण गुप्त तथा भाई ओउम् की इच्छा यहाँ उत्सव करने की थी। वे कुछ असन्तुष्ट हैं। बंसल जी की मार्फत उन्होंने यशपाल जी को पत्र भी भेजा है।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

श्री मिश्र को लिखे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

चतुर्वेदी जी द्वारा डा० सुधाकान्त मिश्र, अर्दली बाजार वाराणसी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१०-१-७०

प्रिय मिश्र जी,

प्रणाम ! सदस्यता फार्म भर कर भेज रहा हूँ। इस उम्र में मैं अधिक सेवा तो नहीं कर सकूंगा फिर भी समय समय पर कुछ परामर्श—यदि आप जरूरी समझें तो—भेज सकता हूँ।

यदि आप अन्य जनपदीय भाषाओं के कार्यकर्त्ताओं से सम्पर्क स्थापित करें तो उससे लाभ ही होगा। राष्ट्रभाषा के कुछ हिमायती लोग अपनी नासमझी के कारण अपने Steam Roller से जनपदीय भाषाओं को कुचल डालने का असम्भव प्रयत्न करते रहे हैं, यद्यपि इसमें उनको सफलता मिलना सर्वथा असम्भव है। मेरा ख्याल है कि मैथिली की Position जनपदीय भाषाओं में काफी ऊँची है और उसे भारतीय संविधान में पृथक् भाषा का स्थान मिलना ही चाहिये। पर आमरण अनशन की बात मुझे बिलकुल नहीं जँचती। प्रबल सार्वजनिक मत तैयार करने की जरूरत है। डा० सुनीति कुमार चटर्जी तो आपके समर्थक होंगे ही। आचार्य द्विवेदी जी से भी पूछिये। श्री रामइकबालसिंह राकेश से भी सहायता लीजिये। श्री नागार्जुन जी का वर्तमान पता क्या है। उनका कृपापत्र बहुत दिनों से नहीं मिला।

पूज्य पिताजी के संस्मरण तो तुरन्त लिखना लिखाना शुरू कर दीजिये। ४, ५ वर्ष पर्याप्त हैं, पर जितनी जल्दी यह श्राद्ध कर्म सम्पन्न होगा, उतना ही नैतिक बल आपकी संस्था को मिलेगा। धर्मयुग अथवा साप्ताहिक हिन्दुस्तान में उन पर लेख छपना चाहिए। मिथिला-आलोक वाले लेख को ही पुनः लिख दीजिये।

बाबू वृन्दावनदास जी, अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा को मैं आपके बारे में लिख रहा हूँ। वे बड़े कुशल कार्यकर्त्ता हैं। आपको पूरा-पूरा सहयोग उनसे मिलेगा।

विनीत
बनारसीदास

(७४)

रामकृष्णपुरम्
वसंतपंचमी

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आपके द्वारा किए गए यज्ञ को अदभुत सफलता मिली । तदर्थ में आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ । पर जितनी कीर्ति रूपी मिठाई मुझे परोस दी गयी है, उससे निस्सन्देह मुझे अजीर्ण हो सकता है ।

जस खायौ सब जगत कौ भयौ अजीरन तोइ ।
अपजस की गोली दऊँ, खाइ तुरत फल होइ ।।

किसी मनचले कवि ने बीरवल को यह दोहा लिख भेजा था । मुझे भी अपजस की गोली चाहिए । यशपाल जी को भोपाल जाना पड़ा । अब लौट पाये हैं । ग्रन्थ की प्रतियाँ अब भेजेंगे । पहले तो मैंने अभिनन्दन का घोर विरोध किया था, पर अब मैं समझता हूँ कि जो कुछ हुआ ठीक ही हुआ, यद्यपि उतनी कीर्ति का अधिकारी मैं अपने को हरगिज़ नहीं मानता । बस इतना ही मानता हूँ कि लोग मुझे किस रूप में देखना चाहते हैं । उनकी सद्भावनाओं तथा आशीर्वादों के अनुरूप जन्म जन्मान्तर में भी बन सकूँ तो बड़ी बात हो ।

'ब्रज का पुर्ननिर्माण' आपका लेख बहुत बढ़िया रहा । मेरी आकांक्षाओं का ठीक चित्रण आपने किया है ।

बनारसीदास

(७५)

नई दिल्ली २२,

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आशा है कि आप बम्बई से लौट आये होंगे । ५, ७ दिन बाद मैं फिरोजाबाद लौट जाऊँगा । भेंट स्वरूप ग्रन्थ मांगने वालों के पत्र आ रहे हैं । मैं विनम्रतापूर्वक उन्हें नकारात्मक उत्तर ही दे रहा हूँ । कोई ३, ४ तीन चार रुपये की किताब होती तो खरीदकर भेज देता । पहला कर्तव्य ग्रन्थ की बिक्री कराना है, ताकि मंडल को घाटा तो न रहे । यशपाल जी को अभी पत्र भेजा है कि श्रद्धेय प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी की प्रति उन्हें शीघ्र ही झूसी मिल जावे ।

श्राद्ध अभिनन्दन मुंडन कम्पनी अनलिमिटेड के मैनेजिंग डाइरैक्टर पं० झावरमल्ल जी शर्मा मेरे अग्रज हैं—५ वर्ष बड़े । एक प्रति उनको भेंट

स्वरूप जानी चाहिए। वे आना चाहते थे पर हरियाणा के आन्दोलन के कारण न पहुँच सके। दरअसल वे और श्री श्रीप्रकाश जी मुझसे पूर्व अभिनन्दन के हक़दार थे। अपने संग्रहालय के विषय में श्री भक्त दर्शन जी से बातचीत करनी है। वे National Archives के द्वारा कुछ आवश्यक कागजात Preserve करा सकते हैं। सी. एफ. एन्ड्रूज की शताब्दी पर नेहरू म्यूजियम एक प्रदर्शिनी करना चाहता है, उसमें भी मुझे सहयोग देना है। अब कई महीने विश्राम अनिवार्य हो गया है। आपरेशन के बाद आराम नहीं कर सका। आगरे २ दिन ठहरता हुआ फीरोजाबाद पहुँचूँगा।

विनीत

बनारसीदास

(७६)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२,

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! आशा है कि आप बम्बई से लौट आये होंगे। मेरा विचार १५ ता० रविवार को Taj Express से आगरे पहुँचने का है। भाई हरिशंकर जी के पत्रों की टाइप्ड प्रतियाँ साथ लेता जाऊँगा। मुश्किल यह है कि पृष्ठों को छाँट छाँटकर अलग ५ प्रतियाँ नहीं बनाई गईं। एक प्रति आपको भेंट करनी है, २ प्रतियाँ विद्याशंकर जी को तथा २ प्रतियाँ मूल के साथ मेरे पास रहेंगी।

आगरे में दो दिन रहूँगा—४ लाजपत कुंज पर। प्रातःकाल १६ को राजाबाबू के उपवन को देखने का विचार है। और १७ ता० को फीरोजाबाद लौटने का। गुरुवर श्री भगवान दत्त जी चतुर्वेदी एक प्रति चाहते हैं। मैंने राजाबाबू से अनुरोध किया है कि यदि वे भेंट कर सकें तो अच्छा हो। नरेसी ने प्रति देखी या नहीं। उसे एक प्रति यशपाल जी द्वारा भिजवाऊँगा। इस बीच वह आपसे एक प्रति उधार लेकर पढ़ सकता है। उसमें मेरे अनुज पटे स्व० रामनारायण का रेखा चित्र है। आपने उसे पढ़ा या नहीं। श्री बालकृष्ण जी यहाँ पधारे थे। ६ को भी आने वाले थे और १५ को भी। आपके अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये ब्रज के मुख्य-मुख्य स्थानों की तीर्थयात्रा करनी है। रेखाचित्र प्रस्तुत करने हैं।

होली की परवा से शरद पूनों तक फर्लो छुट्टी मनाऊँगा। शेष कुशल।

बनारसीदास

(७७)

रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली २२
१३-२-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! बन्धुवर अमृतलाल जी ने मुझसे फीरोजाबाद में आग्रहपूर्वक अनुरोध किया था कि अब एक दूसरे अभिनन्दन ग्रन्थ का काम हाथ में ले लेना चाहिये । और उन्होंने आपका शुभ नाम suggest किया था ।

मुझे अमृतलाल का यह विचार बहुत पसन्द आया था और मैं उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिये अत्यन्त उत्सुक भी हूँ । आपके नाम के सहारे ब्रजभूमि के विषय में एक नवीन Reference Book-well illustrated तैयार हो जायगी ।

संयत भाषा में उन सब प्रतिभाओं का, जिनके अंकुर ब्रजभूमि में प्रस्फुटित हो रहे हैं, सजीव चित्रण ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये । ब्रजमण्डल में जहाँ जहाँ जो उल्लेख योग्य साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य हो रहा हो, उसका लेखा जोखा इकठ्ठा कर लेना चाहिये ।

इसमें कोई अत्युक्ति नहीं कि इस समय सम्पूर्ण ब्रजमण्डल में आपकी सेवाऐं अद्वितीय हैं और इस कारण इस यज्ञ को भरपूर नैतिक तथा आर्थिक सहयोग भी मिल जायगा । मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ से जो अनुभूतियाँ हुई हों उनका सदुपयोग इस द्वितीय ग्रन्थ में हो सकता है ।

जो भी मसाला चित्र लेखादि इकठ्ठा हो वह आपके निजी संग्रहालय में सुरक्षित किया जा सकता है । जो २, ४ वर्ष मेरे क्षुद्र जीवन के शेष बचे हैं उनको मैं अपनी ब्रजभूमि के लिये ही मुख्यतया अर्पित कर देना चाहता हूँ । भाई मीतल जी तथा सत्येन्द्र जी प्रभृति का पूर्ण सहयोग तो निश्चित ही समझिये । फीरोजाबाद के साहित्य-प्रेमी तथा साहित्यिक मुझे यथेष्ट सहायता देंगे ही । आगरे वालों का सहयोग मिलेगा और मथुरा तो आपका निजी केन्द्र ही है । मैं उस ग्रन्थ को सर्वाङ्गीण बनाने के पक्ष में हूँ । अखाड़ों, बाग-बगीचों, गायकों तथा पहलवानों को क्यों छोड़ा जाय ? गोवर्द्धन तथा छलेसर के प्रयोग क्यों न उचित स्थान पावें ? नरवर का संस्कृत विद्यालय क्यों उपेक्षित रहे ? मेरा दृढ़ विश्वास है कि आपके अभिनन्दन ग्रन्थ से समस्त ब्रजभूमि में उत्साह की लहर फैल सकती है । दक्षिण में षष्टिपूर्ति पर—६० वर्ष समाप्त होने पर ऐसे उत्सव होते हैं और मेरा अनुमान है कि आप भी साठ के आसपास

ही होंगे। आप वस्तुत: मेरे यजमान (जिजमान) हैं और आपके शतायु होने के लिये मेरे आशीर्वाद हैं। चूना कंकड़ मुहल्ले में मेरी पितृभूमि है और इस नाते भी मैं आपके बहुत निकट हूँ।

अपने इस विचार को मैं अन्य बन्धुओं तक पहुँचाऊँगा। और कुछ नहीं तो उम्र के नाते मेरा आप पर कुछ अधिकार भी है! और ब्राह्मण होने के नाते तो है ही।

विनीत
बनारसीदास

(७८)

रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली २२
१८-२-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! कार्ड मिला।

Though I have a firm belief that the ultimate solution of our Language problems lies in the direction indicated by my statement of Feb. 3rd, I will not raise the controversy for the present. There are two reasons. The principal reason is that the time is not yet quite opportune for this move while the second reason is that it will mean severe strain on my delicate health. Last time when I came here I devoted full one month to this cause and weakend my health. That mistake shall not be repeated now.

१. जनपदीय भाषाओं तथा बोलियों को विकास के पूरे-पूरे साधन दिये जावें।

२. सम्पूर्ण कार्य स्वेच्छा के सिद्धान्त पर आधारित हो। बल प्रयोग का नामोनिशान भी मिटाना देना चाहिए।

Leadership of the Hindi world has been very defective. It is in the hands of people, who are unimaginative and are of grabbing and grasping spirit!

Once we decide that we will not use compulsion in any form whatsoever, we shall take away the ground from under the feet of Tamil & Bengali speaking leaders, who harp in season

and out of season on that question ! पर इस समय उस दिशा में आन्दोलन नहीं उठाना है ।

आपके अभिनन्दन के सहारे मैं ब्रजभूमि के नवीन अंकुरों को प्रस्फुटित होते देखने का अभिलाषी हूँ । बकौल अंग्रेजी कवि—'Pope,' "The proper study of mankind is Man". मसलन बल्देव गुरू के नाम के साथ पहलवानों के चित्र तथा चरित्र अंकित किये जा सकते हैं । चन्दन गुरू के नाम के साथ गायकों के । राज्यपाल श्रीमन्नारायण के पितृव्य श्री सूर्यनारायण अग्रवाल ने आँखों का एक श्रेष्ठ अस्पताल ही खोल दिया है । श्री बालकृष्ण गुप्त ने यजमानों में अग्रणी बनकर अपने जीवन का एक नया अध्याय ।

भाई ओउम् भी कुछ आदर्श रखते हैं । उन्होंने तीन तैल चित्रों का Order दिया था—श्रीराम, हरिशंकर जी और C. F Andrews होलीपुरा के कालेज की भी तीर्थयात्रा भाई शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी के साथ करनी ही है । गरज़ यह कि प्रतिष्ठित व्यक्तियों को केन्द्र बनाकर उनके चारों ओर आशाप्रद चित्र बनाये जा सकते हैं । लेख शैली में Dulness सबसे बड़ा अपराध है, इस बात को हम मद्देनज़र रक्खें ।

फीरोजाबाद के ख़यालगो नेकसा का चित्र हमने आज से ४० वर्ष पहले विशाल भारत में छापा था । एक ढुलकिया—छदामीलाल का भी चित्र लिया था । मैं जानता हूँ कि ब्रज में भाई मीतल जी जैसे अन्य प्रतिष्ठित बन्धु भी हैं, जिनका साहित्यिक कार्य आपसे कहीं अधिक है, पर उनके नाम का प्रभाव सीमित ही है । केवल आपका ही नाम ऐसा है, जो दरअसल व्यापक प्रभाव रखता है । अपने ८. १० घन्टे रोज ब्रज सेवा में—खर्च करने वाला कोई दूसरा है भी तो नहीं ।

हम सभी को जाना है, आज न सही कल, पर हमारी प्रिय भूमि—ब्रजमण्डल तो सदैव जीवित तथा जागृत रहेगी । मैं कुछ जल्दी में जरूर हूँ । आखिर ७८ वीं वर्ष में मेरे पास अधिक वक्त नहीं बचा । वैसे आप सबका आशीर्वाद तथा सद्भावना मुझे कुछ वर्ष और भी जीवित रख सकती हैं । मैं अभी यहाँ के पानी से adjust करने का प्रयत्न कर रहा हूँ । पानी भारी तो है ही वैसे चिरंजीव गुपलेश ने प्रत्येक सुविधा कर रखी है ।

डा० नरेसी को यशपाल जी से एक प्रति भेंट करानी ही है । भाई हरिशंकर जी के पत्रों की नकल की एक प्रति आपके निजी संग्रहालय को

अवश्य भेंट करूँगा। आपके Hall को सुचित्रित करने की जिम्मेदारी मेरी रही। वह यज्ञ यथासम्भव अल्प व्यय में ही होना चाहिये।

हिन्दी टाइपराइटर अब फिर खरीदना चाहता हूँ। पहला तो ५०० रु० का ५०० रु० में ही बेच देना पड़ा था। नरेसी की बहन की शादी के वक्त। कृपया मीतल जी तक मेरे प्रणाम पहुँचा दीजिये। नरेसी उक्त ग्रन्थ में अपने पिता स्व० रामनारायन का हाल पढ़ ले और सौभाग्यवती बहू को भी पढ़ा दे। ग्रन्थ की एक प्रति रजिस्ट्री द्वारा मेरे मित्र डाक्टर हरिदत्त पालीवाल, निर्भय, कायमगंज जिला फर्रुखाबाद को देखने के लिये भेज दीजिये। लौटाने के लिये रजिस्ट्री का पोस्टेज भी रख दीजिये। दोनों ओर का पोस्टेज मैं दे दूँगा।

विनीत
बनारसीदास

फीरोजाबाद
११-४-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! आपके कृपा पत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। कार्बन की मदद से मैं अपने पत्रों की ३ प्रतियाँ निकाल लेता हूँ और शेष दो प्रतियाँ अन्य सज्जनों को भेज देता हूँ। इस प्रकार विचार परिवर्तन में कुछ मदद मिल जाती है। श्री राकेश जी को भेजे गए पत्र की नकल आपको भेज रहा हूँ।

श्री हरिगोविन्द गुप्त को उनके अग्रवाल विषयक पत्रों की नकल की पहुँच आप लिख भेजें। उन्होंने बुन्देलखण्डी के लिये बहुत काम किया है। उनका बेतवा का जीवन चरित्र प्रकाशित होने को पड़ा है। बहुत काम के आदमी हैं। खेती के काम में फँस गए और उसमें घाटा ही उठाया है। "ब्रज भारती" के लिये कभी-कभी वे लिख सकते हैं।

डा० हरिशंकर शर्मा के पत्रों की ४ प्रतिलिपियाँ Typed copies चि० रामगोपाल के पास दिल्ली में सुरक्षित हैं। बोझ काफी होने के कारण मैं ला नहीं सका। उनमें एक प्रति आपके निजी संग्रहालय के लिये है।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री राकेश को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
११-४-७०

श्री रामइकबालसिंह राकेश

प्रिय राकेश जी, प्रणाम !

मुझे जो ग्रन्थ ३ फरवरी को भेंट किया गया था, उसे देखने की हिम्मत मुझे ३ अप्रैल को हुई। और आपका महत्वपूर्ण लेख आज ११ अप्रैल को पढ़ पाया हूँ। मुझे स्वप्न में भी इस बात की कल्पना नहीं थी कि विभिन्न क्षेत्रों के इतने अधिक व्यक्तियों का मैं कृपापात्र हूँ। यद्यपि मैं उन सबका हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी गुणग्राहकता के वशीभूत होकर मेरी अत्युक्तिमय प्रशंसा की है तथापि मेरे मन को एक बात खटकती है वह यह कि हिन्दी के कितने ही तपस्वी साधकों को उनके जीवनकाल में तो appreciation मिला ही नहीं स्वर्गवास के बाद भी उन्हें भुला दिया गया है। क्यों न इन उपेक्षितों के रेखाचित्रों से ग्रन्थ तैयार किया जाय—जो सचित्र भी हो।

जिन जिन लोगों के पास मसाला—पत्र व्यवहार तथा चित्रादि-इकठ्ठा हो उनके घर की यात्रा करके उनकी नकल तो ले ही लेनी चाहिए। लिखने का वक्त न मालुम कब आवेगा। उदाहरणार्थ पं० झावरमल्ल जी शर्मा के पास जसरापुर (खेतड़ी) में बहुमूल्य सामग्री मौजूद है पर ऐसे जिम्मेवार सहायक उन्हें भी नहीं मिले जो उसका उपयोग कर सकें। यों सस्ती पी-एच. डी. लेने वालों की कमी नहीं।

ज्यों-ज्यों दिन बीतते जायेंगे यह सामग्री विलीन होती जायेगी और फिर हमारे साहित्यिक इतिहास नीरस तथ्यों तथा आँकड़ों का समूह ही रह जायेंगे। मेरे पास पिछले ५८, ५६ वर्ष में जो सामग्री इकठ्ठी हो गयी है, उसकी सुरक्षा की चिन्ता मुझे निरन्तर सताती रही है, पर अब मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि इस प्रकार की फिकरों को छोड़कर मुझे स्वस्थ रहना चाहिये। २० अगस्त को मेरा आपरेशन हुआ था और ४ महीने का पूर्ण विश्राम मुझे आवश्यक बतलाया गया था, पर मैं आराम कर नहीं सका। अब करना चाहता हूँ। हाँ, कल मुझे यहाँ से २५, ३० मील दूर एक ग्राम की यात्रा करनी है जहाँ कि ४ अहीर १६४२ में शहीद हुए थे। लोग उन्हें प्रायः भूल ही चुके हैं। यह कैसे अभिशाप की बात है अपने स्वाधीनता रूपी नवीन महल के नींव के पत्थरों की हमने बिल्कुल उपेक्षा ही की है। शहीदों की ऐसी निन्दनीय

उपेक्षा शायद ही किसी अन्य देश ने की हो। आपके श्रद्धापूर्ण काव्यात्मक लेख के लिये मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। उसे मैं आशीर्वाद समझ कर ही स्वीकार करता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(८०)

फीरोजाबाद
१२-४-७०
रविवार

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। इस समय ४ बजके ५० मिनट हुए हैं। थर्मोस के गरम पानी से चाय बनाकर पी चुका और स्वाध्याय भी कर चुका। आज स्वाध्याय के लिये W. H. allen, London द्वारा प्रकाशित Stefan Zweig-A tribute to his life and work नामक पुस्तक पढ़ी। उस ग्रन्थ में ज्विग विषयक संस्मरणों का संग्रह है और मैं ही एक मात्र भारतीय हूँ जिसकी tribute छपी है! ज्विग को हिन्दी में लाने का सौभाग्य मुझे ही प्राप्त हुआ था! आप से मेरा अनुरोध है, प्रार्थना है, आग्रह है कि आप ज्विग की प्रत्येक रचना को पढ़ें। He is Supreme as an artist! रोमाँ रोलाँ भी उनकी कला का सम्मान करते थे! एक कार्ड तुरन्त भेजकर श्री मधुसूदन चतुर्वेदी (१४।७।३ बेगम बाजार, हैदराबाद A. P.) से 'पुनर्जन्म' की प्रति मंगा लीजिये। वह छप चुकी होगी। तत्पश्चात् Kaleidoscope—Cassell and Company Limited की दिल्ली के Allied Publishers आसफ अली रोड से खरीद लीजिये। उसमें Trans figuration नामक कहानी है, जिसका अनुवाद हमारे भानजे प्रकाश ने किया है। अनुवाद काफी अच्छा है।

ब्रजभारती में आपने स्व० अग्रवाल जी विषयक मेरा पत्र छाप दिया है और सम्पादकीय नोट भी लिख दिया है। तदर्थ कृतज्ञ हूँ। दिल्ली में अग्रवाल जी के एक सुपुत्र मिले थे जो डाक्टरी पढ़ रहे हैं। उन्होंने बतलाया कि उनके बड़े भाई ने पूज्य पिताजी के कई ग्रन्थ छपा दिये हैं। यदि यह सत्य है तो निस्सन्देह अत्यन्त प्रशंसनीय है। पर उन्हें पत्रोत्तर तो देना ही चाहिये। शायद उनका यह ख़याल होगा कि हम लोगों की सेवायें उनके लिये नगण्य हैं और इसलिये वे अपने समय का एक छोटा सा अंश भी हम लोगों से पत्र व्यवहार करने में नष्ट नहीं करना चाहते! फिर भी हमें मिशनरी ढङ्ग से

अपने कार्य में लगे रहना चाहिये। अग्रवाल जी के पत्रों का संग्रह हम लोगों को ही करना है। मीतल जी के पास के पत्र तो आप उनसे लेकर नकल करा ही सकते हैं। शिवपुरी में श्वेताम्बर लोगों के मन्दिर से भी अग्रवाल जी के १५ पत्र मिल जावेंगे। सत्येन्द्र जी को पुनः खट-खटाइये। आप ने हरगोविन्द गुप्त को पत्रों की पहुँच चिरगांव के पते पर भेज दी होगी।

अब तक जो पत्र मेरे देखने में आये हैं उनमें ऐसा प्रतीत होता है कि अग्रवाल जी ने अपने सर्वोत्तम पत्र मुझे ही भेजने की कृपा की थी! उसके आत्मचरितात्मक दो पत्र (जो उन्होंने मुझे रूस भेजे थे) कई अखबारों में छप चुके हैं। वे निस्सन्देह बहुत महत्वपूर्ण हैं। अब ५ बजकर १० मिनट हो चुके, मुझे जल्दी करनी चाहिये। ६, ६¼ बजे मैं श्री बालकृष्ण गुप्त के साथ उनकी कार में बरहन के पास खांडा ग्राम जा रहा हूँ, चमरौला स्टेशन पर ४ अहीर १९४२ में शहीद हुए थे। उनकी विधवाओं ने पुनर्विवाह नहीं किया, यद्यपि उनकी जाति में इसका रिवाज़ है। सुना है कि उन्हें ३०) महीने पेंशन मिलती है। बन्धुवर लहरी जी [जगन्नाथ लहरी, भूतपूर्व M. L. A. गोशाला फीरोजाबाद] को छोड़ कर और कोई नेता उन महिलाओं से मिलने नहीं गया! जो काम हमें स्वाधीनता संग्राम की समाप्ति के बाद तुरन्त ही शुरू कर देना चाहिये था, उसे विधिवत् हम अभी तक नहीं प्रारम्भ कर सके! Let us collect every anecdote, every picture, every detail about the sacrifices made by our people to get Freedom for us. यह हमारा पवित्र कर्तव्य है!

कभी-कभी मैं मज़ाक में कह देता हूँ कि Best investment करना वैश्य ही जानते हैं और चूंकि मैं चूना कंकड़ मुहल्ला मथुरा के चौबे लछमनदास बजाज का पौत्र हूँ [वे गदर के वक्त गजी गाढ़े की दूकान करते थे] इसलिये शहीदों के श्राद्ध का सर्वोत्तम Investment मेरे द्वारा ही हुआ है। So I am a more clever वैश्य than many of that caste!

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च —

श्री बालकृष्ण जी गुप्त हमें होलीपुरा के इंटर कालेज को दिखाने ले चलेंगे। वह श्री शंभुनाथ चतुर्वेदी के अधीन है। उसे भी देखना चाहिये कभी आप भी उसे देखिये, ब्रजभूमि में जहाँ कहीं भी कोई प्रगतिशील कार्य हो रहा हो उसे प्रोत्साहन देना हमारा कर्तव्य है।

जब कभी आपको समय मिले आप खाँड़ा की यात्रा करें, श्री सीताराम-गर्ग प्रधान खाँड़ा को पहले सूचित कर दें। बरहन स्टेशन से खाँड़ा २ मील दूर है। वह तो हमारे लिये तीर्थ तुल्य है।

श्री बालकृष्ण गुप्त खुद अपनी कार में Drive करके हम लोगों को खाँड़ा ले गये। उन्होंने १०१) एक सौ एक अहीरन शहीद विधवा को दिये जिसका मकान गिर गया था! मैंने कई चित्र लिये थे।

(८१)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली ३२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! प्रकाशवीर शास्त्री जी ने एक काम तो करा ही दिया। स्व० हरिशङ्कर जी के पत्रों को टाइप कराने के लिए आर्य मित्र (लखनऊ) से २१३) दिलवा दिये।

अब ४३० पृष्ठ typed हैं। ५-५ प्रतियाँ हैं। एक आपके लिये सुरक्षित है। पर वे arranged नहीं।

१५ तारीख को Taj Express से आगरे जा रहा हूँ, पर वह मथुरा पर बहुत कम ठहरती है। नरेसी तो आवेंगे ही। उन्हें कुकर देना है। श्री राजाबाबू से मैंने प्रार्थना करदी है कि यदि वे एक प्रति गुरुजी श्री भगवान-दत्त जी को भेज सकें तो अत्युत्तम हो। प्रातःकाल १६ तारीख को उनके उपवन में बौरे हुए आम देखने हैं। सीलिंग से शायद उनके उपवन की भी काट-छाँट हो जायगी! आप इस विषय की जाँच-पड़ताल तो कीजिये। मैं होली की परवा से शरद पूनों तक कबड्डी खेलना चाहता हूँ—यानी फलों छुट्टी मनाना। मेरा लेख (हरिशङ्कर जी पर) सैनिक में छपा या नहीं?

आप अपने निजी संग्रहालय को समृद्ध कीजिये। नवीन अभिनन्दन ग्रन्थ के विषय में आपसे चर्चा करनी है।

१५-१६ को आगरे रहकर १७ को घर पहुँचना है श्री ओ३म् ने तीन चित्रों के बनवाने का आग्रह किया श्रीराम शर्मा, हरिशङ्कर जी तथा सी. एफ- एन्ड्रयूज़।

विनीत
बनारसीदास

अपने ग्रन्थ को पढ़ने की हिम्मत नहीं पड़ रही! इतनी अधिक कीर्ति-रूपी मिठाई परोस दी गई है कि जी ऊब उठता है! श्री राजेन्द्ररंजन जी तक मेरे पालागन पहुँचा दीजिये।

(८२)

१८-४-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे। कार्ड मिला। मेरे पत्रों के संग्रह का वक्त अभी शायद नहीं आया है। अभी तो स्वर्गीय साहित्य सेवियों की चिट्ठियों का संग्रह हो जाना चाहिये।

प्रथम कार्य—तो आप यह करें कि दिल्ली जाकर चिरंजीव रामगोपाल से स्व० हरिशङ्कर शर्मा जी के पत्रों की typed प्रतियाँ ले आवें। ५ प्रतियाँ हैं। उनमें एक प्रति आप अपने संग्रहालय के लिये रख लें, २ प्रतियाँ श्री बिद्याशङ्कर शर्मा (सम्पादक सैनिक) को दे दें और शेष दो प्रतियाँ मेरे संग्रहालय के लिए हैं। फिलहाल मूल पत्र चि० गुपलेश के पास ही रहेंगे। साथ का पत्र मैंने श्री महेन्द्रशास्त्री के पास भेजा है। उनको ब्रजभारती की Free list पर रख लीजिये। भोजपुरी में अच्छी कविता कर लेते हैं। अपना एक काव्य संग्रह उन्होंने मुझे समर्पित किया था। मिशनरी ढङ्ग के कार्यकर्त्ता हैं। अन्तर्जनपदीय परिषद् के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया जायगा, जो छप रहा है।

द्वितीय कार्य—है नरवर की तीर्थ यात्रा। नरौला अलीगढ़ से २२ मील सुना जाता है। वहाँ स्वर्गीय पं० जीवनदत्त जी का संस्कृत महाविद्यालय है। मैं भी वहाँ जाना चाहता हूँ। करपात्री जी वहाँ के पुराने छात्र हैं। कोई शङ्कराचार्य भी।

तृतीय कार्य—है बरहन स्टेशन से दो मील दूर खांड़े की यात्रा। वह तो डबल तीर्थ है। चमरौला स्टेशन पर चार शहीद हुए थे—१९४२ की २८-२९ अगस्त को! चारों अहीर थे। उनकी विधवाओं ने पुनर्विवाह नहीं किया। उन्हें पेंशन मिलती है। एक तो उनमें स्वर्गवासी हो चुकी। आप श्री पं० सीताराम गर्ग प्रधान खाँड़ा Agra को पत्र भेज कर दिन निश्चित कर लीजिये। वहाँ अम्बर चर्खे ने आर्थिक स्थिति सुधारने का अच्छा काम किया है। सुना है दो दो हजार रूपये महीने की आमदनी उस चरखे से उक्त ग्राम को हो जाती है। बरहन खादी उत्पादन केन्द्र भी बन गया है। बरहन में कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के अनुवादक श्री धन्यकुमार जैन भी रहते हैं। वहाँ उनकी ससुराल है। वे विशाल भारत में मेरे साथ काम कर चुके हैं। बहुत प्रशंसनीय कार्य उन्होंने गुरुदेव के ग्रन्थों के अनुवाद का किया है। He

deserves a good sketch. ये तीन काम मैंने आपके सुपुर्द कर दिये ! जब कभी फुर्सत मिले कीजिये ।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

इस पत्र में कई नाम आये हैं । श्री ब्रजशङ्कर वर्मा योगी के सम्पादक रहे हैं । काफी बीमार हैं । हरिदास कम्पनी की चमेलीदेवी को उन्होंने आश्रय दिया था ! स्व० नारायणबाबू सारन जिले के अत्यन्त प्रतिष्ठित कार्यकर्ता थे—राजेन्द्रबाबू के घनिष्ट मित्र भी । ताराराानी के पति फुलेनाबाबू शहीद हुए थे ।

प्रतिलिपि पत्र
जो श्री महेन्द्रशास्त्री रतनपुरा जिला सारन को लिखा गया ।

फीरोजाबाद
१५-४-७०

प्रिय शास्त्री जी,

प्रणाम ! आपका बिना तारीख का कृपा पत्र मिला । कृतज्ञ हूँ । मेरा आपरेशन २० अगस्त को हुआ था और डाक्टर का यह स्पष्ट आदेश था कि मैं चार महीने पूर्ण विश्राम करूँ पर अपनी बद आदतों के कारण मैं ऐसा कर नहीं सका । सवेरे पौने चार बजे उठकर चाय बनाकर चिट्ठियाँ लिखने का जो नियम मैंने बना लिया था, उससे छुटकारा मिलना असम्भव हो गया । स्वाध्याय के बाद पत्र व्यवहार ही मेरा मुख्य व्यसन है—फोटो खींचना तथा गप्पाष्टक उसके बाद आते हैं : बहुत सा वक्त तथा पैसा उन्हीं में बर्बाद करता रहा हूँ । खैर—अब पछिताऐ होत का, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत । बीती ताहि बिसारि दै—आगे की सुधि लेइ ।

अभिनन्दन ग्रन्थ इतनी प्रशंसाओं से भरा हुआ है कि मेरी हिम्मत उसे पढ़ने की नहीं होती । आत्मप्रशंसा का अध्ययन बिल्कुल वैसा ही जैसा किसी नवयुवती का स्वयं ही कुचमर्दन ! गुनाह बेलज्ज़त है ।

मैं हृदय से अनुभव करता हूँ कि जो सेवा मुझसे बन पड़ी है उससे दस गुनी सेवा मैं कर सकता था, यदि मैं आत्म-नियंत्रण द्वारा अपने जीवन को व्यवस्थित कर सकता । जितने साधन मुझे मिले, सत्सङ्ग के जितने अवसर प्राप्त हुए, अनन्त अवकाश और मुक्त आकाश जितनी प्रचुर मात्रा में मुझे उपलब्ध हुए उनके देखे काम बहुत कम हो सका ।

ग्रन्थ का मूल्य ३०) रख दिया गया है जिसे खर्च करना साधारण स्थिति के आदमी के बूते के बाहिर है। मुझे कुल जमा ५ पाँच प्रतियाँ और मिली थी, जो बँट गई। अब कहीं से प्रतियाँ मिल जाय तो पोस्टेज अपने पास से खर्च करके पढ़ने के लिये मित्रों को भेजना चाहता हूँ। पढ़कर तीन रुपये खर्च करके रजिष्ट्री द्वारा लौटा सकते हैं। मेरा स्व० रामनारायण विषयक लेख आपको पसन्द आया यह आपकी सहृदयता का सूचक है। मेरी ८ आठ किताबें पूरी करने अथवा Revise करने को पड़ी हुई हैं और "पत्र व्यवहार मेरा व्यसन" लिखने को पड़ी है। सहायक कोई मिलता नहीं! १५०) महीने एक प्रकाशक देने को तैयार है, पर अभी तक एक भी सुयोग्य व्यक्ति, जो टाइप करना भी जानता हो, मिल नहीं सका! नतीजा यह है कि सारा काम अधूरा पड़ा है। रामधन की किताब मैंने छपवायी थी—१५० प्रतियाँ उसे बेचने को दिलवादी थीं, जिससे उसका कुछ काम चला। मुझे बराबर यह ध्यान रहा है कि उसके द्वारा आपके चार सौ रुपये बर्बाद हो गये थे। पर मैं क्या कर सकता था? मनुष्य को स्वयं ही अपना ऋण चुकाना चाहिये। दूसरों की प्रेरणा की प्रतीक्षा कदापि न करे।

श्रद्धेय नारायणबाबू के विषय में "योगी" में अच्छी लेख माला निकल रही है। स्व० राजेन्द्र बाबू ने अपने अन्तिम पत्र में मुझे लिखा था कि नारायण बाबू के लिखे लेखों का उन्हें पता नहीं है। पता लग जाय तो छपाने का प्रबन्ध किया जा सकता है। भाई ब्रजशङ्कर जी बहुत बीमार हैं, नहीं तो यह पुण्य कार्य उनके सुपुर्द कर देता।

श्रीमती ताराराानी श्रीवास्तव की पुस्तक 'उनकी याद' का द्वितीय संस्करण अभी तक नहीं हुआ! सारन जिले के शहीदों के विषय में अब भी एक पुस्तक लिखी जा सकती है, पर लिखे कौन? श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू का आदेश था कि मैं अपनी देख-रेख में ये काम करा दूँ पर ७८ वीं वर्ष में भला मैं क्या कर सकता हूँ? गत १२ अप्रैल को मैंने यहाँ से २० मील दूर एक ग्राम की तीर्थ यात्रा की थी, जहाँ चार शहीद १९४२ में हुए थे! उनका वृत्तान्त अभी तक नहीं छपा। वह स्थान आगरा ज़िले में ही है! जिला छपरा ने तो स्वाधीनता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया था। आप, भाई चन्द्रिकासिंह जी तथा श्रीमती ताराराानी प्रभृति मिलकर इस प्रश्न पर विचार तो कर ही सकते हैं। क्या यह भी असम्भव है?

फुलैना बाबू के स्मारक का क्या हुआ ? और देवशरण सिंह के ? यह वर्ष दीनबन्धु ऐण्ड्रूज की शताब्दी का है। लैनिन की शताब्दी चल रही है। बापू की बीत चुकी। स्वयं मेरे विचारों में परिवर्तन हो गया है। 'नीलकंठ गोर्की' भेजता हूँ कृपया पढ़ लीजिये।

(८३)

फीरोजाबाद
१८-४-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

ता० १५ मार्च के दिन नई दिल्ली से आगरा जाते हुए ताज एक्सप्रेस में दैवयोग से श्रीयुत फूलसिंह जी से भेंट हो गई। वे वृहत् हरियाना प्रान्त के प्रमुख समर्थकों में से रहे हैं परन्तु उस आन्दोलन को उस समय त्याग दिया जब उन्हें प्रतीत हुआ कि उससे गृह कलह होने की सम्भावना है।

श्री फूलसिंह जी में मुझे आदर्शवाद की कुछ झलक दीख पड़ी। वे गान्धीवादी कार्यकर्त्ता हैं। बरसाने की होली देखने दिल्ली से मथुरा जा रहे थे। उनसे मिल लेने में कोई हर्ज नहीं। वे पहले उत्तर प्रदेश के उद्योग मन्त्री रह चुके हैं। श्री चरनसिंह जी के निकट के आदमी हैं। उन्होंने स्वयं मुझे बतलाया था कि ३० एकड़ की Ceiling वाला कानून पास नहीं होने पावेगा। उनके शब्द थे—'आप अपने मित्र (राजाबाबू) को निश्चिन्त कर दें'' अपने ग्रन्थ की एक प्रति राजाबाबू द्वारा उनको भिजवा दी है। शेष कुशल !

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री फूलसिंह जी को प्रेषित पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१७-४-७०

प्रिय श्री फूलसिंह जी, प्रणाम !

उस दिन १५ मार्च को आपके साथ जो आकस्मिक परिचय हुआ उसे मैं अपने लिये परम सौभाग्य की बात मानता हूँ।

मैं बहुत दिनों से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में था जिसके द्वारा मैं अपनी बात श्री चरनसिंह जी की सेवा में पहुँचा सकूँ। वे तो मुझे जानते न होंगे और हम लोगों का साक्षात् परिचय भी कभी नहीं हुआ।

अपने किसी स्वार्थ की प्रार्थना उनसे मुझे नहीं करनी, हाँ कभी-कभी लोकहित के कार्यों की ओर उत्तर प्रदेश सरकार का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ।

जैसा कि मैंने उस दिन निवेदन किया था, मैं आगरे जिले के सर्वश्रेष्ठ उपवन के विषय में चिन्तित हूँ। उसके स्वामी श्री प्रतापनारायण अग्रवाल की मुझ पर कृपा है। चूंकि मैं ब्रजभूमि से ५१ वर्ष दूर-दूर ही रहा इसलिये उनके मनोहर बाग को मैं बहुत वर्षों बाद—दो वर्ष पहले ही—देख सका और उसे देखकर मैं मुग्ध हो गया !

श्री प्रतापनारायण जी ने उस उपवन को बच्चे की तरह पाला पोसा है और वह उनके सम्पूर्ण जीवन की साधना का परिणाम है। विदेशी यात्री भी उसकी सराहना करते हैं।

श्री प्रतापनारायण जी अपने कार्य में इतने व्यस्त रहते हैं कि वे दूसरों को—यहाँ तक कि सरकारी आफिसरों तक को—निमंत्रण देकर अपने यहाँ नहीं बुला पाते। उत्तर प्रदेश सरकार का कोई भी उच्च पदाधिकारी वहाँ आज तक नहीं पहुँचा, यद्यपि एक बार श्री चरनसिंह जी अकस्मात् वहाँ पहुँच गये थे।

पहले तो सैण्ट्रल रेलवे द्वारा उस बाग के एक भाग के नष्ट होने की आशङ्का थी और अब सीलिङ्ग की तलवार उसके सिर पर लटक रही है।

क्या कभी यह सम्भव हो सकता है कि आप उपवन को एक बार देख लें ? वहाँ छः हजार आम के पेड़ हैं और जामुन के सैकड़ों ही। आगरे जिले में तो क्या आगरा कमिश्नरी में भी उसके मुकाबले का उपवन शायद ही कोई होगा। यदि आप चल सकें तो मैं भी तीसरी बार वहाँ की तीर्थयात्रा कर लूंगा। दो बार मैं वहाँ जा चुका हूँ।

मैं वृक्षों, वनों तथा उपवनों का प्रेमी हूँ और महाराज ओरछा (स्व० वीरसिंह जू देव) की कृपा से साढ़े चौदह वर्ष एक उपवन में रहा था, जो वन के निकट ही था।

बारह वर्ष १९५२ से १९६४ तक (जब कि मैं राज्य सभा का सदस्य था) मैं ९९ नार्थ ऐवेन्यू के एक फ्लेट में रहा था, जिसके पीछे बगीची थी और नर्सरी भी। बस इस प्राकृतिक प्रेम ने ही मुझे अपने जिले के इस उपवन का भक्त बना दिया है। अन्य किसी प्रकार का भी सम्बन्ध मेरा उससे नहीं है।

मेरी यही प्रार्थना है—अनुरोध है— कि ब्रज की उस विभूति को नष्ट-भ्रष्ट होने से बचा लिया जाय ! अधिक क्या लिखूँ ?

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

फीरोजाबाद वालों को आपके आगमन की धुँधली सी याद रह गई है। एक बार फिर इस अभिशप्त उद्योग नगरी को देख लें।

क्या हरियाना और ब्रज में कोई साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध कायम नहीं हो सकते ? यह तो हरियाना का आन्दोलन ब्रजभूमि में बड़ी-शङ्का की दृष्टि से देखा गया था। हमारे सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता बाबू वृन्दावनदास जी [अध्यक्ष ब्रज साहित्य मंडल] ने उस पर कुछ लिखा भी था। मैं स्वयं राजनैतिक गठबन्धन को महत्व नहीं देता, जब तक कि उसकी नींव साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आधार पर न रखी गई हो।

यद्यपि ७८ वीं वर्ष में मैं प्रायः Retire हो चुका हूँ तथापि फीरोजाबाद की सफाई तन्दुरस्ती, के बारे में यू. पी. सरकार से कुछ अर्ज़ करना चाहता हूँ।

(८४)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री रामइकबालसिंह राकेश पो. ओ. भदैई जिला मुजफ्फरपुर को लिखे मेरे पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है। उन्होंने मैथिली पर खूब लिखा है। स्व० राहुल जी ने उनका एक विस्तृत निबन्ध हिन्दी साहित्य के विस्तृत इतिहास में छापा था। उसे आप ना. प्र. सभा काशी से मँगाकर जरूर पढ़ें। किस जिल्द में है यह आप राकेश जी से ही पूछ सकते हैं। मथुरा में अन्तर्जनपदीय गोष्ठी का प्रस्ताव भी विचारणीय है। ८, १० व्यक्ति बुलाये जायें।

आपके दोनों पत्र आज मिल गये हैं। अभिनन्दन ग्रन्थ की सर्वत्र प्रशंसा ही प्रशंसा हुई है। निस्संदेह आप सबने मिलकर A I. चीज निकाल दी है। यद्यपि मैं उसका पात्र नहीं हूँ।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी द्वारा श्री राकेश जी को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

फीरोजाबाद
१६-४-७०
४।३० प्रातःकाल

प्रिय राकेश जी,

प्रणाम ! कल एक कार्ड भेज चुका हूँ। पर उससे सन्तोष नहीं हुआ। आपके पत्र में एक वाक्य ऐसा आया है, जिसने मुझे चिन्तित कर दिया।

"शायद आपसे मेरी यह अन्तिम भेंट हो" अन्तिम भेंट के क्या मानी ? ऐसी निराशाजनक भविष्य-वाणी आप क्यों करते हैं ? इसमें आप अपने प्रति तो अन्याय करते ही हैं, मेरे प्रति भी अन्याय करते हैं। आप कुण्डेश्वर पहुँच सकते हैं, तो मैं भदैई क्यों नहीं पहुँच सकता ? Return Visit की प्रथा अंग्रेजों के यहाँ है और वह शिष्टाचार का लक्षण है। इसलिए आप "अन्तिम" वाली बात Withdraw कीजिये।

क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं है ? या घरेलू चिन्ताऐं हैं ! पूरा-पूरा वृतान्त कृपया लिख भेजिये। अभी तो कितने ही यज्ञ हम लोगों को पारस्परिक सहयोग से करने हैं। मसलन् 'अन्तर्जनपदीय परिषद्' के कार्य को आगे वढ़ाना है। बन्धुवर वृन्दावनदास जी [अध्यक्ष—व्रज साहित्य मंडल, मथुरा] ने व्रजभारती में उसके लिये स्थान रिज़र्व कर दिया है।

मैथिली की स्थिति क्या है ? उस भाषा के लोकगीतों में जो उच्चकोटि की साहित्यिकता मुझे दीख पड़ी वह अन्य बोलियों में सर्वथा दुर्लभ है। आपका वह विस्तृत लेख जिसका सम्पादन राहुल जी ने किया था, मेरे पढ़ने में अभी तक नहीं आया। किस जिल्द में छपा है ?

क्या बन्धुवर रामचरण 'मित्र' की पुस्तक [बुन्देली साहित्य तथा संस्कृति विषयक] आपको मिली है या नहीं ? भिजवा सकता हूँ। अन्तर्जनपदीय कार्यकर्त्ताओं की एक छोटी सी गोष्ठी क्यों न की जाय ? जन्माष्टमी के आस-पास मथुरा में कैसी रहेगी ? भाई वृन्दावन दासजी की धर्मशाला मथुरा में विद्यमान है और वे ८. १० व्यक्तियों का आतिथ्य आसानी से कर भी सकते हैं। हाँ, जो लोग यात्रा व्यय वर्दाश्त नहीं कर सकते उनके मार्ग व्यय का प्रबन्ध करना होगा। वह कोई असम्भव कार्य नहीं। ५००) रुपये चन्दा किया जा सकता है।

ज्विग की पुनर्जन्म नामक कहानी शीघ्र ही हैदराबाद से पहुँचेगी। मेरी अत्यन्त प्रिय कहानी है वह। पढ़िये और दाद दीजिये। गजब की रचना है।

पुनश्च—

श्री गणेश चौबे, 'मित्र' जी, रामनारायण उपाध्याय प्रभृति को बुलाया जा सकता है। आप जानते ही हैं कि अन्तर्जनपदीय परिषद् की स्थापना मैंने ही कराई थी। ये भाषाएँ खड़ी बोली की माएँ हैं— सौत नहीं। आप अपने विचार कृपा कर लिखें।

विनीत
बनारसीदास

(८५)

पौने पाँच बजे प्रातःकाल
फीरोजाबाद
२४-४-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कल आपका कृपा पत्र मिला। यह पढ़कर हर्ष हुआ कि ब्रज साहित्य मंडल को अपनी भूमि एक महीने में वापस मिल जायेगी। तब अनेक रचनात्मक कार्यों का प्रारम्भ विधिवत् हो सकेगा। उस दिन की मैं उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करूँगा।

स्व० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के पुत्रों से आप मिल आये यह बहुत अच्छा किया। चूँकि हम लोग उस श्राद्ध से कोई आर्थिक लाभ नहीं उठाना चाहते, इसलिये उनके सुपुत्रों को कोई एतराज न होना चाहिए। यदि वे छापकर उस ग्रन्थ की बिक्री ठीक तौर पर कर सकें तो और भी अच्छा।

आचार्य वासुदेवशरण जी प्राचीन काल के विद्वानों की याद दिलाते थे। उनका सबसे बड़ा गुण यह था कि वे अपनी शक्तियों को विकेन्द्रित नहीं होने देते थे। तभी वे इतना अधिक काम कर सके। पर जिस त्रुटि ने उनके महत्वपूर्ण जीवन को इतनी जल्दी समाप्त कर दिया वह थी—स्वास्थ्य के प्रति उपेक्षा, हमें उनके गुण ही ग्रहण करना चाहिये और उनकी त्रुटियों से सबक सीखना चाहिए।

पत्रों को तो छपाना ही है, वस्तुतः उनका स्मृति ग्रन्थ भी छपना चाहिये। यह कार्य कोई प्रगतिशील प्रकाशक कर सकता है। आप संग्रह तो कर ही लीजिये।

सौ० बहन सत्यवती मलिक की पुत्री डा० कपिला वात्सायन ने (जो भारत सरकार के शिक्षा विभाग में उच्च पद पर हैं) अग्रवाल जी के अधीन Doctorate ली थी और ५०) का वह अंग्रेजी ग्रन्थ छप भी गया है। आप

उसे खरीदकर अपने पुस्तकालय में रक्खें बहन सत्यवती जी तथा कपिला जी दोनों से उनके संस्मरण लिखाये जा सकते हैं। बन्धुवर हजारीप्रसाद द्विवेदी से इस बारे में सलाह मशवरा कीजिये !

श्रीयुत गर्ग (भूतपूर्व प्रिंसीपल S. R. K. College फीरोजाबाद) अग्रवाल जी के समधी लगते हैं। उन्होंने अग्रवाल जी का एक तैल चित्र तैयार करा लिया है—मेरे आग्रह से—और उसका उद्घाटन वे डा० हजारीप्रसाद जी से कराना चाहते हैं। यदि द्विवेदी जी पधार सकें तो अत्युत्तम हो। द्विवेदी अग्रवाल जी के साथी रह चुके हैं।

अग्रवाल जी का जीवन चरित भला कौन तैयार करेगा ? स्मृति ग्रन्थ अपेक्षा कृत आसान होगा और उसके लिये anecdotes इकट्ठे कर लेने चाहिये। बन्धुवर मीतल जी ने उनके अन्तिम दिनों की जो बातें लिखी हैं वे भी बड़ी प्रेरणाप्रद हैं। जैसे कोई नीबू की बूँद-बूँद को निचोड़कर उसके छिलके को फेंक दे उसी प्रकार अग्रवाल जी ने अपने अन्तिम क्षणों का भी भरपूर सदुपयोग ही कर लिया। जिन्होंने उनके शक्ति के अन्तिम क्षणों से लाभ उठाया—यथा मीतल जी—उनका तो और भी अधिक कर्तव्य हो जाता है कि उनकी स्मृति रक्षा के लिये भरपूर प्रयत्न करें।

अपने मंडल को भूमि मिल जाने के बाद वहाँ कभी वासुदेवशरण कक्ष का निर्माण किया जा सकता है। शिवपुरी (ग्वालियर) में जो श्वेताम्बर मन्दिर है उसके प्रवक्ताओं के पास अग्रवाल जी के १५ पत्र थे। उनकी नकल भी ले लेनी चाहिये।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी से भी पत्रों की नकल ली जा सकती है। अग्रवाल जी के पुत्रों से पूछना चाहिये कि उन्होंने (यानी अग्रवाल जी ने) दूसरों के पत्रों को सुरक्षित रक्खा था या नहीं।

श्री चर्नीशोव के पास पृथिवी पुत्र पहुँचा या नहीं ? अभिनन्दन ग्रन्थ की एक-एक प्रति वारान्निकोव और चर्नीशोव के पास पहुँचनी ही चाहिये। मालूम नहीं कि समुद्री रास्ते से उसमें कितना व्यय होगा।

अमर उजाला वालों का कृपा पत्र मिला है। वे आपके अभिनन्दन के मामले में पूरी मदद देंगे। श्री डोरीलाल जी यद्यपि Perfect business man हैं, तथापि उनसे काम लिया जा सकता है।

यद्यपि मुझे तो अब कई महीने विश्राम ही करना है, तथापि समय-समय पर तो लिखता ही रहूँगा।

बनारसीदास

(८६)

२२-४-१९७०

प्रियवर,

शायद १४ जून से इटावे का देश धर्म दो पृष्ठों के बजाय ४ पृष्ठ का निकलेगा। मुझे बुलाया था, सो मैं तो जा नहीं सकता यह पत्र भेज रहा हूँ। इटावे को व्रज में ही शामिल कर लेना चाहिये। हरिशङ्कर जी के पत्रों की ५।५ प्रतियाँ टाइप होकर आ गई हैं। उन्हें छटवाऊँगा एक प्रति आपके लिए सुरक्षित रहेगी। चि० बुद्धिप्रकाश गर्मियों की छुट्टियों में कल ज्ञानपुर से यहाँ आ गया है।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

महाकवि देव पर शोध ग्रन्थ जिन्होंने तैयार किया है उन महिला का नाम डा० राज बुद्धिराजा ए-१४ डी. टी. यू. कौलोनी, शादीपुर दिल्ली-८ है। शोध ग्रन्थ के प्रकाशक श्री यज्ञदत्त शर्मा साहित्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-६ है।

सम्पादक देश धर्म इटावा को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

प्रियवर,

मैं आपके शुभ उत्सव पर जरूर हाजिर होता, यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक होता, २० अगस्त को मेरा आपरेशन हुआ था, पर पिछले ९ महीनों में मुझे पूर्ण विश्राम करने का मौका नहीं मिला ! अब मजबूरन मुझे आराम करना पड़ रहा है। क्षमा कीजिये, मैं १४ जून को इटावे पहुँचने में सर्वथा असमर्थ हूँ।

आप उचित समझें तो श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी ५५ काका नगर New Delhi को बुला सकते हैं। वे जगम्मनपुर के निवासी हैं—४ वर्ष मेरे सहायक रह चुके हैं और २ दो बार अखिल भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रधान भी बन चुके हैं। हाँ, उन्हें फर्स्टक्लास का लौटा वाद किराया देना ही पड़ेगा। वे संसद में 'आज' के संवाददाता हैं। अनेक बार विदेश-यात्रा कर चुके हैं।

इटावे को मैं ब्रजमंडल में ही शामिल करता हूँ। भाषा सम्बन्धी वाद-विवाद में पड़ने की जरूरत नहीं। ब्रज साहित्य मंडल से सम्बद्ध रहकर इटावा को अपनी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उन्नति की विशेष सुविधा होगी। आपके

इस उत्सव के अवसर पर मुझे कई बातें सूझी हैं। उन्हें लिखे देता हूँ। उनमें कोई काम की बात जँचे तो तदनुसार कार्यवाई भी करें।

१. महाकवि देव विषयक शोध ग्रन्थ आपके कार्यालय में होना ही चाहिये। शायद श्री शिवदत्त जी उसकी प्राप्ति के लिये पता बतला सकें।

२. A. G. Hume को याद कर लेना निहायत जरूरी है। अंग्रेजी में तो उनका जीवन चरित्र है इटावे के पास के जंगल को उन्होंने अमर बना दिया था। उसकी चिड़ियों पर एक ग्रन्थ ही लिख दिया था।

३. श्री पं० झाबरमल्ल जी शर्मा प० जसरापुर खेतड़ी (राजस्थान) से भदौरिया जी पर लेख लिखावें कुं० गणेशसिंह भदौरिया पर। श्री केशवदेव मिश्र 'कमल' C/o श्री वियोगी हरि जी हरिजन कालोनी किंग्सवे नई दिल्ली से पं० भीमसेन जी के विषय में लेख लिखवाइये, वे कमल जी के पूर्वज थे।

अपने आस-पास के स्थानों पर जहाँ पर भी जो कुछ उल्लेख योग्य सेवा कार्य हो रहा हो उसका विवरण छपना ही चाहिये। सिरसागंज के गुरुकुल पर एक संक्षिप्त लेख जा सकता है। भाई सूर्यनारायण अग्रवाल से उनके नेत्र-औषधालय का विवरण ले लीजिये। वे स्वयं बहुत अच्छे worker रह चुके हैं। उनकी भाभी तथा भाई साहब की जीवनियाँ आपके पुस्तकालय में होनी ही चाहिये।

जिन-जिन स्थलों पर आपके पत्र का प्रचार हो वहाँ के खासखास व्यक्तियों के चित्र तथा चरित्र आपके कार्यालय में रहने चाहिये। औरेया के मुकंदीलाल गुप्त की जीवनी भी रखिये।

फीरोजाबाद के श्री बालकृष्ण गुप्त, श्री रतनलाल बंसल, डाक्टर महेन्द्रस्वरूप भटनागर, श्री बालबिहारी शर्मा, श्री जगन्नाथ लहरी इत्यादि के चित्र जरूर रखिये।

यहाँ के P. D. Jain inter college ने मेरे प्रस्ताव पर एक शहीद-कक्ष का निर्माण करा दिया है। उसका उद्घाटन शायद जुलाई में होगा। श्री श्यामसुन्दर शास्त्री का चित्र जरूर रखिये। ब्लाकों का खर्च उन्हीं स्थानों से मिल जाना चाहिये।

श्री बाबू वृन्दावनदास जी बी. ए., एल-एल. बी. अध्यक्ष ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा से तुरन्त सम्पर्क स्थापित कीजिये। श्री मधूसूदन चतुर्वेदी एम. ए. १४।७।३ बेगम बाजार हैदराबाद से भी।

शिशु जी के वे अनन्य भक्त रहे हैं। देश-धर्म को वृहदाकार में निकालने के पहले पूरी-पूरी तैयारी कर लें। आपके सदुद्योग में सफलता चाहता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(८७)

फीरोजाबाद
८-५-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! पं० झावरमल्ल जी शर्मा पो० आ० जसरापुर वाया खेतड़ी (राजस्थान) ग्रन्थ की एक प्रति के लिए उपयुक्त अधिकारी हैं। श्राद्ध अभिनन्दन मुण्डन कम्पनी अनलिमिटेड के मैनेजिंग डाइरैक्टर वही हैं। मुण्डन शब्द नवीन जी द्वारा जोड़ दिया गया था।

पं० झावरमल्ल जी मुझसे चार वर्ष उम्र में बड़े हैं, मेरे अग्रज हैं। बाबू बालमुकुन्द गुप्त का श्राद्ध मुख्यतया उन्हीं के प्रयत्न से हुआ था। दोनों Volumes आपके पुस्तकालय में होने ही चाहिये।

दानी सज्जनों को भेंट स्वरूप कितनी कितनी प्रतियाँ दी गई थीं। उनका भी उचित उपयोग करा लिया जाय तो ठीक हो। मेरे अनुरोध पर तीन प्रतियाँ श्री बालकृष्ण जी गुप्त ने भेंट कर दी थी। (१) श्री भक्त-दर्शन जी (२) श्री शीतलप्रसाद जी उपकुलपति आगरा विश्वविद्यालय आगरा (३) श्री जगन्नाथ लहरी फीरोजाबाद सन्देश और राजाबाबू ने भी चार प्रतियाँ (१) अमर उजाला (२) डाक्टर राजदान (३) फूलसिंह एम. पी. (४) भगवानदत्त जी चतुर्वेदी मथुरा को भेंट कर दी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(८८)

फीरोजाबाद
११-५-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

७-५-७० का कृपापत्र आज मिला। श्री शिवदत्त जी चतुर्वेदी एम. ए. छिपैटी मुहल्ला इटावा भी बरात में पधारे थे। ग्रन्थ उन्हें भी नहीं मिला है। शायद आप भेज नहीं पाये। कृपया अब शीघ्र ही भेज दीजिये। स्व० आचार्य

वासुदेव शरण जी के पत्रों की प्राप्ति के बारे में आपने लिखा सो जाना। सत्येन्द्र जी के पास के पत्र भी मिल जावेंगे। उनका स्वास्थ्य कैसा है ?

मेरे पत्रों को छपाने की इस समय जरूरत नहीं है। वे तो असंख्य हैं और उनमें से चुनाव करना कठिन होगा। मैं तो उन्हें महत्व नहीं देता। हाँ, स्व० भाई हरिशङ्कर शर्मा के पत्रों की ५ Typed copies दिल्ली से आ गई हैं। उन्हें छाँटना है। उनके टाइप कराने में ५०) तो आपके और २१३) दो सौ तेरह रुपये आर्य मित्र कार्यालय लखनऊ के खर्च हुए। करीब चार सौ पत्र तो होंगे। एक टंकित प्रति आपके संग्रहालय को अर्पित होगी, दो भाई विद्याशंकर को दे दी जावेंगी और दो मेरे पास रहेंगी। उन्हें छाँटना है।

भाई कुसुमाकर जी को लिख रहा हूँ कि वे इस काम में मदद करें। कोई मथुरा जाने वाला मिला तो उसके हाथ भिजवा सकता हूँ, नहीं तो फिर डाक द्वारा ही भेज दूँगा।

अन्तर्जनपदीय परिषद के लिए छोटी सी गोष्ठी जन्माष्टमी पर रख लेना ठीक होगा। तदर्थ अभी से पत्र-व्यवहार होना ही चाहिये। शेष अगले पत्र में।

विनीत
बनारसीदास

(८९)

फीरोजाबाद
१३-५-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मुझे ख्याल आया कि ग्रन्थ की एक प्रति राजमाता साहिबा बैकुण्ठी टीकमगढ़ मध्य प्रदेश की सेवा में जरूर भेजनी चाहिये। वे स्व० महाराज वीरसिंह जू देव की धर्मपत्नी हैं जिनका मैं अत्यन्त ऋणी हूँ। आज भी महाराज वीरसिंह जू देव की दी हुई पेंशन से मेरा पालन पोषण हो रहा है। उनके ऋण से उऋण होना असम्भव है।

उनके पौत्र श्री मधुकर शाह एम. ए. इस समय अमरीका में अध्ययन कर रहे हैं, बहुत समझदार युवक हैं। उन्हें ब्रजभारती का पिछला अङ्क (जिसमें ग्रन्थ के भेंट करने का वृत्तान्त हो) By Air आप भेज सकते हैं। श्री शिवदत्त चतुर्वेदी को ग्रन्थ भेज दिया होगा।

बनारसीदास

(९०)

फीरोजाबाद
१५-५-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री राधेमोहन अग्रवाल (मैसर्स शिवलाल अग्रवाल पब्लिशर्स) ने बाबा पृथ्वीसिंह आजाद का आत्मचरित बहुत बढ़िया छापा है। आज ही उसकी एक प्रति मुझे मिली है। आप उस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र ही अवश्यमेव खरीदें। मूल्य पन्द्रह रुपये है, जो बिल्कुल ठीक है। It is a remarkable autobiography of a great revolutionary. आप पुस्तक को पढ़ने के बाद एक निजी पत्र बाबा पृथ्वीसिंह आजाद पो. आ. लालरू जि० पटियाला (पंजाब) को ज़रूर भेजें। वैसे उनका स्थायी पता शिशु विहार भाव नगर है, पर इन दिनों वे लालरू अपने घर आये हुए हैं, उनके सुपुत्र का विवाह था। मैं तो इस मौसम में जा नहीं सका। पंजाब से भावनगर जाते हुए अवश्य वे मथुरा स्टेशन से गुजरते होंगे। कभी उन्हें निमन्त्रित करके अपना अतिथि बनाइये। महापुरुष हैं। ऐसे सत्पुरुष से आपका व्यक्तिगत परिचय होना ही चाहिए। 'दीन क्या है किसी कामिल की इबादत करना।' चकबस्त की यह परिभाषा मुझे प्रिय है।

विनीत
बनारसीदास

(९१)

फीरोजाबाद
२८-५-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! साप्ताहिक हिन्दुस्तान उत्तर प्रदेश विषयक विशेषाङ्क निकाल रहा है। शायद अब उसमें लेख देने के लिए वक्त तो बचा नहीं. क्योंकि वह १४ जून को ही निकल जायगा फिर भी आप एक पत्र तो सम्पादक को भेज ही सकते हैं। कोई भी मौका अपनी ब्रजभूमि की चर्चा का हमें छोड़ना नहीं चाहिये।

शिवपुरी में श्वेताम्बर लोगों का जो मन्दिर है वहाँ उनके एक गुरु विजयेन्द्र सूरि जी रहते थे जिनकी पुस्तक की भूमिका स्वर्गीय अग्रवाल जी ने लिखी थी। उन गुरू जी के सहायक श्री काशीनाथ सर्राफ ने मुझसे कहा था

कि अग्रवाल जी के १५ पत्र उनके यहाँ सुरक्षित हैं। उन पत्रों की प्रतिलिपि मँगा लेनी चाहिये।

डा० सत्येन्द्र जी अपने भानजे की शादी में यहाँ पधारे थे मुझसे मिले भी थे। उनसे पत्रों की नकल मँगा ही लेनी चाहिये।

जन्माष्टमी के मौके पर अन्तर्जनपदीय परिषद के ५, ७ कार्यकर्ताओं की गोष्ठी का विचार परिवर्तन सामयिक होगा। अभी से लिखा पढ़ी की जाय तो ठीक हो। आतिथ्य तो आप कर ही लेंगे, पर किसी किसी को शायद पाथेय भी देना पड़े। उसके लिए चन्दा कर लिया जाय।

विनीत
बनारसीदास

(९२)

फीरोजाबाद
२९-५-७०

प्रिय भाई वृन्दाबनदास जी,

प्रणाम ! जैनाचार्य विजयेन्द्र सूरि के सहायक श्रीयुत काशीनाथ सर्राफ का पता:—यथोधर्म मन्दिर १६६ मर्जवान रोड, अँधेरी, वम्बई २८ है। उनसे अग्रवाल जी के पत्रों का पता लग जायगा। तीर्थंकर महावीर भाग २ की भूमिका अग्रवाल जी ने लिखी थी।

श्री सत्येन्द्र जी को पुनः लिखिये कि वे अग्रवाल जी के पत्रों की नकल भेज दें।

भाई हरिशङ्कर जी के पत्रों की नकलों को विधिवत् छँटवा रहा हूँ। एक प्रति आपके लिए सुरक्षित रहेगी। भाई विद्याशंकर जी ने, जो सैनिक में काम करते हैं, यह सन्देशा भिजवाया है कि जिस विद्यालय में उनकी पत्नी प्रिन्सीपल हैं उसकी पत्रिका का विशेषाङ्क निकालना ठीक न होगा। दूसरे कालेज में, उनके भतीजे की पत्नी प्रिंसीपल हैं। ऐसी स्थिति में क्या किया जाय ? श्री प्रकाशवीर शास्त्री तो विलायत यात्रा पर गये हैं।

मेरा विचार था कि आगरे के रत्नमुनि जैन कालेज तथा सेकसरिया कालेज की पत्रिकाओं के विशेषाङ्क निकाल दिये जाते।

नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी) का सम्पूर्णानन्द अंक बहुत ही घटिया निकला है। सभा ने उसे ठीक तौर पर निकालने के लिए कुछ भी प्रयत्न नहीं किया।

बनारसीदास

(९३)

फीरोजाबाद
३-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आपका कार्ड मिला । आप बद्रीनाथ की तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं, यह पढ़ कर हर्ष हुआ । कभी-कभी प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन करके चित्त को प्रफुल्लित कर ही लेना चाहिये । धार्मिक विश्वास रखने वालों को तो उसका पुण्य भी मिलता है । डबल मुनाफा है ।

यह कार्ड आपको तीर्थयात्रा से लौटने पर मिलेगा । इन दिनों मुझे आपकी याद कई बार आई । २८ ता० के अमर उजाला में छपा था कि नारखी (जिला आगरा) में २१८ दो सौ अठारह बच्चों की मृत्यु चेचक से हुई है । तभी मुझे ख्याल आया कि मैं आपको उसके बारे में लिखूं । आपके सिवाय मैं किसी भी ऐसे दूसरे व्यक्ति को नहीं जानता—शायद बालकृष्ण गुप्त जी आपके समकक्ष हैं—जो मेरी प्रार्थना पर ऐसी बातों की ओर ध्यान दे । कल नारखी के एक सज्जन ने खबर दी है कि मृत्युसंख्या बढ़कर ४५९ हो गई है । आठ दस हजार की आबादी में यह एक बड़ी भयङ्कर दुर्घटना है । मैंने सैनिक, अमर उजाला, पायोनियर, स्वतन्त्र भारत तथा कलक्टर आगरा को पत्र भेजे हैं । आप यदि मथुरा में होते तो आपके साथ नारखी जाने का प्रोग्राम बनाता । ब्रजसाहित्य मण्डल के संस्थापक तथा उसके अध्यक्ष का यह कर्तव्य भी है ।

विनीत
बनारसीदास

(९४)

फीरोजाबाद
५-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपके सकुशल लौट आने के समाचार मिले । नारखी में कुछ action तो ले लिया गया है । वहाँ दो सौ बच्चों की मृत्यु हो चुकी है ।

उत्तर प्रदेश सम्मेलन वाले मुझे भी साहित्य वारिधि बना रहे हैं । इस प्रकार ब्रजभूमि में दो दो समुद्र हो जायेंगे । मैंने उन्हें लिख दिया है कि मेरे जैसे साहित्य पोखरे को वारिधि क्यों बनाना चाहते हैं ? पर उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर ली है ।

भाई हरिशङ्कर जी के पत्रों को तिथिवार छँटवा रहा हूँ। श्री विद्याशङ्कर जी व्यर्थ संकोचवश रत्नमुनि जैन इण्टर कालेज की पत्रिका का हरिशङ्कर ग्रंक नहीं निकलवाना चाहते, वहाँ उनकी धर्मपत्नी प्रधानाध्यापिका हैं और न सेकसरिया कालेज की पत्रिका का, जहाँ उनकी भाभी प्रिंसीपल हैं। तब आर्य मित्र का ही हरिशङ्कर अङ्क निकालना व्यावहारिक होगा।

कम्पनी में मुण्डन शब्द नवीन जी का जोड़ा हुआ था। उन्होंने कहा था, "बिना लोगों को मूँड़े कम्पनी का कारोवार चलेगा नहीं।"

विनीत
बनारसीदास

(८५)

फीरोजाबाद
८-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्रीयुत सुधाकर बी. ए., सुपुत्र श्री कुसुमाकर जी आर्यनगर फीरोजाबाद का शुभ नाम ब्रजभारती की फ्री लिस्ट पर रखिये। सुधाकर जी ४ दिन से स्व० हरिशङ्कर जी के पत्र छाँट रहे हैं। उन पाँच टंकित प्रतियों में से एक आपकी सेवा में अर्पित होगी। श्री कुसुमाकर जी तो बहुत अच्छे कवि हैं और हिन्दी के लिए बहुत कार्य भी उन्होंने किया है। वे डी. ए. वी. कालेज में हिन्दी पढ़ाते हैं। श्री सुधाकर जी ने एम. ए., प्रीवियस, की परीक्षा दी है। उत्साही युवक हैं।

६ ता० के सैनिक में पालीवाल जी को मेरी श्रद्धांजलि पढ़ लीजिये। ब्रजसाहित्य मण्डल का जिक्र है।

मि० ए. आर. शेरवानी सैनिक वालों को आप लिख सकते हैं कि यदि वे कुछ सहायता करें तो ब्रज साहित्य मण्डल पालीवाल जो की २०० पृष्ठ की जीवनी तैयार करा सकता है।

विनीत
बनारसीदास

(८६)

फीरोजाबाद
१०-६-६०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! ६ ता० का कृपापत्र मिला। आचार्य श्री किशोरीदास जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा चुका है। उसकी प्रति मेरे पास है। वैद्यनाथ धाम वाले उनके यजमान हैं।

स्व० हरिशङ्कर जी शर्मा के पत्रों की प्रतिलिपियों की पाँच कापियाँ मैंने श्री सुधाकर जी बी. ए. (श्री कुसुमाकर जी के पुत्र) द्वारा ६ दिन में छँटवा ली हैं—तिथि के अनुसार उनकी व्यवस्था कराली है। दो प्रतियाँ आगरे विद्याशङ्कर जी को भेजनी हैं, एक आपको भेंट करनी है तथा दो अपने संग्रहालय में रखनी हैं। मथुरा कैसे भेजूँ यह सवाल सामने है। पोस्टेज में तो बहुत व्यय हो जायगा। क्या आगरे भिजवा दूँ।

प्रिंस क्रोपाटकिन की जीवनी भी आपको भेजनी है। राजमाता जी को ग्रन्थ भेज दिया यह अच्छा किया। भाई विद्याशङ्कर जी का पत्र भी अभी मिला है।

चि० बुद्धिप्रकाश के मन में एक विचार आया था कि यदि श्री बालकृष्ण जी गुप्त राजी हो जाँय तो व्रज साहित्य मण्डल का अधिवेशन फीरोजाबाद में किया जा सकता है। तिथि उनकी सुविधा पर छोड़ दी जाय। मैंने इसका जिक्र बालकृष्ण जी से कर तो दिया था।

नारखी विषयक आपका पत्र पढ़ लिया है। बहुत ठीक लिखा है आपने ! मेरी सामर्थ्य नहीं कि देहरादून की यात्रा कर सकूँ।

विनीत
बनारसीदास

(८७)

फीरोजाबाद
१३-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! 'मुल्ला की दौड़ मसजिद तक' और बनारसीदास की वृन्दावनदास तक ! कई वर्ष से मैं स्व० आचार्य जीवनदत्त जी के विषय में स्मृति-ग्रन्थ निकलवाने की सोचता रहा हूँ, पर कोई ब्यौत नहीं बन पाया। मुझे यह देखकर वेदना होती है कि जिस आचार्य ने १ हजार संस्कृतज्ञ उत्पन्न किये हों उसका नाम लेवा कोई नहीं। कृतघ्नता की कोई सीमा है ?

दो संस्मरण मेरे पास हैं, एक तो आयुर्वेदाचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद का और दूसरा निर्भय जी का। आप कहें तो आपको भेज दूँ।

यदि आप, श्री प्रभुदत्त जी तथा निर्भय जी इस श्राद्धकर्म को हाथ में ले लें तो अत्युत्तम हो। और कुछ नहीं तो लेखों का संग्रह तो हो ही जायगा।

आज 'सैनिक' को एक लेख इस बारे में भेज रहा हूँ। पहले रफ लिखा फिर फेयर किया और तीन प्रति तैयार कीं। शायद तीन प्रति और भी तैयार करनी पड़ेंगी। आप अपनी सुविधानुसार नरवर जरूर जाइये। पर उसके पूर्व वहाँ के आचार्य प्रभृति से पत्र-व्यवहार कर लीजिये। आचार्य जीवन दत्त जी के शिष्यों तथा भक्तों के नाम तथा पते इकट्ठे करके उनके पास एक गश्ती चिट्ठी—परिपत्र—भेज दीजिये। श्री करपात्री जी से भी चिट्ठी पत्री कीजिये। शायद वे कुछ साधन इकट्ठे करा सकें।

देहरादून के सम्मेलन के वृत्तान्त सैनिक अमर उजाला इत्यादि में छपने ही चाहिये, अखिल भारतीय सम्मेलन तो सरकारी-करण के बाद बिल्कुल मशीन सा बन गया है—सर्वथा हृदय हीन! यदि प्रदेशीय सम्मेलन को ही सजीव बनाया जा सके तो कुछ काम हो। पर आप तो मुख्यतया ब्रजमंडल पर ही अपनी शक्तियों को केन्द्रित रखें। एकहि साधै सब सधै।

विनीत
बनारसीदास

(६८)

फीरोजाबाद
१६-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! कृपया अपना छोटे साइज का ब्लाक बनवाकर उसे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा श्री देवीदयाल दुबे सम्पादक 'देशधर्म' सावित गंज इटावा को भेज दीजिये, दुबे जी ने 'देशधर्म' को अब चार पृष्ठ का कर दिया है। साधनों की उनके पास कमी है। देशधर्म से जनपदीय काम लेना है। इटावे का कल्याण इसी में है कि ब्रजमण्डल के साथ सहयोग करे। उसमें उसकी कोई हानि नहीं।

देहरादून का उत्सव कैसा रहा? यदि उत्तर प्रदेश सरकार प्रान्तीय सम्मेलन को आर्थिक सहायता दे तो बड़ा काम बने।

विनीत
बनारसीदास

(६९)

द्वितीय कार्ड

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी, **१६-६-७०**

यदि उत्तर प्रदेशीय सरकार कम से कम ७, ८ हजार रुपये प्रान्तीय सम्मेलन को दे दे तो ४००) चार सौ रुपये महिने पर एक प्रचार मन्त्री या साहित्य मंत्री

रखा जा सकता है जो समस्त प्रदेश में घूम-घूम कर पुरानी संस्थाओं की देख-भाल करे और नवीन समितियाँ कायम करे। पुरानी संस्थाओं का बुरा हाल है।

प्रान्त निर्माण के झगड़ों से सर्वथा दूर रहते हुए ब्रज, अवधी, भोजपुरी तथा बुन्देलखण्डी के लिए प्रदेशीय सम्मेलन डा० अग्रवाल के कार्यक्रम के अनुसार काम कर सकता है। वह कार्य निहायत जरूरी है।

सत्यनारायण जी कविरत्न की कुटी का धाँधूपुर में निर्माण भी एक ऐसा विषय है जिस पर ध्यान देना चाहिये।

वासुदेवशरण जी का तैल चित्र उद्घाटन के लिए एस. आर. के. डिग्री कालेज ने तैयार करा लिया है। प्रिंसीपल गर्ग उनके समधी होते हैं।

जैसे ब्रजमण्डल में आप काम करते हैं वैसे अवधी, भोजपुरी तथा बुन्देलीखण्डी मण्डल में भी काम करने वाले होने चाहिये। बुन्देलखण्ड में तो हैं भी। अब की बार बन्धुवर रामचरण हयारण मित्र को उपाधि जरूर मिलनी चाहिये।

बाबा पृथ्वीसिंह जी की पुस्तक मैसर्स शिवलाल अग्रवाल ने बहुत ही बढ़िया छपाई है।

विनीत
बनारसीदास

(१००)

२०-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आशा है आप देहरादून की यात्रा से सकुशल लौट आये होंगे। मैंने अनुमान किया था कि शायद आप हरिद्वार चले गये होंगे—गंगा स्नान करने।

ब्रजमण्डल की भूमि अधिग्रहण में अब क्या देर है ? सैनिक के शेरवानी जी यदि चाहें तो पालीवाल जी की स्मृति के लिए हजार रुपये दे देना उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं। जो स्कालर शिप उन्होंने दिये हैं, वे उपयोगी अवश्य हैं पर उनके मुकाबले ब्रजमण्डल में स्मारक का महत्व कहीं ज्यादा है।

नरौला के आचार्य जीवनदत्त जी का साहित्यिक श्राद्ध आपको ही करना है। दो लेख मेरे पास हैं उन्हें मैं आपको भेज दूंगा।

ब्रजभूमि में जहाँ-जहाँ उन्नति के अंकुर दीख पड़ें वहाँ हमें प्रोत्साहन के पवित्र जल से उन्हें सींचना चाहिये।

स्थानीय एस. आर. के. कालेज में डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल का तैल चित्र तैयार करा लिया गया है। यदि हजारीप्रसाद जी पधार सकें तो अत्युत्तम नहीं तो आप ही उसका उद्घाटन कर दें। एस. आर. के. कालेज के भूतपूर्व प्रधानाचार्य अग्रवाल जी के समधी होते हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१०१)

फीरोजाबाद
२७-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

चाय पीने के बाद मैं प्राय: अपने मित्रों, शुभ चिन्तकों तथा सहायकों का स्मरण किया करता हूँ और जो विचार आते हैं उन्हें यथावकाश उन तक पहुँचा देता हूँ। कुछ बातें आपकी सेवा में भी निवेदन करनी हैं—

१. अपने निजी संग्रहालय पर अपने समय तथा शक्ति को यदि आप केन्द्रित कर सकें तो वह एक महत्वपूर्ण चीज बन सकती है। तब आपको अपनी मुतफर्रिक दानशीलता पर अंकुश लगाना होगा। रामजस कालेज के संस्थापक की कार्य पद्धति मुझे प्रिय लगती है। लाला केदारनाथ जी रिटायर्ड जज थे और उन्होंने बहुत थोड़ा सा पैसा अपने लिये रखकर शेष अपनी शिक्षण संस्थाओं को अर्पित कर दिया था। उनके पास यदि कोई कुछ माँगने जाता तो वे यही कहते कि "मेरी संस्थाओं के लिये यदि आप कुछ कर सकें तो मैं भी थोड़ी सी सेवा कर सकता हूँ।" लाला केदारनाथ पर एक अच्छी जीवनी लिखी जा सकती है। दिल्ली आप जाते रहते हैं। वहाँ के रामजस कालेज के अधिकारियों से मिलकर लाला जी विषयक सामग्री इकट्ठी कर लीजिये। लाला केदारनाथ पर एक लेख तो लिखिये ही।

२. मेरी स्व० हरदयालुसिंह जी विषयक फाइल में से उनके कुछ पत्रों के अंश नकल करा लेने चाहिये।

३. स्व० जुगलेश ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। सम्मेलन प्रयाग में काम करते थे। उनका ब्रजभाषा काव्य का ग्रन्थ स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह को जो रीवाँ निवासी थे, समर्पित किया गया था। उनका पता लगाकर उन पर जरूर कुछ लिखिये। चित्र मिल जाय तो जरूर उसका Enlargement कराइये। उनकी पुस्तक तो रखिये ही।

४. रसिकेन्द्र जी के चित्र का भी Enlargement आपके यहाँ होना चाहिये। रसिकेन्द्र भवन कालपी से चित्र मिल जायगा। "नवीन नायिका भेद" मधुसूदन जी ने छपा दिया था।

५. देशधर्म सावितगंज, इटावा में कन्नौजी भाषा पर कुछ छपा है। श्री देवीदयाल जी दुबे को लिखकर उनके ४ पृष्ठ वाले दैनिक का प्रथम अङ्क मँगा लीजिये।

६. बन्धुवर, डा० नगेन्द्र के भाषण पर अन्य अन्तर्जनपदीय कार्यकर्त्ताओं की प्रतिक्रिया मालूम कीजिये।

विनीत

बनारसीदास

(१०२)

फीरोजाबाद

२६-६-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

प्रणाम ! कल रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से आचार्य जीवनदत्त जी विषयक तीन लेख तथा कुछ नोट्स भेज दूँगा। साथ में आचार्य जी के शिष्यों तथा भक्तों के पते भी हैं। इस कर्तव्य को आपको सौंपते हुए मुझे हार्दिक हर्ष है। आप धन्यवाद का एक पत्र आयुर्वेदाचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद जी वैद्य को डाकखाने के पास फीरोजाबाद के पते पर भेज दीजिये। पते वगैरह उन्होंने ही लिखे हैं। निर्भय जी को भी लिखिये। अवकाश मिलने पर आप उस विद्यालय के दर्शन ज़रूर कीजिये। वैसे कभी मैं भी वहाँ की तीर्थयात्रा करना चाहता हूँ। श्री बालकृष्ण जी की गाड़ी चाहे जब मिल सकती है। श्री बालकृष्ण जी की पुत्री का विवाह कल है। चैर्नीशोव को मैंने कल एअर मेल पत्र भेजा है—ब्रजभारती पढ़ कर।

आप अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रक्खें। ब्रजभूमि के पुर्ननिर्माण में आप अन्य कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा सबसे अधिक सेवा करने की सामर्थ्य तथा श्रद्धा रखते हैं, इसलिये आपका तन्दुरुस्त रहना ही अत्यन्त ही आवश्यक है। Over work से बचिये। जितना कार्य सुविधापूर्वक हो सके उतना ही हाथ में लीजिये। 'न' कहना सीख लीजिये। यदि कोई कार्य आपको अनावश्यक तथा कष्टप्रद जँचे तो निस्संकोच और दृढ़तापूर्वक उसे अस्वीकार कर दीजिये।

विनीत

बनारसीदास

(१०३)

फीरोजाबाद
२९-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आचार्य जीवनदत्त जी विषयक सामग्री पहुँची होगी। उसके साथ उनके शिष्यों के पते भी हैं। कृपया उनको मेरे लेख की प्रति भेजकर आचार्य जी का संस्मरण भेजने का अनुरोध कीजिये। यह बड़ा पुण्य कार्य है। First hand impression पाने के लिए आपको नरौरा की तीर्थयात्रा—अपनी सुविधानुसार कर ही लेनी चाहिये। फिलहाल तो आप विश्राम करें। स्वर्गीय कविवर जुगलेश के विषय में सम्मेलन प्रयाग वालों से पूछिये। उनका काव्य संग्रह सम्मेलन पुस्तकालय में होगा। बहुत अच्छा लिखते थे।

ब्रजमंडल की सर्वाङ्गीण उन्नति ही हम लोगों का उद्देश्य होना चाहिये। भाई बालकृष्ण गुप्त ने फीरोजाबाद के निकट ही एक नवीन उपवन की नींव डाली है। उसमें ६१ वृक्ष उन्होंने दशहरी आम के लगा दिये हैं। और भी वृक्ष वे लगावेंगे। आप उन्हें पत्र लिखिये। उनका कोटला वाला बगीचा भी आपको देखना है। राजाबाबू का उपवन तो आप देख ही चुके हैं। उस पर तो सीलिङ्ग की तलवार लटक रही है। छलेसर की भी यात्रा करें—आगरे से बस ७ मील दूर है।

भाई ओउम् ने श्रीराम शर्मा, तथा हरिशङ्कर जी के तैल चित्र बनवाने के लिये स्वयं ही कहा है पर चित्र अभी तलाश नहीं करा पाया। वे यहाँ के 'भारती भवन' में टँगेंगे। ओउम् को भी पत्र लिखकर प्रोत्साहित करते रहिये।

भाई यशपाल जी ने दिल्ली से लिखा है कि जितना सहयोग उन्हें मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में मिला उसका शतांश भी आचार्य विनोवा जी के भक्त नहीं दे रहे। यह बड़े खेद की बात है। आचार्य विनोवा जी तो विश्व की एक विभूति हैं। वस्तुतः लगन के कार्यकर्त्ताओं की कमी ही इसका मुख्य कारण है। शेष फिर।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

पानी बरसने से मेरा टहलना मुश्किल हो गया है, इसलिये बचे हुए समय का उपयोग आप से पत्र-व्यवहार करने में ही कर लेना चाहता हूँ। इटावा क्या कन्नौजी भाषा के क्षेत्र में आता है ? मैं तो उस भाषा के बारे में

कुछ भी नहीं जानता। क्या बैसवाड़ी उससे मिलती-जुलती है। सभी जनपदीय भाषाओं के प्रान्त बनवाने का विचार स्व० राहुल जी का था, पर वह तो अव्यवहार्य था। हमें विशुद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिये। प्रत्येक जनपदीय भाषा में संचित सामग्री का पूरा-पूरा उपयोग हो, उसकी रक्षा हो और उसको फलने-फूलने का मौका भी मिले, यही हमारा लक्ष्य होना ही चाहिये।

मैथिली भाषा का मामला नया नहीं है। स्व० सर आशुतोष मुकर्जी ने उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्थान दिया था। स्व० अमरनाथ झा बड़े गौरव के साथ कहते थे—"मैथिली हमारी मातृभाषा है, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा" यह दृष्टिकोण सर्वथा स्तुत्य है। माँ जिस बोली को बोलती हो वही मातृभाषा। यदि किसी की पूज्य माँ खड़ी बोली बोलती है तो अवश्य खड़ी बोली उसकी मातृभाषा है पर सबको एक लाठी से क्यों हाँका जाय ? बात दरअसल यह है कि इस विषय पर लोगों के दिमागों में अस्पष्टता है। वे इस बात को भूल जाते हैं कि जनपदीय भाषाएँ हिन्दी की माँ है, उसकी सौत नहीं।

मनुष्य गणना के समय जनपदीय भाषाओं को मातृभाषा लिखा देने से कौन आसमान टूट पड़ेगा ? मातृभाषा-व्रजभाषा (हिन्दी) लिखाने से यह तो पता लग ही जायगा कि व्रजभाषा बोलने वाले कितने हैं, अवधी तथा भोजपुरी के कितने। यदि साहित्य अकादमी में राजस्थानी बुन्देलखण्डी या भोजपुरी को स्थान मिल जाय तो उससे राष्ट्रभाषा की क्या हानि होगी, यह मेरी समझ नहीं आता। अन्तर्जनपदीय कार्यकर्त्ताओं को इस प्रश्न पर विचार कर लेना चाहिये। गश्ती चिट्ठी भेज कर आप श्री गणेश चौबे, राकेश जी प्रभृति से पत्र-व्यवहार कीजिये। भाई अमृतलाल जी आपको नमस्ते कहते हैं वे भी आपके प्रशंसक हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१०४)

फीरोजाबाद
१-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! बन्धुवर मीतल जी के विषय में आपके भेजे नोट मिले। उनसे मुझे बहुत सहायता मिलेगी। यशपाल जी ने मुझे लिखा है कि जितनी सहायता

उन्हें मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में मिली उसकी शतांश भी आचार्य विनोबा जी के ग्रन्थ में नहीं मिल रही। इसमें मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। लोग अपने-अपने धंधों में व्यस्त हैं और ऐसे कामों को 'फालतू' समझते हैं। यदि आप, यशपाल जी, बालकृष्ण जी, ओउम्, राजाबाबू और शंभुनाथ चतुर्वेदी पारस्परिक सहयोग की नीति से काम न लेते तो मेरा ग्रन्थ कदापि नहीं निकल पाता। आपको आश्चर्य होगा कि भाई हरिभाऊ जी का ग्रन्थ अब तक प्रैस से बाहिर नहीं निकल पाया—यद्यपि छपा छपाया पड़ा है। यही दशा श्री सोहनलाल द्विवेदी ग्रन्थ की हुई है।

मैत्री के विषय में डा० जोनसन ने Sir Joshua Reynolds को लिखा था—"If a man does not make new acquaintances as he advances through life, he will soon find himself left alone. A man, Sir, should keep his friendship in constant repair."

जानसन ने बौसवैल से भी कहा था—"Sir I consider that day lost in which I do not make a new friend." पर मित्र बनाने का व्यापार काफी खर्चीला है, यद्यपि उसमें पर्याप्त आध्यात्मिक मुनाफा है। आप इस बात को भूल जाते हैं कि मैं चूना कंकड़ मुहल्ले के लछमनदास वजाज का नाती हूँ, जो ग़दर के जमाने में मथुरा में गजी गाढ़े की दूकान करते थे। इसलिये मैंने वैश्य वृत्ति [sound investment की बुद्धि] विरासत में पाई है।

परसों नई दिल्ली के श्री जवाहरलाल म्यूजियम के एक कार्यकर्त्ता दीनबन्धु C. F. Andrews शताब्दी के लिये मेरे द्वारा संग्रहीत मसाले को देखने वाले हैं। उन्हें सरकार से १० लाख रुपये प्रतिवर्ष की इमदाद मिलती है, पर वे मेरी सम्पूर्ण सामग्री भेंट स्वरूप माँगते हैं। खरीद कर कोई मिसाल नहीं कायम करना चाहते। यही नीति National archives की भी है। खैर ! चूंकि दीनबन्धु ऐड्रूज मेरे लिये भातृ तुल्य पूज्य थे इसलिये उनकी शताब्दी की प्रदर्शिनी में मुझे भरपूर सहयोग देना ही है।

भाई मीतल जी पर एक छोटा सा लेख अवश्य लिख दूंगा। उसको एक बार आप पढ़ लीजियेगा। निस्संदेह उन्होंने बड़ी साधना की है। उनकी पुस्तकों के नाम तथा संक्षिप्त परिचय मुझे चाहिये। यद्यपि मुझे पूरा-पूरा विश्राम करना चाहिये, पर इस प्रकार के कर्तव्य पालन से मैं कभी विमुख नहीं होना चाहता। आचार्य वासुदेवशरण का उदाहरण मेरे सामने है और

तुर्गनेव का भी जिन्होंने अपनी मृत्यु शय्या से एक लेखक के लिये सिफारिशी चिट्ठी लिख दी थी। तुर्गनेव मेरे द्वारा ही हिन्दी में आये हैं—और ज्विग भी।

विनीत
बनारसीदास

(१०५)

फीरोजाबाद
५-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मैं आपके निजी संग्रहालय के विषय में जितना ही विचार करता हूँ उतना ही उसकी उपयोगिता के विषय में मेरा विश्वास दृढ़ होता जाता है। ब्रजमंडल में कोई स्थान तो ऐसा होना ही चाहिये जहाँ उस जनपद की सर्वाङ्गीण उन्नति के विषय में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो सके। पर जैसा कि मैंने आपको लिखा है उसके लिये आपको अपनी मुतर्फरिक दानशीलता पर अंकुश रखना होगा। ब्रजजनपद तथा उसकी सेवा बस इतना ही या यही लक्ष्य आपके लिये पर्याप्त है।

ब्रज के आधुनिक कवियों के चित्रों की दो दो प्रति आपके यहाँ होनी चाहिये। उनके सुरक्षित रखने के वैज्ञानिक ढंग भी, जो सुलभ हो सकें आपको जान लेने चाहियें। सीढ़ तथा दीमक इत्यादि से कागजों को बचाना अत्यन्त ही कठिन कार्य है। और फिर स्याही भी मन्द पड़ जाती है। जो पत्र महात्मा जी ने दादा भाई नौरोजी को भेजे थे उनकी स्याही बिल्कुल ख़तम हो गई है और वे पढ़े भी नहीं जाते।

मेरे पास बापू के सौ पत्र हैं। उनमें से जो पैंसिल से लिखे हैं वे dim हो चले हैं। उनकी Photostat copies तो गान्धी संग्रहालय नई दिल्ली तथा यास्नाय पालयाना (रूस) में सुरक्षित है और फोटो भोपाल में। आप नित्य प्रति अपने संग्रहालय के लिये कुछ न कुछ कीजिये। एक अच्छा कैमरा तो आपके पास होना ही चाहिए। ब्रज क्षेत्र के कवियों के—खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा के—चित्र ले लीजिये। भाई बालकृष्ण जी की सुपुत्री का विवाह सकुशल हो गया। भाई बालकृष्ण जी बहुत सहृदय व्यक्ति हैं। उन्हें प्रोत्साहित करते रहिये। उनसे बहुत काम लेना है। मीतल जी विषयक लेख कुछ रफ तो लिख लिया है। भेजूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(१०६)

फीरोजाबाद
७-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! मीतल जी विषयक अपने लेख की एक प्रति उन्हें तथा दूसरी आपको मामूली बुकपोस्ट द्वारा भेज रहा हूं। यदि कोई साहित्य प्रेमी पोस्टमैन एक प्रति रख भी ले तो दूसरी तो पहुँच ही जायगी। आप मीतल जी से फोन द्वारा पूछ लीजिये कि लेख उन्हें मिला या नहीं। तीसरी प्रति भी मेरे पास सुरक्षित है। यदि वक्त होता तो भाई हजारीप्रसाद द्विवेदी जी तथा श्रीनारायण जी और सत्येन्द्र जी से इसमें इसलाह ले लेता। आपके नोट्स से मैंने प्रेरणा ले ली है। यदि मीतल जी दस प्रतियाँ टाइप करा दें तो भिन्न-भिन्न पत्रों में इसे उद्धृत करा सकता हूँ। कुछ विज्ञापन ही हो जायगा।

मुझे पतले दस्त हो रहे हैं तथा बवासीर में खून भी जाता है, फिर भी जम कर चार घण्टे बैठना आवश्यक प्रतीत हुआ। अपने ब्रज के सेवकों की सेवा का कोई मौक़ा मैं हाथ से जाने देना नहीं चाहता। आप और मीतल जी दोनों ही मेरे 'जिजमान' हैं। यद्यपि बाबा लछमनदास ने उस पेशे को छोड़कर बजाजी कर ली थी, पर उनका पौत्र "जिजमानी" जैसी लाभदायक वृत्ति को नहीं छोड़ सकता।

विनीत
बनारसीदास

(१०७)

फीरोजाबाद
११-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कृपापत्र मिला। आशा है कि मीतल जी विषयक लेख अब तक पहुँच गया होगा। दो में से एक प्रति तो मिल ही गई होगी। न पहुँची हो तो तीसरी प्रति रजिस्ट्री से भेज दूंगा।

आपके बम्बई प्रवासी अनुज चाहे जब पधार सकते हैं। उनसे मिलकर बहुत हर्ष होगा। मेरा खयाल है कि संग्रहालय को ब्रज सम्बन्धी चित्र चरित्र इत्यादि पर ही केन्द्रित करना ठीक होगा। विस्तार करने से तो मामला विपुल अर्थसाध्य बन जायगा। फिलहाल अपने हौल को ही संग्रहालय का रूप दे दें। 'एकहि साधै सब सधें'।

बनारसीदास

(१०८)

फीरोजाबाद
१२-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आप एक विनम्रतापूर्ण पत्र श्री फूलसिंह जी एम. पी. मैम्बर राज्यसभा १३५ साउथ एवैन्यू नई दिल्ली को भेजिये, वे विशाल हरियाणा आन्दोलन के प्रवर्तकों में से थे, पर मत भेद के कारण अलग हो गये थे। वे ब्रज की होली देखने १५ मार्च को गये थे, तब अकस्मात् ताज एक्सप्रैस में मेरी उनकी मुलाकात हो गई थी।

जन्माष्टमी पर आप उन्हें भी बुला सकते हैं। हाँ, यह बात आगे चलकर उन्हें स्पष्टतया बतला देनी होगी कि ब्रज की लूट खसोट करके हरियाने को विशाल बनाने की कल्पना भयङ्कर है पर अपने विरोधियों के प्रति भी हमारा बर्ताव अत्यन्त शिष्टतापूर्ण होना ही चाहिये। उनके आतिथ्य में किसी प्रकार की त्रुटि न हो।

विशाल हरियाने का आन्दोलन ब्रजभूमि में उद्विग्नता ही पैदा करेगा और उसमें लाभ कुछ भी न होगा। नवभारत टाइम्स में रंजन जी का लेख बहुत अच्छा है।

विनीत
बनारसीदास

(१०९)

फीरोजाबाद
१६-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं अब तारनुमा पत्र ही लिख सकता हूँ। आदाब-अलकाब छोड़ कर तार की भाषा में पत्र-व्यवहार करने से समय की कुछ तो बचत हो ही जायगी। अंग्रेजी में घसीट देना मेरे लिए अपेक्षाकृत आसान होता है। डा० विष्णुचन्द्र पाठक एम. ए., पी-एच. डी. प्रधान हिन्दी विभाग 'लाल बहादुर शास्त्री कालेज' प्रताप मार्ग तिलकनगर जयपुर से सम्पर्क स्थापित कीजिये। हमको चाहिये कि अपने कार्य क्षेत्र में अधिक से अधिक निष्ठावान् व्यक्तियों को सम्मिलित करें। स्वर्गीय वासुदेवशरण जी अग्रवाल के चित्र का उद्घाटन करने के लिए आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को लिखिये। उनसे पूछिये कि

वे जन्माष्टमी पर मथुरा आ सकते हैं क्या ? वे यदि तूफान से दिल्ली जावें तो मथुरा उतर सकते हैं।

डा० सत्येन्द्र को अब अधिक सक्रिय होने की ज़रूरत है। उनके अभिनन्दन ग्रन्थ का उद्धार कैसे हो ? शुद्ध सेवा भावना से हमें इटावे को ब्रजसाहित्य मण्डल में ही शामिल कर लेना चाहिये। हम लोगों की कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा तो है नहीं और न हम अपना कोई स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। महाकवि देव पर लिखा शोध प्रबन्ध छपा या नहीं ? डा० राज बुद्धिराजा से पूछना चाहिये। यह एक महिला हैं।

२८ अगस्त को बरहन स्टेशन के चमरौला में एक शहीद मेला का आयोजन है। वहाँ पर सन् १९४२ में चार व्यक्ति गोली से भून दिये गये थे। श्री सीताराम गर्ग खाँड़ा को विस्तृत विवरण के लिए लिखें। आप जरूर पधारें।

विनीत
बनारसीदास

(११०)

फीरोजाबाद
१७-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

ब्रज-सेवा के पचास वर्ष अर्थात् श्री प्रभुदयाल मीतल का साहित्यिक कार्य यह नाम कैसा रहेगा ?

विनोद पुस्तक भण्डार का यह तर्क कि मीतल जी विषयक ग्रन्थ का नाम कुछ आकर्षक होना चाहिये, मुझे युक्तिसंगत जँचा। सम्पादकाचार्य रामानन्द चट्टोपाध्याय की जीवनी का नाम उनकी पुत्री ने "बंगला की अर्द्धशताब्दी का इतिहास" रक्खा था। पुस्तक की खपत के लिए यह जरूरी है कि उसका नाम फड़कता हुआ हो। कृपया मीतल जी तथा पचौरी जी तक फोन द्वारा मेरा यह सुझाव पहुँचा दें।

श्री गोपीनाथ गुप्त (स्व० श्री हरदयालुसिंह जी के पुत्र) का पत्र महमूदाबाद से आया है। मेरे लेख की नकल माँगी है। तलाश करूँगा। हरदयालुसिंह जी का बढ़िया चित्र आपको भेजूँगा।

विनीत
बनारसीदास

(१११)

फीरोजाबाद
१६-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

बन्दे ! एस. आर के. कालेज के प्रधानाचार्य श्री गर्ग को स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल पर अपनी कालेज-पत्रिका का विशेषाङ्क निकालने को लिखिये। गर्ग जी उनके समधी होते हैं। या फिर मथुरा के किसी कालेज को ही वासुदेवशरण अंक निकाल देना चाहिये। यह काम अत्यन्त आवश्यक है।

कल अकस्मात् राजा महेन्द्रप्रताप जी मेरे घर पर पधारे। मैंने उनसे आपका जिक्र किया था। राजा साहब ब्रज की विभूति हैं। वे ८४ वर्ष के हैं—स्वस्थ और क्रियाशील। उनमें एक खास भोलापन है जो बहुत आकर्षक है। उनका तैल चित्र आपके संग्रहालय में होना ही चाहिये। विशाल भारत के प्रवासी अंक में उनका जो चित्र छपा था उस पर से अच्छा चित्र बनाया जा सकता है।

भवन के चक्कर में न पड़ें. वह तो वहुत व्ययसाध्य चीज़ होगी। अपने हाल को ही संग्रहालय का रूप दे सकते हैं। वह सर्वथा निजी होना चाहिये। सार्वजनिक बनाने से सारा गुड़ गोबर हो जायगा।

अगस्त में यदि क्रान्तिकारी सम्मेलन दिल्ली में हुआ तो शायद मैं भी जाने की सोच सकता हूँ। स्व० छबीलेलाल गोस्वामी की पुत्री पधारीं थीं। उनके सुपुत्र के तबादिले के लिए शिक्षामन्त्री भोपाल को पत्र लिखाना था सो लिख दिया।

विनीत
बनारसीदास

(११२)
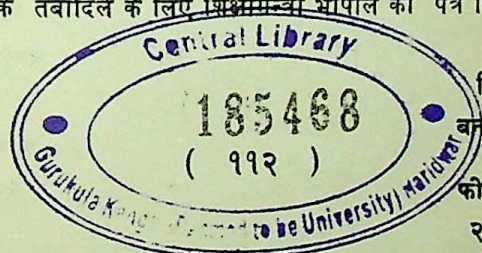
फीरोजाबाद
२५-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

दोनों कृपापत्र मिले। लेख के पुनर्मुद्रण भी। हमें व्यवहार बुद्धि से काम लेना है। जैसे साधन उपलब्ध हो सकें, तदनुसार ही श्राद्धकर्म का निर्धारण करना चाहिये।

श्रीमान् के. एस. गर्ग एम. ए. प्रबन्धक एस. आर. के. डिग्री कालेज फीरोजाबाद से यदि आप अनुरोध करें कि डिग्री कालेज की पत्रिका का अगला

अंक वासुदेवशरण अग्रवाल अंक हो तो अच्छी बात हो। गर्ग जी अपने महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री उपाध्याय जी से परामर्श कर लें।

साधन मिलने पर ब्रजभारती का पंचमाङ्क विशेषाङ्क के रूप में निकाला जा सकता है। मैंने श्रद्धेय प्रभुदत्त जी तथा डा० श्री हरिदत्त जी पालीवाल को पत्र भेज दिये हैं। विद्याशङ्कर जी से स्व० हरिशङ्कर जी के पत्रों की एक एक प्रति मँगा लीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(११३)

फीरोजाबाद
२६-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री गोविन्दप्रसाद केजड़ीवाल का पत्र अभी मिला। ३ अगस्त तक ब्रज के साहित्यकारों के संस्मरण लिख भेजने को कहा है। इस बीच यदि आप तुरन्त कुछ चित्र श्री मीतल जी का, अपना, स्व० राधाचरण गोस्वामी तथा स्व० किशोरीलाल जी प्रभृति के सीधे दिल्ली भिजवा सकें तो अत्युत्तम। दो फुलस्केप कागजों में ब्रजसाहित्य मण्डल के कार्य का संक्षिप्त विवरण भी भेज दीजिये। छपना कठिन तो है ही। भाई मीतल जी को भी फोन पर यह चिट्ठी सुना दीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(११४)

फीरोजाबाद
२८-७-७०

प्रिय बन्धु !

मुझे तो ब्रजभारती का पंचमाङ्क विशेषाङ्क बनाने का प्रोग्राम ही अत्यन्त व्यावहारिक प्रतीत होता है—बशर्ते उस अङ्क के सम्पूर्ण व्यय का प्रबन्ध हो सके। एक पैसा भी ऊपर से खर्च न करना पड़े। स्व० जीवनदत्त शर्मा या स्व० हरिशङ्कर शर्मा के लिये शायद यही श्राद्ध कर्म अपने वश का होगा।

डा० केदारदत्त तत्वाड़ी उपाधि महाविद्यालय पीलीभीत का पत्र आया है। आपके अभिनन्दन की बात लिखी है।

झाँसी की एक अग्रवाल कन्या शशि ने पी-एच. डी. के लिए संस्मरण विषय लिया है। उसकी माँ की ननसाल यहाँ है। वह यहाँ पधारी हैं। डा० भगवानदास माहौर की शिष्या है। काफी होशियार है। मुझे यह देखकर हर्ष होता है कि हमारी पुत्रियाँ पुत्रों से अधिक प्रतिभाशालिनी हैं।

विनीत
बनारसीदास

(११५)

फीरोजाबाद
३०-७-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कुमारी शशि अग्रवाल एम. ए. संस्मरण विषय पर शोधग्रन्थ प्रस्तुत करना चाहती हैं। उनकी दादी फीरोजाबाद की ही हैं और इसलिये वे यहाँ आकर सात दिन रह सकीं। अब वे झाँसी वापस जा रही है। उनका पता है—२०, रानी महल, झाँसी। उनके शोध कार्य के लिये जो भी परामर्श आप दे सकें दें।

प्राचीन ब्रजसाहित्य में संस्मरणों के जो प्रसंग आये हों उनका विवरण श्री शशि जी को चाहिये। मीतल जी से भी अनुरोध कर रहा हूँ। इस पत्र की नकल उनके पास भी भेज रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(११६)

फीरोजाबाद
१-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

अपना लेख संशोधित करके आज चार चित्रों सहित साप्ताहिक हिन्दुस्तान को भेज दिया है। पहली प्रति में कुछ नाम जो छूट गये थे वे जोड़ दिये गये हैं।

लेख २३ अगस्त के अङ्क में आ रहा है। उसकी चर्चा चलाने के लिए भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा उक्त लेख में संशोधन तथा परिवर्द्धन किये जाने चाहिये। मुझे तो विज्ञापन की जरूरत नहीं पर ब्रज के विषय में चर्चा निरन्तर होती रहे तो कुछ न कुछ काम आगे बढ़ेगा ही।

आगरे के सेकसरिया कालेज तथा रत्नमुनि जैन कालेज को यदि आप लिखें कि वे हरिशङ्कर अंक निकालें तो उसमें तो कोई हर्ज नहीं। उससे उनकी पुत्र बन्धुओं की पोज़ीशन पर कुछ आक्षेप नहीं हो सकता। मुझे तो वही कार्यक्रम व्यावहारिक जँचता है।

विनीत
बनारसीदास

(११७)

फीरोजाबाद
४-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कल आप पधारे, बहुत अच्छा हुआ। २३ अगस्त को मैं मथुरा पहुँच जाऊँगा, और २४ को वहाँ रहूँगा, तत्पश्चात् या तो दिल्ली चला जाऊँगा, या घर लौट आऊँगा। हाँ, १२ से ४ तक का कोई भी प्रोग्राम मेरे लिए न होना चाहिये। आप जानते ही हैं कि मेरा स्वास्थ्य साधारण ही है इसलिये अधिक श्रम नहीं कर पाता।

आपके अभिनन्दन का कार्य विधिवत् शुरू कर देना चाहता हूँ। श्री रंजन जी का पूरा पता क्या है। उनको पत्र लिखना चाहता हूँ। मेरा खयाल है कि स्व० अग्रवाल जी के सर्वोत्तम पत्रों को ब्रजभारती के विशेषाङ्क रूप में निकाल देना ही व्यावहारिक होगा। अग्रवाल जी के सुपुत्र उन पत्रों को पुस्तकाकार में छापना चाहें तो छापें।

स्व० बालमुकुन्द गुप्त के सुपुत्र भाई नवलकिशोर गुप्त और अमृतराय जी (प्रेमचन्द जी के सुपुत्र) को छोड़कर हिन्दी-जगत में अपने पूर्वजों का श्राद्ध शायद किसी ने नहीं किया। इस बारे में मैं एक नोट लिखना चाहता हूँ। कई चित्र लेता आऊँगा।

विनीत
बनारसीदास

(११८)

फीरोजाबाद
१२-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! क्या आप कृपा कर १६ ता० को रात के ८ बजे से पूर्व चमरौला [टूंडला—बरहन के निकट स्टेशन] पहुँच सकते हैं ?

वहाँ के कवि सम्मेलन के सभापतित्व करने के लिये वहाँ के ग्रामवासियों ने आपसे आग्रह करने का आदेश मेरे पास भेजा है। वैसे मैं तो यहाँ से भाई बालकृष्ण जी की कार द्वारा १६ ता० को टूँडला जाऊँगा और वहाँ से १० बजे ट्रेन द्वारा १०।। बजे चमरौला पहुँच जाऊँगा। आप टाइम टेबिल देखकर तय कर सकते हैं कि टूँडला से चलने वाली कोई गाड़ी शाम को चमरौला ठहरती है या नहीं।

आप अपनी सुविधा का खयाल कर लीजिये। एक नवीन परम्परा—शहीदों के लिये मेले लगवाने का प्रारम्भ हो रहा है। मैं २३ को मथुरा पहुँचने का निश्चय कर चुका हूँ, पर अभी यह तय नहीं कि बस से आना ठीक होगा या ट्रेन से। कल राजा महेन्द्रप्रताप जी यहाँ पधार रहे हैं। पी. डी. जैन कालेज के शहीद कक्ष में ही वे ठहरेंगे। शेष कुशल।

विनीत
बनारसीदास

(११६)

फीरोजाबाद
२१-८-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! यदि मुझे पता होता कि आप पधार रहे हैं तो शायद मैं एक दिन के लिए चमरौला में रुक भी जाता, पर आपका कृपापत्र असमर्थता प्रकट करते हुए मिल चुका था। इसलिये मैं जल्दी ही लौट आया। १६ ता० को सवेरे चार बजे से मुझे निरन्तर श्रम करना पड़ा। अपना भाषण मैं लिख कर ले गया था और उसकी एक एक प्रति सैनिक, अमर उजाला तथा वीर अर्जुन को दे दी थी। अमर उजाला ने उसका सारांश दे दिया है, स्थान के अभाव के कारण पूरा भाषण दिया भी नहीं जा सकता था।

मैं २३ की प्रातःकाल को आगरे पहुँचना चाहता हूँ और वहाँ विश्राम करके शाम को सवा चार बजे की मेल द्वारा ५।। बजे मथुरा पहुँचने का विचार है।

शरीर में इतनी शक्ति नहीं कि मैं किसी अन्य प्रोग्राम में भाग ले सकूँ। सासनी फिर कभी पहुँचूंगा। मथुरा से लौट कर ४ महीने मुझे पूरा पूरा विश्राम ही करना है। आपके प्रेमपूर्ण आग्रह को मेरे लिये टालना सम्भव नहीं था, सिर्फ इसी कारण यह तीर्थयात्रा कर रहा हूँ।

बनारसीदास

(१२०)

२६-८-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

हमको विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में ब्रजसाहित्य मण्डल को विकसित करने के अपने ध्येय में अग्रसर होना चाहिये। राजस्थानी का पक्ष कौन-कौन से पत्र समर्थन कर रहे हैं यह पं० झावरमल्ल जी शर्मा जसरापुर वाया खेतड़ी राजस्थान से पूछिये। जनपदीय परिषद की मथुरा में हुई गत बैठक के बारे में श्री कृष्णानन्द गुप्त, श्री गणेश चौवे व अन्य बन्धुओं को लिखिये। अग्रवाल जी के पत्रों के विषय में अपील के तौर पर उनके पुत्रों को फिर लिखिये। आगरे से पं० हरिशङ्कर जी के पत्रों की नकल ले आइये। विशाल हरियाना का विरोध तो करना ही है।

श्री लूइस ममफोर्ड अमरीका के वर्तमान चिन्तकों में अग्रगण्य हैं। वे स्वर्गीय प्रोफेसर गीडीज के प्रधान शिष्यों में से हैं। जनपदों के पुनर्निर्माण पर पर उनका यह विचार ध्यान देने योग्य है।

Utopia can no longer be an unknown land on the other side of the globe; it is rather the region one knows and loves best reapportioned, reshaped and recultivated for permanent human occupation.

विनीत
बनारसीदास

(१२१)

फीरोजाबाद
३१-८-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

श्री बालकृष्ण गुप्त तथा कोटला इन्टर कालेज के प्रिंसीपल फूलमाला लेकर २४ ता० की शाम को आपके दरे दौलत पर हाजिर हुए थे—वर्षगाँठ की बधाई देने के लिए—पर आप उस वक्त वहाँ नहीं मिले और किसी ने कह दिया कि शायद धर्मशाला में होंगे। वे वहाँ भी गये पर वहाँ भी पता न लग सका। उन्हें निराशा हुई। कृपाकर उन्हें धन्यवाद का पत्र भेज दें तथा न मिल पाने के लिए खेद प्रकट कर दें। गुप्त जी कोटले में भी एक शहीद स्तम्भ कायम करेंगे। आप कभी कोटले चलिये।

अँग्रेजी में एक उक्ति है—'Be the man thou Seekest' जिस आदमी की तुम तलाश में हो वह खुद ही बन जाओ। आप में वह शक्ति विद्यमान है जो आपको ब्रजभूमि का सर्वश्रेष्ठ सेवक बना सकती है। Conserve all your energies, please. आपके मुतफर्रिक दान ठीक नहीं, Concentrate on your संग्रहालय।

सुना है विभव जी ने ब्रज प्रान्त पर कुछ लिखा है। उनका पता है ६ महात्मा गाँधी रोड, आगरा। जनपदीय कार्यकर्ताओं के पते श्री गणेश चौबे तथा श्री जगदीश जी से पूछिये। मेरा भाषण कम्पोज़ करने दे दीजिये। उसका प्रूफ देख लीजिये। बाबा पृथ्वीसिंह फ्रन्टियर मेल से आते जाते हैं। कभी उन्हें मथुरा में उतारिये। उनका 'क्रान्ति का पथिक' मूल्य १५) गजब का आत्म-चरित है।

विनीत
बनारसीदास

(१२२)

फीरोजाबाद
३-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे, ३१ ता० का कृपा पत्र मिला। स्व० आचार्य जीवनदत्त जी के विषय में संस्मरण तो हर हालत में इकट्ठे कर ही लेने चाहिये। अगर स्मृतिग्रन्थ के लिये पैसा इकट्ठा न भी हो सके तो ब्रज भारती का पाँचवां अङ्क ही निकाला जा सकता है। अगर उसमें भी आर्थिक बाधा हो तो हस्तलिखित ग्रन्थ तो तैयार किया ही जा सकेगा। उसमें तो सौ रुपये ही खर्च होंगे। आचार्य विजयप्रकाश जी को यदि कोई आशङ्का हो तो उन्हें एक रजिस्टर्ड पत्र द्वारा आप यह सूचित कर सकते हैं कि इस श्राद्ध कर्म में हम लोगों का कोई भी स्वार्थ नहीं है। उन्हें यह भी लिख दीजिये कि उत्तर न आने पर आप अपने पत्र की नकल स्व० आचार्य जीवनदत्त जी के भक्तों को भेज देंगे।

संस्मरण अभी इकट्ठे हो जायँ तो भले ही हो जाँय, फिर १०-१२ वर्ष बाद वे विलीन हो जायेंगे। "जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ" मैंने "विशाल हरियाणा" पत्र की नमूने की प्रति के लिये श्री फूलसिंह जी (सदस्य राज्य सभा) तथा चंडीगढ़ को भी लिखा था, पर उन लोगों ने

भेजा ही नहीं। एक सज्जन ने 'अमर उजाला में' विशाल हरियाणा के पक्ष में भी लिखा है और हम लोगों पर 'जाट-अहीर विरोधी' होने का इलज़ाम लगाया है ! यह आक्षेप सवा-सोलह आने निराधार है।

एक गश्ती चिट्ठी प्रश्नावली के रूप में उन जिलों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भेजी जा सकती है, जिन्हें विशाल हरियाणा हड़प लेना चाहता है। उत्तर आने पर छपाये जा सकते हैं (संक्षेप में)। जगन्नाथप्रसाद भानु जी को छपा-छपाया अभिनन्दन ग्रन्थ उनके जीवन काल में भेट नहीं किया जा सका। बस लेखों का पुलन्दा भेंट कर दिया गया जिसे वे लोगों को खेद पूर्वक दिखलाते थे। शायद उनके स्वर्गवास के बाद वह छपा। मैं शीघ्र ही ६।१० तारीख के आस-पास होलीपुरा जाना चाहता हूँ। वहाँ भाई शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी का इण्टर कालेज है। जंगल में मंगल।

विनीत

बनारसीदास

(१२३)

फीरोजाबाद

७-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

जब कभी आपके मन में उत्साह हो और आपके पास फुर्सत भी आप होलीपुरा के इण्टर कालेज को जरूर देखिये। भाई शम्भुनाथ जी का ही वह कालेज है। दामोदर इन्टर कालेज नाम है। अपनी पत्रिका का भदावर-विशेषाङ्क यदि वे निकाल सकें तो अत्युत्तम हो, पर उससे पूर्व उन्हें पत्रिका का श्री राधेलाल अङ्क निकालना चाहिये। इस बारे में आप भाई शम्भुनाथ जी चतुर्वेदी (मीना वाजार कोठी शाहगंज आगरा) को अपनी ओर से लिखें। भाई शम्भुनाथ जी बहुत भले आदमी हैं। सच्चे कार्यकर्ता हैं।

व्रजभारती का एक अङ्क श्रीमती तारा पाण्डे C/o दी कलक्टर मैंनपुरी भेजें। उनके पुत्र श्री कमल पाण्डे मैंनपुरी में कलक्टर हैं। श्रीमती पाण्डे अच्छी कवयित्री हैं। वे यहाँ अपने पतिदेव श्री पी० पान्डे के साथ पाँच-सात दिन पहले पधारी थीं।

विनीत

बनारसीदास

(१२४)

दूसरा पत्र

फीरोजाबाद
७-६-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

एक पत्र श्री हरिहरनाथ अग्रवाल अध्यक्ष रामप्रसाद एण्ड सन्स मौडर्न बुक डिपो हास्पिटल रोड आगरा को लिख कर पूछिये कि वे सत्यनारायण कविरत्न के उत्तर राम चरित और मालती माधव को प्रकाशित कर सकते हैं क्या ? श्री हरिहरनाथ के पिता श्री रामप्रसाद जी सत्यनारायण के मित्र थे। उन्होंने मालती माधव का प्रथम संस्करण छापा था।

कोटला इन्टर कालेज भी जिसके संचालक भाई बालकृष्ण गुप्त हैं आपको देखना ही है। वहाँ के निकट राजापुर ग्राम का एक व्यक्ति १६४२ में शहीद हुआ था—नाम था ओउम् प्रकाश—यानी जेल में ही उसका स्वर्गवास हो गया था। उसकी पत्नी फूलमती ज़िन्दा है। उसका स्तम्भ कोटला कालेज में स्थापित करना है। इस बारे में भी बालकृष्ण जी से पूछिये।

आपको ही व्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ सेवक बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा इसलिये व्रजभूमि की सर्वाङ्गीण उन्नति का ध्यान आपको रखना है।

बनारसीदास

(१२५)

फीरोजाबाद
२८-१०-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! कृपापत्र मिला। अपने प्रिय जनपद—व्रजमण्डल—के लिये जो कुछ भी हम कर सकें हमें यथासम्भव शीघ्र ही करना चाहिये। I am in a hurry because I haven't much time left now. आपके शुभनाम का सहारा लेकर—आपको निमित्त मात्र बनाकर—इस यज्ञ को आगे बढ़ाना है। "निमित्त मात्रं भव सव्य-साचिन्" यह भगवान की ही उक्ति है।

स्व० हरिशङ्कर जी का एक बढ़िया तैल चित्र भाई ओउम् ने तैयार करा दिया है। उसे पी. डी. जैन कालेज के शहीद-कक्ष में टँगवाना है। उसके निगेटिव से कुछ Cabinet Size चित्र भी तैयार करा लेंगे।

आप एक अलमारी या कोई बड़ा सन्दूक इस प्रकार के मसाले के लिये घर पर सुरक्षित कर दीजिये। अल्प व्यय वाली चीजें तो इकट्ठी करते रहना ही चाहिये।

मेरे संग्रहालय को देखने के लिये दिल्ली से National archives वाले आ रहे हैं। पैसे तो वे नाम मात्र को ही देंगे—१००-२००) लेकिन चीजें वैज्ञानिक ढङ्ग से उनके यहाँ ही सुरक्षित रह सकती हैं। वे Permanent loan (जिसका अर्थ 'दान' ही हो सकता है।) पर उन्हें ले लेंगे। भविष्य के खयाल से मैं भी उन अत्यन्त बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित करा देना चाहता हूँ।

आपकी अभिनन्दन कमैटी में कुछ उद्योगपतियों को भी शामिल करना चाहिये। Sponsors की संख्या में १०-१५ की वृद्धि हो जाय तो कोई हानि नहीं। श्री राधेमोहन अग्रवाल (शिवलालाल अग्रवाल & Co.) को रखना ही चाहिये। राजाबाबू को भी।

भाई बालकृष्ण जी अग्रवाल बहुत व्यस्त हैं। सबेरे ७॥ से शाम के ७॥ बजे तक अपने कारखाने में ही रहते हैं। भाई अमृतलाल जी से उन्होंने यही कहा था। यहाँ के उद्योगपतियों में उनका दम गनीमत है।

विनीत
बनारसीदास

(१२६)

फीरोजाबाद
९-११-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! मैं कल ८ ता० की मीटिङ्ग में आना चाहता था, पर अर्श के कष्ट के कारण न आ सका। लेकिन जो निवेदन मुझे करना था, उसे अमर उजाला ने प्रकाशित करने की कृपा कर दी। वह एक पत्र का सारांश है, जिसे मैंने श्री रंजन जी को लिखा था।

आचार्य वासुदेवशरण जी के पत्रों को छपा ही दीजिये। भूमिका में खर्च का व्यौरा भी दे दीजिये ताकि वासुदेवशरण जी के पुत्रों को यह विश्वास हो जाय कि हम लोग मुनाफे की दृष्टि से यह श्राद्ध कर्म नहीं कर रहे।

क्या सत्येन्द्र जी के पास के पत्र नहीं मिले? उनसे फिर तकाजा कीजिये। मैं भी लिख रहा हूँ। १२ ता० को दिल्ली की National archives

की एक महिला Mrs. M. Singh यहाँ मेरे संग्रहालय को देखने पधार रही हैं। महात्मा जी, दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज प्रभृति के पत्र मैं वहीं राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित करा देना चाहता हूँ। इससे मेरी चिन्ता मिट जायगी। वैज्ञानिक ढङ्ग से सुरक्षित करना कोई आसान काम नहीं। मेरे पत्रों को आप छपाना चाहते हों तो जरूर छपा दें, यद्यपि मैं उन्हें महत्व नहीं देता।

आप प्रातःकाल टहलने जाते हैं ? या नहीं ? स्वस्थ रहना सबसे जरूरी काम है। विद्याशंकर जी से भाई हरिशङ्कर जी के पत्र तुरन्त ले लीजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१२७)

फीरोजाबाद
१२-११-७०

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आप तो कभी शिकार में गये न होंगे। मुझे टीकमगढ़ में मौका मिला था। शिकार मैंने कभी नहीं की, देखी अवश्य थी। तीन तरफ से हाँका कराने पर जानवर चौथी ओर निकलता है और वहाँ बैठा शिकारी उसका काम तमाम कर देता है।

अपने शासकों का भी अहिंसात्मक हाँका कराना होगा। दस बारह जगह से एक ही आशय के पत्र जब उनकी सेवा में पहुँचेंगे तो शायद उनके कान पर जूँ रेंगेगी। महात्मा जी का कहना था कि रेल के डिब्बों की अस्वच्छता के बारे में यात्रियों को रेल अधिकारियों को लिखना ही चाहिये। जब बीसियों लोग लिखेंगे तो शायद वे ध्यान देंगे।

हाँका के कुछ विषय लिखता हूँ :—

१. धाँधूपुर में सत्यनारायण कविरत्न के लिये कोई स्मारक।
२. ब्रजसाहित्य मण्डल के लिये भूमि की प्राप्ति।
३. देवपुरस्कार के नियमों को यथापूर्व रखवाना—(मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)
४. ब्रजसाहित्य मण्डल को अनुदान।
५. श्रीधर पाठक संग्रहालय की स्थापना।
६. जनपदीय बोलियों के शब्द, मुहाविरे, कोष इत्यादि के संग्रह की व्यवस्था।

जो जिस मंत्री या विधायक को जानता हो वह उसे लिखे। उदाहरण के लिये मैं श्रीमान् मुख्यमंत्री महोदय को (जिनसे थोड़ा सा परिचय है) लिख सकता हूँ।

आप, मीतल जी, दुबे जी, अमृतलाल जी, बालकृष्ण जी, सत्येन्द्र जी, इत्यादि एक ही आशय के पत्र श्री लक्ष्मीरमण आचार्य इत्यादि को भेज सकते हैं। "कबहुँक दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान" इन लोगों के कान पर भी कभी न कभी भनक पड़ेगी।

आगरे न पहुँच सकने का मुझे पछतावा रहा। क्या करता, लाचार था। भाई बालकृष्ण गुप्त का कहना था कि आगरे वाले ठीक प्रबन्ध नहीं कर सके। वैसे भी साहित्यिक मीटिङ्गों में उपस्थिति ज्यादा नहीं होती, पर जगह तो ठीक रखनी चाहिये थी।

बालकृष्ण जी का कहना है कि आगरे वालों को सबक सिखाने के लिये यहाँ कोई मीटिङ्ग सफलता पूर्वक की जा सकती है।

"अपने शासकों से" शीर्षक एक लेख मैं लिखना चाहता हूँ। यह पता लगाने की जरूरत है कि हमारे शासकों में कितनों में साहित्यिक रुचि है। शायद २० फीसदी में भी न होगी। ऐसे लोगों के सामने साहित्यिक चर्चा करना भैंस के आगे बीन बजाने के समान है।

विनीत
बनारसीदास

(१२८)

फीरोजाबाद
२१-११-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

कल इटावे के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री कृष्णगोपाल चौधरी पधारे थे। उनसे उस नगर के साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में बहुत देर तक वार्तालाप हुआ। उनका पता इटावा काफी है।

कृपया उन्हें एक पत्र भेजकर इटावे में साहित्यिक कार्य पर एक लेख ब्रजभारती के लिये लिखवाइये। ब्रजभारती का एक अङ्क उन्हें तुरन्त भेजिये और उनका शुभ नाम फ्री लिस्ट में लिख लीजिये। वे मेरी उम्र के ही हैं—आगरा कालेज के पुराने छात्र और प्रतिष्ठित वकील।

आपको कभी इटावे जाना भी पड़ेगा। पहले से श्री सूर्यनारायण अग्रवाल जी से पत्र-व्यवहार कर लीजिये। उन्हें भी ब्रजभारती भेंट स्वरूप ही भेजिये। इटावा पहले आगरा कमिश्नरी में ही था। साहित्यिक दृष्टि से

तो वह हमारे जनपद में ही है और आप चूंकि व्रजमण्डल के साहित्यिक कमिश्नर [आयुक्त] हैं इसलिये इटावा आपके क्षेत्र में आता है।

National archives की एक महिला Mrs. M. Singh पधारी थीं। वे २८ नवम्बर को पुनः आ रही हैं। अपने संग्रहालय की महत्वपूर्ण सामग्री मैं उन्हें २६ को सौंप दूंगा। यदि आपको फुर्सत हो तो आप भी २८ ता० को पधारें। वे सम्भवतः तूफान Express से आवेंगी। महात्मा जी के एक सौ पत्र, सी. एफ. एन्ड्रयूज की सम्पूर्ण सामग्री, श्रीनिवास शास्त्री के पत्र इत्यादि अब दिल्ली में ही सुरक्षित रहेंगे।

इस पत्र की नकल चौधरी श्री कृष्णगोपाल जी को भी भेज रहा हूँ। साहित्यिक सगाई कराना मेरा प्रिय कर्तव्य है।

बनारसीदास

(१२६)

फीरोजाबाद
१४-१२-७०

प्रिय बन्धु !

बाबा पृथ्वीसिंह आजाद, शिशु विहार भावनगर (सौराष्ट्र) को मैं लिख रहा हूँ कि वे २२ दिसम्बर को यहाँ पधारें। वे आपको तार देंगे, आप उनसे मिल लीजिये। अब की बार हम लोग फीरोजाबाद के दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सम्मान कर रहे हैं श्री सरदारसिंह अध्यापक उम्र ८४ वर्ष, श्री गुलजारीलाल आयुर्वेद विशारद उम्र ८० वर्ष। पहले सज्जन ने प्राइमरी स्कूलों में बहुत वर्षों तक पढ़ाया था और दूसरे पीयूषपाणि हकीम रह चुके हैं। मुझे तो बहुत काफी सम्मान मिल चुका है।

आगरा में इस बार ६ दिन व्यतीत हो गये। ता० ५ को गया था और ता० ११ को लौटा हूँ। मुझे डी. लिट्. उपाधि दिलाने में श्रीमान् कुलपति महोदय का जबरदस्त हाथ था और मैं उनका बहुत बहुत कृतज्ञ हूँ। मुझे तो ४ दिसम्बर की शाम को ही—जिस दिन यह निश्चय हुआ था—यह समाचार अकस्मात् मिला था। मैंने इसकी कल्पना भी न की थी। प्रयत्न करना तो रहा दूर।

मेरा जन्म दिवस २४ दिसम्बर को पड़ता है पर मैं तो कीर्ति रूपी मिठाई खाते खाते ऊब गया हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(१३०)

फीरोजाबाद
२६-१२-७०

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आपका कृपापत्र मिला। डी. लिट् के इस तूफान ने मेरे दैनिक कार्यक्रम को सर्वथा अस्त-व्यस्त कर दिया। दोपहर की नींद दो दिन हराम हुई और स्वागत सम्मानों में वक्त की बर्बादी हुई सो अलग। खैर आपने अपने पत्र में बिल्कुल प्रासङ्गिक प्रश्न किया है। चि० बुद्धिप्रकाश ने भी कहा था कि अभिनन्दन ग्रन्थ के आत्म-चरितात्मक भाग में बहू [मेरी धर्मपत्नी घर में इसी नाम से पुकारी जाती थी] का उल्लेख होना चाहिये था।

वस्तुतः वह घरेलू अध्याय श्रीयुत बंसल जी के सुपुर्द था, पर ऐन वक्त पर उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और मुझे ही वह लिखना पड़ा।

निस्सन्देह मेरी पत्नी को जो श्रेय मिलना चाहिये था, वह उसे नहीं मिला। मेरे मन में इस बात का घोर पश्चात्ताप बराबर रहा है कि मैं उसके प्रति अपना कर्तव्य पालन नहीं कर सका। आप, रेखाचित्र में मेरी आत्म-चरितात्मक कहानी सम्पादक की समाधि पढ़ लीजिये। प्लाट के घटाटोप में वह वास्तविक घटनाओं से ओत-प्रोत है। स्वर्गीय आचार्य वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने मुझे अपने पत्र में (जो प्रकाशित हो चुका है) लिखा था कि अपने विस्तृत अध्ययन में उन्होंने ऐसी टीस भरी रचना दूसरी नहीं पढ़ी। आप सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित उस पत्र को जरूर पढ़लें।

मेरी पत्नी की आकस्मिक मृत्यु सन् १९३० में हो गई, जब कि मैं कुल जमा ३८ वर्ष का ही था। उससे मेरा सम्पूर्ण जीवन ही अस्त-व्यस्त हो गया। मैं अपने दोषों को कुतुब मीनार से घोषित करने का पक्षपाती हूँ और कभी उन्हें छिपाने का प्रयत्न नहीं करता। यदि मैं यहाँ उन सब अनाचारों का ब्यौरा सुनाने लगूँ, जो मुझसे बन पड़े, तो आपके हृदय को धक्का लगेगा।

अमितगताचार्य एक जैन कवि हो गये हैं। उनके सामायिकसार को जैन लोग रोज पढ़ते हैं। उसका एक श्लोक हैः—

विनिन्दनालोचन गर्हणैरऽहं,
मनः वचः काय कषाय निर्मितम्,
निहन्मि पापं भव दुःख कारणं,
भिषग् विषैः मंत्र गुणैरिवाखिलम्।

अर्थात् जिस तरह कोई वैद्य मंत्र के बल से साँप के विष को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार मैं निन्दा, घोर निन्दा और आलोचना द्वारा अपने उन पापों को जो मन वचन काया द्वारा मुझसे बन पड़े हैं, नष्ट करता हूँ।

हैवलॉक ऐलिस ने लिखा है कि बहुत से व्यक्ति चन्द्रमा की भाँति अपने प्रकाश-भाग को ही जनता को दिखलाते हैं और अन्धकार भाग को बिल्कुल छिपाये रहते हैं। मैं उस नीति (या अनीति ?) में यकीन नहीं रखता।

जिसका सहयोग मुझे १७ वर्ष मिला, मेरे उद्दाम यौवन में जो मेरी सहचरी रही पर जो मेरे सुख के दिन आने के बहुत पूर्व ही चली गई उसके प्रति शाब्दिक कृतज्ञता प्रगट करना निरर्थक ही होगा। सम्पादक की समाधि में मैंने अपने हृदय की जो व्यथा उड़ेल दी है वह आंशिक रूप से पर्याप्त है। दूसरे लोग वे गलतियाँ न करें जो मुझसे बन पड़ीं, यह भी उस सच्ची कहानी का एक उद्देश्य है। वैसे वह प्रायश्चित्तमूलक ही है।

विनीत
बनारसीदास

(१३१)

फीरोजाबाद
२०-१-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आप मेरे पत्रों को छाप रहे हैं, इससे मुझे आश्चर्य ही होता है। वे कभी इस खयाल से नहीं लिखे गये थे कि उन्हें प्रकाशित किया जायगा। अगर यह विचार मन में आता तो उनकी सहज स्वाभाविकता ही नष्ट हो जाती।

पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन रहा है—जैसे भंग पीना चौबे लोगों का व्यसन है—और कम से कम एक लाख चिट्ठियाँ तो मैंने घसीट डाली होंगी। मैंने कहीं पढ़ा था कि लार्ड कर्जन कभी-कभी सौ सौ पृष्ठों के पत्र लिख भेजते थे। [पं० पद्मसिंह जी के पत्रों की पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स से ७॥) में मँगा लीजिये]

किसी अंग्रेज लेखक ने लिखा था—"Only those letters are worth preserving that ought not to have been written-and if written, they ought to have been destroyed."

नर्मदा के नवीन अङ्क में मैंने स्व० नवीन जी के ऐसे कितने ही पत्र छाप भी दिये हैं। उसी फक्कड़पन में स्व० प्रतापनारायण मिश्र ने अपने अनेक पत्र लिखे थे। जिनमें ४, ५ ही सुरक्षित हैं।

'पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन' नामक पुस्तक के लिये सम्पूर्ण सामग्री तैयार है, पर लिखने का मौका अभी तक नहीं मिला। श्री राधेमोहन जी (शिवलाल अग्रवाल & Co.) डेढ़ सौ रुपये महीने पर एक सहायक देने को भी उद्यत हैं, पर कोई समझदार सहायक यहाँ मिलता ही नहीं। आप जानते ही हैं कि मुझे अंग्रेजी भाषा से कोई विद्वेष नहीं और सन् १६१६ से अंग्रेजी पत्रों में लेख भेजता रहा हूँ। एक बात यह भी है कि Roman लिपि पत्र घसीटने के लिये विशेष सुविधा जनक है। मैं अपना मानसिक भोजन प्राय: अंग्रेजी ग्रन्थों से लेता रहा हूँ। वैसे गीता, धम्मपद, महाभारत इत्यादि से भी प्रेरणा मुझे मिलती रही है, पर Emerson, Thoreau, Whitman, Ramain Rolland, Gorky, Stefan Zweig, Turgenev, Edward Carpenter,. इत्यादि के ग्रन्थों का स्वाध्याय मैंने किया है।

अंग्रेजी में पत्र लिखने से एक घाटा जरूर हुआ है—वह यह कि वे हिन्दी पाठकों तक पहुँच नहीं सकते। पर मैंने कभी यह कल्पना भी न की थी कि मेरे पत्रों में कुछ ऐसी चीज़ भी हो सकती है जो एकाध व्यक्ति से अधिक के लिये उपयोगी हो।

मैंने अपने बहुत ही कम पत्रों की नकल रक्खी है। कम से कम ३०० पत्र श्रीराम जी के घर पर होंगे—इतने ही भाई हरिशङ्कर जी के यहाँ। बन्धुवर हजारीप्रसाद जी, दिनकर जी, सत्यवती मलिक, स्व० कमला चौधरी इत्यादि के यहाँ पचासों ही पत्र शायद पड़े हों। क्या कभी किसी भंगड़ी ने यह हिसाब लगाया होगा कि उसने कितने लोटे भाँग पी है? और किसी चाय पीने वाले ने प्यालों की गिनती की होगी? अभी चार बजे उठकर मैंने तीन चार प्याले चायामृत का पान किया है और लम्बे-लम्बे कई खत घसीट डाले हैं। डाकखाने मेरे जैसे मूर्खों के बल बूते पर चलते हैं। पचासों रुपये महीने का यह नुसखा मेरे लिये यद्यपि व्ययसाध्य रहा है, तथापि उसके कारण हजारों पत्र इकट्ठे हो गये हैं। दूसरा व्यसन फोटोग्राफी का भी रहा है।

चन्द तस्वीरें बुताँ चन्द हसीनों के खुतूत,
बाद मरने के मेरे घर से यह सामाँ निकले।

Don't have over-crowded programmes 'युक्ताहार विहार' की शिक्षा भगवान कृष्ण ने ही दी थी। 'विहार' को क्यों नजरन्दाज करते हैं? चीनी कहावत है "Enjoy yourself-It is already too-late" ६० वर्ष वालों

के लिये सर्वथा उपयुक्त है और ७६ वालों के लिये अनिवार्य ! दिल्ली से डा० आनन्द स्वरूप पाठक का भी पत्र आपके अभिनन्दन के विषय में मिला।

विनीत
बनारसीदास

(१३२)

फीरोजाबाद
३०-१-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपके अनुज श्री कुंजलाल के वियोग की दुःखद खबर राजेन्द्र रंजन जी से सुनी। यह एक हृदय विदारक दुर्घटना है। निस्सन्देह आप पर यह बड़ी विपत्ति आई है। भुक्त-भोगी होने के कारण मेरी आपके साथ हार्दिक सहानुभूति है। ऐसे अवसर पर धैर्य बाँधने का उपदेश देना भी हिमाकत होगी। समय ही ऐसे घाव को पूरा कर सकता है, यद्यपि उसकी कसक कभी नहीं जाती।

आपके दुःख से दुःखी

बनारसीदास

(१३३)

फीरोजाबाद
२-२-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आशीष ! कार्ड मिला। मुझे उस दुर्घटना की खबर राजेन्द्र रंजन जी से मिल चुकी थी और तभी मैंने एक पत्र भी भेज दिया था।

मुझ पर ऐसी ही विपत्ति सन् १६३६ में आई थी। अनुज रामनारायण का स्वर्गवास कुल जमा २८ वर्ष की उम्र में हो गया था। अभिनन्दन ग्रन्थ में आपने मेरा लेख पढ़ा ही है।

इस अवसर पर अपने अनुभव की एक बात धृष्टतापूर्वक निवेदन कर दूं। उस वज्रपात के समय मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि मैं स्वस्थ रहकर इस विपत्ति को झेल लूंगा। 'I will not succumb to this calamity' तब मैंने regular टहलना शुरू कर दिया था। मेरे हाथ में Nervous system की कमजोरी के कारण कम्पन भी शुरू हो गया था। किसमिस खाने से वह व्यथा दूर हो गई।

आप को भी अब पक्की प्रतिज्ञा करके तन्दुरस्त रहना चाहिये और नई जिम्मेवारी को सम्हालना चाहिये। मैं कोई उपदेश नहीं दे सकता। घरेलू मामलों में तो मैं बिल्कुल फेल ही रहा हूँ। हाँ, मेरी गलतियों से दूसरे लोग कुछ सीख सकते हैं। जो अपने निकटस्थ हैं, उनके प्रति अपना कर्तव्य पालन करने में ही हमारा कल्याण है। हाँ, चितविभ्रम को रोकने के लिये अपना साहित्यिक कार्य भी यथाशक्ति नियम पूर्वक करते रहिये।

पुनश्च—

मुझे शायद दिल्ली जाना पड़े। १२ ता० को सी. एफ. एन्ड्रयूज की जन्म शताब्दी है।

विनीत
बनारसीदास

(१३४)

फीरोजाबाद
६-२-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आप मेरे पत्रों का संग्रह कर रहे हैं तदर्थ कृतज्ञ हूँ, पर मुझे तो उनमें कोई विशेषता नजर नहीं आती। दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज तो पत्रों की वर्षा सी करते थे और स्वयं कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उनकी इन showers का उल्लेख किया था। मैं भी पत्र बहुत लिखता हूँ और शायद यही उनकी एक मात्र विशेषता हो।

क्या आचार्य पं० पद्मसिंह जी के पत्र आत्माराम एण्ड सन्स काश्मीरी गेट से आपने मँगाये ? न मँगाये हों तो मैं भिजवा दूँगा। हाँ, दूसरों ने जो पत्र मुझे लिखे हैं वे निस्सन्देह महत्व रखते हैं। कितने ही पत्र fish किये गये हैं। उदाहरणार्थ श्रीनिवास शास्त्री का वह Classical पत्र, जो उन्होंने मुझे पोशाक के बारे में लिखा था। वह उनकी जीवनी में भी प्रकाशित हुआ है और पद्मसिंह शर्मा के पत्रों की भूमिका में भी मैंने उसका फोटो छापा है। उसे National archives में—शास्त्री जी के अन्य चालीस पत्रों के साथ—सुरक्षित करा दिया गया है। शास्त्री जी ने मेरी प्रशंसा में एक पत्र में जो कुछ लिखा था उसे मैंने छपाया नहीं। वह पत्र न्यूजीलैण्ड से उन्होंने भेजा था। उसके शब्द कुछ ऐसे थे "Without any idea to flatter you, I may say that I have rarely met a patriot like you".

पहले मैं अपने पत्र सदा अपने सर्वोत्तम अक्षरों में ही लिखता था और हस्ताक्षरों की सुन्दरता भी लोगों को भरमा देती थी। वे लोग इस भ्रम में पड़ जाते थे कि शायद पत्र लेखक भी उतना ही अच्छा है, जितने उसके अक्षर ! बापू ने भी एक बार कहा था—तुम्हारे अक्षर तो मोती जैसे होते हैं। असली कारण मैंने आपको बतला दिया है। दो वर्ष पहले परीक्षा में मेरी लेख-शैली पर एक प्रश्न आया था। मैं स्वयं उस प्रश्न का उत्तर न दे पाता और फेल हो जाता। अपनी लेख-शैली की विशेषता मैं खुद नहीं जानता। मैंने एक लाख पत्र तो घसीट डाले होंगे। दरअसल डाक विभाग मेरे जैसे मूर्खों के कारण ही चलते हैं। थोरो का कथन था कि जिनकी अन्तरात्मा में कुछ नहीं होता वे ही डाकखाने की ओर दौड़ते हैं।

विनीत

बनारसीदास

(१३५)

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

बन्दे ! कल वैद्यराज श्री जगन्नाथप्रसाद जी मिल गये और उन्होंने यह समाचार सुनाया कि आचार्य श्री जीवनदत्त जी के विषय में ८० लेख इकठ्ठे हो गये हैं और उन्हें श्री माखनलाल जी पाराशर तथा श्री उपाध्याय जी देख रहे हैं। आप तुरन्त एस. आर. के. कालेज के पते से उनसे पत्र-व्यवहार करें और पूँछे कि यह यज्ञ कहाँ तक आगे बढ़ा है।

अपने संग्रहालय की चीजों को छाँटने के लिये अब जनवरी में मैंने National archives वालों को बुलाया है। तब तक मुझे विश्वभारती के सी. एफ. ऐन्ड्रयूज अङ्क तथा Illustrated weekly के शहीद अङ्क में व्यस्त रहना पड़ेगा।

आप अपने निजी संग्रहालय का कार्य तुरन्त प्रारम्भ कर दें। सार्वजनिक संग्रहालयों की दुर्दशा का मुझे व्यक्तिगत अनुभव है। सम्मेलन के संग्रहालय ने सत्यनारायण कविरत्न के अमूल्य संग्रह की रक्षा नहीं की।

श्री सूर्यनारायण अग्रवाल बी. ए., घटिया इटावा तथा श्रीयुत कृष्णगोपाल चौधरी एडवोकेट इटावा को ब्रजभारती फ्री भेजिये। उन्हें लिख दीजिये कि उन्हें ग्राहक बनने की जरूरत नहीं है। श्रीयुत बालकृष्ण जी गुप्त का मकान बन रहा है, सो उसी में तथा व्यापार में व्यस्त रहते हैं। यह स्वाभाविक भी है। अभी रंग जी उनके यहाँ पधारे थे। अकस्मात् टहलते हुए मिल गये।

१॥ घंटे तक अच्छा काव्य रसास्वादन रहा। बाबा पृथ्वीसिंह ने वचन दिया है कि वे इस बार मथुरा होते हुए यहाँ पधारेंगे। उनकी पुस्तक क्रान्तिपथ का पथिक अवश्य-अवश्य खरीदिये।

विनीत
बनारसीदास

(१३६)

फीरोजाबाद
११-२-७१

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

आशीष ! मैं कल १ बजे दोपहर को दिल्ली आ गया, पर गलती से ऊपर पता घर का ही दे दिया है। सवेरे ४ बजे उठकर चाय बनाई और फिर पत्र लिखने बैठ गया। पत्र लेखन मेरे लिए creation और recreation दोनों ही हैं, लार्ड कर्जन ने तो सौ सौ पृष्ठ के पत्र लिखे थे, पर इतना परिश्रम मैं नहीं कर सकता। अभी २ पृष्ठ की चिट्ठी मैंने अपने जामाता चि० सुरेन्द्र को भेजी है और उसकी नकल चि० वुद्धि प्रकाश को और अपने भानजे को भी भेज दूंगा।

आप मेरी पद्धति की नकल कर सकते हैं। Ball pen से तीन प्रतियाँ हो जातीं हैं। Kores का २०१४ नं० का कार्बन पेपर अच्छा होता है। एक एक प्रति फाइल के लिये रखकर दूसरी अन्यत्र भेज सकते हैं।

आज मुझे सी. एफ. एन्ड्र्यूज पर Talk record करानी है। कल १२ ता० को रात को शायद ८ बजे वह प्रसारित होगी और ६॥ बजे डिमैलो का Feature भी। ठीक टाइम आप अखबार में देख लीजियेगा।

भाई ओउम् ने ऐण्ड्र्यूज का बहुत बढ़िया तैल चित्र ६०) में बनवा लिया था, क्योंकि जब १६२० में ऐण्ड्र्यूज फीरोजाबाद पधारे थे तब उन्हीं के पिताजी श्री रतनलाल आर्य के घर पर ठहरे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री ओउम् को बहुत काम रहता है, क्योंकि २ मिनट के फासिले पर रहते हुए भी वे मिल ही नहीं पाते। उन्होंने सी. एफ. ऐण्ड्र्यूज के ट्रैक्ट को छपाकर तथा मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में बहुत मदद देकर मुझे अनुग्रहीत किया था। मैं उनका ऋणी हूँ। मुझे फीरोजाबाद में रहते हुए ७ वर्ष हो गये। इन सात वर्षों में भाई बालकृष्ण जी तथा श्री ओउम् बस यही दो व्यक्ति सहायक मिले हैं।

अब तो मेरा फीरोजाबाद का अध्याय समाप्त होने को है। अब घूमते हुए ही रहना चाहता हूँ। परिव्राजक मुझे बहुत पहिले बन जाना चाहिये था, लेकिन अब यात्राऐं मुश्किल हैं। डा० बारान्निकोव का पता मैंने आपको शायद लिखा था यहाँ मेरे पास नहीं है कृपया भेजिये।

विनीत
बनारसीदास

(१३७)

नई दिल्ली २२
६-३-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! साथ के कार्ड को पढ़कर आगरे के लिये पोस्ट कर दीजिये। भाई अमृतलाल जी का अनुवाद (गुरुदेव की कविता का) मुझे भेजिये।

यदि कवीन्द्र ने ब्रज में जन्म लिया होता तो वह क्या क्या देखते ? यह विषय बड़ा मनोरंजक बन सकता है। यदि मैं उनका guide या पंडा बन सकता तो उन्हें छलेसर (जहाँ बबूल वन लगाया गया है) और राजाबाबू के उद्यान को जरूर ले जाता। गोवर्द्धन भी दिखलाता—यद्यपि मैंने उसे अभी तक नहीं देखा और ब्रज में क्या-क्या दर्शनीय है उसका उल्लेख होना चाहिये, पर साथ ही साथ उन अनाचारों का भी वर्णन होना चाहिये जो ब्रजवासियों से बन पड़े हैं—यथा फीरोजाबाद के गान्धीपार्क के वृक्षों का विनाश। लाखों पेड़ों का चूड़ी की भट्टियों में जला देना इत्यादि। आप भी इस विषय पर लिखें। ब्रजभाषा के जुगलेश कवि मैंने सुना है कि प्रतापगढ़ के थे। उनका काव्य ग्रन्थ बढ़िया था। सम्मेलन वालों से पूछिये तो।

विनीत
बनारसीदास

(१३८)

फीरोजाबाद
आगरा

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! श्री अटलविहारी वाजपेयी जी ने आगरे की मीटिङ्ग में मेरा जिक्र किया था सो उन्हें एक पत्र भेज दिया है। अपने जनपदीय कार्य में उनका सहयोग लेना ही चाहिये। वे बटेश्वर के हैं।

चूंकि राजस्थान वि० विद्यालय फिर से चालू हो गया है, सत्येन्द्र जी से स्व० वासुदेवशरण जी के पत्रों के लिये तकाजा किया जा सकता है।

मैं इस समय Illustrated weekly के शहीद तथा क्रान्तिकारी विशेषाङ्क के कार्य में व्यस्त हूँ—तत्पश्चात सी. एफ. ऐण्ड्रयूज विषयक सामग्री विश्व-भारती को भेजनी है।

National archives वालों को जनवरी में बुलाऊँगा। मैं चाहता हूँ कि Cost price पर सामग्री के आवश्यक पत्रों की नकल या photostat वे आपके संग्रहालय को दे दें। ११४ पत्र तथा कागद तो अकेले बापू—महात्मा जी के ही हैं।

आचार्य जीवनदत्त जी के विषय में भी करपात्री जी से बातचीत वैद्यराज जगन्नाथ की हुई थी। सामग्री इत्यादि होने पर वे मदद देने को तैयार हैं। यह श्राद्ध कार्य भी हो ही जाना चाहिये।

मेरा पिछला पत्र मिला होगा। आपके अभिनन्दन ग्रन्थ में बटेश्वर विषयक लेख यदि श्री अटल बिहारी जी लिख दें तो अत्युत्तम।

हमें सभी दल वालों से मदद लेनी चाहिये। साहित्यिक यथा सांस्कृतिक धरातल पर सभी का स्वागत सम्मान हमें करना है। दलगत राजनीति से हमारा कुछ भी सम्बन्ध न रहना चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

(१३६)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२

प्रियवर,

मेरा त्रिमूर्ति शीर्षक लेख शायद अमर उजाला या सैनिक में छपे। २६ फरवरी को श्रीराम जी का स्वर्गवास हुआ था और ८ मार्च को हरिशङ्कर जी का। यदि आप अमर मुनि जी से प्रार्थना करें तो वे रत्नमुनि जैन कालेज के अधिकारियों से हरिशङ्कर अंक निकलवा सकते हैं। 'Best is enemy of good' पुरानी कहावत है। सर्वोत्तम काम की धुन में हम अच्छा काम भी नहीं कर पाते।

ब्रजभारती अभी मिली। मेरे विषय में आपने जो कुछ लिखा है है तदर्थं बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ।

श्री प्रकाशवीर जी अपने चुनाव सम्बन्धी गोरख धन्धों में व्यस्त रहे। उन्होंने बस इतना ही किया कि २१३) रुपये हरिशङ्कर जी के ४०० पत्रों के टाइप के लिए भिजवा दिये। आपने अपनी प्रति विद्याशंकर जी से ले ली या नहीं? मैंने ८ फरवरी को यहाँ जो तार भेजा था वह मुझे ही यहाँ १२ ता० को मिला।

विनीत
बनारसीदास

(१४०)

सत्यनारायण जन्म दिवस
रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

श्री त्रिलोकीनाथ व्रजवाल एक सन्दर्भ ग्रन्थ व्रज की साहित्यिक संस्थाओं पर निकालना चाहते हैं। मुझसे सुझाव माँगे हैं। मैंने डाइरेक्टरी निकालने के लिए परामर्श दिया है, क्योंकि उसमें कुछ विज्ञापन भी मिल जावेंगे। क्या हिन्दी प्रचार सभा के पास इस यज्ञ के लिये साधन हैं भी?

डा० वारान्निकोव का पता शायद मैंने आपको भेजा था—नया पता। उनके पास मेरे सवासौ पत्र होंगे। उनका पता मुझे भेजिये। वासुदेवशरण जी के पत्र शायद आपको ही छपाने पड़ेंगे। और किसी को उनके महत्व का अनुमान ही नहीं। श्री मक्खनलाल पाराशर एम ए., एस. आर. के. कालेज फीरोजाबाद से पूछिये कि आचार्य जीवनदत्त जी का कार्य कहाँ तक आगे बढ़ा।

विनीत
बनारसीदास

(१४१)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! फीरोजाबाद में प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन का प्रस्ताव मुझे पसन्द है। और मेरा अनुमान है कि बन्धुवर बालकृष्ण गुप्त भी उससे सहमत हो जावेंगे, डेढ़ हजार रुपये खर्च होंगे, जिनका इकट्ठा करना फीरोजाबाद जैसे साधन सम्पन्न नगर में मुश्किल न होगा। यद्यपि गर्मियों के दिनों में उत्सव करने की बात मुझे बिल्कुल भौड़ी जँचती है, तथापि जिसमें अधिकारियों को सुविधा हो वही करना चाहिये।

मई जून में तो कोई साहित्यिक उत्सव इस मरुभूमि में हर्गिज न होने चाहिये। कवियों तथा लेखकों को मुफ्त में तपस्या क्यों कराई जाय? सत्यनारायण जी ने ग्रीष्म-गरिमा में लिखा था—

न भावत असन वसन वन बाग, अतप घर-घरनी सौं अनुराग।
खुले तब पाइ अनुग्रह भाग, कमायौ सेंत मैंत वैराग।।

सो ब्रजवासियों को सेंतमैंत वैराग कमाने के लिये क्यों मजबूर किया जाय? मैं तो वर्षा प्रारम्भ होने पर ही उत्सव करने के पक्ष में हूँ। इस बीच ब्रज की संस्थाओं के विवरण मँगा लिये जावें। नये नये कार्यकर्ताओं को मूँड़े बिना काम नहीं चलेगा। मैंने अपनी कम्पनी का नाम 'श्राद्ध-अभिनन्दन कम्पनी' रक्खा था। नवीन जी ने उसमें मुंडन और जोड़ दिया। मैंने पूछा कि मुंडन का क्या मतलब? तो नवीन जी बोले "बिना लोगों को मूँड़े तुम्हारी कम्पनी का कारोबार चलेगा कैसे?"

भाई ओउम् (ऐसा प्रतीत होता है कि) या तो विरक्त या वैरागी बन गये हैं, या फिर हमारी गति विधि से असन्तुष्ट हैं। वे न कभी मिलते हैं, न किसी यज्ञ में भाग लेते हैं। ऐसी स्थिति में उन पर कोई भार डालना उचित न होगा। अश्रद्धापूर्वक तो कोई यज्ञ न होना चाहिये। केवल अध्यापकों की सुविधा असुविधा को ध्यान में रखकर घोर गर्मी में पचासों व्यक्तियों को कष्ट देना सिटल्ली भूलने का परिणाम है।

काबुल में मेवा और ब्रज में बबूल उगाने वाले भगवान की भी सिटल्ली भूल गई थी। प्रान्तीय सम्मेलन में बुन्देलखण्ड के भी कुछ चुने हुए कार्यकर्ताओं को बुलाना चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

(१४२)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

१. एक पत्र आप श्री कमला शर्मा एम. ए. श्रीराम जी का मकान, बल्का बस्ती आगरे को भेजिये, और उस काश्मीरी छात्रा का पूरा नाम तथा पता पूछिये जो श्रीराम जी पर शोध कर रही है। श्रीराम जी के यहाँ मेरे ४०० पत्र तो होंगे। उन पर स्मृति ग्रन्थ निकालने का प्रस्ताव भी

कीजिये। उनके सुपुत्र श्री रमेशकुमार शर्मा पी-एच. डी. काश्मीर वि० वि० में विभागाध्यक्ष हैं।

२. भाई मधुसूदन जी चतुर्वेदी से कहिये कि वे कौशलेन्द्र जी की काकली पुनः मुद्रित कर दें।

३. भाई श्रीनारायण जी से प्रार्थना कीजिये कि वे स्व० हरदयालुसिंह जी के रघुवंश के अनुवाद की कुछ वानगी आपको भेज दें। उस पर स्वर्गीय बैरिस्टर ब्रजकिशोर चतुर्वेदी ने विक्रम में लिखा था।

४. अमर उजाला वालों को कहिये कि चुनावों के बाद वे ब्रजमण्डल की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक प्रगति के विषय में अधिकाधिक लिखें।

५. श्री विद्याशङ्कर शर्मा एम. ए., सैनिक खँदारी रोड आगरा को लिखिये कि और कुछ नहीं तो हाथ के बने कागज पर Documentary Ink से ही भाई हरिशङ्कर जी पर स्मृति ग्रन्थ तैयार कर दें। छपेगा तब छपेगा।

६. श्री कृष्णगोपाल चौधरी वकील इटावा तथा श्री सूर्यनारायण अग्रवाल बी. ए. घटिया, इटावा इन दोनों से इटावे की साहित्यिक स्थिति पर लेख लिखाइये।

७. श्री ब्रजकिशोर जैन एम. ए. पी. डी. जैन इन्टर कालेज फीरोजाबाद को लिखिये कि फीरोजाबाद अङ्क में ब्रजसाहित्य मंडल पर एक लेख जरूर छापें। अङ्क मैं ही निकलवा रहा हूँ।

८. श्रीयुत मानव जी प्रिंसीपल डी. ए. वी. कालेज फीरोजाबाद से उनकी कुछ अच्छी कविताऐं मँगाकर अपने संग्रहालय में रखिये। श्री कुसुमाकर जी भी वहीं काम करते हैं। उनसे भी यही अनुरोध कीजिये।

९. भाई ओउम् [अपने रिश्तेदार] से प्रार्थना कीजिये कि वे अपने घर के हाल में दीनबन्धु सी. एफ. ऐण्ड्र्यूज के तैल चित्र का उद्घाटन करावें। उन्हें धन्यवाद दीजिये कि उन्होंने स्व० हरिशङ्कर जी का बढ़िया तैल चित्र तैयार करा लिया है। उसे वे शायद पी. डी. जैन कालेज को अर्पित करेंगे।

१०. प्रिंसीपल दामोदर इन्टर कालेज होलीपुरा को भी पत्र लिखें। उनकी चिट्ठी मुझे मिली है, पर मैं तो उधर इस समय जा नहीं सकता। स्व० राधेलाल अङ्क वे कब तक निकालेंगे?

११. भाई बालकृष्ण गुप्त (हनुमानगंज फीरोजाबाद) २० ता० को यहाँ दिल्ली पधार रहे हैं। वे तो सदा कार से ही आते जाते हैं। रास्ता मथुरा होकर ही है। आपके यहाँ रोटी खाकर विश्राम क्यों न करें ?

१२. आचार्य जीवनदत्त जी के स्मृति ग्रन्थ का काम कहाँ तक अग्रसर हुआ यह बात श्री मक्खनलाल शर्मा पाराशर अध्यापक एस. आर. के. कालेज फीरोजाबाद से पूछिये। वैद्य जी से भी।

ये बारह काम आपके सुपुर्द कर दिये। श्री दुबे जी को मेरा प्रणाम लिखिये।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

श्री भगवानसिंह जी आई. ए. एस. High Blood Pressure के कारण विलिंग्डन अस्पताल में भर्ती हैं, चिन्ता की कोई बात नहीं।

(१४३)

नई दिल्ली २२
११-३-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! चुनाव संग्राम के नतीजे आ रहे हैं और मैं भी बड़े चाव से उन्हें सुन रहा हूँ। चूँकि संसद में मुझे भी १२ वर्ष बिताने पड़े थे—बकौल राष्ट्रकवि गुप्त जी "बारह वर्ष दिल्ली रहे—और भाड़ ही झौंका किये।" इसलिये पुराने कुसंस्कारों के कारण चुनाव के नतीजे सुनने में मुझे भी वक्त बर्बाद करना पड़ा है। राजनीति से अपने को बिल्कुल अलग रखना भी नहीं चाहिये, क्योंकि उसने अन्य सब क्षेत्रों को आच्छादित कर रक्खा है। स्वर्गीय राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू का एक लेख था "अन्तिम ध्येय राजनीति नहीं, संस्कृति है" श्री राजबहादुर जीत गये, यह अच्छा हुआ। सम्भवतः उनसे कुछ काम लिया जा सके।

हम लोगों को अपने साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य में भरपूर लगन से जुट जाना चाहिये। We ought not to allow ourselves to any particular political party, though we may have sympathy with one or the other.

हमें यह समझ लेना चाहिये कि पच्चीस वर्ष बाद उन राजनैतिक नेताओं को—जो आज भारतीय क्षितिज पर चमक रहे है—जनता बिल्कुल

भूल ही जायगी, जब कि रत्नाकर जी तथा सत्यनारायण कविरत्न को लोग तब भी याद रखेंगे।

कृपया साथ का पत्र पढ़ लीजिये। यह प्रो० कुलदीप जी को ६ महात्मा-गान्धी मार्ग के पते पर आगरे भेजा गया है। वह विभव जी का स्थान है। उन्होंने पिछले चुनाव में ८२ हजार खर्च कर दिये थे और Ram prasad & sons के श्री हरिहरनाथ ने एक लाख। स्व० रामप्रसाद जी से मेरा परिचय था। मालती-माधव उन्होंने ही छपाया था। वास्तव में सत्यनारायण जी के सभी ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण होना चाहिये।

आप भी श्री कुलदीप जी को लिखें। हमें इलैक्शन जैसी क्षणिक चीज़ों से विचलित न होकर अपने ध्येय की ओर अग्रसर होना चाहिये। इलैक्शन को हरिशङ्कर जी ill-action कहते थे।

विनीत
बनारसीदास

(१४४)

नई दिल्ली २२
१३-३-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! चुनाव का तूफान खतम हो गया। अब हमें लगन के साथ अपने साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यों में व्यस्त हो जाना चाहिये। इस चुनाव में करोड़ों ही रुपये खर्च हो गये होंगे, जब कि literary or cultural यज्ञों के लिये थोड़े से पैसे व्यय करने में भी हमारे शासकों तथा लीडरों की नानी मरती है। करोड़ों के बजट पास होते हैं, जब कि साहित्यिक कार्यों को १०, २० हजार में ही टरका दिया जाता है।

इसमें हम लोगों का भी कुछ कुसूर है। Why do we attach so much importance to politics and politicians? जो भी व्यक्ति साहित्य को छोड़कर राजनीति को ग्रहण करता है वह मणि को त्याग कर काँच ग्रहण करता है। चूँकि आप ६ वर्ष Municipal politics की बीमारी में मुब्तला रह चुके हैं, इसलिये थोड़ा सा अनुभव खुद आपको उस क्षेत्र का होगा ही। दुर्भाग्य की बात यही है कि साहित्य क्षेत्र में भी politics घुस पड़ती है। जो राजनैतिक नेता साहित्य क्षेत्र में पधारते हैं वे अपने साथ राजनीति के कीटाणु भी ले आते हैं। Power Politics का प्रवेश सम्मेलन में हो गया था और उसने गज़ब ढा दिया। रीडर बाजी ही उसके मूल में थी। पाठ्यक्रम में पुस्तकों को नियुक्त कराने वालों की यह करामात थी। मैं इस बात को

कभी भी नहीं समझ सका कि श्रीमती रानी टंडन की ३०-३२ किताबें सम्मेलन की परीक्षाओं में थीं। यह सौभाग्य ही समझिये कि ब्रजसाहित्य मंडल के पास पैसा नहीं है, नहीं तो यहाँ भी वही संग्राम शुरू हो जाता।

मैं छोटे-छोटे स्थानीय केन्द्रों को सजीव तथा शक्तिशाली बनाने का पक्षपाती हूँ। केन्द्र में बहुत सा गुड़ इकट्ठा कर देने से वहाँ चींटे इकट्ठे हो ही जायेंगे।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी हार गये। मैंने सुना था कि वे भाई हरिशङ्कर जी के बहुत ऋणी थे, पर अपनी मेम्बरी के दिनों में वे हरिशङ्कर जी के लिये विशेष कुछ नहीं कर सके। हाँ, आर्यमित्र से २१३) रुपये उनके पत्रों के टाइप कराने को उन्होंने अवश्य भिजवा दिये थे। तदर्थ मैं उनका कृतज्ञ हूँ। स्व० हरिशङ्कर जी का तैल चित्र बहुत बढ़िया भाई ओउम् ने बनवा लिया है। उसका उद्‌घाटन होना बाकी है।

विनीत
बनारसीदास

(१४५)

रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली २२
२०-३-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

मैं एक सप्ताह के भीतर फीरोजाबाद लौट जाने की सोच रहा हूँ। ताज एक्सप्रेस से आगरा जाऊँगा और वहाँ कुछ विश्राम करके फीरोजाबाद।

अब चुनाव का तूफान खतम हो चुका है। हम लोगों को—साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य-कर्त्ताओं को अपना काम दृढ़तापूर्वक जोर-शोर के साथ करना चाहिये। मेरे आदेशानुसार श्री शिवप्रभु एम. ए., ग्राम कनैटा, फीरोजाबाद तथा उनके भतीजे कृष्णगोपाल जी ट्रेनिंग स्कूल ऐतमादपुर ख्यालगो लोगों की चीजें इकट्ठी कर रहे हैं। दोनों से सम्पर्क स्थापित कीजिये।

रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ में चंचरीक जी ने ब्रज के लोक साहित्य पर अच्छा लिखा है। आपने ग्रन्थ देखा ही होगा।

यदि फीरोजाबाद में प्रान्तीय सम्मेलन करना ही है तो कार्य अभी से शुरू हो जाना चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

(१४६)

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

ख़्यालगो लोगों का एक अच्छा समूह था। उनके भी रैकर्ड सुरक्षित करा लेने चाहिये। श्री नैकसा भुज्जी फीरोजाबाद का अच्छा ख़्यालगो है। उससे बहुत सी बातों का पता चल सकता है। पता नहीं मथुरा में भी कोई ख़्यालगो है या नहीं। बुन्देलखण्ड में उन्हीं के मुकाबिले के गायक हैं। उनका पता श्री रामचरण हयारण मित्र, वर्तन बाजार झाँसी से लग सकता है।

श्री देवकीनन्दन विभव आगरा साधन सम्पन्न व्यक्ति हैं। श्री कुलदीप जी उनकी जयन्ती मना रहे हैं। जनपदीय शहीदों के लिए वे लोग कुछ करना चाहते हैं। उनसे जो सहयोग मिल जाय ले लेना चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

(१४७)

२४-३-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आप मेरे पत्रों को छपा रहे हैं, इसमें मुझे सचमुच आश्चर्य हुआ। मैंने अपने पत्रों को घसीटते समय कभी इस बात की कल्पना भी न की थी कि वे प्रकाशित करने योग्य समझे जावेंगे। सम्भवतः इसी कारण उनमें कृत्रिमता का अभाव रहा है। चाय के नशे पत्त में मैंने सहस्त्रों ही पत्र लिख डालें होंगे। एक महानुभाव ने उनकी संख्या के बारे में पूछा था। यदि मेरा अपराध क्षन्तव्य माना जाय तो मैं कहूँगा कि यह प्रश्न उतना ही धृष्ठतापूर्ण है जितना किसी चौबे जी से पूछना कि तुमने कितने लोटे भंग पी है। या किसी चाय के पियक्कड़ से प्यालों की संख्या पूछना ? मेरे पत्र लेखन के पीछे मुख्यतया कोई परोपकार की भावना रही है, ऐसा मान लेना भी गलत होगा। पत्रकारिता के जीवन में पत्र लिखने ही पड़ते हैं और सम्पादक बनने के बाद तो उनका नम्बर और भी बढ़ जाता है। इसके सिवाय मुझे रेलवे स्टेशन से पेंतीस मील दूर कुण्डेश्वर में १४॥ वर्ष रहना पड़ा, जो टीकमगढ़ से भी चार मील के फासिले पर था। अपने शुष्क एकाकी जीवन में कुछ रस लाने के लिये मुझे मजबूरन पत्र व्यवहार का आश्रय लेना पड़ा ? फिर तो वह मेरे लिये मनोरंजन का मुख्य साधन ही बन गया। वह Creation और recreation [रचनात्मक कार्य तथा विश्राम] दोनों का ही काम देता था।

हाँ, यह बात भी ठीक है कि मेरे साहित्यिक जीवन का एक दार्शनिक दृष्टिकोण रहा है। मैंने कभी भी आत्म-केन्द्रित होने का प्रयत्न नहीं किया। साहित्योपवनों की स्थापना ही मेरा उद्देश्य रहा है और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हिन्दी जगत की वर्तमान दुर्दशा का एक मूल कारण यह भी है कि हमारे नेता प्रायः आत्म-केन्द्रित ही रहे हैं। उन्होंने इस बात की चिन्ता कभी नहीं की कि हमारे छुटभइयों के मार्ग में क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं और वे कैसे दूर की जा सकतीं हैं। बाड़ी लगाकर साग तरकारी उगा लेना और स्वयं ही उनका उपभोग करना, बस यही उनका लक्ष्य रहा है। हाँ, कभी-कभी एकाध मूली गाजर बेंगन वे पड़ोसियों को बाँट देने की उदारता जरूर दिखला देते हैं। ऐसे बाग बगीचे लगाना, जहाँ जनसाधारण मुक्त आकाश तथा मनोहर वातावरण में शुद्ध वायु का सेवन कर सकें, इसकी कल्पना भी उनके दिमाग में नहीं आती।

वे दिल खोलकर कभी भी चिट्ठी नहीं लिखते। पत्रोत्तर भी संक्षेप में टरकौअल तरीके पर दे देते हैं। जर्मनी के महाकवि गेटे का एक नियम था—वह यह कि वे केवल उन्हीं खतों का जवाब देते थे, जिनमें कोई पत्र लेखक उन्हें कुछ देना चाहता था। शेष को वे रद्दी की टोकरी के हवाले कर देते थे। गेटे एक विश्व कवि थे और उनकी यह पद्धति क्षम्य मानी जा सकती थी, पर साधारण कवियों का तथा लेखकों से तो यह आशा की जा सकती है कि वे कुछ सहृदयता तथा उदारता से काम लें।

इस दृष्टि से आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा हिन्दी पत्र लेखकों में शिरोमणि थे। गुण ग्राहकता उनमें चरम सीमा को पहुँच गई थी और दूसरों को दाद या प्रोत्साहन देना तो मानों उनके जीवन का एक अङ्ग ही बन गया था। उन्मुक्त पत्र लेखन में स्वर्गीय प्रतापनारायण मिश्र तथा बालकृष्ण शर्मा नवीन सबसे आगे थे, पर मिश्र जी के तो दो चार पत्र ही सुरक्षित रह गये हैं, जब कि नवीन जी के बहुत से पत्र हमने स्वयं नर्मदा के एक विशेषाङ्क में छपा दिये थे। आचार्य श्री वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र भी बड़े महत्वपूर्ण होते थे।

भारतीय पत्र लेखकों में माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी के मुकाबले का दूसरा कोई व्यक्ति नहीं हुआ। एक बार सर शिव स्वामी अय्यर ने लिखा था—"शास्त्री जी की कोटि के वक्ता तो भारत में भले ही मिल जावें पर पत्र-लेखक की हैसियत से तो वे देश भर में अद्वितीय है।" मेरा यह सौभाग्य

था कि मुझे उन्होंने चालीस पैंतालीस पत्र भेजे थे, जो अब National archives—राष्ट्रीय अभिलेखागार में सुरक्षित हैं।

दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज तो मानो पत्रों की बौछार सी करते थे। उनके पत्रों की संख्या मैं गिन भी नहीं सका। बहुत से व्यक्तियों को इस बात का पता न होगा कि महात्मा गान्धी जी के पत्र संग्रह तथा संग्रहालय का प्रारम्भ सन् १६२१ में मैंने ही साबरमती आश्रम में किया था और विशाल-भारत में सन् १६३४-३५ में दो लेख भी उस बारे में लिखे थे। खेद है कि उस समय किसी ने भी उन लेखों पर ध्यान नहीं दिया। नहीं तो महात्मा जी के सैकड़ों ही पत्र नष्ट होने से बचा लिये जाते।

आज भी साहित्यिकों तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के पत्रों का एक बड़ा समूह अस्त-व्यस्त अवस्था में यत्र तत्र पड़ा हुआ है और कुछ वर्षों में वह विलुप्त ही हो जायगा।

मेरे क्षुद्र जीवन का एक अच्छा अंश उन पत्रों की रक्षा करने में व्यतीत हुआ है। पत्र-व्यवहार पर मेरे चालीस पचास रुपये महीने खर्च होते रहे है, पर मैं इसे घाटे का सौदा हरगिज नहीं मानता। आनन्द का वितरण एक ऐसा व्यापार है, जिसमें मुनाफा ही मुनाफा है। पर इसके लिये अनन्त अवकाश की आवश्यकता है। यह अवकाश मुझे दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज, महात्मा गान्धी, सम्पादकाचार्य रामानन्द चट्टोपाध्याय और महाराज वीरसिंह जू देव की कृपा से पर्याप्त मात्रा में मिला और यदि मैं इस क्षेत्र में कुछ सेवा कर सका तो उसका श्रेय मुख्यतया उन्हीं महापुरुषों को मिलना चाहिये। इससे अधिक क्या लिखूँ।

विनीत
बनारसीदास

(१४८)

नई दिल्ली २२
२-४-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे! कभी मैंने एक लेख लिखा था कि हिन्दी साहित्य क्षेत्र को परिब्राजकों की आवश्यकता है जो जगह-जगह घूम फिर कर दूर-दूर छितरे हुए और परस्पर में असम्बद्ध साहित्यिक तथा सांस्कृतिक केन्द्रों का निरीक्षण करें और अपने सत्परामर्शों द्वारा उनको पुनर्जीवन प्रदान करें। योजकस्तत्र दुर्लभः।

पर आधुनिक जीवन इतना संघर्षमय हो गया है और यात्राऐं इतनी कष्ट-प्रद कि यह काम अब बहुत कठिन हो गया है। आपको पता ही होगा स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक ने हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के लिये कितना उपयोगी कार्य किया था। आज भी काका साहब कालेलकर निरन्तर भ्रमण करते हुए जो कार्य कर रहे हैं उसकी शतमुख से प्रशंसा ही करनी होगी। काश हिन्दी जगत में काका साहब जैसे दो चार व्यक्ति भी होते।

अंग्रेजी में कहावत है 'Be the man thou seekest' यानी जिस आदमी की तुम तलाश में हो वह खुद ही बन जाओ ! दूसरों को उपदेश देने के बजाय स्वयं ही तदनुसार काम करना श्रेयस्कर होगा।

कई बार मेरे मन में आया था कि अपने ब्रजमंडल के भिन्न-भिन्न केन्द्रों की तीर्थ यात्रा करूँ पर पिछले दस वर्ष से पौरुष ग्रन्थि के कष्ट के कारण 'मन की मन के माँहि रही' और अब ७९ वीं—एक कम अस्सी कहिये—वर्ष में यात्राऐं और भी कठिन हो गई है। उर्दू की किसी किताब में एक कविता आती थी। वह कविवर गाफिल की थी।

सैर कर दुनियाँ की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ ?
जिन्दगी गर कुछ बची तो नौजवानी फिर कहाँ।

[गाफिल का कलाम कहीं मिलता हो तो तलाश कीजिये। बहुत साफ लिखते थे। फीरोजाबाद के एक कवि महोदय को उनके तीन चार पद्य याद थे] सो अगर्चे मेरे पास भी अब जिन्दगी के थोड़े दिन ही बाकी बचे हैं, फिर भी घूमने-फिरने की इच्छा अभी बनी हुई है।

सन् १९६६ में रूस की द्वितीय यात्रा प्रारम्भ करने के पहिले मैं पूर्व जर्मनी के वाणिज्य प्रतिनिधि मि० फिशर से मिलने गया तो उन्होंने छूटते ही कहा "आपके लिये तो हमारे यहाँ का एक निमंत्रण तैयार है। आप इस पत्र को मास्को में हमारे प्रतिनिधि को दे दीजिये। वे एक महीने के लिये आपकी यात्रा का प्रबन्ध कर देंगे—तब आप हमारे देश में घूम फिर आइये।" खेद है कि मैं अपनी अस्वस्थता के कारण उस सौभाग्यपूर्ण अवसर से लाभ नहीं उठा सका।

दो बार क्यूबा से भी मुझे निमंत्रण मिला था और दो बार चीन से भी, पर मैं उन दिनों यात्रा करने की स्थिति में नहीं था, पर अब मेरी हार्दिक अभिलाषा घूमने-फिरने की है। जब फर्स्टक्लास का पास मुझे मिला हुआ था और भारत के किसी भी स्थान की यात्रा रेल द्वारा कर सकता था, मैंने उस

दुर्लभ सुविधा का उपयोग नहीं किया। बन्धुवर श्री बेनीपुरी जी ने हिन्दी भवन की एक मीटिङ्ग में इसी कारण एक चुटकी भी ली थी कि ऐसे लोगों के पास छीन लिये जाने चाहिये, जो उनको इस्तैमाल में ही नहीं लाते। फीरोजाबाद के उद्योगपति श्री बालकृष्ण गुप्त ने मुझे एक सुविधा प्रदान कर रखी है वह यह कि २५-३० मील दूर के किसी स्थान की यात्रा के लिये मैं उनकी कार का प्रयोग कर सकता हूँ और मैंने भी आगरा, होलीपुरा तथा सिरसागंज की यात्राएँ उनकी कार द्वारा की थीं। कोटला तो कई बार जा चुका हूँ। एक ब्राह्मण देवता ने कहा कि हमने अपने ग्राम कपावली में एक सौ वृक्ष लगा दिये थे। श्री बालकृष्ण जी खुद ड्राइव करके हमें वहाँ ले गये और हमने वह मनोहर दृश्य अपनी आँखों से देखा। और हमारी सर्वोत्तम यात्रा छलेसर के बबूल जंगल के बंगले में कवि सम्मेलन तथा गोष्ठी की हुई। चमरौला के शहीद मेले में भी बालकृष्ण जी ही हमें ले गये थे। वह तो तीर्थ यात्रा थी।

आजकल लोगों का जीवन इतना अस्त-व्यस्त हो गया है कि हर आदमी जल्दी और हरबड़ी में इधर से उधर भागता हुआ नजर आता है। थोड़ी देर ठहर कर घंटे आधे घंटे के लिये भी गप्पाष्टक करने का वक्त किसी के भी पास नहीं बचा। अवकाश की इस कमी ने हमारे जीवन को रेगिस्तान ही बना दिया है। छोटी-छोटी मनोरंजक गोष्ठियाँ उसे नखलिस्तान में परिवर्तित कर सकती हैं।

मैं दो बार राजा बाबू [श्री प्रतापनारायण अग्रवाल] के उस महान उपवन की यात्रा कर चुका हूँ जो आगरे से आठ मील की दूरी पर स्थित है। वहाँ ६ हजार वृक्ष तो अकेले आम के ही हैं और ढाई सौ मन गुलाब प्रति वर्ष उतरता है। सैकड़ों पेड़ जामुन के हैं। मेरे आग्रह पर आप भी उस उपवन को देख चुके हैं और अमर उजाला सम्पादक श्री डोरीलाल जी भी वहाँ गये थे। अब ५ अप्रैल को तीसरी बार वहाँ की आम्रमंजरियों तथा गुलाब पुष्पों को प्रणाम करने के लिये यात्रा कर रहा हूँ।

बौद्ध ग्रन्थों में हमने पढ़ा था कि भगवान बुद्ध आम्र उपवनों में ठहरा करते थे। अगर गौतम बुद्ध का पुनः अवतार हो और वे आगरे पधारें तो उससे बढ़िया जगह उनके ठहरने के लिये मिल ही नहीं सकती।

जब फीरोजाबाद में आप उत्तर प्रदेशीय साहित्य सम्मेलन करें तो कुछ प्रतिनिधियों को, जिनके पास अवकाश है, कोटला अथवा छलेसर की यात्रा अवश्य करावें। मथुरा के पेड़े आप लाइये, फीरोजाबाद की दाल मोठ का

प्रबन्ध श्री रतन लाल बंसल करेंगे। आतिथ्य विभाग की जिम्मेवारी श्री ओउम् उठा लेंगे। भाई अमृतलाल जी से मधुर कविता का पाठ कराना मेरे जिम्मे रहा। Division of labour श्रम विभाजन की यह पद्धति कैसी रहेगी ? फीरोजाबाद के सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर श्री जगमोहन जी उन क्षणों को चिरस्थायी रूप दे देंगे।

विनीत
बनारसीदास

(१४९)

रामकृष्णपुरम् ८
नई दिल्ली २२
४-४-७१

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

आज आपका परिचय अपनी पौत्री कुमारी रेणु चतुर्वेदी से कराता हूँ। वह कुल जमा दस वर्ष की होगी और छटवें दर्जे में ज्ञानपुर (जिला बनारस) में पढ़ती है। रेणु का घर का नाम गुड़िया है और गुड़िया चिठ्ठी लिखने में बहुत होशियार है। घर भर में इतने बढ़िया पत्र कोई भी नहीं लिख पाता। पहले उसकी चिट्ठियों को पढ़कर हमें आश्चर्य हुआ और हमने चिरंजीव बुद्धि प्रकाश से पूछा कि क्या ऐसे पत्र लिखने में गुड़िया किसी से मदद लेती है, पर उत्तर आया कि नहीं, वह तो जो कुछ लिखती है अपने मन से खुद ही लिखती है। गुड़िया की दो चिठ्ठियों के कुछ अंश ज्यों के त्यों—बिना किसी परिवर्तन के—यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ—

आपकी चिठ्ठी अभी-अभी मिली। हम आपको चिठ्ठी लिखना भूल गये। दादा २७ ता० को एलेक्शन में गये अब ७ को आवेंगे। हम लोगों की छुट्टी है। आप दिल्ली से सीधे यहाँ आवें। यहाँ पर मटर फूलने लगी है। टमाटर निकलने लगे हैं। बेंगन में फूल आ गया। सैंगरी खूब हो रहीं हैं। मूली भी निकलती हैं। खूब सलाद, धनिया मैथी केला आदि खूब हो रहा है। २९ ता० को भय्या की वर्ष गाँठ थी सो उस दिन रसगुल्ला बनाए। पहले हिन्दी हिसाब से हुई सो उस दिन फिरोजाबाद वाले शर्मा जी और S. C. Gupta को खाना दिया था। उस दिन मेवा भरी गुझिया खीर रोटी बनी थी। झोर बना था। यहाँ नीबू भी निकल रहे हैं। पपीता सेंम मीठा नीबू. खट्टा नीबू खूब निकला। खाते-खाते जी ऊब गया। यहाँ पर तो अभी से ही होली की तैयारी होने लगी। पत्ता गोभी अब निकलेगी। यहाँ ठंड गरमी दोनों हैं।

यहाँ आजकल चुनाव वाले सोने नहीं देते। रात भर चिल्लाते रहते हैं। यहाँ अभी चिड़ियों का चहचहाना बहुत अच्छा लग रहा है। यहाँ सामने कचनार का पेड़ है। उसमें बैंगनी रंग के फूल बहुत लगते हैं। आज हमारी फोटो खिंची थी। घर में अब धूप आने लगी है इस वक्त बुन रहे हैं। हमारी गुल्लक में इस वक्त २१) रु० हैं। अभी मम्मी पर उधार हैं। मम्मी इस वक्त रामायण पढ़ रही हैं। भय्या अपने दोस्त से बातें कर रहा है। जीजी पढ़ रही है। हम सब लोगों का अब की दिल्ली में ही रहने का मन है .... आज बूढ़े बाबा की पूजा थी। खूब मन से पूजा की थी। यहाँ पड़ोस में फीरोजाबाद वाले शर्मा जी के यहाँ बऊ आ गई। उसके आने की खुशी में उन्होंने खूब भारी जलसा किया था। २००-३०० आदमी बुलाये। अपने यहाँ के सब लोगों को खाना खिलाया। मलाई के लड्डू, तिरंगी बर्फी, समोसा। छोला पकौड़ी खूब था। खूब पेट भर के खाया। खूब लाइटिङ्ग रिकार्ड खूब बजा था। बड़ा मजा आया।''

आपकी बेटी
गुड़िया
कक्षा ६

गुड़िया की दूसरी चिट्ठी भी इसी प्रकार की मनोरंजक छोटी-छोटी बातों से परिपूर्ण थी। कभी वह तोरई के बीज निकालने की चर्चा करती है तो कभी आलू के सेव और कचरियाँ बनाने की। एक पत्र में लिखा था— ''यहाँ के कौवे बहुत दुष्ट हैं। कोई भी चीज को धूप में सुखाने रक्खो तो आँख के सामने से उठा ले जाते हैं। एक दिन साबुन उठा ले गया और आज नारियल का तेल धूप में रखा था सो आधा तेल फैला गया। गुड़िया कभी-कभी अपने पत्र में यह शिकायत भी कर देती है कि हमको सब मारते हैं। शायद डाट फटकार को वह मारना ही कहती है और उसकी यह बात ठीक भी है।

गुड़िया की चिट्ठियों को पढ़ कर हमें अंग्रेजी के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक काउपर के पत्रों की याद आ जाती है। उनका एक पालतू खरगोश भाग गया था सो उसका बड़ा ही मनोरंजक वृत्तान्त उन्होंने एक चिट्ठी में लिखा था। प्रथम महायुद्ध में अमरीका के जो राजदूत लन्दन में रहते थे, वे भी पत्र लेखकों में शिरोमणि थे। एक चिट्ठी में उन्होंने उन तमाम साग तरकारियों के नाम गिनाये थे, जो अमरीका में होती थीं उन दिनों स्वयं राजदूत महोदय कुल जमा साठ वर्ष के ही थे।

माननीय श्रीनिवास शास्त्री जी के अंग्रेजी पत्र बड़े मार्के के हैं और उनका हिन्दी अनुवाद किया जाना चाहिये। एक चिट्ठी में उन्होंने लिखा था कि एक सेठ जी ने अपने दानशील पुत्र को कमरे में इसलिये बन्द कर दिया कि महामना मालवीय जी के पधारने पर वह बहुत सा पैसा कहीं उन्हें दान में न दे डाले। एक पत्र में उन्होंने लार्ड ऑलिवर से प्रथम मुलाक़ात का जिक्र बड़े मनोरंजक तथा नाटकीय ढङ्ग पर किया था। उस पत्र को उद्धृत करने के लिये यहाँ स्थान नहीं। मेरे नाम जो चिठ्ठी उन्होंने पोशाक के बारे में लिखी थी उसे मैंने न जाने कितने मित्रों को सुनाया होगा। वह मुझे कण्ठस्थ है और जब शास्त्री जी आगरे पधारे तो स्वयं उन्हीं को सुना दिया। उस पत्र के अन्त में आया था—It is a funny wor!d, Benarasidas, we have to live in. First bend to it, make yourself great and then you can makc it bend to you, Did Gandhi always dress like this? If he had begun so, he would have ended differently. Please forgive a little lecture from one who loves you.

yours affectionately
V. S. Srinivas Sastri

शास्त्री जी का सन् १६२४ का वह पत्र ४७ वर्ष बाद भी मुझे याद है। यहाँ आठवें सैक्टर रामकृष्णपुरम् के कमरे में एकाकी बैठे-बैठे मन नहीं लगता तो यह चिट्ठी घसीट डाली है। इस कमरे में, घर में अकेले रहते-रहते ५२ दिन बीत गये। यह तनहाई मुझे खल गई है और मैं उर्दू कवि की वह कविता गुनगुनाता रहता हूँ:—

"या खुदा ! जन्नत से किसी हूर को भेज,
मेरे मौला मेरी आदत नहीं तनहाई की !"
बिल्कुल बेकार हूँ—बे Car भी। अगर वह हूर
कार चलाना भी जानती हो तो क्या कहना !

विनीत
बनारसीदास

(१५०)

४ लाजपत कुंज आगरा
५-४-७१

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आज ५ अप्रैल है—उस महापुरुष की पुण्यतिथि है, जिसने अंग्रेज होते हुए भी अपने जीवन के ३६ वर्ष हमारे देश के लिये अर्पित कर दिये थे और

जिसके बारे में महात्मा गान्धी जी ने लिखा था कि उनसे बढ़कर कोई भी सत्यप्रेमी विनम्र भारत भक्त इस भूमि में विद्यमान नहीं। मेरा मतलब दीनबन्धु सी. एफ. ऐण्ड्रयूज से है।

दीनबन्धु का भक्त मैं मई सन् १६१४ से बना जब मैंने माडर्नरिव्यू के अप्रैल १६१४ के अङ्क में उनका दक्षिण अफ्रीका से भेजा एक लेख पढ़ा था, जिसमें उन्होंने गान्धी जी के प्रथम दर्शन की बात लिखी थी। बापू की चरण रज उन्होंने अपने माथे पर लगाई थी और इस कारण अफ्रीका के गोरे लोग उनसे बहुत नाराज हो गये थे।

लेख को पढ़कर मैं इतना प्रभावित हुआ कि दीनबन्धु से पत्र-व्यवहार करने का मैंने निश्चय कर लिया। मैंने मन में सोचा था—

"He is my man"

जिस व्यक्ति को मैं अपना प्रेम अर्पित कर सकता हूँ, यह वही हैं। इस घटना को अब ५७ वर्ष होने को आये और मैं आज भी दीनबन्धु के प्रति उतनी ही श्रद्धा रखता हूँ। और मेरे क्षुद्र जीवन में यदि अच्छाई के थोड़े बहुत अंश है तो उनके लिये मैं उसी सत्पुरुष का ऋणी हूँ।

बाबा तुलसीदास ने कहा था :—

"बिन सत्सङ्ग विवेक न होई। बिन हरिकृपा मिलै नहिं सोई॥"

मैंने सी. एफ. ऐण्ड्रयूज के प्रथम दर्शन मई सन् १६१८ में किये और सन् १६२०-२१ में मैं चौदह महीने उनके साथ शान्ति निकेतन में रहा भी, जहाँ मैंने उनका प्रथम जीवन-चरित लिखा, जिसकी भूमिका गान्धी जी ने लिखी थी। फिर तो आगे चलकर मुझे मिस मार्जोरी साइक्स के साथ उनकी अंग्रेजी जीवनी लिखने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ और उस पुस्तक की भूमिका बापू ने ही लिखी थी।

दीनबन्धु की कृपा से ही मुझे कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दर्शन हुए और तभी शास्त्री महाशय (श्री विधुशेखर भट्टाचार्य) आचार्य नन्दलाल बोस और आचार्य क्षितिमोहनसेन के निकट सम्पर्क में आया।

'दीन क्या है, किसी कामिल की इबादत करना' चकबस्त का यह वाक्य ही मेरा आदर्श रहा है। मैं भी यही मानता हूँ कि सुयोग्य की पूजा ही असली धर्म है। मैं किसी को उपदेश नहीं देता—उपदेश देने से बदतर कोई फालतू काम हो ही नहीं सकता—सिर्फ अपनी अनुभूतियाँ-आप जैसे श्रद्धालु सहयोगी को सुना देना चाहता हूँ। अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मैं इसीको मानता

रहा हूँ कि मुझे महात्मागान्धी जी, कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, माननीय श्रीनिवास शास्त्री, सम्पादकाचार्य रामानन्द चट्टोपाध्याय, आचार्य द्विवेदी जी, श्रद्धेय सी. वाई. चिन्तामणि, अमर शहीद गणेश शङ्कर विद्यार्थी और पूज्य पं० पद्मसिंह जी शर्मा इत्यादि के कृपापात्र होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सुप्रसिद्ध अमरीकन लेखक थोरो ने एक जगह लिखा था "मैं चाहता हूँ कि युवक मछली पकड़ना सीखें, जिससे आगे चलकर वे अपने जाल में महापुरुषों को भी फँसा सकें।"

मछली पकड़ना तो मैंने सीखा नहीं था, यद्यपि कुंडेश्वर के तालाब में बढ़िया ढङ्ग की मछलियाँ पाई जाती थीं, पर पत्र-व्यवहार द्वारा मैं साहित्य जगत के अनेक मगरमच्छ फाँसने में सफल हो गया।

पत्र-व्यवहार उसका एक सर्वोत्तम साधन है, यह बात मैं प्राइवेट तौर पर आपको बतलाये देता हूँ। यह मंत्र है—'गोपनीयं, गोपनीयं, गोपनीयं प्रयत्नतः। फरासीसी मनीषी रोमाँ रोलाँ के तीन पत्र मैंने इसी के द्वारा प्राप्त किये और माननीय श्रीनिवास शास्त्री के चालीस पत्र भी। रेखा चित्रों के लिये मसाला इकट्ठा करने का सर्वोत्तम तरीका भी यही है। मैंने कोई सौ डेढ़ सौ रेखा चित्र प्रस्तुत किये होंगे और उनमें से कितनों ही का मसाला मुझे पत्र-व्यवहार से ही प्राप्त हुआ था। 'पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन' नामक पुस्तक की पूरी-पूरी सामग्री मुझे इसी तौर तरीके से मिली, यद्यपि वह किताब अभी तक नहीं लिखी जा सकी।

बन्धुवर, श्री लक्ष्मीचन्द्र जी जैन [संचालक ज्ञानपीठ काशी] ने बहुत वर्ष पहले आग्रह किया था कि मैं उस पुस्तक को उनकी ग्रन्थमाला के लिए लिख दूं और श्री राधेमोहन जी [शिवलाल अग्रवाल एन्ड को० के स्वामी] डेढ़ सौ रुपये महीने पर मेरे पास एक सहायक रखने को तैयार हैं, जो उस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री को मेरे लिये व्यवस्थित कर दे। एक महीने का वेतन उन्होंने मुझे पेशगी भेज भी दिया था, जिसे मैंने चाय और पेड़ों पर खर्च कर दिया। यह बात मैंने उन्हें अभी तक नहीं बतलाई, क्योंकि यह सुना देने पर मैं उनकी इज्जत में बिल्कुल गिर जाऊँगा, पर आप तो मथुरा निवासी हैं और चौबे लोगों के पेड़ा प्रेम से परिचित भी। अब आप ही सोचिये कि जब तक मैं चाय और पेड़ा खाकर जीवित नहीं रहता तब तक 'पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन' नामक किताब लिख कैसे सकता हूँ।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि डेढ़ सौ रुपये महीने पर फीरोजाबाद की उद्योग नगरी में कोई ऐसा युवक नहीं मिलता जो ६ घंटे रोज

मेरे साथ काम कर सके। मेरे व्यक्तित्व में वह आकर्षण भी नहीं कि युवकों को प्रेरणा प्रदान कर सकूँ। शायद आज का युवक आदर्शवादी बातें सुनना भी नहीं चाहता। भारत के सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा पृथ्वीसिंह आज़ाद ने अपने एक पत्र में मुझे बड़े पते की बात लिखी थी। उन्होंने लिखा था:—

"आप इस तथ्य को क्यों भूल जाते हैं कि आपमें और आज के नौजवानों में दो पीढ़ी का अन्तर है—५० वर्ष का—और उनके आदर्श आपसे भिन्न हैं। वे आपसे कोई उपदेश सुनना न चाहें तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। आप दूसरों की बात सुनिये और बोलिये बहुत कम। शक्ति को संचित रखिये" ये शब्द अक्षरशः बाबा के नहीं है, पर उनके पत्र का सारांश यही है। पर मैं करूँ तो आखिर क्या ? मुझे गप्पाष्टक का शौक है और गप्प अकेले में कैसे लड़ाई जा सकती है ?

इसलिये मैंने परिव्राजक बन जाने का इरादा कर लिया है। कभी आगरे रहूँगा, कभी दिल्ली, कभी टीकमगढ़ तो कभी ज्ञानपुर (काशी)। और गुन्ताड़े लगाकर पूर्व जर्मनी तथा फिजी की यात्रा करने का भी विचार है। और चूंकि आप मेरे प्रति कुछ श्रद्धा रखते हैं, इसलिये कभी मथुरा पर भी आक्रमण कर सकता हूँ।

एक बाबा जी को किसी श्रद्धालु ने प्रणाम किया तो वे बोले "बच्चा ! आज भोजन तेरे यहाँ ही रहा।" सो आप अपनी धर्मशाला में एक कमरा मेरे लिये अभी से सुरक्षित कर रखिये।

बन्धुवर राजाबाबू [श्री प्रतापनारायण अग्रवाल, रावतपाड़ा] का आग्रह है कि मैं कुछ दिन उनके उपवन में गुजारूँ और भाई बालकृष्ण गुप्त ने तो एक नवीन बगीचे में कुछ कमरे साहित्यिक यात्रियों के लिये ही बनवा देने का निश्चय कर लिया है।

पर इस वक्त तो मैं विदेश यात्रा के मूड में हूँ। यदि बन सका तो पूर्व जर्मनी जरूर जाऊँगा। वहाँ जाने का और एक महीने यात्रा करने का निमंत्रण मुझे सन् १९६६ में मिला था, पर पौरुष ग्रन्थि की बीमारी के कारण मैं वहाँ जा नहीं सका था।

मैंने बड़े हर्ष के साथ सुना कि एक ब्रजवासी को (आगरे जिले के निवासी आई. ए. ऐस. को) फिजी के हाई कमिश्नर का पद शायद दिया जायगा। यदि ऐसा हुआ तो फिर फिजी पहुँचना मेरे लिये कठिन न होगा।

१५ जून १९१४ से मैं फिजी का भक्त रहा हूँ २२ वर्ष तक प्रवासी भारतीयों की कुछ सेवा भी मुझसे बन पड़ी थी।

प्रातःकालीन चाय का नशा अब उतर चुका है और इस लम्बे पत्र में जो ऊल जलूल चर्चाएँ मैंने की हैं उनके लिये क्षमा याचना करता हूँ। अब भाई हरिशङ्कर जी, अमृतलाल जी तथा राधेमोहन जी के घर पर चाय पिऊँगा और गप्प लड़ाऊँगा।

विनीत
बनारसीदास

डॉ० बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र

कुछ अन्य साहित्यिक बन्धुओं के नाम

श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी को लिखा हुआ पत्र

(१५१)

फीरोजाबाद
२-२-७१

प्रिय भाई श्रीनारायण जी,
पालागन !

आपने इस बार एक काम बहुत अच्छा किया—यानी पूज्य पिताजी पर एक सुन्दर श्रद्धांजलि छाप दी। यह श्राद्ध कार्य तो आज से १६, १७ वर्ष पूर्व ही हो जाना चाहिए था। क्या पं० झावरमल्ल जी शर्मा ने उन पर उन दिनों कुछ लिखा था ? इस लेख में एक कमी रह गई। पिताजी द्वारा प्रणीत तथा अनुवादित सभी ग्रन्थों की सूची दे देनी चाहिए थी। उनमें कौन-कौन पुस्तकें अब प्राप्य हैं, यह भी लिखना चाहिए था।

मुझे उनके विषय में थोड़े से संस्मरण हैं। शायद सन् १९१९ में वे इन्दौर पधारे थे और किसी जैन धर्मशाला में ठहरे थे। मुझे पत्र भेजकर उन्होंने वहाँ बुला लिया था और दो घण्टे बातचीत की थी। प्रातःकाल में काम करने की बात तब भी मुझे उन्होंने बतलाई थी। हँसाया भी बहुत था। मैं तो उम्र में काफी छोटा था, पर उनके व्यवहार में बड़े छोटे की भावना का नामोनिशान न था। आगे चलकर उन्हीं ने मेरी सत्यनारायण कविरत्न की जीवनी सम्मेलन से छपवाने की स्वीकृति दी थी। उसमें मेरी अज्ञानता से एक भूल हो गई थी—शायद राम फटाका तिलक के बारे में थी—और उसके बारे में उन्होंने मुझे सावधान भी किया था।

मेरा खयाल है कि श्री गोपालप्रसाद व्यास भी उन पर कुछ लिख सकते हैं। उनके पत्रों को आपने सुरक्षित रक्खा या नहीं ? घरेलू record रखने में चीनी लोग अग्रगण्य थे। उनका इतिहास भी बहुत पुराना है। क्या राघवेन्द्र की फाइल सुरक्षित है ? कलकत्ता—समाचार की तो है ही। क्या श्री बाबूराम मिश्र कुछ लिख सकेंगे ? शिवदत्त जी ने बहुत अच्छा लिखा था।

हस्त-लिखित स्मृति-ग्रन्थों में तो बीस पच्चीस रुपयों से अधिक खर्च नहीं होता, पर हम लोग इतने प्रमादी हैं कि कुछ भी नहीं कर पाते। हमारी एक श्राद्ध अभिनन्दन मुंडन कम्पनी अनलिमिटेड है। श्री झावरमल्ल जी उसके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। जब मैंने श्री माधवप्रसाद जी के जीवन चरित्र की चर्चा की थी, तो पूज्य पिताजी ने उसके लिये कुछ लिख देने का वचन भी दिया था।

पर वह श्राद्धकर्म भी जहाँ का तहाँ पड़ा रहा। अब हम लोग भी वयोवृद्धों में माने जाने लगे। राजनैतिक शहीदों की कीर्ति रक्षा में मेरे पिछले पच्चीस वर्ष बीत गये और साहित्यिक तपस्वियों की एक प्रकार से उपेक्षा ही हो गई। आप कम से कम इतना तो कीजिये कि पूज्य पिताजी के ग्रन्थों को तलाश करके अपने घर पर रखिये। उनके पत्र सुरक्षित रखिए। रचना इत्यादि भी। मैं भी अपने संस्मरण लिख भेजूंगा। क्लाइव या वारेन हैस्टिंगस वाली किताब मैंने देखी थी पर तब तक उसको पढ़ने की योग्यता मुझ में न थी।

आपने मेरे बारे में जो नोट लिखा है तदर्थ कृतज्ञ हूँ। मेरी तुकबन्दी भी छाप दी, शुक्रगुज़ार हूँ। श्रीधर पाठक जी पर मैंने एक अङ्क भी निकाला था। भिजवा दूंगा, यदि आप तक न पहुँचा हो। अगले अंक में सी. एफ. ऐण्ड्र्यूज की शताब्दी पर कुछ जरूर लिखें।

विनीत
बनारसीदास

आचार्य डा० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी को लिखे गये पत्र

(१५२)

फीरोजाबाद
१६-१-७१

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! सैनिक में कल पढ़ा कि आप आगरे पधार रहे हैं—के. एम. मुंशी विद्यापीठ में। और इसे मैं सम्पूर्ण ब्रजमंडल के लिये एक परम सौभाग्य की बात मानता हूँ। हम लोग मिल कर ब्रजभूमि की कुछ सेवा तो कर ही सकते हैं।

पहले तो मैं यहाँ आपको बुलाने से डरता रहा, पर पुर्नविचार करने पर मैंने अपना विचार बदल दिया है—भय त्याग दिया है। बात यह है कि भगवान वेद व्यास ने जिस वैराज्य [anarchism] की कल्पना महाभारत में की थी—

'न च दण्डो न च दाण्डिकाः' वह फीरोजाबाद में क्रमशः कायम हो रहा है और वाराह भगवान तथा हनुमान के वंशज सर्वथा स्वाधीनता पूर्वक विचरण करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। आप चूंकि पुरातत्व के प्रेमी हैं इस दृश्य को देखकर अवश्य प्रफुल्लित होंगे। आगरा यहाँ से कुल जमा २८ मील दूर है और नोटों को ११ गुने तथा कपड़ों को तिगुने कराने के लिये अब मुझे

काशी तक नहीं जाना पड़ेगा। आगरे कब तक पधार रहे हैं? काशी के विक्षुब्ध वातावरण से आपको मुक्ति मिलनी ही चाहिये। इधर एक आकस्मिक दुर्घटना पर मैंने एक तुकबन्दी की है :—

बड़े बड़ेन की अकल अब चरन लगी है घास।
फोकट में डी. लिट. बने श्री बनारसीदास॥

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

अब पूरी उपाधियों के साथ मेरा नाम यह है साहित्य वाचस्पति (सम्मेलन) साहित्य वारिधि (उ० प्र० सम्मेलन) साहित्य मार्तण्ड (मथुरा) डी. लिट. (आगरा विश्व विद्यालय) बनारसीदास चतुर्वेदी—भारत साँड़ (नवीन जी द्वारा प्रदत्त)

(१५३.)

फीरोजाबाद
३-२-७१

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम! कृपा पत्र तथा दोहे में इसलाह के लिये कृतज्ञ हूँ। शान्ति निकेतन से दीनबन्धु शताब्दी के लिये निमंत्रण आया है। वे एक साथी का भी टी. ए. डी. ए. देने को तैयार हैं, पर मैं इतनी लम्बी यात्रा नहीं कर सकता। हाँ, दिल्ली जाने का विचार अवश्य है। वहाँ Nehru Museun तथा गान्धी स्मारक निधि वाले प्रदर्शिनी कर रहे हैं। मुझे शायद बोलना भी पड़े। आप शान्ति निकेतन जावें तो अत्युत्तम।

अपने छोटे से संग्रहालय का मुख्य भाग मैंने National archives को सौंप दिया। महात्मा गान्धी जी के सौ से ऊपर मूल पत्र, दीनबन्धु की असंख्य चिट्ठियाँ तथा जीवन सम्बन्धी सम्पूर्ण सामग्री, गुरुदेव के कुछ पत्र, रोमां रोलां के तीन पत्र, गणेश जी, राजेन्द्रबाबू, प्रेमचंद, बड़े दादा, पं० जवाहरलाल जी इत्यादि के पत्र मैंने दिल्ली भेज दिये हैं। राष्ट्रीय अभिलेखागार के दो व्यक्ति यहाँ पधारे थे, सो उन्हें सौंप दिये।

साहित्यिक तथा प्रवासी भारतीयों सम्बन्धी जो सामग्री यहाँ है उसे छाँट कर फिर कभी भिजवा दूँगा। मेरी चिन्ता बहुत कुछ दूर हो गई। राष्ट्रीय अभिलेखागार बहुत कम दे सकेगा—दो सौ चार सौ रुपये बस—पर पैसे का

मोह मैं कभी का छोड़ चुका हूँ। षडरिपुओं में से नं० १ से लड़ने में ही सारी जिन्दगी बीत गई, नं० ३ का नम्बर ही नहीं आया।

दीनबन्धु ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ अफ्रिका से जो पत्र-व्यवहार किया था और जिसे धरोहर के रूप में सत्यदेव विद्यालंकार ने मुझे सौंपा था, वह साल भर पहिले ही National archives को सौंप चुका था।

५७ वर्ष से एकत्रित सामग्री का यही सर्वोत्तम उपयोग हो सकता था। अब मैं निश्चिन्ताई से यात्रा कर सकता हूँ। अन्तिम यात्रा में अभी देर है—पर उसके लिये मैं जल्दी में नहीं।

'पार करना है मुझको अभी विधुरता का यह पारावार'

विनीत

बनारसीदास

श्री रामधारीसिंह जी दिनकर को लिखा गया पत्र

(१५४)

(१६६० का पत्र)

प्रिय भाई दिनकर जी,

प्रणाम ! मैं भोपाल चला गया था और वहाँ से लौटने पर आपका कृपापत्र मिला। उसे पढ़कर मुझे हार्दिक खेद हुआ। इस बाल्यावस्था में आपकी यह अनधिकार चेष्टा है कि आप बीमार पड़ें, जब कि मुझ ६८ वर्षीय युवक को भी यह अधिकार नहीं है (यद्यपि मैं पर उपदेश कुशल ही हूँ—१६० रक्तचाप को लिये हुए।)

I too got considerably indebted on account of the marriage of my niece and had to borrow money from the publishers, that I have to pay, and so I can easily understand your difficulties.

पर 'आत्मानं सततं रक्षेत्' के सिद्धान्तानुसार अब हम लोगों को अपना दृष्टिकोण सर्वथा बदल डालना चाहिये। अपने संगी साथियों तथा घर वालों को आप साफ-साफ कह दें—

"भाई साहब ! अब मुझे जीने दीजिये। अब मैं कोई भी ज़िम्मेवारी अपने पर नहीं लूंगा। आप जानें आप का काम जानें। मेरा एक ही प्रोग्राम है—Joy and laughter आनन्द, उल्लास तथा विश्राम।"

नारद भगवान ने पार्वती को जो उपदेश दिया था—"शरीर माद्यं खलु धर्म-साधनम्" उसे मैं आपके सामने दुहरा रहा हूँ, क्योंकि आपकी तपस्या पार्वती से कम नहीं है ज्यादा ही है। You have passed through a terrible struggle after the death of your father at an early age and that long continued संघर्ष has broken your health, but you can still gather all your strength and live to a good old age like my father who lived upto 93.

Cheer up my friend and change the entire outlook of your life.

You ought to change your diet as well. पूज्य Tandon ji told me to give up salt altogether to bring down the blood pressure.

You complain of lack of friends. Why not create new ones, specially among the finer sex ? Do you think that Lord Krishna had 16 thousand गोपिका's in his harem ? They were all his lady admirers. Akber Allahabadi observed—

"अकबर अगर मदखूलए गवर्मेन्ट न होता।
उसको भी आप पाते गान्धी की गोपियों में ॥"

With a handsome personality, a wonderful voice, and a tremendous imagination you can still gather a large number of गोपिका's but you have failed to do so on account of your दकियानूसी ideas.

"चाहे कोई फसल उगा ले तू जलधार बहाता चल"

Wasn't this the piece of advice you gave me on my birth-day ? Isn't it pregnant with meaning ?

Everyone knows his disease and also the medicine, but you prescribed a नुसखा for me and I have been using it day and night (even during my wet dreams !) Don't publish this news at present, please. In my स्मृति सभा, over which you must preside you can divulge this secret to the happy crowd gathered to pay homage to a प्रच्छन्न scoundrel like me !

As regards पेस्टरनाक I must disagree with you entirely. Surely this is not Pasternack's युग. You know my views. I have absolutely no sympathy with साम्यवादी शासन व्यवस्था and had

the courage to give a bit of my mind in Kremlin when I observed, "you will not rest content with Marx & Lenin, but must take up Kropotkin & Gandhi as well."

I have been misunderstood many a time and nothing pained me more than your observations, that I needn't repeat because you have already made ample amends for them. I admire the courage of Pasternack no doubt but he lacked विवेक discrimination. His sweeping remarks, his generalisations did injustice to that great country. He forgot to mention the wonderful constructive work done in Russia in the educational, literary, technological and cultural fields. He was really a great poet but in his later days kept aloof from the mass-currents.

Do you know that I reached within two miles of his residence? Though asked by my Russian friends I refused to trouble him. I had not the heart to enter into a controversy with that great poet. Now that he is gone,it will be disgraceful for me to speak ill of him. I cannot be his judge, nor shall I be a judge of yourself.

May I assure you that I have still a feeling of admiration for you—the same as I had in 1935 when I observed "यदि दिनकर जी अफ्रिका में होते तो भी मैं उनसे मिलने जाता" ?

But I must confess honestly that you have gone out of my orbit. The reason lies partly in my preoccupation with शहीद's cause, and partly in your domestic difficulties, that compell you to overwork.

I cannot give you any piece of advice—perhaps you do not stand in need of it—but I can surely tell you that creation of new friends is absolutely essential for us "Sir I consider that day lost, when I do not make a new friend" observed Dr. Johnson to Boswell.

You must cheer up my young friend and when you get bored come to 99 North-Avenue giving up 99 का फेर "निन्यानवै का फेर" as Dadda wrote in one of his poems "पड़ गया है नाथ वह निन्यानवै के फेर में". The Anarchist Govt. will liquidate our debts !

Sincerely yours,
Benarsidas Chaturvedi

श्री अक्षयकुमार जैन को लिखे गये पत्र

(१५५)

फीरोजाबाद
२-७-६८

प्रिय अक्षय जी,

'नवभारत टाइम्स' के अत्यधिक प्रचार से प्रभावित होकर ही मैं उसका उपयोग अपने मिशनरी कार्य में कर लेना चाहता हूँ। टीकमगढ़ के शहीद नारायणदास खरे के विषय में मेरी एक छोटी सी चिट्ठी आपने छाप दी थी, उससे उनकी विधवा को ४०१) रुपये की मदद मिल गई।

अभी एक बड़ी दिल्लगी हुई। पटने में सड़क पर न. भा. टाइम्स का कोई टुकड़ा पड़ा था। उसे बिस्कुट बनाने वाले एक व्यापारी ने देखा। उसमें मेरी चिट्ठी थी। उस व्यापारी ने मुझे पत्र लिखा और शहीद खरेजी की पत्नी को कुछ रुपये भी भेज दिये।

मैं तो २२-२३ वर्ष से अपना सम्पूर्ण समय तथा शक्ति शहीदों के श्राद्ध में ही लगाता रहा हूँ। यदि नव भारत टाइम्स का उपयोग प्रारम्भ से ही कर लेता तो यह काम बहुत आगे बढ़ गया होता।

श्री डी. पी. मिश्रा से आपने मेरी पेंशन के बारे में कहा था। वह २५०) रुपये की मिलने लगी है। उससे खाने पीने का काम चल जाता है, पर मेरा पोस्टेज का ही खर्च ४०) रु० से ६०) रु० मासिक हो गया है। लेखों से थोड़ा सा मिल जाता है—उसे मदद ही मानता हूँ। पैसा मैंने कभी जमा नहीं किया। हिन्दी-भवन (दिल्ली) पर मेरे ३५००)रुपये से अधिक खर्च हुए थे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

वजन १५ सेर घट गया था, अब कुछ कुछ सेहत है। भूख भी खुलने लगी है। मुझे पूर्ण विश्राम करना चाहिए पर मन नहीं लगता।

(१५६)

४ लाजपत कुंज
Civil Lines Agra
२३-६-६६

प्रिय अक्षय जी,

वन्दे! मैं साढ़े तीन महीने से—१०६ दिन से—यहाँ के अस्पताल में हूँ।

आप सब की सद्भावना से मेरा Prosttrate glands का आपरेशन सफल हुआ और धीरे-धीरे मैं स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूँ। ७८ वीं वर्ष मैं शीघ्र ही शुरू कर दूंगा।

अब मैंने Retire होने का निश्चय कर लिया है, पर ५८ वर्ष से लिखने की बद आदत जल्दी नहीं छूट सकती। कभी-कभी लिखता रहूँगा। मेरी इच्छा है कि 'नव भारत टाइम्स' में कभी-कभी लिखूं। मजदूरी चाहे आप २०) रुपये प्रति लेख ही दें। मेरे लिये प्रचार बड़ी चीज है—पैसा नहीं। आपका पत्र एक लाख पैंसठ हजार छपता है और हिन्दुस्तान में दूर-दूर तक उसका प्रचार है। वह गौहाटी, देहरादून, हैदराबाद तक पहुँचता है।

आप मजदूरी न भी दें तब भी मैं "अपनी बात" शीर्षक विभाग में कुछ छपवाते रहना पसन्द करूँगा। मुझे इस बात का डर था कि कहीं आपरेशन असफल न हो और मैंने चलने की तैयारी भी कर ली थी। बकौल महाकवि शङ्कर जी "चलिबे की तैयारी कर लै, तोस़ा बाँधि गैल कूं धरि लै। साँची मान सहेली पस्सों पीतम लैवे आवेगोरी" इत्यादि पर मेरी आशङ्का निराधार निकली। पीतम लेने नहीं आया। कुछ दिन अभी हिन्दी जगत की और भी सेवा करने का मौका मिल गया।

आप अगर 'नव भारत टाइम्स' में कभी-कभी मेरे लेख छाप दें तो फिर दूसरे छोटे-मोटे पत्रों को मैं नहीं लिखना चाहता। पर मैं आप पर वेजाँ दवाब नहीं डालूंगा। जैसा आप मुनासिब समझें करें। चिरंजीव गुपलेश को जो मदद आपने दी थी, उसे मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता।

मैं अभी पाँच दिन तक आगरे में ही रहूँगा। फिर ३० को फीरोजाबाद पहुँच जाऊँगा। बहुत मना करने पर भी यशपाल जी मेरा अभिनन्दन करना चाहते हैं। हलवाई को मिठाई खिलाना चाहते हैं। मछुए को जाल में फँसाना चाहते हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१५७)

फीरोजाबाद
२४-१२-७०

प्रिय अक्षय जी,

वन्दे ! यदि महीने में मेरा एक लेख भी आप छाप सकें तो मुझ पर बड़ी कृपा हो। मैंने सन् १९१२ में लिखना शुरू किया था और कलम घसीटते घसीटते अब ५९ वीं वर्ष चल रही है।

मैं जानता हूँ कि हिन्दी के पाठक अब तक तंग आ चुके होंगे, पर क्या किया जाय ? भाई हरिशङ्कर शर्मा एक उर्दू कविता सुनाया करते थे :—

बूढ़ों के साथ लोग कहाँ तक वफा करें।
लेकिन न मौत आये तो बूढ़े भी क्या करें॥

मेरी ७९ वीं वर्ष शीघ्र ही शुरू होने वाली है। Retire होने की बात कई बार सोच चुका हूँ, पर लिखने की असाध्य बीमारी से मुक्ति मिलना कठिन प्रतीत होता है।

आपने चिरंजीव रामगोपाल के पचासों लेख छापकर उसकी और मेरी भी जो मदद की थी, उसे मैं यावज्जीवन नहीं भूल सकता।

मध्य प्रदेश सरकार से मुझे पेंशन मिल रही है। आपने डी. पी. मिश्रा से कहा भी था। यशपाल जी ने शुल्का जी से कहा था। २५०) रुपये महीने बराबर मिल रहे हैं। यह पेंशन महाराज ओरछा ने दी थी।

बनारसीदास

(१५८)

नई दिल्ली २२

प्रिय अक्षय जी,

वन्दे ! मैं यहाँ १० ता० से हूँ, पर यह स्थान अल्लाह मियाँ के पिछवाड़े में स्थित है, जहाँ से निकलना आसान नहीं। चि० गुपलेश मुझे बस में बैठने नहीं देता और ५, ६ मील पैदल चलना ७९ वीं वर्ष में कुछ मुश्किल है। शहीदों के श्राद्ध तथा साहित्य-सेवियों की कीर्ति रक्षा में मेरे क्षुद्र जीवन के बीसियों वर्ष बीत चुके हैं और अन्तिम श्वांस तक यही पुण्य कार्य करने हैं।

आचार्य पं०पद्मसिंह जी ने लिखा था—"इस कूचे में भी मुर्दे मोहताज हैं कफन के" मैंने अपनी सीमित शक्ति ब्रजमंडल पर केन्द्रित करने का निश्चय कर लिया है। आपका सहयोग तो मिलेगा ही। यदि सम्भव हुआ तो फीरोजाबाद लौटने के पूर्व आपके दर्शन करूँगा।

विनीत
बनारसीदास

श्री गोविन्दप्रसाद केजड़ीवाल को लिखा गया पत्र

(१५९)

फीरोजाबाद
२५-७-७०

प्रिय श्री केजड़ीवाल जी,

वन्दे ! आप लोग ब्रजभूमि के बारे में विशेषाङ्क निकाल रहे हैं, यह जान कर अत्यन्त हर्ष हुआ। अगर मुझे इसकी पूर्व सूचना मिली होती तो मैं भी

कुछ लिख भेजता। शायद आपको खयाल ही नहीं रहा कि मैं भी एक क्षुद्र ब्रजवासी हूँ और मेरे जीवन के पिछले साढ़े ६ वर्ष इसी जनपद में बीते हैं। अभी जीवित और जाग्रत हूँ।

आपके इस विशेषाङ्क में बन्धुवर प्रभुदयाल जी मीतल की ५० वर्षीय ब्रजसाहित्य सेवा पर एक लेख होना ही चाहिये था, जिसे श्री डाक्टर पचौरी से लिखाया जा सकता था। बन्धुवर वृन्दावनदास जी (अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा) तो आपके पत्र को मनचाही सामग्री भेज सकते थे। ब्रजमंडल के साहित्यिक कमिश्नर तो वे ही हैं और इनका सम्पूर्ण समय दिनके ८, १० घंटे ब्रज की सर्वाङ्गीण सेवा में ही बीत रहे हैं। वे अच्छे वकील रह चुके हैं, पर सब काम छोड़कर ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण के काम में ही तन मन धन से लग गये हैं।

मेरा यह प्रस्ताव है कि आप अपनी सुविधानुसार उस ब्रजाङ्क का एक परिशिष्टाङ्क अवश्य निकालें। तब मुझे भी याद कर लें। मैं सर्वथा निस्वार्थ भाव से—बिना एक कौड़ी लिये—आपके पत्र की सेवा कर दूँगा।

मुझे जो ग्रन्थ भेंट किया गया था उसमें ब्रजभूमि का काफी विवरण है—बल्कि मेरा तो यह प्रस्ताव था कि ब्रज के विषय में एक संदर्भ-ग्रन्थ निकालकर, यदि ठीक समझें तो, मुझे अर्पित कर सकते हैं।

स्व० हरदयालुसिंह जी का एक, बढ़िया फोटो मेरे पास है। वह भी ब्रजाङ्क में जा सकता था। भाई हरिशङ्कर जी, श्रीराम जी शर्मा, पालीवाल जी, आचार्य वासुदेवशरण, बालकृष्ण शर्मा नवीन इत्यादि पर भी लिखा जाना चाहिये था। परिशिष्टाङ्क का विवरण आप भाई वृन्दावनदास जी की मदद से तैयार कर सकते हैं।

अगर अब भी कुछ जगह खाली हो तो श्री प्रभुदयाल जी मीतल, श्री वृन्दावनदास प्रभृति के चित्र तो दे ही दीजिये। धृष्ठता के लिये क्षमाप्रार्थी। श्री जोशी जी को मेरा प्रणाम कहिये।

बनारसीदास

श्री अटल बिहारी बाजपेयी को लिखा गया पत्र

(१६०)

फीरोजाबाद
३-१२-७०

प्रिय श्री बाजपेयी जी,

सादर प्रणाम ! आगरे की मीटिङ्ग में आपने कृपाकर मेरे बारे में जो प्रशंसात्मक शब्द कहे तदर्थ मैं आपका ऋणी और कृतज्ञ हूँ।

मैंने बहुत वर्ष पहले झाँसी की किसी सभा में आपके दर्शन किये थे। जब मैं दिल्ली में था तब सारा समय शहीदों के श्राद्ध को ही अर्पित करता रहा—राज्य सभा में बहुत कम जाता था।

मेरे क्षुद्र जीवन के २२ वर्ष प्रवासी भारतीयों की सेवा में बीते और पिछले २५ वर्ष शहीदों के श्राद्ध में। विवाद-ग्रस्त राजनीति से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

लाला हनुवन्त सहाय का यथोचित सम्मान करके जनसंघ ने एक अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य का पालन किया था। राष्ट्रधर्म के अङ्क भी काफी अच्छे निकले हैं। कभी-कभी निजी तौर पर मैंने जनसंघ की आलोचना भी की है, क्योंकि मेरा आध्यात्मिक झुकाव पचास वर्ष अराजकता की ओर रह चुका है, पर मैं राजनैतिक विवादों में कभी फँसा नहीं। अपनी तुच्छ शक्ति द्वारा जो थोड़ी सी सेवा बन पड़ी कर दी है अब ७६ वीं वर्ष में ज्यादा काम तो हो नहीं सकता।

जनपदीय संगठन में मेरा दृढ़ विश्वास है और स्व० वासुदेवशरण जी अग्रवाल के पृथ्वी पुत्र का मैं विनम्र प्रशंसक हूँ। अपने ब्रजमण्डल के लिये जो कुछ भी बन सकेगा करूँगा।

आप भी हमारे ब्रजमंडल के निवासी हैं, यह हम सब के लिये गौरव की बात है। मेरे मित्र बाबू वृन्दावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल, मथुरा अपना सम्पूर्ण समय और शक्ति तथा साधन ब्रज की सेवा को ही अर्पित कर रहे हैं। उन्हें भी आपका सहयोग मिलना चाहिये।

कृपाकांक्षी

बनारसीदास

श्री अमृतलाल जी चतुर्वेदी आगरा को लिखे गये पत्र

(१६१)

फीरोजाबाद

२०-४-६७

प्रिय बाबू पालागन,

उस दिन की इटौरा यात्रा मेरे क्षुद्र जीवन की एक महत्वपूर्ण तीर्थयात्रा थी। मुझे उस उद्यान को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। 'रांजाबाबू' का पूरा नाम और पता क्या है? उन्हें पद्मश्री से भी ऊँची पद्मविभूषण की पदवी मिलनी चाहिये। उन्हें मेरा नमस्ते कहिये। मैंने जो चित्र लिए हैं उन्हें दो

एक दिन में ठीक कर दूँगा। चि० आभा को तो मैंने पहलीबार ही देखा। वह सुरेन्द्र के यहाँ आई थी। खड़ी बोली बोलती है। व्रजभाषा भूल गई क्या? डाक्टर माथुर को दिखला आये। 'कोई चिन्ता की बात नहीं' ऐसा उन्होंने विश्वास दिलाया है। दो इन्जैक्शन बतलाये हैं। अभी श्री वृन्दावनदास जी को लिख रहा हूँ कि मेरी पूरी पूरी स्पीच छपवा दें। तुम्हारी कौन-कौन रचनाऐं छपी पड़ी हैं?

विनीत
बनारसीदास

(१६२)

१-१०-६८

प्रिय भाई अमृतलाल, पालागन

कल राज्यपाल महोदय का पत्र मिला है :—

My dear Shri Chaturvedi,

I received your letter of the 21 st instant regarding the orchard in district Agra. I am looking into the mater. With kind regards.

yours Sincerely
C- Gopala Reddi

अब यह ज़रूरी है कि श्री विद्याशंकर जी सैनिक में एक नोट उस उद्यान के बारे में लिखें। राजाबाबू को भी पत्र लिख रहा हूँ। वह लेख मैंने आठ दूसरे पत्रों को भी भेज दिया है। यदि ज़रूरी समझा जाय तो इस कार्य के लिए सेठ अचलसिंह, जस्पतराय जी, रावत जी प्रभृति के हस्ताक्षर भी कराये जा सकते हैं। बगीची को हर हालत में बचाना है। अमर उजाला को भी लिख रहा हूँ। हिन्दी तथा अंग्रेजी में एक ट्रैक्ट बगीची के बारे में छप जाना चाहिए।

विनीत
बनारसीदास

(१६३)

फीरोजाबाद
३-६-७०

प्रिय बाबू, पालागन।

होलीपुरा की यात्रा के लिये मैंने १० सितम्बर की तारीख रखने को भाई शम्भुनाथ जी को लिखा है। यहाँ से बालकृष्ण जी ७ या ७।। बजे अपनी

कार में ले चलेंगे। निश्चित तिथि की खबर तुम्हें शम्भुनाथ जी से मिल जायगी। मैंने कल उन्हें लिख भी दिया है। आज फिर उन्हें स्मरण करा दूँगा। लहरी जी यहाँ से साथ में होंगे।

मैं वहाँ दीनबन्धु सी. एफ. ऐन्ड्रयूज पर कुछ बोलना चाहता हूँ। उनका चित्र तो स्व० भाई शंकरलाल जी ने तैयार करा ही लिया था। २४ ता० की शाम को श्री वालकृष्ण जी तथा कोटला कालेज के प्रिंसीपल मथुरा श्री वृन्दावनदास जी की वर्षगाँठ पर बधाई देने गये थे उनके घर पर—पर वहाँ वे मिले नहीं। धर्मशाला में भी तलाश किया। राजाबाबू बम्बई से लौटे या नहीं ? २३ अगस्त के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में मैंने उनके बाग का जिक्र किया है।

बनारसीदास

(१६४)

फीरोजाबाद
१६-१२-७०

प्रिय बाबू, पालागन

आजकल उषाकालीन चायामृत पान के बाद किसी कवि की प्रतिभा इस रूप में जाग्रत हुई है।

बड़े बड़िन की अकल अब लखहु चरि गई घास।
फोकट में डी. लिट् बने श्री बनारसीदास॥

इसमें इसलाह दो।

श्री सिंघल जी का पूरा-पूरा नाम और पता क्या है ? उनकी उदारता से मैं चकित रह गया। उनके दिये पाँच सौ रुपयों का उपयोग करूँगा और पैसे पैसे का हिसाब उनको भेज दूंगा। ५ दिसम्बर और ८ दिसम्बर दो दिन मेरी नींद हराम हुई। उसी के दुष्परिणाम स्वरूप अब ज़ोरों का जुकाम है।

बनारसीदास

श्री मधुसूदन जी चतुर्वेदी हैदराबाद को लिखे गये पत्र

(१६५)

फीरोजाबाद
१०-८-६७

प्रिय भाई मधुसूदन जी,

पालागन। आपकी भेजी हुई तीनों किताबें अभी मिलीं। उनके लिए बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। उन्हें मैंने सर-सरी निगाह से ही देखा है, समय मिलने

पर ध्यान-पूर्वक पढ़ने का विचार है। उसमें देर लग सकती है, क्योंकि मैं केवल एक आँख पर ही जोर देकर लिखता-पढ़ता हूँ।

स्व० ओंकारनाथ जी पाण्डेय के चित्र का दर्शन कर मन में अनेक भाव जाग्रत हुए। पाण्डेय जी को मैंने स्वर्गीय विस्मिल की बहिन के दर्शन करने भेजा था और उन्होंने उस बहन को अपने पास से कुछ भेंट की थी। उनका अन्तिम पत्र झांसी से आया था। उम्र भी उनकी कुछ ऐसी ज्यादा नहीं थी। उनकी स्मृति को पुस्तक समर्पित करके आपने उचित कार्य किया है।

भाई रूपनारायण जी मेरे अनुज रामनारायण के साथी हैं। मैंने सुना है कि वे अस्वस्थ हैं। कहाँ पर हैं? 'मेमना और बालिका' अच्छा अनुवाद है। बच्चों की किसी पुस्तिका में उद्धृत करने योग्य भी है। भाई रूपनारायण जी का उर्दू पर भी अधिकार है, यह बात मुझे ज्ञात नहीं थी। उनके दर्शन मुझे नैनीताल में हुए थे।

"The Quiet Life" पोप की रचना है, यह मुझे मालूम न था। 'वृन्दावन' फ़ुर्संत मिलने पर पढ़ूंगा। कौशलेन्द्रवाली चीज़ अच्छी है, 'दीपक' भी बढ़िया है और 'फूल' सुन्दर रचना है। "तरवार की धार पै धावनौ है," अच्छी पूर्ति है। इतनी दूर रहते हुए भी आप ब्रजभाषा को नहीं भूले, यह आश्चर्य तथा हर्ष की बात है। इस शैली पर आपका अच्छा अधिकार है। आशा है कि आप सकुशल हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१६६)

फीरोजाबाद
२३-४-६८

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पालागन,

आपके पत्र में अनेक बातें अत्यन्त उत्साहप्रद हैं। दूसरों की आलोचना करने के बजाय आप रचनात्मक कार्य में निरन्तर संलग्न हैं और अपने पथ पर लगातार अग्रसर होते जाते हैं, यह बात मेरे लिए भी उत्साह व प्रेरणा देने वाली है।

इधर स. ना. कविरत्न की अर्द्धशताब्दी के लिये मुझे आगरा जाना पड़ा था। कृपया श्री वृन्दावनदास बी. ए. एल.एल बी. अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मण्डल मथुरा को एक कार्ड लिखकर उसका ब्यौरा उनसे मँगा लीजिये। वे बड़े कर्मठ व्यक्ति हैं। उनसे आपका सुदृढ़ सम्पर्क होना ही चाहिए।

मेरा स्वास्थ्य २, ३ महिने से खराब चल रहा है। वज़न बहुत कम हो गया है। कई बीमारियां हैं। खैर यह सब तो इस उम्र में ७६ वीं वर्ष में स्वाभाविक ही हैं। चिन्ता केवल यही है कि जो सामग्री ५० वर्ष में मैंने इकट्ठी की है, उसका उपयोग कैसे होगा। शिशु जी के ग्रन्थों का उद्धार होना चाहिए। 'काकली' अवश्य छपे। फीरोजाबाद जरूर पधारिये। मई का महीना तो काफी गरम होगा। अब ज्यादा लिखना-पढ़ना कठिन है।

विनीत

बनारसीदास

(१६७)

फीरोजाबाद

२४-११-६८

प्रिय, मधुसूदन जी, पालागन,

सवेरे पौने चार बजे का उठा हूँ। चाय बनाकर पी ली है और कुछ स्वाध्याय भी कर लिया है। अब पुरानी बद आदत के अनुसार पत्र-व्यवहार के व्यसन का सेवन कर रहा हूँ। ऐसे अवसर पर मैं अपने मित्रों का स्मरण करता हूँ। उन्हें अपनी स्पष्ट सम्मति लिखता हूँ।

१. आप भविष्य में किताबों के चुनाव के बारे में अधिक सावधान रहें। कुछ किताबें बहुत साधारण कोटि की आपने छाप दी हैं।

२. रामधन को अब कुछ भी भेजने की जरूरत नहीं। उसके ग्रन्थ को आपने छाप दिया, यही बड़ी भारी मदद है। और आपके पास इतने साधन भी तो नहीं कि ऐसे अनाथों का पालन-पोषण करते फिरें। मैं तो वर्षों से रामधन की मदद करता रहा हूँ।

३. 'काकली' का प्रकाशन नितान्त आवश्यक है।

४. 'शिशुजी' के सुपुत्र कल यहाँ आने वाले थे, पर आये नहीं। मैनपुरी के श्री लाखनसिंह जी भदौरिया ने मुझे बताया कि 'शिशुजी' के सुपुत्र को उनका ६० हजार रुपया अब मिल गया है। मुझे आश्चर्य हुआ। अगर यह बात है तो सन्तोष जनक है। अब वे स्वयं शिशुजी का साहित्यिक श्राद्ध कर सकते हैं। शिशुजी सर्वोत्तम रचनाओं का सार भाग एक जिल्द में छप जाय तो वह best impression create कर सकता है। आप उन्हें पत्र लिखें।

५. क्या आप एक हज़ार से अधिक के संस्करण छाप रहे हैं ? तब फिर इतनी किताबें आपके यहाँ पड़ी क्यों रह जाती हैं ?

६. स्थायी ग्राहक महीने में कितने बना लेते हैं ? संरक्षक भी बनाते रहिए। यह तो Full time job है।

७. द्विवेदी जी के पत्रों की नकल तो पहले करा ली थी, पर उसे revise नहीं कर पा रहा। अकेले-अकेले कहाँ तक काम करूँ ? ७८ वीं वर्ष २४ दिसम्बर को शुरू करूँगा।

८. पटे के संस्मरण मैंने अपने अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए लिखे हैं। भेजूंगा। पढ़ लीजिये। आप भी पटे के बारे में कुछ लिख सकें तो लिखें।

विनीत
बनारसीदास

(१६८)

सरोजिनी नायडू अस्पताल
आगरा
१५-६-६६

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पालागन,

मैं ता० ७ से यहाँ आकर दाखिल हो गया हूँ। डाक्टरी जाँच हो रही है। आपरेशन शायद करना ही पड़ेगा। मैं चिन्तित नहीं। जो होगा ठीक ही होगा।

जल्दी से मुझे यहाँ आना पड़ा और पूज्य द्विवेदी जी के पत्रों का रजिस्टर तलाश नहीं कर सका। रक्खा तो वह ठिकानेसिर है, पर उसे ढूंढ़ निकालने में कुछ वक्त लगेगा। अपने भानजे डा० मिथिलेशचन्द्र चतुर्वेदी (उर्फ बिल्लू चौबे) को लिख रहा हूँ कि वह उन पत्रों को खोज निकाले। पर उन्हें मूल पत्रों से मिलाना होगा, ताकि कोई गलती न रह जावे। द्विवेदी जी की स्वर्गीय आत्मा भूलों से पीड़ित न होनी चाहिए। जितना कि आपकी ग्रन्थमाला के विषय में विचार करता हूँ उतनी ही श्रद्धा मेरे हृदय में आपकी लगन तथा कार्यशीलता के प्रति बढ़ती जाती है।

सचमुच आपने करिश्मा कर दिखाया है। अपनी ग्रन्थमाला के विषय में कुछ नोट भेजिये। मुख्य-मुख्य- पुस्तकों के नाम विषय इत्यादि, ताकि उस पर एक प्रशंसात्मक लेख लिखा जाये। अभी कुछ दिन और भी यहाँ रहना है। आपरेशन शायद २० दिन बाद होगा। पानी बरस जाय तो कष्ट कम हो।

विनीत
बनारसीदास

(१६९)

५-२-७१

प्रिय भाई मधुसूदन जी, पालागन,

पार्सल कल छुड़ाली । मेरा सुझाव है कि भावी या Prospective ग्राहकों को ऐसे वहुमूल्य ग्रन्थ आप भेंट न करें । यह तो सर्वथा अव्यावहारिक है । मसलन विचारे–जी तो ग्राहक बनने भी स्थिति में हैं ही नहीं । डी. ए. वी. कालेज से उनके प्रोवीडैन्ट फंड का रुपया भी नहीं मिला । नौकरी तो छूट ही चुकी है ।

हाँ श्री बालकृष्ण गुप्त पैसा दे सकते हैं । कूर्मांचल केसरी की प्रतियाँ श्री शुकदेव पाण्डे को भेज दी होंगी । कितनी प्रतियाँ भेजीं ? श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी को न भेजी हो तो मैं भेज दूँ । श्रीमती विद्याधरी जौहरी को, सम्पादक 'अमर उजाला' बरेली को भी भेजिये । बरेली संस्करण पहाड़ी स्थानों में पहुँचता है ।

'सैनिक' वाले भी आलोचना कर देंगे । वैसे आजकल चुनाव के दिनों में स्थान मिलना कठिन ही है । निस्संदेह आपने करिश्मा कर दिखाया है । अपना जीवनवृत्त किसी से लिखवा कर इस ग्रन्थमाला के परिचय के साथ भेज दें तो मैं एक Sketch तैयार कर सकता हूँ प्रचारार्थ अपना चित्र भी भेजिए ।

विनीत
बनारसीदास

श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

(१७०)

फीरोजाबाद
६-६-६८

प्रिय भाई युगल किशोर जी, पालागन

जो भी व्यक्ति क्रान्तिकारी कदम उठाते हैं पहिले उनके बारे में गलत फहमियाँ उत्पन्न होती ही हैं, क्योंकि दकियानूसी आदमी खुद तो आगे बढ़ नहीं सकते, दूसरे बढ़ने वालों की टाँग खींच कर पीछे लाने की कोशिश करते हैं । पर इन गलत फहमियों की बिल्कुल भी पर्वाह न करनी चाहिये ।

पूर्व अफ्रीका से लौटने के बाद मैं जाति से बहिष्कृत कर दिया गया था। जनेऊ फिर कराना पड़ा और गंगा स्नान के लिए प्रयाग भी जाना पड़ा। यह बात शायद १६२५ की है। अब उस घटना पर स्वयं मुझे हँसी आती है। मैं शाकाहारी भोजन, जो शुद्धता के साथ बनाया गया हो, चाहे जिस भले मानस के यहाँ कर सकता हूँ। कुछ वर्ष पहिले यह भी एक भयंकर अपराध माना जाता था। पुस्तकों का प्रभाव तो पड़ता ही है पर कार्य का जो प्रभाव पड़ता है वह स्थायी होता है।

आपने और भाई गिरीश जी ने जो कदम उठाया है, वह भावी समाज का पथ प्रदर्शक बनेगा। बूढ़ी दादियाँ चाहे कुछ भी बकती रहें उसकी पर्वाह हरगिज़ न करनी चाहिये। They say, what they say, let them say— ये तीन वाक्य लिख कर अपने स्वाध्याय कक्ष में टाँग देने चाहिये। वर्नार्ड शा का यही कथन है।*

विनीत
बनारसीदास

(१७१)

फीरोजाबाद
५-१०-६६

प्रियवर, पालागन।

मैं ता० २६ को घर लौट आया हूँ। यद्यपि कमज़ोरी काफी है, फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं है। ३, ४ महीने विश्राम करना होगा। reprints यहीं भेज सकते हैं। ७८ वीं वर्ष शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायगी और मैं retire हो जाऊँगा। नीलकण्ठ गोर्की नामक ट्रैक्ट मैंने हैदराबाद से छपाया है। मूल्य ८० पैसे है।

मैंने अपना यह विचार सार्वजनिक तौर पर प्रकट भी कर दिया है कि अब लैनिन के तौर तरीकों से ही इस मुल्क का उद्धार होगा। वैसे मेरे

---

* **चतुर्वेदी समुदाय में कड़ुवे, मीठे के दो भेद सदियों से चले आ रहे थे और उनमें रोटी बेटी का कोई सम्बन्ध नहीं होता था। मेरे द्वितीय पुत्र के शुभ विवाह में दोनों समुदाय वालों ने इस पुरानी रूढ़ि को तोड़ा था अतः चतुर्वेदी जी ने हर्ष प्रगट करते हुए उक्त कार्य की सराहना की है। इसमें उन्होंने अपने प्रति किये गये व्यवहार का भी उल्लेख किया है।**

—युगलकिशोर चतुर्वेदी

विचारों का कोई महत्व नहीं पर अपनी ईमानदारी की राय ज़ाहिर कर देनी चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

श्री प्रभुदयाल जी मीतल को लिखा गया पत्र

(१७२)

फीरोजाबाद
१४-७-७०

प्रिय मीतल जी,

वन्दे ! कार्ड अभी मिला। मैंने तीसरी प्रति रजिस्ट्री द्वारा भेजने के लिये तलाश कर ली थी। यह अच्छा हुआ कि दोनों प्रतियाँ मिल गईं। मुझे याद पड़ता है कि आप मेरे अभिनन्दन उत्सव पर दिल्ली पधारे थे। चूंकि उस समय मैं अत्यन्त व्यस्त था, इसलिये ध्यान नहीं दे सका। यदि मेरा खयाल ठीक है तो इस बात को भी जोड़ देना मुनासिब समझता हूँ।

मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ में अग्रवालों का जबरदस्त हाथ रहा—६॥ हजार में ४ हजार अग्रवालों ने ही दिये। यह आश्चर्य की बात है, पर है सच। प्राचीनकाल में (और शायद अब भी) चौबे लोग अपने यजमानों के पास साल में एक बार चक्कर लगाकर अपना टैक्स वसूल करते थे। इस प्रथा को मैं भी अपने शेष जीवन में चरितार्थ करना चाहता हूँ। इसलिये आपको तथा भाई वृन्दावनदास जी को अग्रिम सूचना भेज रहा हूँ। बिहारी के जो आत्म-चरितात्मक दोहे इन्दौर में मुझे मिले थे उनमें भी वर्षासन वसूल करने की बात लिखी गई थी। हाँ, अपनी दक्षिणा के रूप में मैं कोई छपी छपाई पुस्तिका [ब्रजसाहित्य सम्बन्धी कोई ट्रेक्ट] लेना पसन्द करूँगा। मसलन् जब आचार्य वासुदेवशरण के पत्रों का संग्रह छप जायेगा, तब मैं मथुरा आने की सोचूंगा। आप लोगों की सद्भावना से अभी मैं कम से कम ५, ७ वर्ष और भी स्वस्थ और सजीव रहना चाहता हूँ—यद्यपि यह आसान नहीं। किसी चौबे से यह आशा करना कि वह जिह्वा पर संयम कर सकेगा, निरर्थक ही होगा।

आप जुगलेश जी का पता निर्मल जी [सम्मेलन] से लगवाइये। रीवाँ के स्व० सरदार नर्मदाप्रसादसिंह के कुटुम्बियों को कुछ मालूम हो। उनका काव्यसंग्रह सरदार नर्मदाप्रसादसिंह को ही भेंट हुआ था। आधुनिक ब्रजभाषा कवियों पर एक सचित्र लेख कृपया लिखिये। चित्र तो सभी मँगाकर रख लीजिये। बन्धुवर

पचौरी जी का शोध ग्रन्थ कब तक छपेगा ? मैंने रत्नाकर जी पर दो लेख लिखे थे। वे भी ट्रेक्टाकार में छप सकते हैं।

मैं चाहता था कि सर्वश्री सत्येन्द्र, कृष्णदत्त, वृन्दावनदास और राजेश्वर से परामर्श लेकर अपने लेख में एक दो पृष्ठ आपकी साहित्य साधना पर जोड़ देता पर समय नहीं मिला। चीज़ अधूरी रह गई।

विनीत
बनारसीदास

डा० सत्येन्द्र को लिखे गये पत्र

(१७३)

फीरोजाबाद
२९-८-७०

प्रिय सत्येन्द्र जी,

पत्र मिला ! आप नहीं पहुँच सके, आपकी चर्चा बराबर रही। मैंने ज़िक्र किया, जगदीश जी ने भी उल्लेख किया और आपकी गैरहाज़िरी सभी को अखरी। मेरे लेख में आपका चित्र फिट बैठ गया है। आपने लेख देखा ही होगा।

आपके भांडैतू साहब की भी, जो विलायत चले गये हैं, मैंने चर्चा की थी। उनसे मैं मिलना भी चाहता था, पर श्री गणेश चौबे ने मना कर दिया। "वे विज्ञापन नहीं चाहते" यह तर्क था। अन्तर्जनपदीय परिषद् को पुनर्जीवित करना ज़रूरी है। मुश्किल तो यही है कि भाई वृन्दावनदास जी की तरह के कार्यकर्ता अन्य जनपदों में दुर्लभ हैं—स्वयं ब्रज में भी वे अद्वितीय हैं। फिर भी जो कुछ बन सके शीघ्र ही कर देना चाहिये। आप वाला ग्रन्थ जल्दी ही छप जाय तो उससे भी काम में मदद मिलेगी, क्योंकि लोक-वार्ता के क्षेत्र में आपका Contribution महत्वपूर्ण रहा है। "जो काम शीघ्र नहीं किये जाते, काल-भगवान उनका रस पी लेते हैं" यह पुरानी उक्ति है :—"अक्षिप्रस्य कार्यमाणस्य कालो पिवति तद्रस:" क्या मथुरा में कोई प्रबन्ध उस ग्रन्थ के छपाने का नहीं हो सकता।

आपके दार्शनिक दृष्टि कोण से सहमत होते हुए भी, मैं यह उचित समझता हूँ कि वह ग्रन्थ शीघ्रातिशीघ्र छपे। उसमें अपने उद्देश्य की पूर्ति में मदद मिलेगी।

मैं अपना भाषण लिखकर ले गया था। पर वह देर में छपेगा। मथुरा के प्रतिष्ठित साहित्यिक उपस्थित थे।

"नव भारत टाइम्स" को कभी-कभी अपनी बात लिख भेजा कीजिये। उसका प्रचार अपने जनपद में काफी है। वैसे सैनिक तथा 'अमर उजाला' भी खूब चलते हैं। लम्बे लेख न सही, छोटे-छोटे पत्र भी लाभदायक होंगे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

आपकी ग्राम-रचना वाली योजना, अब भी सामयिक है, पर उसे कार्य रूप में परिणत करना आसान नहीं। आप जब कभी अपनी ब्रजभूमि को स्थायी निवास के लिये लौटें तो किसी न किसी ग्राम में उसका प्रयोग करें। मुश्किल यही है कि समानशील तथा परस्पर-पूरक Complimentary व्यक्तियों का हमारे यहाँ प्राय: अभाव है।

इसके सिवाय छोटे-छोटे फालतू कार्यों में हमारे वक्त की बर्बादी हो जाती है। अग्रवाल जी ने 'तृणावर्त' पर एक अच्छा पत्र मुझे लिखा था। कृपया पढ़ लीजिये।

मेरा व्यावहारिक सुझाव यही है कि अग्रवाल जी के सवा सौ सर्वोत्तम पत्र ब्रजभारती के एक विशेषाङ्क में छाप दिये जावें। आप भाई वृन्दावनदास जी को यही बात लिख दें।

'Best is the enemy of good' यह पुरानी कहावत है। सर्वोत्तम काम करने की धुन में हम उत्तम कार्य भी नहीं कर पाते। क्या कोई प्रकाशक स. ना. कविरत्न के ग्रन्थों को नहीं छाप सकता ?

(१७४)

फीरोजाबाद
६-६-७०

प्रिय सत्येन्द्र जी,

वन्दे ! कृपापत्र अभी मिला। सूर पंचशती-योजना निस्सन्देह बड़ी व्यापक है और उसके एक अंश को भी कार्य रूप में परिणत किया जा सके तो बड़ी बात है। यह मैं इसलिये कहता हूँ कि अपने यहाँ कार्यकर्ताओं का अभाव है और साधन सम्पन्न व्यक्तियों का सहयोग हम ले नहीं पाते। श्री दुबे जी का Transfer मुरादाबाद को हो गया और अकेले भाई वृन्दावनदास जी क्या-क्या

कर सकते हैं। रुनकुते में कुछ हो जाय तो हो जाय। कोई रूसी लड़की सूर का विशेष अध्ययन कर रही थी। लंदन में भी एकाध विद्यार्थी रुचि रख सकते हैं। यदि हिन्दी भाषा भाषी प्रदेशों की सरकारें कुछ कर सकतीं तो काम आगे बढ़ता, पर वे सत्तात्मक राजनीति के पंजे में कसी हुई हैं। इन कारणों से हमें अधिक आशा तो नहीं रखनी चाहिये। फिर भी अपने कर्तव्य का पालन हम करते चलें।

मेरा अनुमान है कि ब्रजभूमि का कोई प्रकाशक आपके अभिनन्दन ग्रन्थ को छपा देगा, यदि उसे कुछ Advance कर दिया जाय। बाबा पृथ्वीसिंह आज़ाद की आत्म-कथा शिवलाल अग्रवाल ने चार हजार रुपये एडवाँस में उधार लेकर छाप दी है और वे रुपये उन्होंने लौटा भी दिये हैं।

नवभारत टाइम्स १ लाख ६७ हज़ार छपता है। उसमें अपनी बात संक्षेप में लिख देने से छप सकती है, पर उसकी मजदूरी नहीं मिलती। ब्रज जनपद में उसका पर्याप्त प्रचार है। वैसे सैनिक तथा अमर उजाला भी अपना साथ देंगे।

श्री हरिहरनाथ अग्रवाल (Ram Prasad and Sons) को मैंने कविरत्न जी के ग्रन्थों के बारे में लिखा है। मालती माधव का प्रथम संस्करण स्वर्गीय रामप्रसाद जी ने ही छपाया था। आप भी उन्हें लिखें।

कल मैं होलीपुरा जा रहा हूँ। वहाँ के कालेज में कुछ बोलना है। ११ ता० की शाम तक लौट आऊँगा। लोहे की कलम से लिखने से तीन प्रतियाँ हो जाती है। Kores का २०१४ नं० का कारबन कारगर होता है।

विनीत

बनारसीदास

(१७५)

फीरोजाबाद
६-११-७०

प्रिय भाई सत्येन्द्र जी,

यह तो आप जानते ही हैं कि रावण चतुर्वेदी ब्राह्मण था [इसलिये लङ्का पर चौबों का अधिकार होना चाहिये। इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न को यहाँ नहीं उठाना चाहता।] रावण ने एक बात बड़े पते की कही थी—"शुभ काम में देरी न करें और अशुभ काम को पोस्टपोन करें" फिर आप स्व० आचार्य बासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों को तलाश कराने में इतना विलम्ब क्यों कर

रहे हैं ? वह महत्वपूर्ण संग्रह आपके पास के पत्रों को शामिल किये बिना छप जाय और भूमिका में आपके प्रमाद का उल्लेख हो, यह बात कैसे गवारा की जा सकती है ? कृपया तुरन्त ही उन पत्रों की खोज कराइये ।

विश्व विद्यालय के लिये पुराने पत्रों की फाइलों के मामले में क्या हुआ ? 'विशाल भारत' की फाइलें तो मैं अपने पास रखना ही चाहता हूँ— मधुकर की भी—शेष को बेच सकता हूँ । पर वे अव्यवस्थित है और पूरी होंगी भी नहीं । आपका कोई आदमी उन्हें देख ले और फिर यदि आप चाहें तो उन्हें विश्व विद्यालय के लिये ले सकते हैं । मैं यह नहीं चाहता कि मेरा खयाल करके ही आप खरीदें ।

मेरा अन्तर्जनपदीय विषयक वक्तव्य ब्रजभारती में आ रहा है । ८ ता० को आगरे से वृन्दावनदास जी का स्वागत हुआ था, उस अवसर पर अमर उजाला में मेरा एक लेख छप गया है । उसे भी कृपया पढ़ लीलिये ।

विनीत
बनारसीदास

श्री वेंकटलाल ओझा को लिखे गये पत्र

(१७६)

टीकमगढ़, जिला झाँसी
२०-१-४०

प्रिय ओझा जी,

वन्दे ! १७ का कृपापत्र मिला । कृतज्ञ हूँ । पत्र प्रदर्शनी के संयोजक का भाषण भी मिल गया । धन्यवाद ! भाषण में अनेक अशुद्धियाँ रह गई हैं । ऐसा क्यों ? स्वर्गीय बालकृष्ण भट्ट का जिक्र जरूर होना चाहिए था । स्वर्गीय गणेश शंकर जी विद्यार्थी का आपने नाम नहीं लिया । यह तो जबरदस्त भूल हुई । आप 'उदन्त मार्तण्ड' के बाद एकदम 'बनारस अखबार' पर पहुँच गए हैं । बीच में मेरा ख्याल है कि कई अन्य पत्र भी निकले 'विशाल भारत' की पुरानी फाइल में उनका उल्लेख है ।

भाई श्रीरामजी की योजना मुझे व्यावहारिक नहीं जँचती । जैसा कि मैंने अपने लेख में लिखा था लेखकों की भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ हैं, और उन्हें एक सूत्र में बाँधना सम्भव नहीं । एक सहस्र सदस्यों का बनाना क्या आसान काम है ? और फिर रुपया उगाहना कैसे हो सकेगा ? आदर्शों की एकता ही बन्धुत्व स्थापित कर सकती है । इसलिये सर्वोत्तम उपाय यही है कि समानशील

लेखकों के ग्रुप बनें और वे एक दूसरे की सहायता करने तथा साधन सम्पन्न व्यक्तियों से मदद दिलवाने का उद्योग करें। इस तरह तो कुछ काम हो सकता है। मुख्य प्रश्न इस समय यह है कि लेखकों की दशा के विषय में सर्वसाधारण को ज्ञान कराया जाय और स्वयं लेखकों को शोषण से बचाया जाय।

'विशाल भारत' ने इस बारे में ८ लेख छापें हैं। इन में ६ लेखों के लिये पैसा देना पड़ा है। श्रीरामजी तथा मैं वि. भा. से एक पैसा भी नहीं लेते। साधारण पाठकों की तबियत एक ही विषय पर अनेक लेख पढ़कर ऊबने लगती है, फिर भी मैंने इस खतरे में पत्र को डाल कर यथाशक्ति सेवा करने की कोशिश की है। सभी काम एक आदमी या एक पत्र पर नहीं छोड़े जा सकते। आप तथा अन्य बन्धुओं का कर्त्तव्य है कि वे इस विषय में आगे बढ़कर कुछ कर दिखलावें। व्यक्तिगत रूप से मैं भी कुछ करता ही रहता हूँ।

मौलवी अब्दुलहक़ साहब के दर्शन करने कभी हैदराबाद आने का विचार था। वैसे मैं उनके साथ पानीपत की तीर्थ यात्रा, हाली शताब्दी के के अवसर पर, कर चुका हूँ और अभी दिल्ली में मैंने उनके दर्शन किये भी थे। हिन्दी में उनके जोड़ का कोई आदमी मुझे तो दीखता नहीं। उनके सभी विचारों से मैं सहमत नहीं, पर उनकी लगन का कायल अवश्य हूँ।

हैदराबाद की हिन्दी सम्बन्धी साहित्यिक जाग्रति के विषय में यदि आप मुझे कुछ लिख भेजें तो कृतज्ञ होऊँगा। वहाँ हिन्दी के लिये काम करने वाले कौन-कौन हैं ? उनके नाम तथा पते भी जानना चाहता हूँ। कभी अवकाश मिलने पर उधर आने की इच्छा है। पर आऊँगा ऐसे मौके पर जब मौलवी साहब भी हों।

मेरे एक भाई श्रीयुत बनवारीलाल जी चतुर्वेदी इटावा वाले हैदराबाद राज्य में एकसाइज विभाग में हैं। कार्याधिक्य के कारण पत्र कम ही लिख पाता हूँ। समय पर उत्तर न दे सकूँ तो क्षमा कीजिये। मैं इस वर्ष प्रायः यात्रा पर ही रहना चाहता हूँ।

क्या 'विशाल भारत' हैदराबाद में कहीं जाता है ? अलग पैकट से अपने लेख की प्रतियाँ भेजता हूँ। कृपया उन्हें सहयोगी बंधुओं में बाँट दीजिए।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास

(१७७)

टीकमगढ़, जिला झांसी
२०-५-४२

प्रियवर,

वन्दे ! आपका १७ ता० का कृपापत्र, जो ट्रेन से भेजा था, मिला। आप इधर नहीं पधार सके इसका मुझे खेद है। खैर, कोई बात नहीं। जब भविष्य में उत्तर भारत की ओर आवें टीकमगढ़ का भी प्रोग्राम रखें।

हैदराबाद की हिन्दी सम्बन्धी नीति मेरी समझ में नहीं आती। कृपया उसके संबन्ध में पूरा-पूरा वृत्तान्त मुझे भेजिये। बहतर यह होगा कि आप, श्रद्धेय टंडन जी, श्री सम्पूर्णानन्द जी, और भिक्षु आनन्द को न्यौता दीजिए। इन लोगों के मार्गव्यय का प्रबंध तो आप लोग कर ही देंगे। मेरे जैसा साधारण कार्यकर्ता आपके किस काम का ? हाँ श्रीराम जी का उपयोग हो सकता है।

भाई बनवारीलाल जी श्रीयुत जगमोहन जी के घर के ही हैं—शायद उनके चाचा हैं। आप कभी उनसे जरूर मिलिये। अबकी बार मैंने इटावे में उनके दर्शन बहुत वर्ष याद किये थे।

हैदराबाद आने की अभिलाषा तो अवश्य है पर मैं जल्दी में नहीं हूँ। यह सब काल लब्धि का मामला है। रेल की यात्रा में मुझे बहुत कष्ट हो जाता है, इसलिये यथासम्भव उससे दूर ही रहता हूँ।

मेरा उद्देश्य अब सर्वसाधारण के लिए छोटे छोटे ट्रेक्ट छपाना है। 'मधुकर' के नवें अंक का सम्पादकीय आप पढ़ लीजिये। उसमें आपको मेरी वर्तमान मनोवृत्ति का पता चल जायगा। ८, ९, १० तीन अंक भिजवा रहा हूँ। साधना मंदिर के पम्फलेट सस्ता साहित्य मंडल, कनाट सरकस, नई दिल्ली से मंगा लीजिये। प्रत्येक का दाम एक एक आना है। शायद आपको पसंद आ जावें।

श्री मौलवी अब्दुलहक़ साहब से अभी दिल्ली में मिला था, अबोहर से लौटने के बाद। उनका पत्र तो अनेक बार बहकी बहकी सी बातें कहता है। मुझे तो वह इंफिरीयारीटी कम्पलेक्स का मामला दीखता है। उर्दू वालों को शायद यह भ्रम हो गया है कि उर्दू बहुत पिछड़ी हुई है और हिन्दी का क्षेत्र बहुत बढ़ रहा है। हैदराबाद स्टेट की नीति का दुष्परिणाम इधर उत्तर

भारत में अवश्य पड़ेगा। यहाँ पर उर्दू विरोधी वायुमंडल तैयार हो जायगा और इससे उर्दू वालों को घाटा ही रहेगा। मैं तो हिन्दी उर्दू में कोई भेद नहीं करता, उर्दू को हिन्दी का ही एक रूप मानता हूँ, बल्कि मेरा तो यह मत है कि प्रत्येक हिन्दी लेखक के लिए उर्दू पढ़ना अनिवार्य हो जाना चाहिये। उर्दू वाले यदि हिन्दी न पढ़ें तो वे घाटे में रहेंगे। पर जहाँ कहीं भी अन्याय होगा, चाहे वह उर्दू पर हो या हिन्दी पर उसकी प्रतिक्रिया अवश्य होगी। इस अभागे देश में वैसे ही कौन कम झगड़े हैं, जो नये झगड़े खड़े किये जाते हैं। हिन्दी सम्मेलन पर रोक लगा कर हैदराबाद रियासत ने उर्दू की ही जड़ पर कुठाराघात किया है। आप सम्पूर्ण मसाला मुझे भेजिये। तमाम फेक्टस एंड फिगर्स चाहिये। कोई बात अत्युक्तिमय न होनी चाहिये। 'माडर्न रिव्यू' में मैं लिखना चाहता हूँ। आशा है कि आप सकुशल है।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास

(१७८)

टीकमगढ़ जिला झांसी
२६-९-४२

प्रियवर,

वन्दे ! आपका कृपापत्र मिला। यदि आप मुझे निश्चित तिथि लिख सकें तो ठीक हो। वैसे मैं कहीं जाने वाला नहीं, पर यदि सम्भव हुआ तो १, २ अक्टूबर को ३ दिन के लिये यहीं के एक स्थल जतारे जाने का विचार है, निश्चय नहीं। आप कब तक पधारेंगे ?

ललितपुर से सबेरे ९, ९॥ बजे मोटर मिलती है। कुण्डेश्वर टीकमगढ़ से पहले ही नदी तट पर है। मैं बड़े बगीचे में रहता हूँ, मोटर बगीचे के निकट सड़क पर खड़ी कर लीजिये। यहाँ मोटर करीब १२ बजे आ जाती है।

हमारे सहकारी सम्पादक अब तक बीमार ही हैं। एक मसहरी जरूर लाइये और कुछ फल भी। मच्छर यहाँ बहुत हैं। ललितपुर में म्यूनिसिपैलिटी के सेक्रेटरी चतुर्वेदी श्यामसुन्दर जी मेरे सहपाठी मित्र हैं। ललितपुर में ओरछा राज्य के ऐजेण्ट रानीबाग में रहते हैं। १०)रुपये का मनीआर्डर मिला था और बटन भी। यहाँ सब मलेरिया में बीमार पड़े रहे। कृपा के लिए कृतज्ञ हूँ।

विनीत
बनारसीदास

श्री रमेशचन्द्र जी दुबे को लिखे गये पत्र

(१७९)

फीरोजाबाद
१६-२-६९

प्रिय दुबे जी,

प्रणाम ! आप उस दिन इतनी देर से पधारे कि मैं आपका कोई आतिथ्य न कर सका। इसका मुझे खेद है। अभिनन्दिनी की संशोधित प्रति मिल गई है। तदर्थ धन्यवाद। उस पुस्तिका में मेरी प्रशंसा के इतने पुल बाँधे गये हैं कि उन्हें देखकर स्वयं मुझे आश्चर्य होता है। अब मैं भली भाँति समझ सकता हूँ कि सुधासिन्धु, अमृतांजन तथा डोंगरे का बालामृत की इतनी बिक्री क्यों होती है। यह सब विज्ञापन का शुभ (या अशुभ ?) परिणाम है। मैं सन् १९१२ से निरन्तर कलम घसीटता रहा हूँ और पिछले ५७ वर्षों में न जाने कितने ऊट पटांग लेख लिख डाले होंगे। वास्तव में बहुत अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ। मौलवी अब्दुलहक़ साहब एक कविता गुनगुनाते रहते थे।

मेरे साथी मुँह न देखें उनको गर मालूम हो।
उनसे क्या कहता रहा और आप क्या करता रहा॥

अभिनन्दिनी की कितनी प्रतियाँ आपने छपवाई थीं। कुछ पतों पर भिजवाना चाहता हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(१८०)

२३-२-६९

प्रिय दुबे जी,

सादर प्रणाम ! कृपापत्र मिला। आगरे पहुँच कर मैं आपके दर्शन नहीं कर सका, इसका मुझे खेद है।

मेरी पुत्री सौ० देवकी का आपरेशन होने वाला है, इसलिए चिन्तित हूँ। जामाता श्री सुरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, ४ लाजपत कुंज सिविल लाइन्स पर रहते हैं। बी० आर० कालेज में बौटेनी के अध्यापक है। चूंकि प्राइवेट वार्ड खाली नहीं इसलिए नर्सिंग होम (राजामण्डी स्टेशन के निकट) में रहना होगा। मेरे लिए तो यात्राएँ अत्यन्त कष्टप्रद होती हैं, इसलिए आना सम्भव नहीं।

८ मार्च को स्व० भाई हरिशङ्कर जी की पुण्य तिथि है। यदि स्वास्थ्य ठीक रहा तो हाजिर होऊँगा। पुस्तिका में पूज्य पिताजी का नाम अशुद्ध छप गया है। उनका नाम था गणेशीलाल।

आप बन्धुवर मथुरादत्त जी शास्त्री से मिल आये तदर्थ मैं भी आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। महात्मा गाँधी तो एक कुष्ट रोगी परचुरे शास्त्री के पैरों की मालिश करते थे। उनके शताब्दी वर्ष में यदि हम भारत के ५० लाख कोढ़ियों के प्रश्नों पर कुछ ध्यान दें तो यह सर्वथा उचित ही होगा। कल २४ ता० सत्यनारायण जन्म दिवस है।

विनीत
बनारसीदास

(१८१)

फीरोजाबाद
१५-४-६६

प्रिय दुबे जी,

पुण्यतिथि के दिवस पर सत्यनारायण कविरत्न का स्मरण करने के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिये। उनके समस्त ग्रन्थों के पुनर्मुद्रण का क्या हुआ ? श्री वित्तमन्त्री यहाँ पधारे थे। उन्हें मैंने श्रीधर पाठक संग्रहालय तथा कविरत्न सत्यनारायण के मन्दिर के उद्धार के विषय में कहा था। अपना भाषण छपने भेज रहा हूँ।

आप भी श्री लक्ष्मीरमण आचार्य को धाँधूपुर के मन्दिर के जीर्णोद्धार के लिए लिखें। श्रीधर पाठक की लूकर गंज वाली कोठी बिकाऊ है ! भाड़ेतू उसे खाली नहीं करता। उसे भी श्रीधर पाठक संग्रहालय बनाया जा सकता है।

विनीत
बनारसीदास

(१८२)

नई दिल्ली २२
१-३-७१

श्री दुबे जी,

प्रणाम् ! परसों बाबू वृन्दावनदास जी मथुरा से पधारे थे। आपके शुभनाम की भी चर्चा चली।

आजकल आप क्या साहित्यिक कार्य कर रहे हैं ? स्व० ज्वालादत्त शर्मा मुरादाबाद के ही थे। हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक थे और उर्दू के अच्छे

जानकार भी। उन पर कोई शोध ग्रन्थ तैयार करना चाहता था, फिर पता नहीं लगा कि वह कार्य कहाँ तक आगे बढ़ा।

२४ फरवरी को सत्यनारायण कविरत्न की जन्मतिथि थी। नवभारत टाइम्स तथा अमर उजाला में छोटा सा लेख भेज दिया था। आपके आगरे से चले जाने के बाद वहाँ के साहित्यिक कार्य में कुछ शिथिलता आ गई है। पर आप तो जहाँ भी रहेंगे अपनी साहित्यिक साधना को जाग्रत रक्खेंगे।

सासनी के जैन इन्टर कालेज के श्री राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी उक्त स्थान पर विशेषाङ्क निकाल रहे हैं। मुरादाबाद के किसी कालेज को उस जिले की साहित्यसेवा पर विशेषाङ्क निकालना चाहिये।

राजा जयकृष्णदास जी जिन्होंने स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश को छपाने में मदद दी थी, मुरादाबाद के ही थे।

विनीत
बनारसीदास

श्री राधेश्याम जी रावत को लिखा गया पत्र

(१८३)

फीरोजाबाद
१४-४-६९

प्रिय रावत जी,

जब 'उत्तर प्रदेश' के वित्तमन्त्री श्री लक्ष्मीरमण आचार्य जी फीरोजाबाद पधारे थे तो मैंने उनकी सेवा में उपस्थित होकर जो निवेदन किया था। उसका सार यह है।

"पिछले २०-२१ वर्षों से मेरे क्षुद्र जीवन का सम्पूर्ण समय शहीदों के श्राद्ध में ही व्यतीत होता रहा है। और उस विषय पर थोड़ी सेवा भी मुझसे बन पड़ी है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि सरकार तथा जनता द्वारा यह पुण्य कार्य उपेक्षित रहा है। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पूज्य माताजी सत्रह वर्ष तक भूखों मरती रहीं तब कहीं अपने जीवन के ढाई वर्षों में उन्हें पेंशन मिली।

शहीदे आज़म अशफाकुल्ला के बड़े भाई रियासतुल्ला खाँ बहुत दिनों तक तकलीफ में रहे, फिर किदवई साहब की मिहरवानी से चुंगी में उन्हें नौकरी मिली थी। उसके छूटने पर उन्हें ७५) की पेंशन करा दी गई थी। वे अब स्वर्गवासी हो चुके हैं, और उनके कुदुम्ब के ५ प्राणी अब घोर आर्थिक संकट

का सामना कर रहे हैं। अगर उत्तर प्रदेशीय सरकार शहीद अशफाक के भतीजे इश्त्याकुल्लाखाँ को सहारा नहीं देती तो उस कुटुम्ब का खातमा समझ लीजिये। अशफाक ने अपने एक अंतिम पत्र में वतनी भाइयों से यह प्रार्थना की थी कि वे उनके भाइयों का खयाल रखें। जब अशफाक से कहा गया कि अगर वे चाहें तो उन्हें फ्रन्टियर पार करा दिया जाय तो उन्होंने साफ साफ कहा था—

"अरे भाई ! एक मुसलमान को भी फाँसी चढ़ने दो" और बड़ी खुशी के साथ वे फांसी के तख्ते पर झूल गये—कुल जमा २७ वर्ष की उम्र में। अमर शहीद गणेश जी तथा श्रद्धेय टंडन जी अशफाक की आलीशान समाधि बनाना चाहते थे, पर वे ऐसा न कर सके। पर अशफाक के सबसे बड़े स्मारक तो उनके कुटुम्बी है, जिन्हें भूखों मरने से बचाना है।

स्वार्थ और परमार्थ दोनों दृष्टियों से हमारा यह फर्ज है कि शहीदों की स्मृति रक्षा तथा उनके कुटुम्बियों के भरण-पोषण का हम मुनासिब इंतजाम करें। अस्वस्थ होते हुए भी मैं सिर्फ यही अर्ज करने के लिये आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूँ।"

विनीत
बनारसीदास

श्री मलखानसिंह जी सीसोदिया को लिखे गये पत्र

(१८४)

फीरोजाबाद
५-६-६७

प्रिय श्री मलखानसिंह जी,

यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि शहीद महावीरसिंह अङ्क २० जून को निकल जायगा। अब मैं समझता हूँ कि मेरी एटा-यात्रा पूर्ण रूप से सफल हुई।

मैं यात्रा प्रायः नहीं ही करता और उस बार भाई बालकृष्ण गुप्त के आग्रह से मुझे एटा पहुँचना पड़ा। आप लोगों के आतिथ्य तथा उत्साह से मैं बहुत प्रभावित हुआ। निस्सन्देह एटा में काम करने के लिये फीरोजाबाद की अपेक्षा कहीं अधिक उत्साह है। यहाँ तो औद्योगिकता ने साहित्य तथा संस्कृति को दबोच कर रख दिया है। खैर, 'सूली और शान्ति' कब तक छप जायेगी ?

आप श्री वृन्दावनदास जी बी. ए. एल-एल. बी. अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मण्डल मथुरा से सम्पर्क स्थापित करें। उनको भी पत्र भेज रहा हूँ ब्रजसाहित्य मंडल के उद्धार के लिये वे प्रयत्नशील हैं।

विनीत
बनारसीदास

(१८५)

फीरोजाबाद
१६-११-६७

प्रियवर,

शहीद महावीरसिंह के विषय में अन्य लेख भी कुछ मिले ? डा० मुंशीराम जी का तो वहीं मिल गया था। क्या 'पराग' जी ने भी भेज दिया ? अब बिना विलम्ब उन सबको छपा देना चाहिये। कृपया अङ्क की एक प्रति डाक्टर हरिदत्त पालीवाल साहित्याचार्य उपमन्यु भवन कायम गंज फर्रुखाबाद को भेंट स्वरूप भेज दीजिये। वे संस्कृत में काव्य लिखते हैं। भगतसिंह विषयक कविता में उन्होंने महावीरसिंह का उल्लेख किया है। आपका शोध कार्य कैसा चल रहा है।

विनीत
बनारसीदास

(१८६)

फीरोजाबाद
१८-१-७१

प्रिय भाई मलखानसिंह जी,

कल सौभाग्यवश स्व० रामचरणलाल जी विषयक सामग्री अकस्मात ही मिल गई। उसे मैंने आपके अध्यापक महोदय को सौंप दिया है।

कृपाकर स्व० शिवचरणलाल तथा डा० युद्धवीरसिंह के पत्रों की ५, ५ प्रतियाँ टाइप करा लीजिये और ३, ३ प्रतियाँ मूल पत्रों के साथ मुझे रजिस्ट्री द्वारा भेज दीजिये।

स्व० रामचरणलाल जी का चित्र बम्बई भेजा गया है। लौटने पर उससे तैल चित्र बनवाया जा सकता है। आपके महाविद्यालय ने शहीद महावीरसिंह पर विशेषाङ्क निकाला और अब स्व० रामचरणलाल पर अङ्क निकाल सकते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि इसे अंडमान—अङ्क बना दें। तब

अन्य लोगों के लेख भी–बहुत बढ़िया लेख–उसमें दिये जा सकते हैं। यह श्राद्ध कर्म आपके लिये ही सुरक्षित था।

बाबा पृथ्वीसिंह, विजयकुमार सिन्हा, पं० परमानन्द इत्यादि के लेख मिल जावेंगे। भाई परमानन्द, वारीन धोष के पुराने लेख ले लें।

बनारसीदास

(१८७)

फीरोजाबाद
१६-१-७१

प्रिय भाई मलखानसिंह जी,

वन्दे ! मेरे अनेक स्वप्न पूरे हुए हैं और सो भी बिल्कुल आकस्मिक ढङ्ग पर। शहीद महावीरसिंह विशेषाङ्क का स्वप्न भी उन्हीं में से एक था। मैंने आपके कालेज का शुभ नाम भी नहीं सुना था, जब भाई बालकृष्ण जी गुप्त के नाम एटा के भूतपूर्व एम. एल. ए. का फोन आया कि मुझे आपके कालेज के कवि सम्मेलन का प्रधान बनना है उसी के परिणाम स्वरूप शहीद महावीरसिंह की कीर्तिरक्षा हो गई।

स्वयं मुझे इस बात का पता नहीं था कि रामचरणलाल जी एटा के थे। वह पाण्डु लिपि भी [जो अब ५, ६ दिन बाद National archives दिल्ली को चली जावेगी] बिल्कुल अकस्मात् ही मुझे मिल गई। साप्ताहिक हिन्दुस्तान में उसके लेख छप भी गये।

यदि आप अपने कालेज की पत्रिका का रामचरणलाल अङ्क निकाल सकें तो यत्किंचित आर्थिक सहायता मैं भी दे सकता हूँ। उसके लिये अतिरिक्त चन्दा किया जा सकता है। आज के सत्ता-लोलुप लीडरों को रामचरणलाल के नाम तक का पता न होगा। मुझे इस बात में शक है कि एटा के एम. एल. ए. या एम. पी. ने उनका या महावीरसिंह का नाम भी सुना होगा। पहले से प्लान बना लीजिये। चन्दे में बालकृष्ण जी गुप्त भी १००) रुपये दे ही देंगे। अपने शहीद कक्ष का भी निर्माण कर लीजिये। आपके विद्यार्थियों को शहीदों के विषय में कुछ न कुछ ज्ञान होना ही चाहिये। आपकी पत्रिका के इस नवीन अंक का मूल्यांकन आगे चल कर होगा। बाबा पृथ्वीसिंह [शिशु बिहार भाव नगर, सौराष्ट्र] को अभी से पत्र लिखकर उस अङ्क के विमोचन संस्कार के लिये बुलाइये।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

अभी श्री बालकृष्णगुप्त ने १०१) रुपये देने का वचन दे दिया है। आप धन्यवाद का पत्र उनको हनुमानगंज, फीरोजावाद के पते पर तुरन्त भेजिये।

बनारसीदास

श्री रामशङ्कर द्विवेदी एम. ए. उरई को लिखे गये पत्र

(१८८)

फीरोजाबाद
२-१-६५

प्रियवर,

आपके सद्भावना-युक्त पत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। सबसे प्रथम आप अपने शोध निबन्ध की स्वीकृति के लिये प्रयत्न कीजिये। पहले तो डा० सत्येन्द्र जी से इस विषय में मदद मिल सकती थी, पर वे तो अब राजस्थान चले गये। बिना घूमे फिरे यह काम नहीं बनने का।

हिन्दी संस्मरण साहित्य विषय स्वयं में कुछ महत्व रखता है और डाक्टरेट के लिये न सही, वैसे ही स्वान्तः सुखाय इसका अध्ययन मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद होगा।

संस्मरण जिन-जिन ने लिखे हों, उन्हें पढ़ लीजिए। बालमुकुन्द गुप्त, पद्मसिंह शर्मा, बेनीपुरी जी, प्रेमचन्द्र जी, शिवपूजन जी उग्र जी प्रभृति पचासों व्यक्तियों के लिखे संस्मरण साहित्य क्षेत्र में बिखरे पड़े हैं। पुराने पुस्तकालयों में जाकर उन्हें पढ़ा जा सकता है। रेखाचित्रों और संस्मरणों में आखिर मानव-चरित्र का चित्रण ही रहता है, इसलिए दोनों का परस्पर सम्बन्ध है। उर्दू तथा अंग्रेजी में भी और बँगला इत्यादि में भी इस विषय पर काफी मसाला होगा। बाब ए. उर्दू मौलवी अब्दुलहक़ साहब के कई संस्मरण लाजवाब बन पड़े थे—एक ढेढ़ माली नामदेव का और दूसरा एक सिपाही का। सबको यथासम्भव खोजकर पढ़ लेना चाहिए। डाक्टरेट मिले या न मिले, उससे कुछ ज्यादा बनता बिगड़ता नहीं, पर किसी एक विषय का विशेषज्ञ बन जाने से लाभ ही लाभ है। विशाल भारत के पुराने अंकों में स्व० रामानन्द बाबू के तीन संस्मरण बहुत बढ़िया हैं—कवीन्द्र श्री रवीन्द्र के, बालकृष्ण भट्ट के और सिस्टर निवेदिता के। Modern Review में भी कितने ही उत्तमोत्तम संस्मरण छपे थे। अंग्रेजी में तो इस विषय का अखण्ड भंडार है।

'एकहि साधै सब सधै' वाली कहावत आपने सुनी होगी। 'सब साधै सब जाइ' दुनिया भर के विषयों की चिन्ता छोड़िये। रामानन्द बाबू के स्मृति ग्रन्थ के लिये कलकत्ते का हिन्दी भाषा-भाषी समाज कुछ कर सकता है, यदि मैं २ महीने वहाँ जाकर रहूँ, पर मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं और मैं वहाँ जा नहीं सकता। और किसी को इस श्राद्ध की विशेष चिन्ता नहीं। स्व० बड़े बाबू के सुपुत्र यदि चाहें तो दस बीस हजार रुपये इस यज्ञ में खर्च कर सकते हैं, पर वे करेंगे नहीं। इसलिए जो कुछ भी यहाँ से बैठे-बैठे कर सकता हूँ, करूँगा।

लम्बी चौड़ी आयोजनाएँ निरर्थक हैं। न पैसा है, न काम करने वाले, फिर आयोजना बनाने से क्या लाभ? आप अपना सम्पूर्ण ध्यान किसी एक विषय पर लगाइये और उसके विशेषज्ञ बन जाइये। यह युग Specialization का है।

स्व० पद्मसिंह शर्मा के पत्रों पर अवश्य लिखें। उनके कुछ पत्र हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग ने भी छपाये थे—"द्विवेदी जी तथा समकालीनों के पत्र" नामक पुस्तक में जो श्री बैजनाथसिंह विनोद ने संग्रह करके छपाई थी। मूल्य ५) है। स्वयं पत्र साहित्य एक महान समुद्र है, जिसमें गोते लगाने से अनेक रत्न प्राप्त हो सकते हैं।

अपनी जीविका के बाद बाकी बचे वक्त में आप घूम-घूम कर संस्मरण साहित्य तथा पत्र साहित्य पर मसाला इकठ्ठा करते रहें और फुटकर लेखों के लिये बुन्देलखंडी ग्रामगीत इत्यादि का भी संग्रह करें। ४, ५ वर्ष में आपके पास अच्छी सामग्री इकठ्ठी हो जायगी। कैमरा साथ में हो तब तो क्या कहना। परिव्राजक ही हमारे देश में कुछ कर सकते हैं। दूसरों की कीर्ति-रक्षा एक अत्यन्त उपयोगी पुण्यकार्य है।

ज्यादा मैं लिख नहीं सकता। सिर्फ एक आँख से ही काम लेना पड़ता है। Dictate कराने का अभ्यास नहीं। पत्रोत्तर देने में मुझे श्रम पड़ जाता है। आप पत्र भेजते रहें, जब कभी छुट्टी मिलेगी, इकठ्ठे ही संक्षिप्त उत्तर दे दूंगा।

अपने पत्रों की कार्बन कापी बराबर रख लें। जरा सा जोर देकर लिखने से वह बन सकती है। मेरी चिट्ठियाँ बीच में गायब हो जाती है। डाक इतनी अधिक आती है कि पता ही नहीं चल पाता। हैदराबाद से एक लड़की इसी विषय पर पी-एच. डी. करना चाहती थी। श्री वंशीधर जी विद्यालंकार ने मुझे लिखा था, पर फिर उसने कुछ किया नहीं।

बनारसीदास

(१८६)

फीरोजाबाद
२७-१-६५

प्रियवर,

संस्मरण विषय पर अंग्रेजी में एक ग्रन्थ है, वह शायद अभी कालेजों में पढ़ाया जाता है। उसे पढ़िये। शायद स्व० अमरनाथ जी द्वारा संग्रहीत था। मौलवी अब्दुलहक़ साहब के संस्मरण बहुत बढ़िया थे। सर रॉस मसूद के विषय में उनके संस्मरणों को देव नागरी लिपि में वि. भा. में मैंने ही छपाया था।

यह एक विषय ही बहुत पर्याप्त है। हाँ, पत्रों का संग्रह साथ-साथ करते चलिये। बेलनगंज (आगरे) में पालीवाल जी का पुस्तकालय बहुत अच्छा है। वहाँ बैठकर नकल कर सकते हैं।

६ ता० को हम लोग वसन्त पंचमी मनावेंगे। उस दिन ५ तारीख की शाम को आप आ सकते हैं। यात्रा में एकाध दिन से अधिक ठहरने का प्रबन्ध मुश्किल से हो सकेगा। न किसी के पास इतने साधन हैं, न वक्त, इसलिए एक दिन से अधिक का प्रोग्राम कहीं का भी न रखिए।

बड़े नगरों में जहाँ धर्मशाला या होटल हों, वहाँ की बात दूसरी है। आजकल अतिथि सत्कार में लोगों की श्रद्धा नहीं रही।

भाई श्रीराम जी शर्मा अब आँखों से बिल्कुल नहीं देख पाते। उनका नव-जीवन फार्म यहाँ से ७, ८ मील दूर है। बस उसाइनी तक जाती है, वहाँ से २, २॥ फर्लांग होगा। बस वाले शायद कहने से खड़ी भी कर लें। श्रीराम जी का पता बल्का बस्ती आगरा। पहले से समय निश्चित करके जाइये और यह भी लिख दीजिये कि इतनी देर ठहरेंगे। शिवपूजन जी के पत्रों का संग्रह तो उनके सुपुत्र ही कर रहे हैं। आप तो संस्मरण साहित्य के ही विशेषज्ञ बन जाइये।

'Some autobiographies' यह नाम है स्व० अमरनाथ झा द्वारा संग्रहीत पुस्तक का। आर्यनगर कानपुर में रामराज्य के सम्पादक श्री रामनाथ गुप्त जी से जरूर मिलिये। नरेशचन्द्र चतुर्वेदी से भी। श्री सनेही जी के ग्राम की तीर्थयात्रा भी कर आइये। प्रकाशकों पर मेरा प्रभाव नहीं। पत्र भेजते समय पते के साथ लिफाफा रख दें तो शायद उत्तर जल्दी मिले। जिस किसी से मिलें, प्रश्नावली पहले से भेज दें ताकि वह उत्तर देने के लिए प्रस्तुत रहे।

विनीत
बनारसीदास

(१९०)

नई दिल्ली २२

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! आपका कार्ड मिला। मैं १० फरवरी से यहाँ हूँ और अभी कुछ दिन ठहरने का विचार है।

आप मेरे अभिनन्दन ग्रन्थ की विस्तृत समीक्षा लिखकर अपने बहुमूल्य समय को बर्बाद करना चाहते हैं, यह जानकर चिन्ता हुई। मैं तो आवश्यकता से अधिक विज्ञापित हो चुका हूँ और अपनी प्रशंसा पढ़ते-पढ़ते ऊब चुका हूँ। सन् १९२४ में मेरे साथी श्रीयुत सदाशिव गोविन्द वझे [S.G. Vaze Editor Servant Of India, Poona] ने जो पूर्व अफ्रिका गये थे मुझे over—advertised की उपाधि से अलंकृत किया था। उसके ४७ वर्ष बाद तो मैं तब से कई गुना विज्ञापित हो चुका हूँ। भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश है—"अर्जुन ! दरिद्रों का पालन करो, धनवानों को पैसा मत दो।

'दरिद्रान भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरंधनम्'

पर इस बात पर कौन ध्यान देता है। अपने ग्रन्थ के बहुत से लेख मैं पढ़ भी नहीं सका। हलवाई को मिठाई खाने की रुचि नहीं होती। मैं तो कीर्ति रूपी मिठाई दूसरों को निरन्तर खिलाता रहा हूँ। उस मिठाई को खाने की कोई इच्छा मेरे मन में विद्यमान नहीं, बात दरअसल यह है निरन्तर ५९ वर्ष से लिखने के कारण मेरा नाम बराबर हिन्दी जनता के सम्मुख आता रहा है। मेरा प्रथम लेख १९१२ में छपा था—मई में—और तीन महीने बाद मेरे लेखक जीवन की ६० वीं वर्ष शुरू हो जायगी। मेरे लेख पढ़ते-पढ़ते जनता तंग आ गई होगी, इसलिये अब अपने शिष्यों द्वारा लेख लिखाना चाहता हूँ। खेद की बात तो यह है कि मेरी ८ किताबें अध लिखी पड़ी हैं और ७९ वीं वर्ष में मैं अब उन्हें Revise भी नहीं कर सकता। मुझे Retire हो जाना चाहिये, पर बद आदतें जल्दी नहीं छूटतीं।

आप किसी विषय पर Specialise क्यों नहीं कर लेते ? मसलन् बच्चों के विषय पर। संसार के भिन्न-भिन्न देशों में बालक बालिकाओं के लिये जो अच्छे काम हो रहे हों उन पर लिखिये। यह युग विशेषज्ञों का है। कैमरा तो आपके पास होना ही चाहिए। कोतल विषय (Relieving subject) साहित्य सेवियों की कीर्ति-रक्षा रख सकते हैं। डाक की व्यवस्था के लिये पहले कोतल घोड़े रक्खे जाते थे।

मुझे गप्प लगाने और चिट्ठी लिखने की बीमारी है–दोनों एक ही हैं:—और काम कर कम पाता हूँ—बातें ज्यादा करता हूँ। यह वास्तविक सत्य है। यदि मैं मौन रह सकता और पत्र न लिखता तो तिगुनी सेवा कर सकता। यह लम्बी चिट्ठी भी तौबा करते हुए गुनाह करने का उदाहरण है।

बड़े बड़ेन की अकल अब चरन लग गई घास।
फोकट में डी. लिट. बने श्री बनारसीदास॥

बनारसीदास

डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी को लिखे गये पत्र

(१६१)

फीरोजाबाद
१२-६-६४

प्रिय भाई राजेश्वर जी,

पालागन! कृपापत्र मिला। अपने स्वास्थ्य को देखते हुए मैं कह नहीं सकता कि मैं आगरे कब आ सकूँगा। अपने मुँह पर अपनी प्रशंसा इतनी बार सुन चुका हूँ कि उससे तबियत ऊब गई है। हाँ, अमृतलाल जी (उर्फ बाबू) कुछ खरी खोटी सुनाने को तैयार हों तो दूसरी बात है।

बन्द कमरों में बैठ कर गुणगान—यह सब मुझे अत्यन्त कृत्रिम लगता है। क्यों न किसी प्राकृतिक स्थल की पैदल यात्रा की जाय। औपचारिकताऐं बिल्कुल व्यर्थ हैं। वर्तमान परिस्थिति में एक गिलास ठण्डाई या दो प्याले चाय और एक पापड़ बस इससे ज्यादा खर्च करना महज़ हिमाकत है। डेढ़ दो घण्टे से अधिक इस अव्यापार में खर्च न किया जाय। कब तक आप लोगों के दर्शन कर सकूँगा इसका अभी निश्चय नहीं। श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा यहाँ पधारे थे। बाबू ने कविता पाठ द्वारा रंगत लादी, और भी कवि थे।

विनीत
बनारसीदास

(१६२)

नैनीताल
६-७-६५

प्रिय श्री राजेश्वर जी,

१. पत्र तभी जानदार बन सकता है जब कि कोई उसे पूरा-पूरा समय तथा शक्ति प्रदान करे। चूंकि आप नित्यप्रति २, २॥ घंटे से अधिक नहीं दे सकेंगे, इसलिए पत्र का सजीव बनाना सम्भव न होगा।

२. दूसरों के लेखों का संशोधन करने में समय व्यय करने की अपेक्षा यह कहीं अधिक उत्तमतर है कि स्वयं महीने में दो तीन बढ़िया लेख लिखें, जिनके संग्रह से कोई ग्रन्थ बन सके।

३. मैं पत्रों के Birth Control के पक्ष में हूँ पर जो भी उत्पन्न हों, उनको दीर्घायु बनाने की आवश्यकता है।

४. प्रकाशक के ३, ४ हजार रुपये इस प्रयोग में नष्ट हों उससे कहीं बेहतर है कि वे कोई उपयोगी ग्रन्थ निकालें। उनसे साफ साफ बात हो जानी चाहिए।

५. इतने पर भी पत्र निकालना ही हो तो गुलदस्ते की तरह की चीज़—Digest भले ही निकालें। Best reading material दें। मुझे इतना ही कहना है। कृपया इस पत्र को प्रकाशक को दिखला दीजिये।

विनीत

बनारसीदास

(१९३)

३-८-६८

प्रिय भाई राजेश्वर, पालागन,

भाई बाबू की बीमारी कौ हाल जानिकें कछू फिकिर तौ हौ ही गई, पर बुखार अब कम है, जि जानिकें सन्तोस भयौ। मोतीझरा हमैं सन् १९०४ में निकरो हो। ६४ वर्ष पैलें।

जामें आराम की भौत जरूरत है और कोई गरिष्ट चीज़ हर्गिज नई खानी चैंये। कभऊँ कभऊँ मोतीझरा जाते वखत कमजोरी छोड़ि जातु है—आँख पै, दिल पै! तासें भौत सावधानी वत्तनी चैऐं।

बाबू जैसे हँसन और हँसाउन बारे आदमी कौं तौ बीमार परनोई नइँ चैऐं। जि चिट्ठी हमने चि० आभा कौं ब्रजभासा सुनाइवे कौं लिखि ऐ।

अब खड़ी बोली—

ना. प्र. सभा का काम छोड़ दिया, यह बहुत अच्छा किया। ऐसे लेख लिखिये जो आगे चलकर पुस्तकाकार में संग्रह किये जा सकें। चूड़ामणि जी वाला लेख बढ़िया था और श्रीनारायण जी वाला भी। पर ये किस संग्रह में आ सकते है? इटौरा का उपवन आप भी पानी बरसने पर देख आइये। राजाबाबू अपनी जीप में ले जावेंगे। मेरी तबियत सम्हल रही है। भूख खुल रही है। सवेरे टहलने जाता हूँ। ३, ४ महीने में स्वास्थ्य लाभ होगा। वज़न

दो पौण्ड बढ़ा है। पहिले २०, २५ पौण्ड घट गया था। श्री सोहनलाल द्विवेदी ग्रन्थ के लिये कुछ लिखना पसन्द करोगे।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

भाई हजारीप्रसाद जी अक्टूबर में इधर आने की सोच रहे हैं। मैंने उन्हें मना लिख दिया था कि इस रौरव तथा कुम्भीपाक नगरी में न पधारें। आप इण्टरव्यू के लिये नहीं गये। वे शायद पूछ सकते हैं। क्या कहूँ? ब्रजसाहित्य मंडल वालों को सब जगह निमंत्रण पत्र भेजने चाहिए थे।

"चतुर्वेदी" का न्यायमूर्ति प्यारेलाल जी विषयक स्मृति-अङ्क देखा था? उसका संक्षेप करके १०० पृष्ठों की जीवनी के रूप में छपा देना चाहिये। Shri Pyarey Lal Ji was a great man undoubtedly. कमतरी हैदराबाद के मधुसूदन जी पधारे थे। अच्छा काम कर रहे हैं, यद्यपि ग्रन्थों के चुनाव में सावधानी नहीं बरतते।

५, ७ वर्ष लगा के किसी अच्छे साहित्यिक ग्रन्थ का निर्माण कीजिये। ये 'मुतफर्रिक' काम तो बस बर्वाद कर देते हैं। जब बाबू की तबीयत ठीक हो जाय तो राजाबाबू को फोन करा देना कि वे एक छोटी सचित्र पुस्तिका अपने उपवन पर जरूर छपावें—सर्वोत्तम प्रैस में, बढ़िया कागज पर उसमें बाबू की उपवन विषयक कोई कविता भी रहे। भाई अमृतलाल जी ने अब तक जो कुछ लिखा है उसको व्यवस्थित करके उस पर एक एक विस्तृत निबन्ध लिखा जा सकता है।

डा० भगवानसहाय पचौरी को लिखे गये पत्र

(१९४)

फीरोजाबाद
२४-६-७०

प्रिय पचौरी जी,

वन्दे! आपका २० ता० का कृपापत्र मिला। मेरे हृदय में श्री प्रभुदयाल जी मीतल के साहित्यिक कार्य के लिये बहुत श्रद्धा है। निस्सन्देह उन्होंने जो महत्वपूर्ण सेवा ब्रजभाषा की भी है, वह एक संस्था का कार्य था निरन्तर लगन और अध्यवसाय के बिना कोई भी व्यक्ति इतना काम कर ही नहीं सकता। श्री मीतल जी के कार्य के यथोचित मूल्यांकन के लिये जितनी योग्यता की

आवश्यकता है, वह मुझ में है ही नहीं। ऐसी स्थिति में मेरे द्वारा भूमिका का लिखा जाना नामुनासिब होगा। इस कर्तव्य को भाई श्रीनारायण जी चतुर्वेदी ही विधिवत् निभा सकते हैं, पर वे दो दो दुर्घटनाओं के शिकार हो गये हैं। उनका भतीजा और अनुज दोनों पन्द्रह दिन में चल बसे।

हाँ मूझे Sketch–writing का शौक रहा है और कभी फुर्सत मिलने पर ५, ६ दिन मीतल जी से बात चीत करके उनका रेखाचित्र प्रस्तुत करूँगा। इस समय तो मेरे लिये यात्रा करना सम्भव नहीं। १० महीने पहले मेरा आपरेशन हुआ था, पर इस बीच मुझे विश्राम बिल्कुल नहीं मिला। अब ७८ वीं वर्ष में मैं बहुत कम लिख पढ़ पाता हूँ। एक प्रकार से रिटायर हो गया हूँ।

श्री मीतल जी पर यों दो पृष्ठ लिख देना कुछ कठिन नहीं पर उससे मीतल जी, के व्यक्तित्व का अपमान हो जायगा, और स्वयं मैं भी अपनी इज्जत में गिर जाऊँगा। मीतल जी जैसे साधक के प्रति पूर्ण न्याय होना ही चाहिये। टरकौअल ढङ्ग पर कोइ भी चीज़ उनके बारे में न लिखी जाय। उनकी जीवन व्यापी साधना का चित्रण पूर्ण सहृदयता से ही होना चाहिये। मेरा स्वास्थ्य ठीक होता तो १०, १२ दिन इस पवित्र कार्य में लगा देता, पर क्या करूँ लाचार हूँ।

अपनी बात मैंने स्पष्टतया लिख दी फिर भी आपका यदि आदेश होगा (और भाई मीतल जी का भी) तो मैं अवश्य कुछ लिख दूँगा पर उससे मुझे सन्तोष नहीं होगा।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

अभी मैंने एक साम्यवादी मज़दूर के उपन्यास की आलोचना से दस बारह दिन लगा दिये। बहुत धीरे-धीरे ही मैं कुछ लिख पढ़ पाता हूँ। अपनी निज की ८ किताबें revise होने को पड़ी हैं।

(१९५)

फीरोजाबाद

२०-१-७१

प्रिय पचौरी जी,

वन्दे ! कृपापत्र के लिये कृतज्ञ हूँ। बन्धुवर मीतल जी विषयक ग्रन्थ भी मिल गया, तदर्थ धन्यवाद ! मैं कल्पना करता हूँ कि कभी न कभी ब्रज

विश्व विद्यालय बनेगा—चाहें वह आगरा विश्व विद्यालय का परिवर्तित रूप ही हो—और तब श्री मीतल जी के अद्भुत साहित्यिक कार्य का उचित मूल्याङ्कन हो सकेगा। वर्तमान परिस्थिति में, जब कि हमारा उत्तर प्रदेश इतना विस्तृत है, इस प्रकार का appreciation असम्भव ही समझिये।

मैं अलग व्रज प्रान्त बनाने के आन्दोलन के पक्ष में नहीं हूँ, पर विशाल हरियाने की जाटशाही के विरोध में यह आन्दोलन अनिवार्य हो गया है। कैसे खेद की बात है कि श्री लक्ष्मीरमण आचार्य भी अपने व्रजसाहित्य मंडल के लिये कुछ भी न कर सके।

व्रजमण्डल में भाई वृन्दावनदास जी का दम ग़नीमत है। फीरोज़ाबाद में तो कम से कम ५०० लखपती हैं, पर किसी का भी ध्यान व्रज जनपद की सेवा की ओर नहीं है। अकेले श्री बालकृष्ण गुप्त कभी-कभी सहायता दे देते हैं और उन पर भी मेरी आशा केन्द्रित है।

भाई वृन्दावनदास जी के नाम का सहारा लेकर हम पोद्दार ग्रन्थ का एक पूरक ग्रन्थ निकाल सकते हैं। इस समय अन्य जनपदों की अपेक्षा व्रज जनपद साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य में काफी आगे बढ़ा हुआ है। When we have got the wind, let us sail on, sail on. इस अनुकूल वातावरण में हमें खूब आगे बढ़ना है। आपका ग्वाल महाकवि विषयक शोधग्रन्थ कब तक छप जायगा? उसके प्रकाशन का प्रबन्ध होना ही चाहिये। बन्धुवर मीतल जी इस पुण्यकार्य को भी हाथ में ले लें तो सर्वोत्तम हो।

एक निजी संग्रहालय के लिये मैं भाई वृन्दावनदास जी से आग्रह करता रहा हूँ। और वे तैयार भी हैं, पर वे उसे अपने घर से अलग किसी नवीन भवन में रखना चाहते हैं। वह तो बहुत व्यय-साध्य कार्य होगा।

"जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ"

आज दिल्ली के National archives केन्द्रीय सरकारी अभिलेखागार से दो व्यक्ति यहाँ पधार रहे हैं, जो मेरे क्षुद्र संग्रहालय की मूल सामग्री को ३ दिन बाद दिल्ली ले जावेंगे। थोड़ा बहुत जो भी सरकार मुझे देगी (वह अत्यल्प ही दे सकती है।) उसी से मुझे सन्तोष होगा। एक सौ से ऊपर तो अकेले महात्मा जी के ही पत्र है। पचासों C. F. Andrews के, चालीस श्रीनिवास शास्त्री (भारत के सर्वश्रेष्ठ पत्र लेखक) के, ७०-८० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के, ६ गणेशशङ्कर विद्यार्थी के, २०-२१ प्रेमचन्द जी के बीसियों सम्पूर्णानन्द जी के, गुप्त जी के इत्यादि इत्यादि। इनकी प्रतियाँ व्रजसाहित्य

मंडल से संग्रहालय में रक्खी जा सकती हैं। मुझे विश्वास है कि कभी न कभी ब्रज प्रान्त बन कर रहेगा, उत्तर प्रदेश विभाजित होने से बच नहीं सकता। हम लोगों को साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य को पूरी लगन के साथ करना है।

विनीत
बनारसीदास

श्री गौरीशङ्कर द्विवेदी 'शंकर' को लिखे गये पत्र

(१९६)

फीरोजाबाद
२२-१२-६५

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम ! साहित्य-सौरभ की प्रति मिली होगी। कृपया पढ़कर उस पर विस्तार पूर्वक लिखिए। पुस्तक को मैंने स्वर्गीय कृष्ण बल्देव वर्मा जी को समर्पित किया है और मुझे विश्वास है कि यह समर्पण आपको पसंद आवेगा।

आप तो श्री कृष्ण बल्देव जी को भली-भाँति जानते थे। अपने लेख में, मैंने आपको लिखे गए पत्रों का उल्लेख किया है। स्व० ब्रजमोहन वर्मा उनके भतीजे थे, उनका स्वर्गवास सन् १९३७ में हो गया था।

२९ वर्ष बाद उनका यह साहित्यिक श्राद्ध सम्पन्न हो सका है। जब वर्मा जी अपने यश:शरीर से २९ वर्ष बाद पधारे हैं तो सूक्ष्म चाय के साथ उनका स्वागत होना चाहिए। क्या ही अच्छा हो यदि आप, रावत जी और माहौर जी आपस में चाय के साथ उनकी चर्चा करें।

ऐसे छोटे-छोटे उत्सव होते रहने चाहिए एक प्रति श्री रावत जी को और एक माहौर जी को भेज दी गई है।

विनीत
बनारसीदास

(१९७)

फीरोजाबाद
१९-११-६९

प्रियवर,

भारती में आपके दोनों लेख मुझे पसंद आए। महाराज तथा 'परिषद' को याद कर लेना जरूरी भी था। कृतज्ञता का यह तक़ाज़ा था। यदि स्वर्गीय बब्बा जू पर भी एक सचित्र लेख रहता तो और भी ज्यादा अच्छा होता।

यह दुर्भाग्य की बात है कि वर्तमान महाराजा साहब का इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं है। वे चाहें तो अब भी बहुत कर सकते हैं, पर उनकी शिक्षा दीक्षा जिस ढङ्ग पर हुई थी उसने उनको इस योग्य ही नहीं छोड़ा कि अपने पूर्वजों की कीर्तिरक्षा में कुछ भी सहयोग दे सकें। लेकिन श्री मधुकरशाह (राजा बहादुर) बहुत समझदार युवक हैं। वह अमरीका में पढ़ रहे हैं, पर अब तो Privy purse ही खतम होने वाली है—२०, २५ वर्ष भी शायद ही चले, इसलिए वर्तमान नरेशों से कुछ भी आशा रखना व्यर्थ ही होगा।

महाराज वीरसिंहदेव अपनी कोटि के अन्तिम उदाहरण थे—आपका कथन यथार्थ है।

श्री द्वारिकेश जी झाँसी में ही हैं? मध्यप्रदेश का प्रयोग असफल रहा। डालमियाँ का भला कौन मुकाबला कर सकता है? प्रान्त निर्माण इस समय अस्वाभाविक है, पर बुन्देलखण्ड के लिए जो कुछ कर सकें करें।

विनीत

बनारसीदास

(१९८)

फीरोजाबाद

५-८-७०

प्रिय द्विवेदी जी,

प्रणाम! साप्ताहिक हिन्दुस्तान अपना ब्रजाङ्क २३ ता० को निकाल रहा है। उसकी पूर्व सूचना भी उसने मुझे नहीं भेजी थी। जब मैंने लिखा तब एक लेख लिखने का आग्रह किया। मैंने लेख 'नवीन ब्रज के निर्माण पर' भेज दिया है।

एक निजी पत्र में मैंने साप्ताहिक हिन्दुस्तान वालों से प्रार्थना की है कि वे बुन्देलखण्ड-अङ्क भी निकालें। ब्रज-अङ्क निकल जाने पर आप उसकी विस्तृत आलोचना करें और बुन्देलखण्ड-अङ्क के लिए अनुरोध भी करें।

भाई द्वारिकेश जी, श्री रामसेवक रावत, डा० भगवानदास माहौर, मित्र जी, बादल जी, प्रभृति सभी को पत्र भेजकर बुन्देलखण्ड-अङ्क के लिए अनुरोध करना ही चाहिए। कोई मौका अपने जनपद को आगे बढ़ाने का हाथ से न जाने देना चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दुस्तान ६५ हजार छपता है। मैंने उसके सम्पादक को लिख दिया है कि मैं बुन्देलखण्ड अङ्क के लिए भरपूर मदद दूंगा। आप लोग भी ऐसा आश्वासन दे दें।

आप कौन सी पुस्तक भेज रहे थे ? वह नहीं मिली । श्री द्वारिकेश जी को मेरा प्रणाम कहिए ।

कुण्डेश्वर विद्यालय से श्री रूसिया जी का Transfer हो गया है। यह एक दुर्घटना है । मेरा स्वास्थ्य साधारणत: ठीक चल रहा है । जन्माष्टमी पर मथुरा पहुँचने का निमंत्रण भाई वृन्दावनदास जी दे गए हैं । वे ब्रजभारती खूब निकाल रहे हैं ।

ब्रज-भारती आपको मिलती है या नहीं ? बड़े भैया का आत्म-चरित छप गया है क्या ? भाई सत्यदेव ने उसकी प्रति भेजी नहीं । मित्र जी की व्यास जी विषयक पुस्तक कितनी छप चुकी है ?

विनीत
बनारसीदास

श्री राजेन्द्र रंजन एम. ए. को लिखा हुआ पत्र

(१९६९)

फीरोजाबाद
५-११-७०

प्रिय रंजन जी,

पालागन ! बाबू वृन्दावनदास जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ अवश्य भेंट किया जाय, यह प्रस्ताव भाई अमृतलाल जी ने किया था और मैंने उसका हार्दिक समर्थन किया है । उस ग्रन्थ में किस प्रकार के लेख तथा चित्र अङ्क और तथ्य रहें, इस बारे में आप गश्ती चिट्ठी भेजकर विचार परिवर्तन कर सकते हैं ।

भाई वृन्दावनदास जी को कीर्ति अथवा विज्ञापन की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है और जीविका के विषय में भी वे बिल्कुल निश्चिन्त हैं । हम लोग उनके शुभनाम का आश्रय लेकर ब्रजभूमि के विषय में एक सन्दर्भ ग्रन्थ तैयार कर सकते हैं । हमारे ब्रजमंडल में जहाँ कहीं भी जिस किसी क्षेत्र में उन्नति के कुछ बिरवे दीख पड़ें उन्हें संचित कर उन्हें पल्लवित करना है । मेरे मन में जो विचार इस समय आ रहे हैं, उन्हें बिना किसी क्रम के—छोटे बड़े का खयाल किये बिना—यहाँ लिखे देता हूँ ।

मेरा पहला विचार तो यह है कि मथुरा, आगरा, एटा, मैनपुरी, अलीगढ़ तथा इटावे इन छै जिलों के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों का सर्वे (सर्वेक्षण) करा लिया जाय । किस किस स्थान पर कौन कौन साहित्यिक संस्था—

पुस्तकालय इत्यादि–काम कर रही है उनका संक्षिप्त रैकर्ड तो इस ग्रन्थ में दिया ही जाना चाहिये।

मेरा दूसरा विचार यह है कि स्थानीय विद्यालयों की पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग जनपदीय विषयों के लिये किया जा सकता है। मेरा तीसरा विचार यह है कि अध्यापकों तथा विद्यार्थियों की टोलियाँ वसन्त ऋतु में व्रज-मण्डल के भिन्न-भिन्न स्थानों की यात्रा करके उनके बारे में सचित्र लेख लिखें छलेसर [जिला आगरा] में भूमि कटन को रोकने के लिये जो सफल प्रयोग किया गया है—जंगल में जो मंगल उपस्थित कर दिया गया है—उसका ज्ञान तो व्रजभूमि के प्रत्येक छात्र छात्रा को होना ही चाहिये।

आगरे से ८ मील दूर श्री राजाबाबू [श्री प्रताप नारायण अग्रवाल] का जो उपवन है, वह भी एक तीर्थ स्थल माने जाने योग्य है। उसमें ६ हज़ार पेड़ तो केवल आमों के ही हैं और कई फर्लांग तक जामुन के पेड़ ही पेड़ हैं। मैं दो बार उसकी तीर्थयात्रा कर चुका हूँ। सूर कुटी तो तीर्थ-स्थल बन ही चुकी है।

होलीपुरा तथा कोटला के कालेज भी शिक्षा सम्बन्धी तीर्थ माने जा सकते हैं। मैंने दोनों के ही दर्शन किये हैं और उनसे प्रभावित हुआ हूँ। होलीपुरा का कालेज तो एक ऐसे क्षेत्र में स्थित है जो पच्चीस वर्ष पहले बिल्कुल ही उपेक्षित था।

पर हमें शिक्षा तथा साहित्य के साथ साथ उद्योग धंधों की ओर भी ध्यान देना है। फीरोजाबाद के काँच के व्यापार अथवा अलीगढ़ के ताले चाकू इत्यादि के व्यापार को भुलाया नहीं जा सकता। हम लोग जो अपने को साहित्यिक कहते हैं उद्योग इत्यादि की प्रायः उपेक्षा ही करते हैं। फीरोजाबाद निवासी होने पर भी हम इस नगर के व्यवसाय के बारे में बहुत कम जानते हैं। इस विषय पर श्री बालकृष्ण गुप्त ने रेडियो पर जो वार्ता दी थी, उसे सुनकर हमें आश्चर्य हुआ था, यद्यपि वह वार्ता हमने अधूरी ही सुनी थी। आगरे के श्री भार्गव जी के उद्योग की एक झलक ही हमने देखी थी।

प्रवासी व्रजवासियों को भी हम न भूलें। कलकत्ता बम्बई इत्यादि में बस कर व्रजवासियों ने जो उन्नति की है उसका लेखा जोखा भी हमारे पास रहना चाहिये। भाई मधुसूदन चतुर्वेदी सुदूर हैदराबाद में बड़ा उपयोगी काम कर रहे हैं। व्रज की पत्र पत्रिकाएँ, व्रज के कवि, व्रज के साहित्यिक और चित्रकार इत्यादि विषयों पर भी शोधपूर्ण लेखों का संग्रह हमें करना ही है।

आचार्य प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी के महत्वपूर्ण कार्य से हमारे कितने छात्र परिचित हैं ? स्वर्गीय हरदयालुसिंह तथा कौशलेन्द्र जी के जीवन के विषय में बहुत कम लोग जानते हैं। और हमारी ब्रजभाषा तो कभी राष्ट्रभाषा रह चुकी है और उसमें कविता करने वाले भिन्न-भिन्न प्रदेशों में उत्पन्न हुए हैं।

ब्रजभूमि के ख़यालगो लोगों को भी भुलाना नहीं होगा। खुर्जा के एक प्रसिद्ध ख़यालगो—शायद उनका शुभनाम हरिवंश था—ने कई अच्छे शिष्य तैयार किये थे। फीरोजाबाद के श्रीयुत नैकसा ने उन्हीं से प्रेरणा ली थी। इस प्रसंग में सर्वश्री रूपकिशोर तथा पन्नालाल को कौन भूल सकता है। भाई अयोध्याप्रसाद जी पाठक तो खयालबाजों की मंडली के प्रधान थे।

ब्रजभूमि मल्ल विद्या के विशेषज्ञों – पहलवानों – का भी केन्द्र रहा है। वकौल बल्देव गुरु स्वयं भगवान कृष्ण इस विषय के आचार्य थे और सुप्रसिद्ध पहलवान गामा भी प्राइवेट तौर पर उन्हें अपना इष्ट मानते थे।

गायकों के विषय में यह मंडल विशेष स्थान रखता है। ब्रज की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उन्नति के विषय में भाई प्रभुदयाल जी मीतल का कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है।

पोद्दार ग्रन्थ तो एक प्रकार से ब्रज का एक विश्व कोष ही बन गया था। डाक्टर सत्येन्द्र का कार्य भी बहुत प्रशंसनीय रहा है और श्री कृष्णदत्त वाजपेयी जी का भी। अभी बहुत से यज्ञ हमें करने हैं—

जैसे धाँधूपुर में सत्यनारायण कविरत्न के स्मारक का निर्माण। श्रीधर पाठक की जौधरी भी बिल्कुल उपेक्षित ही रही है। हमारे लिये यह घोर लज्जा की बात है कि फीरोजाबाद में भी जहाँ के वे छात्र थे, पाठक जी का कोई भी स्मारक नहीं।

इटावे में भाई सूर्यनारायण अग्रवाल ने समाज सेवा के जो कार्य किये हैं उनका भी ब्यौरा श्री वृन्दावनदास ग्रन्थ में रहे। इटावे को ब्रज में हमने शुद्ध सेवा की भावना से ही शामिल किया है और बुलन्दशहर के एक भाग में तो ब्रजभाषा बोली भी जाती है। आचार्यवर जीवनदत्त जी नरवर वालों के विषय में स्मृति-ग्रन्थ की आयोजना बन चुकी है।

ब्रज की सर्वांगीण उन्नति के लिये बीसियों कार्यकर्ताओं के पारस्परिक सहयोग की आवश्यकता है। यह जनपदीय कार्य केवल सुविधा के ख़याल से (अपनी सीमित शक्तियों पर ध्यान देते हुए) किया जाना चाहिये। दरअसल हमें सम्पूर्ण भारतवर्ष को ही अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान देना है—उसके

समग्र रूप की ही आराधना करनी है—और अपने जनपद की सेवा भी वस्तुतः उसी की सेवा है। हम लोग तो 'वसुधैव कुटम्बकम्' की नीति के अनुयायी है, इसलिए क्षुद्र प्रान्तीय भावना को कभी भी अपने हृदय में स्थान दे ही नहीं सकते। विश्व विख्यात रूसी लेखक गोर्की का कथन था कि हरेक जनपद की एक आत्मा होती है। हमें ब्रज की आत्मा को पहचानना है।

और संसार के सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखक चैखव का कहना था "यदि प्रत्येक आदमी उस भूखंड को [जमीन के उस टुकड़े को] जो उसे मिला हुआ है सुन्दर बना दे तो यह विश्व कितना सुन्दर बन सकता है।" ब्रजभूमि के प्रत्येक छोटे से छोटे स्थल को हमें सुन्दर बनाना है। आचार्य विनोवा जी ने घोषणा की थी "आओ हम अपने प्रत्येक ग्राम को गोकुल बनावें" हम ब्रजवासियों के सामने यही एक महान कार्य करने को पड़ा है।

विनीत
बनारसीदास

श्री गणेश चौबे पो० बंगरी (चम्पारन) को लिखे गये पत्र

(२००)

टीकमगढ़,
१३-९-४६

प्रियवर,

वन्दे ! कृतज्ञ होऊँगा यदि आप कृपाकर साथ के लेख के विषय में अपनी सम्मति लिख भेजने का कष्ट स्वीकार करें।

ब्रजसाहित्य मंडल ने एक जनपदीय कार्यक्रम बनाया है उसकी एक प्रति आप 'ब्रजभारती' कार्यालय मथुरा से मंगा लीजिये, और भोजपुरी भाषा के संगठन के लिये उसके आवश्यक अंश ले सकते हैं। आशा है कि आप अब स्वस्थ होंगे।

विनीत
बनारसीदास

(२०१)

कुण्डेश्वर
टीकमगढ़
१३-१-४९

प्रियवर,

वन्दे ! कृपापत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। बापू के एक पत्र की प्रतिलिपि आपकी भेंट है। आप उस भेंट के पूर्ण अधिकारी हैं, क्योंकि आप उस मार्ग के

पथिक बन रहे हैं, जिसकी ओर बापू ने इशारा किया था। पर एक प्रश्न मैं पूछना चाहता हूँ। क्या खेती में किया हुआ शारीरिक श्रम—यदि उसकी मात्रा अधिक हो जाय—मस्तिष्क पर हानिकारक प्रभाव तो नहीं डालता ? बागवानी और साहित्य को भी Emerson नहीं मिला पाते थे, पर खेती और साहित्य तो और भी कठिन है। पर बकौल बापू आज तो हमैं ग्रामों में ही साहित्य पैदा करना है। तदर्थ मैं अपने को उपयुक्त नहीं पाता। मुझे तो सर्वोतम मानसिक भोजन नित्य प्रति चाहिये। अच्छे से अच्छे अंग्रेजी ग्रन्थ आते ही रहने चाहिये, यद्यपि मेरे प्रिय ग्रन्थकार ७, ८ से अधिक नहीं।

आप मेरी रचनाओं के लिये विन्ध्यवाणी के ग्राहक बने हैं, इसलिये मेरी जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है। अपने कुछ लेखों की प्रतियाँ भेजूंगा।

विन्ध्यवाणी का स्पेशल गांधी अङ्क निकालना है। उसी में व्यस्त हूँ। कभी अन्तर्जनपदीय सम्मेलन करना है। उसमें ब्रज, भोजपुर, बुन्देलखन्ढ, मालवा इत्यादि के प्रतिनिधि बुलाने हैं। देखिये कब अवसर मिलताहै। शेष फिर किसी पत्र में।

विनीत
बनारसीदास

(२०२)

टीकमगढ़
२६-७-४९

प्रियवर,

वन्दे ! १८ ता० का कृपापत्र मिला। उसके कुछ अंशों को टाइप कराके समानशील लेखकों तक आपके नाम तथा पते के साथ पहुँचा दूंगा। निस्सन्देह आपका कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। प्रकाशक मिलना इस समय तो कठिन ही है। वैसे मुझे उस क्षेत्र का पता भी नहीं। क्या सम्मेलन वाले आपका एक ग्रन्थ न ले सकेंगे ? यदि आप महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जी से प्रार्थना करें तो शायद काम बन जाय। श्रद्धेय टंडन जी को भी लिख सकते हैं। यदि आप अपने बारे में कुछ नोट्स भेज दें–कब से काम प्रारम्भ किया, कितनी कठिनाइयों के बीच में से निकलना पड़ा इत्यादि इत्यादि तो किसी पत्र में भी कुछ लिख सकता हूँ। साहितियकों की कठिनाई मैं भली-भाँति जानता हूँ। मैं स्वयं १९१२ से लिख रहा हूँ। और मेरे सामने भी वे सब कठिनाई विद्यमान हैं। पर हमें हिम्मत नहीं हारनी है। पारस्परिक सहयोग तथा सौहार्द को यदि

हम स्थापित कर सकें तो जीवन में कुछ सफलता भी अधिक मिलेगी और आनन्द की भी वृद्धि होगी। विस्तार से फिर लिखूंगा।

बनारसीदास

(२०३)

फीरोजाबाद
२१-१-६७

प्रियवर,

प्रणाम ! आपका कृपापत्र बहुत दिनों से नहीं मिला। भाई जगदीश प्रसाद जी ने कभी-कभी आपके दिल्ली पहुँचने की बात लिखी थी। अन्तर्जनपदीय परिषद के पुनरुद्धार करने की जरूरत है। आपको शायद पता ही होगा कि मैंने उसकी स्थापना हाथरस के ब्रजसाहित्य मंडल के अधिवेशन पर कराई थी। लोक कथाओं के सम्पादन का कार्य कहाँ तक अग्रसर हुआ ? आप, डा० श्याम परमार, जगदीश चतुर्वेदी, गौरी शङ्कर द्विवेदी, राकेश जी प्रभृति मिलकर जनपदीय कार्यक्रम को आगे बढ़ावें तो उत्तम हो। भोजपुरी भाषा में कहीं कुछ हो रहा है क्या ? शायद राजस्थानी लोग सबसे आगे हैं। अवधी वाले क्या कुछ कर रहे हैं ? डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की मृत्यु सचमुच बड़ी दुर्घटना है। मैंने उन पर लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान में लिखा था। आज उसे अन्य पत्रों को भी भेजा है। उनके १०० एक सौ से अधिक पत्र मैंने टाइप करा लिये थे और उन्हें सम्मेलन पत्रिका में छपने के लिये भेज दिया है। कलकत्ते से निकलने वाले Folk lore के मैंने दर्शन भी नहीं किये और न करेन्ट इन्डियन प्रेस के। भाई कृष्णानन्द गुप्त (पता—गरौठा जिला झाँसी) ने लोकवार्ता के चार अङ्क निकाले थे और इस विषय पर काफी मसाला इकठ्ठा किया था। कोई न कोई व्यक्ति ऐसा होना चाहिये जो अपने को केन्द्र बनाकर इस विषय के अन्य लेखकों से निकट सम्पर्क रक्खे।

विनीत
बनारसीदास

साहित्याचार्य श्री श्यामसुन्दर बादल को लिखे गये पत्र

(२०४)

टीकमगढ़
७-११-४६

प्रिय बादल जी,

सादर प्रणाम ! कृपापत्र मिला। श्रद्धेय गुरु जी का जीवन चरित तो वर्णीग्रन्थ के लिये भेज ही दिया गया है। अन्य कोई चीज़ जो अभी कहीं छपी

न हो भेजिये। श्री सम्पूर्णानन्द जी की शिक्षा सम्बन्धी नीति से मेरे अनेक मित्र जो इस विषय के ज्ञाता हैं, असन्तुष्ट हैं। मैंने उन्हें लिखा भी कि वे निस्सङ्कोच उनकी आलोचना करें, मैं प्रकाशित कर दूंगा। पर इस अवसर को उन्होंने ही अनुपयुक्त समझा। मेरा केवल एक ही सिद्धान्त इस बारे में रहा है वह यह कि इस प्रकार कुछ अच्छे लेखों का संग्रह हो जायगा। सम्पूर्णानन्द जी से अपना सम्बन्ध सन् १६१५ से है पर अभी तक वह घरेलू सम्बन्ध ही रहा है। हम लोगों के राजनैतिक विचारों में बहुत अन्तर है। वे शासक हैं और मैं शासक-मात्र का विरोधी। कवि का आत्मघात नामक लेख कृपया पढ़ लीजिये।

चतुरेश जी यहाँ नहीं पधारे इसका मुझे पछतावा रहेगा। स्वामी जी की सेवा में मेरा प्रणाम निवेदन कीजिये। इधर मैं व्यस्त रहा हूँ।

बनारसीदास

(२०५)

१२३ नॉर्थ ऐवेन्यू
नई दिल्ली
२०-५-६५

प्रिय बादल जी,

प्रणाम! आचार्य श्री पद्मसिंह जी अपनी प्रत्येक पुस्तक की २००-२५० प्रतियाँ भेंट में दे देते थे। उनका कथन था कि पुस्तक पढ़ने के अधिकारी नहीं पाते और जो खरीदते हैं वे अधिकारी नहीं होते। इस सिद्धान्त का आप भी पालन कीजिये—पूर्णतया न सही अंशतः ही सही।

आपकी पुस्तक की कल मैंने एक प्रति श्री विष्णु प्रभाकर जी को और एक श्री देवराज जी दिनेश को भेंट कर दी और सम्मति के लिये भी अनुरोध कर दिया। मैं भी समय मिलते ही कुछ लिखूंगा। इस समय तो अत्यन्त व्यस्त हूँ।

विनीत
बनारसीदास

(२०६)

६६ नॉर्थ-ऐवेन्यू
नई दिल्ली
२१-४-६८

प्रिय बादल जी,

प्रणाम! दीवान साहब का पूर्ण अभिनन्दन ग्रन्थ मिला। निस्सन्देह यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है और आप तथा आपके साथी हार्दिक बधाई के

पात्र हैं। जनपदीय खण्ड को मैं अभिनन्दन ग्रन्थ से कम गौरवयुक्त नहीं मानता। सफल और साधन सम्पन्न व्यक्तियों का अभिनन्दन करना आसान है पर, उन उपेक्षित 'तथाकथित' छोटे-छोटे कार्य कर्ताओं को स्मरण करना कठिन है, जो नींव की पत्थर की तरह दवे पड़े हैं। कई दिन से ज्वर आ रहा है। मलेरिया है। कोई चिन्ता की वात नहीं।

स्व० शहीद खरे जी को भी आपने याद कर लिया है, यह देखकर सन्तोष होता है। आप कुण्डेश्वर को भी नहीं भूले। असंख्य सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करके आपने निस्सन्देह एक स्वस्थ परम्परा कायम की है आशा है कि कभी मुझे भी दीवान साहब के दर्शन करने का सुअवसर मिलेगा।

विनीत
बनारसीदास

डा० विष्णुदत्त पाठक को लिखे गये पत्र

(२०७)

फीरोजाबाद
२५-६-७०

प्रिय पाठक जी,

प्रणाम ! आपका १६ ता० का कृपापत्र यथा समय मिल गया था, पर वह कहीं इधर का उधर पड़ गया और कल ही तलाश करने पर मिला है। विलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी हूँ।

आपके कार्ड को मैं बन्धुवर वृन्दावनदास जी बी.ए., एल-एल बी. अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल मथुरा को भेज रहा हूँ। वे आपके कार्य में भरपूर सहयोग देंगे। मैं तो ७८ वीं वर्ष में retire हो चुका हूँ, बहुत कम काम कर पाता हूँ। वैसे भी अपनी ब्रजभूमि से ५० वर्ष अलग रहने के कारण मैं अपने जनपद तथा अपनी मातृभाषा की अधिक सेवा नहीं कर सका। आप अवश्यमेव भरतपुर जनपद के लिये यथाशक्ति कार्य करें। श्री वृन्दावनदास जी इस समय हमारी ब्रजभूमि के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता है। उनको पूरा-पूरा सहयोग दीजिये।

स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक पृथिवी पुत्र तो आपने देखी ही होगी। रामप्रसाद एण्ड सन्स पुस्तक विक्रेता हास्पिटल रोड आगरा से ५) रुपये में मिलती है। उसमें वर्णित जनपदीय कार्यक्रम को आप भरतपुर जनपद में लागू करें।

वकौल गोर्की Every region has its soul भरतपुर की भी एक आत्मा है। उसे जागृत कीजिये। मैं दो बार भरतपुर की यात्रा कर चुका हूँ। एक बार तो सम्मेलन में, दूसरी बार आचार्य गिडवानी के साथ। उस सम्मेलन में कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी शामिल हुए थे।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

मैं ज्यादा लिख नहीं पाता।

(२०८)

फीरोजाबाद

१६-७-७०

प्रिय पाठक जी,

प्रणाम ! आपका कार्ड कल मिला। मुझे यह अधिकार तो है नहीं कि आपको कुछ उपदेश दे सकूँ, हाँ इतना अवश्य लिख सकता हूँ कि यदि मैं आपकी स्थिति में होता तो क्या करता।

मैं अपने विद्यार्थियों को स्व० वासुदेवशरण अग्रवाल के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'पृथिवी पुत्र' मूल्य ५) पता—रामप्रसाद एण्ड सन्स हास्पिटल रोड आगरा को पढ़ने का आग्रह करता। अपने प्रत्येक छात्र से मैं निवेदन करता कि वे जनपदीय कार्यक्रम के अधीन अपने-अपने स्थानों में कुछ काम तो अवश्य करें—लोकवार्ता संग्रह, ग्रामीण कहानियाँ, लोकोक्ति संग्रह, इत्यादि।

मधुकर का जनपद अङ्क शायद डा० सत्येन्द्र के यहाँ पढ़ने को मिल जाय। उसकी बहुत सी प्रतियाँ मैंने जयपुर सम्मेलन पर वितरित की थीं। अब वह सर्वथा अप्राप्य हो गया हैं—यहाँ तक कि मास्को के डा० चर्नीशोव को उसकी मैक्रो फिल्म करानी पड़ी।

भरतपुर का साहित्यिक इतिहास लिखा जा सकता है। सम्भवतः स्व० मयाशङ्कर याज्ञिक का पुस्तकालय तो हिन्दू विश्व विद्यालय या ना. प्र. सभा को दे दिया गया था, नहीं तो बहुत सी सामग्री वहीं मिल जाती। प्रोफेसर जीवनशङ्कर याज्ञिक आगरा कालेज में मेरे अध्यापक थे। अब वे हिन्दू यूनीवर्सिटी में retired life व्यतीत कर रहे हैं। स्व० मयाशङ्कर जी उनके काका थे।

स्व० जगन्नाथदास अधिकारी को भी मैं जानता था। कवीन्द्र श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर हि. सा. सम्मेलन के केवल एक ही अधिवेशन में गये थे—यानी भरतपुर के सम्मेलन में।

भरतपुर की साहित्य समिति बहुत पुरानी है—शायद १६११ के करीब उसकी स्थापना हुई थी। वहाँ शायद कुछ पुराने Record सुरक्षित हों। ब्रजभारती के पुराने अङ्क (जितने भी मिल सकें) खरीद लीजिये। ब्रजभूमि का हमें पुनर्निर्माण करना है। ब्रजमण्डल में जहाँ कहीं जो कुछ अच्छा कार्य हो उसका रिकार्ड आप रखिये। अधिक क्या लिखूं।

श्री प्रभुदयाल मीतल जी के विषय में एक ग्रन्थ शीघ्र ही छपेगा। डा० पचौरी ने उसे लिखा है। डैम्पियर पार्क मथुरा में मीतल जी रहते हैं। उनसे पता लग जायगा।

विनीत
बनारसीदास

श्री त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल को लिखा गया पत्र

(२०६)

नई दिल्ली २२
२६-२-७१

प्रियवर,

वन्दे ! आपका कृपापत्र मिला। अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। आप ब्रज जनपद की साहित्यिक संस्थाओं के विषय में एक Reference Book निकालना चाहते हैं, यह पढ़कर हर्ष हुआ। यद्यपि मैं ७६ वीं वर्ष में अधिक काम नहीं कर सकता, तथापि जो थोड़ी सी सेवा मुझसे बन पड़ेगी स्वस्थ होने पर अवश्य करूंगा।

किसी भी यज्ञ को प्रारम्भ करने से पहले उपयुक्त साधन जुटा लेने चाहिए। भले ही देर लगे। सन्दर्भ ग्रन्थ के लिए आप विज्ञापन भी लें ताकि कुछ खर्च तो उनसे निकले। चित्र भी ग्रंथ में काफी होने चाहिए। उसे आप ब्रज की Directory ही बना दें। क्यों न उसमें उद्योग धंधों पर भी लेख रहें ? मेरा सुझाव है कि, यदि ब्रजमण्डल की Directory निकाली जाय तो वह शीघ्र खप सकती है।

श्री गणेशलाल शर्मा 'प्राणेश' एम. ए. ने मेरे आग्रह पर फीरोजाबाद परिचय नामक ग्रंथ निकाला था। मूल्य था ५) रु०। इस ग्रंथ में उन्होंने काफी विज्ञापन दिए थे, जिससे उन्हें अर्थ प्राप्ति भी हुई थी। साहित्य सेवियों के परिचय वाला ग्रंथ बिकेगा नहीं।

ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण कराइये। इटावे को भी ब्रज में ही शामिल कीजिए। इस ग्रंथ के लिए परिश्रम काफी करना पड़ेगा। घूमना भी पड़ेगा। पुस्तक छपे तब छपे, पर मसाला (Matter) तो संग्रह कर ही लीजिए।

ब्रज जनपद की सर्वांगीण उन्नति हमारा लक्ष्य होना चाहिए। स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का ग्रंथ 'पृथिवी पुत्र' हमारे लिए बाइबिल है। अधिक क्या लिखूं।

बनारसीदास

श्री उमाशङ्कर जी दीक्षित को लिखा गया पत्र

(२१०)

फीरोजाबाद
१२-१०-६७

प्रिय दीक्षित जी,

प्रणाम ! कृपापत्र मिला। ब्रजभाषा की परीक्षाओं के प्रारम्भ करने के पहिले उसके सभी पहलुओं पर विचार कर लेना है। इन परीक्षाओं के पास करने वालों को कुछ प्रलोभन तो हम दे नहीं सकते और आज का विद्यार्थी वर्ग इतना स्वार्थी बन गया है कि सर्वथा निस्वार्थ भाव से वह कोई काम—चाहे वह उसकी बौद्धिक उन्नति का ही क्यों न हो—करेगा नहीं। यदि ब्रजभाषा से प्रेम उत्पन्न हो जाय और ब्रज जनपद में पर्याप्त साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जाग्रति पैदा हो जाय तो इन परीक्षाओं का गौरव भी धीरे-धीरे बढ़ जायगा। इन परीक्षाओं से कुछ हानि तो होने से रही।

"अल्पंऽपि अल्प धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।

ब्रजभाषा की परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्तियों को यदि प्राइवेट संस्थाऐं कुछ तरजीह दें तो भी उनकी लोकप्रियता बढ़ सकती है। इतना लाभ तो तुरन्त ही होना शुरू हो जायगा कि विद्यार्थी ब्रजभाषा के ग्रन्थ पढ़ने लगेंगे।

१६ अप्रैल १६६८ को सत्यनारायण कविरत्न की ५० वीं श्राद्धतिथि है। क्यों न उस समय इस पुण्य कार्य का श्री गणेश किया जाय। कृपया यह पत्र श्री वृन्दावनदास जी को भी दिखला दीजिये। उन्हें मेरा प्रणाम कहिए।

विनीत
बनारसीदास

श्री कृष्णगोपाल जी चौधरी इटावा को लिखा गया पत्र

(२११)

फीरोजाबाद
२६-११-७०

प्रिय चौधरी जी,

प्रणाम ! विस्तृत पत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। मेरा तो खयाल है कि उपवन लगाकर आपने जो महत्वपूर्ण कार्य किया था वह किसी भी हालत में साहित्यिक कार्य से कम गौरवजनक नहीं था। Perhaps that was of much greater importance than any literary work. साहित्य क्षेत्र और कृषि क्षेत्र दोनों को पूरा पूरा समय चाहिये और बहुत कम व्यक्ति ऐसे हुए हैं जो दोनों काम साथ साथ कर सकते थे। एडवर्ड कारपेंण्टर उन व्यक्तियों में एक थे मलाबार फार्म के लेखक ने भी वह करिश्मा कर दिखाया था। एमर्सन ऐसा न कर सके। श्रीराम शर्मा ने निस्सन्देह कुछ हद तक किया।

महात्मा जी के एक पत्र की नकल भिजवाऊँगा उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया था कि खेती की ओर वे बहुत कम ध्यान दे सके। इस कारण उन्होंने अपने को 'मूरख' कहा था। That letter he wrote to Pt. Tota Ram Sanadhya. It has been in my possession all along and will now find its rightful place in the National archives

'शिशु भवन' को प्रभावशाली साहित्यिक केन्द्र बनाइये। अपने घर पर ही आप एक छोटा सा संग्रहालय क्यों नहीं कायम कर लेते ? I begin my 79th year on Dec. 24th and there is not much time left to me, but all the same, I am determined to sow as many seeds of good ideas as possible. भाई श्री सत्यनारायण चतुर्वेदी एक विभूति हैं—a most remarkable personality indeed. Write out an article about him, please—

अपने लेखों की प्रति श्री वृन्दावनदास जी—ब्रजसाहित्य मंडल को भी भेजते रहिये। वे हमारे साहित्यिक कमिश्नर हैं।

विनीत
बनारसीदास

डा० प्रभाकर माचवे को लिखा गया पत्र

(२१२)

१०-१-७१

प्रिय माचवे जी,

मैं आपको हार्दिक बधाई का पत्र भेजने वाला ही था कि आपका कार्ड मिल गया। निस्सन्देह कार्यकारिणी ने आपको नियुक्त करके बहुत बुद्धिमानी का कार्य किया है। हिन्दी वालों को भी इससे परम सन्तोष होना चाहिये।

मैं चाहता हूँ कि एक बढ़िया लेख श्री कृपलानी जी के विषय में लिखूं। शान्ति निकेतन के दिनों से मैं उनसे परिचित हूँ और उनके सद्व्यवहार, साहित्यिक योग्यता तथा क्रियात्मक कल्पना शक्ति का कायल भी हूँ। उन्होंने अकादमी की जो सेवा की है उस पर अधिकार पूर्वक बन्धुवर ह. प्र. द्विवेदी तथा आप ही लिख सकते हैं—क्योंकि इधर ७ वर्ष से मैं दिल्ली से दूर ही रहा हूँ—पर पुराने परिचितों में मैं भी एक हूँ। मेरा सर्वप्रथम कर्त्तव्य भी है।

आप जानते ही हैं कि मेरे विचार राष्ट्रभाषा के विषय में अन्य लोगों के विचारों से भिन्न हैं। भारत की सभी मुख्य-मुख्य भाषाओं को मैं राष्ट्रभाषा मानता हूँ और किसी भी हालत में किसी पर भी हिन्दी लादना नहीं चाहता। गुरुदेव के वे शब्द अब भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं—"Why do you hang the sword of Hindi over our heads? Produce great literature and we will all learn Hindi."

हिन्दी जगत का वर्तमान नेतृत्व बहुत ही गलत हाथों में रहा है। They have made a mess of whole thing.

विनम्रता से और सबकी सेवा करते हुए ही हिन्दी सभी भाषाओं में अग्रणी बन सकती थी पर इतनी समझदारी हिन्दी वालों ने नहीं दिखलाई। एक बार श्री राधाकृष्णन् की कोठी पर 'Currents & Cross Currents of Hindi Literature' इस विषय पर मुझे अंग्रेजी में बोलना पड़ा था। दरअसल भाषण तो आचार्य नरेन्द्रदेव जी को देना था, पर वे बीमार पड़ गये और मौलाना आजाद ने प्रो० हुमायूं कबिर को भेजकर मुझे हुक्म दिया कि मैं ही बोलूं, क्योंकि मैं 'right tone' दे सकता था। प्रो० कबिर ने मेरे घर आकर मौलाना का यह आदेश सुनाया था।

मजबूरन मुझे बोलना पड़ा। मनोवैज्ञानिक ढङ्ग पर मैंने अन्य राष्ट्रीय भाषाओं की जी खोलकर प्रशंसा की मराठी, गुजराती, बंगला और उर्दू तक

की और अन्त में संक्षेप में हिन्दी के विषय में भी विनम्रतापूर्वक आशाप्रद दो चार बातें कह दीं। हिन्दी वाले चार व्यक्ति उस मीटिङ्ग में मौजूद थे। उनमें से एक ने राष्ट्रकवि मैथिली शरण जी गुप्त को लिख दिया "चौबे जी ने हिन्दी की लुटिया डुबो दी।" हम लोगों ने अपनी मूर्खता से सुनीति बाबू जैसे हिन्दी समर्थक की सहानुभूति खो दी। मैंने सुना था कि अहमदाबाद के श्री जोशी जी भी हिन्दी वालों की स्वार्थप्रियता से कुछ खिन्न से हो गये हैं। हम लोग षड़यंत्र करके उच्च पदों पर हिन्दी वालों को ही बिठला देना चाहते हैं।

अंग्रेजी के तख्तों को उखाड़ना जैसी मूर्खतापूर्ण कार्यवाही जो लोग कर सकते हैं उनकी अकल पर तरस आता है। आज से तीस बत्तीस वर्ष पहले मैंने एक लेख लिखा था कि हमें हिन्दी प्रचार का काम छोड़ ही देना चाहिये। उस लेख के विरोध में श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू तथा पूज्य टंडन जी ने भी लिखा था। पर मैं समझता हूँ कि मेरी बात गलत नहीं थी। श्रेष्ठ साहित्य की सृष्टि ही हम लोगों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। शेष बातें अन्य भाषा वालों पर छोड़ देनी चाहिए। हिन्दी भाषा भाषियों का समूह इतना बड़ा है—इतना साधन सम्पन्न तथा इतना शक्तिशाली कि वह साहित्य सृष्टि के मामले में करिश्मा—miracle कर सकता है। पर जैसा कि मैं लिख चुका हूँ कि नासमझ अदूरदर्शी तथा आत्म-केन्द्रित नेताओं ने हिन्दी का कचूमर निकाल दिया है। और सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि हिन्दी वाले चुपचाप इस अनाचार को सहन कर रहे हैं।

७६ वीं वर्ष में मैं तो Retire हो चुका। कुछ कर धर नहीं सकता फिर भी अपनी बात आपसे निवेदन कर दी है For you cannot misunderstand me जब आप आगरे थे तभी से आपसे परिचय है। आप यहाँ पधार भी चुके हैं। फरवरी के प्रारम्भ में दिल्ली आने का विचार है।

बनारसीदास

पुनश्च—

इतनी लम्बी चिट्ठी भेजने के बाद मुझे Pliny का वह वाक्य याद आ गया—"I have not time to write you a short letter, therefore I have written you a long one."

पं० झावरमल्ल जी शर्मा को लिखा गया पत्र

(२१३)

फीरोजाबाद
२०-६-७०

श्रद्धेय पंडित झावरमल्ल जी,

सादर प्रणाम! बहुत दिनों बाद आपका विस्तृत कृपापत्र मिला। तदर्थ कृतज्ञ हूँ। २० अगस्त १९६९ को मेरा आपरेशन हुआ था और डाक्टरों

का आदेश था कि मैं ४-५ महीने विश्राम करूँ, पर अपनी बद आदतों के कारण वैसा कर नहीं सका। प्रातःकाल ४, ४॥ बजे उठकर चाय बनाकर पीना और तत्पश्चात् कुछ स्वाध्याय और फिर पत्र-व्यवहार का व्यसन। किसी उर्दू कवि ने कहा था—

"चन्द तस्वीरे बुताँ चन्द हसीनों के खुतूत।
बाद मरने के मेरे घर से ये सामां निकले॥

भले ही उस उर्दू शायर ने अपने विषय में कुछ अत्युक्ति की हो, पर मेरे बारे में वह कविता सोलह आने सच सिद्ध होती है। हाँ बुताँ तथा 'हसीन के अर्थ मेरे यहाँ श्रेष्ठ पुरुष तथा कवि और साहित्यिक हो गये हैं। १२-१४ सन्दूकों में निगेटिव तथा फोटो भरे पड़े हैं—सर्वथा अव्यवस्थित और चिट्ठी पत्रियों से तो कमरे के कमरे भरे हुए हैं। इन सब को विधिवत् छाँटना अत्यन्त ही कठिन कार्य है।

दीर्घ जीवन का यह अभिशाप है कि कितने ही मित्र, जो उम्र में छोटे थे, चले जाते हैं और उनको श्रद्धांजलि अर्पित करना भी कठिन हो जाता है। जो उम्र में बड़े थे उनका जाना तो स्वाभाविक है—यद्यपि अत्यन्त खेदप्रद—पर छोटों का जाना तो हृदय विदारक हो जाता है। पालीवाल जी, नवीन जी तथा श्रीराम जी छोटे थे—यहाँ तक कि राहुल जी तथा शिवपूजन जी भी अनुज थे। सुदर्शन जी भी उम्र में छोटे थे। हेमचन्द्र जी भी छोटे थे दिल्ली के गान्धीमार्ग में काम करने वाले एक सज्जन राजबहादुरसिंह जो कलकत्ता समाचार में भी काम कर चुके थे और गर्दे जी के साथ भी, अभी स्वर्गवासी हुए हैं।

परसों स्व० युधिष्ठिर भार्गव की एक पुस्तक मिली है। संस्कृति और जनजीवन। वे कुल जमा ५८ वर्ष की उम्र में ही परलोक पधारे। बहुत बढ़िया भाषा लिखते थे। परिचितों में थे। अब मुझे भी अपना काम समेटना चाहिये। बक़ौल नज़ीर अकबराबादी—

'सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।'

अपना शहीदों सम्बन्धी कार्य मैंने बन्धुवर डाक्टर भगवानदास माहौर, झाँसी तथा श्री रामशरण विद्यार्थी एडवोकेट आनंदमठ, मेरठ को सौंप दिया है।

ब्रजमण्डल का कार्य बन्धुवर वृन्दावनदास जी बड़े सन्तोषजनक ढङ्ग पर कर रहे हैं। हाँ, प्रवासी भारतीयों का काम करने वाला कोई नहीं मिला। यशपाल जी घूम फिर तो आये, पर उनके पास अवकाश नहीं कि वे इस कार्य को आगे बढ़ा सकें।

भाई वृन्दावनदास जी ने अपनी कम्पनी के नाम मुंडन शब्द पर कुछ ऐतराज किया था। तब मैंने उन्हें बतलाया कि मज़ाक मज़ाक में नवीन जी ने श्राद्ध-अभिनन्दन शब्द के साथ मुंडन जोड़ दिया था। जब मैंने उसका मतलब पूछा तो बोले—"यार! तुम्हारी कम्पनी बिना धनवानों को मूँड़ें, चलेगी कैसे ?"

पर मुंडन शब्द को सार्थक तथा यथार्थ करना हम लोगों के लिये कठिन ही है। पोस्टेज इतना बढ़ गया है कि चीजों को रजिस्ट्री द्वारा भेजना मुश्किल हो गया है। मामूली डाक से भेजने में उड़ा लिये जाने का खतरा है और रजिस्ट्री में बहुत पैसा खर्च हो जाता है। क्या किया जाय ?

मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि भारत सरकार के नेशनल ऑरकाइवस (राष्ट्रीय अभिलेखागार) में बहुमूल्य पत्र—गान्धी, रवीन्द्र, शास्त्री और ऐण्ड्रयूज प्रभृति के—सुरक्षित करा देने चाहिये। वैज्ञानिक ढङ्ग पर वहीं सुरक्षित रह सकते हैं, पर न तो जवाहरलाल नेहरू म्यूजियम और न भारत सरकार का वह विभाग उस सामग्री के लिये कुछ भी दे सकता है। अजीब धर्म संकट में हूँ। खैर भाई हरिशङ्कर जी के ४०० पत्रों की ५।५ प्रतियाँ टाइप करादी हैं। उनके स्मृति-ग्रन्थ के लिये कुछ भी नहीं हो सका। श्री सम्पूर्णानन्द स्मृति ग्रन्थ के लिये भी कुछ नहीं हुआ। श्री सुखाड़िया जी ने रजिस्टर्ड पत्र का उत्तर तक नहीं दिया।

ना. प्र. सभा काशी का सम्पूर्णानन्द अङ्क सर्वथा असन्तोष जनक है। केवल कुछ पृष्ठ ही उस महापुरुष के बारे में है। एक लेख मेरे खिलाफ जरूर है। मैं अब सब काम छोड़कर विश्राम करना चाहता हूँ, पर मन नहीं मानता। हाँ कूर्मांचल केसरी बदरीदत्त जी के संस्मरण, जो मैंने आग्रह करके लिखवाये थे, १० जुलाई तक छप जावेंगे। हैदराबाद में छप रहे हैं। श्री शुकदेव पाण्डे जी ने ६००) रुपये वहाँ भेजे हैं।

विनीत
बनारसीदास

पुनश्च—

२१-६-७०

कल लू चल रही थी, सो कुछ तकलीफ हो गई और कल पत्र डाकखाने नहीं जा सका। अब कल सोमवार को जावेगा।

मेरा सुझाव है कि वर्ष में दो बार तो हम लोगों को एक एक सप्ताह के लिये मिल ही लेना चाहिये। नवम्बर में दिल्ली का मौसम ठीक रहता है

सो मैं वहाँ पहुँच सकता हूँ। आप भी पधार सकते हैं। चि० रामगोपाल के पास कमरे अच्छे हैं। वहाँ आप भी ठहर सकते हैं। दिल्ली से वह स्थल [८ नं० रामकृष्णपुरम् घर नं० ११९७] ६ मील दूर है। जन्माष्टमी पर मथुरा में अन्तर्जनपदीय परिषद के ८, ९ सदस्य मथुरा में बुलाने का परामर्श मैंने श्री वृन्दावनदास जी को दिया है।

आचार्य वासुदेवशरण जी का जनपदीय कार्यक्रम सर्वथा निर्दोष चीज़ है। उसमें तो किसी को ऐतराज न होना चाहिए। प्रान्त निर्माण इत्यादि से उसे दूर ही रखना होगा।

साहित्य सेवियों की कीर्तिरक्षा एक अत्यन्त व्यापक कार्य है और उसके लिये अनेक सहायकों की जरूरत है। श्री मधुसूदन चतुर्वेदी १४।७।३ बेगम बाजार, हैदराबाद बड़े उद्योगी पुरुष हैं और बड़े उत्साह से काम कर रहे हैं। उन्होंने ६०० के करीब स्थायी ग्राहक बना लिये हैं। यद्यपि पुस्तकों का चुनाव बहुत विवेकपूर्ण नहीं हैं, पर मधुसूदन जी की लगन निस्सन्देह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

सर्वोत्तम काम करने की धुन में हम मामूली काम की सर्वथा उपेक्षा कर जाते हैं। "सर्वोत्तम उत्तम का शत्रु है" यह एक अंग्रेजी कहावत का मर्म हैं। 'Best is the enemy of good' अब हम लोगों को काम यथासम्भव शीघ्र निपटाने चाहिये। कम्पनी में 'नया खून' आना जरूरी है। वह कैसे आवे ? यह प्रश्न विचारणीय है।

बनारसीदास

श्रीमती सत्यवती मलिक को लिखा गया पत्र

(२१४)

गांधी भवन
टीकमगढ़
१४-३-४९

प्रिय बहन,

सादर प्रणाम ! कल ही शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पूज्य माता जी के दर्शन करके झांसी से लौटा हूँ, उन्हें मैं मोटर द्वारा आजाद की तपोभूमि ओरछा के मार्ग में सातार नदी के तट के उस बगीचे पर ले गया था, जहाँ वह छोटी सी कोठरी अब भी ज्यों की त्यों सुरक्षित है जिसमें वे ब्रह्मचारी

साधु के रूप में रहा करते थे। उस वृद्धा माता ने जो विलाप किया उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

आजाद के पांच भाई बहिन थे ३ भाई और दो बहिन कोई नहीं बचा एक भाई सात वर्ष की उम्र में चला गया, दूसरा पोस्टमैन बनकर २०, २१ वर्ष की उम्र में चल बसा, बहिनें भी उसी मार्ग की पथिक हुईं, और फिर २८ फरवरी १९३१ को आजाद अलफ्रेड पार्क इलाहाबाद में शहीद हो गये।

अभागी वृद्धा इस समय ७० वर्ष की है। आजाद के स्वर्गवास होने पर सिर पटक पटक कर उसने अपनी एक आँख खोदी थी। आजाद के पिताजी सीताराम जी तिवारी उन्नाव जिले के थे। उनके स्वर्गवास को भी ग्यारह वर्ष बीत गये। कहीं से कुछ भी सहारा नहीं। यू. पी. और मध्य भारत की सरकारों ने पच्चीस-पच्चीस रुपये महिने की पेंशन देने की स्वीकृति कई महिने पहले से मुझे भेज दी थी, पर सरकारी मशीनों की ढिलाई के कारण अब तक एक पैसा भी माता जी के पास नहीं पहुँचा।

जरा कल्पना कीजिये उस बुढ़िया की दुर्दशा की, वे एक ऐसे ग्राम में कोने पर रहती है जहाँ मुख्य जन संख्या भीलों और मुसलमानों की बस्ती है। शरीर जर्जर हो गया है। ज्वर आता है, खाँसी भी है। चूंकि वे पुराने ख्यालों की है इसलिये ब्राह्मण के हाथ की ही बनाई रसोई खा सकती है और ब्राह्मण घर उस गांव में एक ही है। कई दिनों फाके हो जाते हैं। पत्रों में मैंने एक लेख छपाया था और उसके कारण जो २५०) रुपये मेरे परिचित मित्रों तथा सहृदय पाठकों ने भेजा था उसी से आठ नौ महीने से काम चलता रहा है। भारत के सर्वश्रेष्ठ क्रान्तिकारी शहीद की माता जी को अपने जीवन के अन्तिम दिन इस प्रकार बिताने पड़े हैं।

उन क्षणों को जब वह वृद्धा अपनी अन्तिम सन्तान आजाद की छोटी सी कोठरी में विलाप कर रही थी, "बेटा तू मुझे अकेला क्यों छोड़ गया," "नाराज क्यों हो गया" न जाने क्या क्या कहती रही उनका यह करुणा क्रन्दन सुनकर हृदय विदीर्ण हुआ जाता था काश उस लिपि की ध्वनि हमारे कुछ शासक भी सुन पाते, बड़ी मुश्किल से हम लोग उन्हें धैर्य बंधा पाये। उस समय यदि कोई सहृदय बहिन वहाँ होती हम पुरुष लोग तो कठोर हृदय वाले होते हैं।

उस समय माता जी अर्द्ध विक्षिप्त अवस्था को पहुँच गई थी कहती थी आजाद यहीं कहीं होगा। आता क्यों नहीं मुझसे मिलता क्यों नहीं मैं तो बड़ी दूर से आई हूँ।

हमारे मना करने पर भी आजाद के पुराने साथी मास्टर रुद्रनारायण जी माता जी को बतलाते जाते थे कि इस जंगल में आजाद ने तेंदूवा मारा था, यहाँ वे शिकार खेलते थे, यहाँ मैं साइकिल पर उन्हें लाया था, इत्यादि इत्यादि। मातृ हृदय की वह उत्सुकता तथा करुणा पूर्ण अश्रुमय झलक को देखना आसान नहीं था, यदि वे आँसू हमारे हृदय के पाप प्रमादों और निर्बलताओं को धो देते, मास्टर रुद्रनारायण जी धैर्य बँधाते हुए कह रहे थे।

माताजी यह सब आजाद की ही तो भूमि है, यहाँ उसी के तो दर्शन हो रहे हैं। कौन उस भोली भाली माता को समझाता कि हमारा देश अब आजाद हो गया है और उसका बेटा चन्द्रशेखर आजाद अमर है और जब उसकी सुधिबुधि लेने वाला कोई भी नहीं तो हमारी फिलासफी पर वह यकीन भी कैसे करती।

रास्ते भर मैं यही सोचता रहा कि क्या हमारा देश सचमुच आजाद हो गया है, श्री पंडित जवाहरलाल जी ने शायद अपनी जीवनी आत्म-चरित में आजाद का जिक्र किया हो, आजाद उनसे मिलने गया था, यह बात सन् १९३० या ३१ की है, उस वृत्तान्त को आप नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ में पढ़ लीजिये।

आजाद कहा करते थे कि मेरे माता पिता के लिये बस एक एक गोली काफी है, वे देशवासियों की भावनाओं से परिचित थे, जानते थे कि उनके बाद उनके माता पिता की खोज खबर लेने वाला कोई न होगा और हम लोगों ने आजाद की भविष्य वाणी को सत्य ही सिद्ध कर दिया।

एक बार मन में आया कि माता जी को आपके पास दिल्ली ले आऊँ और श्री जवाहरलाल जी के पास ले जाऊँ, पर हिम्मत न पड़ी, आप तो माता जी की पूरी पूरी सेवा करतीं, पर माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं और इस प्रकार का प्रदर्शन मुझे अनुचित भी जँचा, उनकी जिन्दगी के दस बारह महीने जो बाकी हैं उन्हें वे किसी न किसी प्रकार काट ही लेंगी।

संभवतः माता जी कुन्डेश्वर टीकमगढ़ भी पधारें पर उसमें भी मुझे डर लगता है कि कहीं मार्ग के कष्टों से उनकी तबियत और भी खराब न हो जाय।

क्या ही अच्छा होता यदि हम आजाद के जन्म स्थान पर एक चबूतरा ही बनवा देते और उस स्थल पर जहाँ उन्होंने साधना की की, कोई स्मारक बनाने का आयोजन करते पर किसे इस ओर ध्यान देने की फुर्सत है।

और नहीं तो आजाद के संस्मरणों का एक छोटा सा ग्रन्थ तो छप ही जाना चाहिए था ।

आजाद जब जिन्दा थे तो मास्टर रुद्रनारायण जी उनकी सेवा में उपस्थित हुए थे । उस समय उन्होंने अपनी तीन उंगली बाँध रक्खी थीं, इस आशा के साथ कि जब कोई आजाद की खबर देगा तो वे उसे खोलेंगी और चलते वक्त उन्होंने मास्टर जी को अठन्नी देते हुए कहा था, इसकी बर्फी खरीदकर मेरे बेटे आजाद को खिला देना, उसे बर्फी बहुत अच्छी लगती है । ऐसी ही बीसियों स्मृतियाँ हैं कौन उनका संग्रह करे और उनका मूल्य आँके और रहा आजाद का स्मारक सो जिस जीवित स्मारक ने आजाद को नौ माह पेट में जीवित रक्खा था उसी की हम रक्षा नहीं कर पा रहे हैं तो ईंट पत्थर की स्मारकों की चर्चा घोर विडंवना है, अधिक क्या लिखूं ।

विनीत

बनारसीदास

डा० वारान्निकोव लैनिनग्राड को लिखा गया पत्र

(२१५)

फीरोजाबाद

६-१-७१

प्रियवर,

प्रणाम ! आपका नवम्बर का कृपापत्र ६ जनवरी को मिला । इतनी देर किस कारण हुई, पता नहीं । श्री यशपाल जैन को मैं अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये लिख रहा हूँ । न हो तो समुद्र के रास्ते ही भेजें । वैसे श्री वृन्दावनदास जी बी. ए. एल-एल. बी. अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल मथुरा भी भेज सकते हैं । वे बहुत अच्छे कार्य-कर्ता हैं । उनसे आप सम्पर्क स्थापित करें तो वे आपके शोध कार्यों में बहुत सहायक सिद्ध होंगे । चर्नीशोव को भी वे बहुत मसाला भेजते रहे हैं ।

पुत्री के विवाह का शुभ समाचार मिला । उसे मेरा आशीष कहिये । पूज्य माता जी का देहान्त एक वर्ष पूर्व हो गया, यह दुःखप्रद समाचार आपने इतने दिनों बाद भेजा है । उनका कोई चित्र हो तो जरूर भेजें और उनके संस्मरण भी । अलैक्जे को मेरा आशीर्वाद कहिये ।

अंग्रेजी भाषा का भारतीयकरण तथा हिन्दी का अंग्रेजीकरण दोनों विषय मनोरंजक हैं । उन पर ज़रूर लिखें । आपके कथनानुसार मैं श्रीमत

सलगानिक से पत्र-व्यवहार करूँगा। अब मेरे हाल भी सुन लीजिये। आगरा विश्व विद्यालय ने मुझे सर्वथा अयाचित डी. लिट् की आनरेरी सम्माननीय उपाधि प्रदान की है—८ दिसम्बर को। उससे पूर्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने साहित्य वाचस्पति की उपाधि दी थी। मैंने इस पर एक तुकबन्दी की है—

बड़े बड़ेन की अकल अब चरन लगी है घास।
फोकट में डी. लिट् बने श्री बनारसीदास॥

आपके पूज्य पिताजी की समाधि पर जो रामायण का दोहा अङ्कित है उस समाधि का फोटो कृपया मुझे भेज दीजिये। उनका जीवन चरित अब तक पूरा क्यों नहीं किया? इतनी देर क्यों कर दी? मेरी ७६ वीं वर्ष पिछली २४ दिसम्बर को शुरू हो गई है। गतवर्ष मेरा पौरुष ग्रन्थि Prostrate gland का आपरेशन २० अगस्त को हुआ। तत्पश्चात् मुझे विश्राम करना था, पर कर नहीं सका। अब आराम करना चाहता हूँ। एक बार आपके देश की तीर्थयात्रा करने की आकांक्षा मन में थी, पर अब वह अत्यन्त कठिन हो गई है। महाकवि नजीर अकबराबादी की वह कविता मैं गुनगुना लेता हूँ—

"जा पड़े याद में उस शोख की जिस बस्ती में
वही गोकुल है हमें वही वृन्दावन
वही है तखत, वही फर्श, वही सिंहासन।"

जहाँ कहीं रूस का श्रद्धालु रहता है, वही रूस है। १९१८ से रूस का भक्त रहा हूँ।

विनीत
बनारसीदास

बाबा पृथ्वीसिंह जी आजाद को लिखा हुआ पत्र

(२१६)

फीरोजाबाद
७-११-७०

श्रद्धेय बाबा,

प्रणाम! आपका कृपापत्र मिला हमारे नवयुवकों में और लड़कियों में भी देश-प्रेम तथा समाज सेवा की भावना तो मौजूद है, पर उनका उपयोग करने वालों की कमी है।

आप अपने विचारों को बराबर लिखते रहें। बाल पेन से लिखने पर तीन प्रतियाँ बन जाती हैं, जिनमें दो तो अच्छी होती ही हैं। तीसरी भी पढ़ी जा सकती है।

आपने जो दो विचार भेजे हैं उनमें प्रथम तो छपाया भी जा सकता है। कृपया एक बात याद रखिये कि आपका Strongest Point क्रान्तिकारी जीवन के अनुभव हैं और युवक संगठन नम्बर दो पर आता है। इनके मूल में आत्म-नियंत्रण तो है ही।

यदि आपकी आत्मकथा का एक संक्षिप्त संस्मरण १५० पृष्ठ का छप जाय तो वह प्रचार कार्य में आपकी सहायता कर सकता है।

इस देश में साहस की इतनी कमी हो गई है कि लोग दुस्साहस के किस्सों को सुनने में अत्यधिक आनन्द का अनुभव करते हैं। रेल से आपकी छलाँगों का वृत्तान्त सुनकर युवक खुश हो जाते हैं, यद्यपि वे खुद धीमें चलते हुए इक्के से भी नहीं कूद सकते। Sugar Coated Pill की तरह आप उन घटनाओं को सुनाकर युवकों का ध्यान आर्कषित कर सकते हैं, तत्पश्चात मतलब की बात कह सकते हैं।

पत्रों में प्रचार कार्य एक कला है, जिसका मैं ५८-५६ वर्ष से अभ्यास करता रहा हूँ। गुण्टूर कानफ्रेंस में भगवानदास माहौर जी भी जावेंगे। उस कानफ्रेंस के कार्यकर्ताओं के चित्र मंगाकर उन पर लिखा जा सकता है। आशा है गुजराती आत्मचरित का प्रचार ठीक तरह होगा।

मथुरा के बाबू वृन्दावनदास जी अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल (मथुरा) भी बहुत भले आदमी हैं। उन्होंने ही प्रयत्न करके ५ हजार रुपये श्री यशपाल जैन [सस्ता साहित्य मंडल] को दिये थे, तब मेरा अभिनन्दन ग्रन्थ निकल पाया था। कभी बम्बई से लौटते वक्त मथुरा उतरिये। भाई वृन्दावनदास जी की धर्मशाला भी है, वहाँ ही ठहरिये।

श्री जगन्नाथ लहरी [गोशाला फीरोजाबाद] तथा श्री रतनलाल बंसल हनुमानगंज फीरोजाबाद को आपके पत्र मिल गये हैं।

लहरी जी को पत्र लिखने का अभ्यास ही नहीं है। वे कहते हैं कि यह तो बीमारी है, जो मेरे पचास रुपये महीने खर्च करा देती है। वे इस बीमारी से दूर भागते हैं। वे इस बात को नहीं जानते कि पत्र लेखन भी लेखन की एक कला है। एक हथियार है। आनन्द वितरण करने का एक तरीका है।

अगर पत्र लिखना उपयोगी न होता तो महात्मा गान्धी एक लाख पत्र लिखकर अपना वक्त खर्च न करते। और मेज़िनी ने तो १०-२० लाख पत्र लिखे होंगे।

आपके भेजे पत्र मैं पढ़ूँगा। बापू तो एक एक लिफाफे में दस दस छोटे छोटे पत्र रख देते थे। मेरे लिफाफे में आप गुप्त जी, बंसल जी, लहरी जी, नाजुक साहब को छोटी-छोटी चिट्ठियाँ रख सकते हैं।

विनीत
बनारसीदास

श्री जगन्नाथप्रसाद जी मिलिन्द को लिखा गया पत्र

(२१७)

फीरोजाबाद
२-१-७१

प्रिय मिलिन्द जी,

प्रणाम ! पत्र मिला। कल मैं कुछ चित्र Illustrated Weekly के लिये तलाश कर रहा था कि आपकी महत्वपूर्ण पुस्तक 'भूमि की अनुभूति' अकस्मात् मिल गई। १०० सन्दूकों तथा २०० फाइल बौक्स में भरी पड़ी अव्यवस्थित सामग्री ने समुद्र का रूप धारण कर लिया है, जिसमें गोता लगाने पर कभी-कभी रत्न भी मिल जाते हैं।

सब काम—आवश्यक कर्तव्य—छोड़कर भूमि की अनुभूति को कुछ क्षण अर्पित करने पड़े। निस्सन्देह आपकी यह कृति मेरे लिये भी बड़ी स्फूर्तिप्रद है। आज के युग के लिये और भावी युग के लिये भी उसमें एक अमर सन्देश है। मैंने उस पर लिखने के लिये तभी नोट ले लिये थे, पर लिख नहीं पाया। मेरा जीवन सदैव अस्त-व्यस्त रहा है। अब फुर्सत मिलने पर लिखूँगा। 'साधक' जी की याद आ गई।

विश्व भारती वालों से मैं आग्रह करूँगा कि दीनबन्धु शताब्दी पर वे आपको किराया देकर निमंत्रित करें। मैं तो ७६ वीं वर्ष में यात्रा कर नहीं पाता। जिस हिन्दी अध्ययन की नींव आपने तथा अन्य भाइयों ने वहाँ डाली थी, वह अब विशाल बन गया है। विश्वभारती वालों का कर्तव्य है कि सम्मान्य अतिथि के रूप में वे आपको निमंत्रित करें।

डी. लिट् के चक्कर में मैं बीमार पड़ गया। १५ दिन बर्बाद हो गये। जीवन संगीत का तो जन्मोत्सव मैंने संगम पर मनाया था—जामनेर तथा

जमडार दो नदियों के मिलन-स्थल पर। भाई सुधीन्द्र जी उस समय उपस्थित थे। आपके चिरंजीव को कोई काम मिला ?

विनीत
बनारसीदास

श्री काशीनाथ त्रिवेदी सम्पादक 'गान्धी शताब्दी सन्देश' इन्दौर को लिखा गया पत्र

(२१८)

फीरोजाबाद
१०-७-७०

प्रिय भाई काशीनाथ जी,

वन्दे ! मैं आपको पत्र भेजना ही चाहता था कि आपका कार्ड मिल गया। मैसर्स शिवलाल अग्रवाल प्रकाशक आगरा को पत्र भेज दूंगा कि वे 'क्रान्तिपथ के पथिक' की प्रति आलोचनार्थ आपको भेंट कर दें।

आपके निमंत्रण के लिये हृदय से कृतज्ञ हूँ, पर मेरा स्वास्थ्य इस काबिल नहीं कि इतनी लम्बी यात्रा कर सकूँ। ७८ वीं वर्ष में मैं यात्रा की थकान सहन नहीं कर सकता। एक इच्छा मन में अवश्य शेष है—यानी रूस की तृतीय बार यात्रा करने की। उस यात्रा में मैं लैनिन के जन्म स्थान की तीर्थ यात्रा करना चाहता हूँ और उसके पूर्व पोरबन्दर की भी। यद्यपि अब मेरा यह विश्वास हो गया है कि लैनिन के तौर तरीके से ही इस अभागी भूमि का कल्याण होगा, क्योंकि ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त फेल हो चुका है और बिना कुछ हिंसा किये यहाँ का पूँजीपति वर्ग अपने अन्याय से कमाये हुए धन को हस्तान्तरित न करेगा। यह मेरी भावना है, यद्यपि मैं इसे तर्क से सिद्ध नहीं कर सकता। मैं तो रिटायर हो चुका हूँ—कुछ करने धरने से रहा। शरीर में शक्ति नहीं और सार्वजनिक जीवन बिताने की इच्छा भी नहीं।

इन्दौर का तो मैं अत्यन्त ऋणी हूँ। इसका एक मजाक सुन लीजिये। मैं प्रायः अंग्रेजी ग्रन्थों से ही मानसिक भोज्य लेता रहा हूँ और अंग्रेजी में think करने की भी आदत कुछ कुछ पड़ गई है। इसका एक मनोरंजक दुष्परिणाम हुआ।

अपनी पिछली इन्दौर यात्रा में, जब श्री सम्पूर्णानन्द जी होम मिनिस्टर यू. पी. के साथ इन्दौर के Municipal Board या Corporation ने हम

दोनों का स्वागत किया, तो धन्यवाद देते समय मेरे मुँह से एक वाक्य निकल गया—"मैं अपने दोनों पुत्रों के लिये इन्दौर का ऋणी हूँ।" मैंने देखा कि सम्पूर्णानन्द जी ने दाँती भींच ली है और नवीन जी की भृकुटी चढ़ गई है। मैं समझ नहीं सका कि मैंने क्या ग़लती की है। मीटिङ्ग समाप्त होने पर सम्पूर्णानन्द जी ने मुझे डाट बतलाई और नवीन जी ने भी फटकारा। नवीन जी बोले "अरे मूरख ! तेरी समझ में यह नहीं आया कि इस कथन में से क्या ध्वनि निकलती है ?" मैंने उत्तर में कहा "ध्वनि की बात तो कवि लोग जानें, मैंने तो अंग्रेजी के इस वाक्य का "I am indebted to Indore for both my sons" तर्जुमा कर दिया था। दोनों खूब हँसे। दरअसल चि० बुद्धिप्रकाश तथा चि० रामगोपाल का जन्म तभी हुआ था, जब मैं इन्दौर में था—१९१७ व १९१९ में। मैं डेली कालेज में १९१४ से २० तक रहा था।

यदि कभी स्वास्थ्य इस काबिल हुआ कि लम्बी यात्रा कर सकूँ तो जरूर इन्दौर आऊँगा। अभी तो मुझे अपने जनपद ब्रजमंडल के ही अनेक स्थलों की यात्रा करनी है।

अभिनन्दन ग्रन्थ में मेरी प्रशंसा के जो पुल बाँधे गये हैं उनसे प्रतीत होता है कि हिन्दी जगत् में साहित्यिक इंजीनियरों की कमी नहीं। जिस बनारसीदास के गुणों की चर्चा उसमें भी की गई है, उसे मैं नहीं पहचानता। परलोक यात्रा के दस बीस वर्ष वाद ही किसी साहित्यिक का उचित मूल्यांकन हो सकता है, उससे पहिले हर्गिज नहीं। मेरे मना करने पर भी भाई यशपाल जी, वृन्दावनदास जी प्रभृति बन्धु नहीं माने और एक वृथा पुष्ट पोथा तैयार कर ही दिया। उसमें ब्रज जनपद का जो वर्णन है, वही सार्थक है बाकी सब गोल गपाड़ा है। "लोग मुझे किस रूप में देखना चाहते हैं" इस भावना से मैंने उसे स्वीकार कर लिया है।

विनीत

बनारसीदास

श्री गोपालदास रावतपाड़ा आगरा को लिखा गया पत्र

(२१९)

घर नं० १११७ सैक्टर ८

रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली

प्रिय श्री गोपालदास जी,

वन्दे ! आपका कृपापत्र मिला। जो खयाल आपने भेजा है उसे मैं छपवा चुका हूँ। 'विशाल भारत' के किसी पुराने अङ्क में ४० वर्ष पहले ही यह छप चुका है।

आप बाबू बृन्दावनदास जी बी. ए. एल-एल बी. अध्यक्ष ब्रजसाहित्य मंडल से कभी मिलिये। मथुरा में उनकी धर्मशाला भी है। पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ में ख़यालों पर एक लेख श्री बंसल का है जो हनुमान रोड फ़ीरोजाबाद के निवासी हैं।

फ़ीरोजाबाद के श्री जगन्नाथ लहरी (गोशाला फ़ीरोजाबाद) प्रतिवर्ष रामलीला के अवसर पर खयाल सम्मेलन कराया करते हैं। उनसे पता लग सकता है। स्वामी नारायणनन्द की पुस्तक खयालों पर छप चुकी है। उन्होंने १९२६ में जो लेख खयालों पर नागरी प्रचारिणी सभा आगरे में पढ़ा था उसे मैंने विशाल भारत में छापा था।

स्व० अयोध्या प्रसाद जी पाठक की जगह अब ख़यालगो लोगों का प्रैसीडैण्ट कौन है ? नैंकसा तो अब रिटायर हो चुका है। उसका लड़का बी. एस-सी. में पढ़ रहा था। ख़यालगो लोगों के संगठन का काम कठिन है। जब तक कुछ साधन सम्पन्न व्यक्ति इसमें सहयोग नहीं देते तब तक यह काम हो नहीं सकता।

नैंकसा के पास एक मोटा रजिस्टर था। उसमें से मैंने खयाल नकल कराये थे। वर्तमान ख़यालगो लोगों के चित्र और चरित्र लिखे जाने चाहिये। हमारी जाति के एक सज्जन बाबूराम जी अच्छे ख़यालगो थे। उनका लड़का प्रेमनारायण सेनिटरी इंसपैक्टर था।

कानपुर में भी ख़यालगो लोगों का एक अड्डा था। वहाँ की धर्मशाला में हमें खयाल सुनने का मौक़ा मिला था। स्व० नारायणप्रसाद जी अरोड़ा ने उसका प्रबन्ध किया था।

मैं तो अब ७९ वीं वर्ष में काम कर नहीं सकता। आगरे में कुछ युवकों को यह कार्य उठा लेना चाहिए। आप प्रोफेसर कुलदीप जी से मिलिये। ६ गान्धी मार्ग पर विभव जी के यहाँ मिल जायेंगे।

रूपकिशोर पन्नालाल के चित्र तो अब क्या मिल सकते हैं ? 'विशाल भारत' से श्री अयोध्याप्रसाद पाठक जी का लेख नकल कराया जा सकता है। नारायणानन्द जी की किताब भी कहीं मिल जायगी। मैं ज्यादा लिख पढ़ नहीं सकता। आप स्वयं ही इस पवित्र काम को अपने हाथ में ले लें।

विनीत

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी का अपने पाठकों के नाम पत्र

'प्रकाशित सैनिक' १७-१०-६६

(२२०)

प्रियवर,

मैं सात जून को आगरे के अस्पताल में भरती हो गया था। ढाई महीने के बाद २० अगस्त को पौरुष-ग्रन्थि का आपरेशन हुआ, जो आप लोगों की सद्भावना से सफल हो गया। चौबीस सितम्बर को मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गई और उन्तीस को घर आ गया। मुझे इस बात की आशंका थी कि कहीं आपरेशन असफल न हो और मुझे परलोक यात्रा का टिकट न कटवाना पड़े। ७७ वर्ष की उम्र में वह कोई दुर्घटना तो न होती पर मेरा बहुत सा काम अधूरा पड़ा रह जाता।

यद्यपि कमजोरी बहुत ज्यादा है—जो इस उम्र में स्वाभाविक ही है—तथापि कुछ लिखे पढ़े बिना मन नहीं मानता। बच्चों के विषय पर कुछ लिखने की इच्छा है, उनके खेल-कूद, मनोरंजन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर। वर्षों से मेरी आदत रही है कि रोज सवेरे चार बजे उठकर अपनी चाय खुद बनाना फिर कुछ स्वाध्याय और तत्पश्चात् लेख या पत्र लिखना। मेरा प्रथम लेख सन् १९१२ में काशी के नव जीवन में छपा था, और तब से मैं निरन्तर लिखता ही रहा हूँ। मेरे लेखक जीवन का अब अठ्ठावनवां वर्ष चल रहा है। इस बीच न जाने कितना ऊल जलूल मैंने लिखा होगा, मेरे पाठक भी तंग आ गये होंगे।

अगले २४ दिसम्बर को मेरी ७८ वीं साल शुरू हो जायगी और मैंने यह निश्चय कर लिया है कि मैं सार्वजनिक साहित्य क्षेत्र से रिटायर हो जाऊँगा। पेश्तर इसके कि दिमाग पिलपिला हो जाय और जमुना जी के कछुवे रास्ता देखने लगें। मुझे रिटायर हो ही जाना चाहिए।

पर रिटायर होना कोई आसान काम नहीं। पचास-साठ वर्ष से पड़ी हुई बद आदतें एक दम नहीं छूट सकतीं। मैं हर महीने पचास रुपये पोस्टेज पर खर्च करता रहा हूँ। चालीस रुपये टाइपिस्ट पर और घंटे दो घंटे के लिए मुझे तीन सहायक भी रखने पड़े थे।

अपने से पत्र व्यवहार करने वाले किसी सज्जन की मैंने कदापि उपेक्षा नहीं की। पत्रों का उत्तर मेरे यहाँ से बराबर भेजा जाता है। अब इस चलती हुई ट्रेन को एक साथ रोक देना मेरे लिये कठिन हो रहा है।

आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि मेरी सात-आठ किताबें अधूरी पड़ी हुई हैं और "पत्र व्यवहार—मेरा व्यसन" नामक पुस्तक का सब मसाला इकट्ठा हो चुका है, मगर उसके लिखने के लिए पांच-सात महीने तो चाहिए ही। मेरे एक आत्मीय ने मजाक में कहा था तुम तो महीने में इकत्तीस रोज चिट्ठियां लिखने में ही विताते हो। पत्र-व्यवहार से मुझे घाटा ही रहा हो सो बात नहीं। पत्रों का जैसा, अमूल्य संग्रह मेरे पास इकट्ठा हो गया है, यद्यपि वह सब अव्यवस्थित पड़ा हुआ है, वैसा हिन्दी जगत में थोड़े से ही व्यक्तियों के पास होगा।

चिट्ठी पत्री, फोटोग्राफी और चाय के साथ गप्पाष्टक इन तीन व्यसनों में मेरे समय, शक्ति और पैसों की बहुत बर्वादी हुई है। फोटोग्राफी पर दस बारह हजार से कम खर्च नहीं हुए होंगे और उससे तिगुनी चौगुनी रकम पत्र व्यवहार पर।

बीस अगस्त के आपरेशन के बाद कमजोरी इतनी अधिक आ गई है कि तीन महीने पूर्ण विश्राम करना अनिवार्य हो गया है। जब चिठ्ठियों का ढेर लग जाता है और मैं उनका उत्तर नहीं दे पाता तब वही हार्दिक वेदना होती है। पर क्या किया जाय लाचारी है।

इस छोटे से लेख द्वारा मैं अपने से पत्र व्यवहार करने वालों से पेशगी क्षमा याचना किये लेता हूँ।

विनीत

बनारसीदास

सैनिक में प्रकाशित पं० श्रीराम शर्मा को लिखा हुआ पत्र

(२२१)

[हिन्दी संसार के ख्यातनामा पत्रकार और साहित्यसेवी पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने निम्नांकित पत्र पं० श्रीराम शर्मा को भेजा है। इस पत्र की प्रतिलिपि हमारे पास भी आई है। चूंकि पं० श्रीराम शर्मा अभी सरकारी अफसर हैं और सरकारी नौकरी छोड़ देने पर भी उनको उसी कायदे कानून की पावन्दी करनी है जिसकी एक सरकारी अफसर काम करते हुए करता है इसलिये हम जानते हैं कि उनकी ओर से वह पत्र गुप्त ही रखा जायगा और हम यह भी जानते हैं कि इस पत्र के छपने से उन्हें क्षोभ भी होगा। पर इसमें उनकी जिम्मेदारी क्या ? हम तो समझते हैं कि उनके छुट्टी पर जाने के मानी हैं कि उनकी कलम का चुप रहना और जबान का न खुलना। जब इस पत्र की नकल

हमारे पास भेज दी गई तब हम शर्मा जी से क्षमा याचना करे लेते हैं और आशा करते हैं कि वे सार्वजनिक हित के नाते कोई बुरा न मानेंगे।

यह लिखने की जरूरत नहीं कि चतुर्वेदी जी पत्र लिखने की कला में हिन्दी भाषा भाषियों में अपना सानी नहीं रखते। पत्र-लिखना एक कला है और उस कला से कलाविद होने के लिये लेखक को बड़ी गम्भीरता और पटुता से काम लेना पड़ता है। बड़ी ज़रूरत इस बात की होती है कि पत्र-लेखक को क्या नहीं लिखना चाहिए। निम्नांकित पत्र में कितना गूढ़ हास्य है, कितनी तीखी आलोचना है और कितनी बारीक चुटकी ली गई है, इसका प्रमाण पाठकों को पत्र के पढ़ने से मिल जायगा। हम यह जानते हैं कि पं० बनारसीदास चतुर्वेदी किसी दल विशेष के आदमी नहीं हैं और अपने मित्रों में भी वे अपनी स्वतन्त्रता तथा व्यक्तित्व कायम रख सके हैं—इस दृष्टि से यह पत्र और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। —**सैनिक सम्पादक**]

टीकमगढ़
३०-८-३८

प्रिय श्रीराम जी,

मैं अनेक बार सर्कस देख चुका हूँ और सबसे अधिक खेद मुझे तब हुआ है जब मैंने चीते को आग के वृत्त में से कूदते हुए देखा है, जब कि उसका ट्रेनर पीछे हण्टर लिए खड़ा था। लखनऊ में आपको अथवा पालीवाल जी को सैक्रटेरियट में काम करते हुए देखकर मेरे मन में वही भाव उदित होते। अच्छा हुआ कि इन दिनों मैं लखनऊ नहीं गया। क्या आप मुझे बधाई न देंगे?

हाँ, एक बात तो तलाश कीजिये। क्या काश्मीर में पहाड़ों पर हिन्दू धर्म इतना विकृत हो गया है कि मुर्दे को शीघ्र ही न जला कर उसका प्रदर्शन करते फिरते हैं? श्री पालीवाल जी के चले जाने से ग्राम-सुधार विभाग की आत्मा निकल गई, अब आपके जाने से उसका हृदय भी चला गया। इस 'ग्राम-सुधार' की ठठरी को माननीय पन्त जी तथा आनरेबुल काटजू साहब इधर-उधर क्यों लिये फिरते हैं? इस व्यर्थ की बदबू से लाभ?

जिस कोठी में मैं यहाँ रहता हूँ। वहाँ पहले बिजली की रोशनी थी। साजो-सामान, स्विच, झाड़फानूस, खम्भे (यहाँ तक कि बत्तियाँ भी!) सब ज्यों की त्यों सुरक्षित हैं, बस, डाइनेमो नहीं है। एक लाख ग्रामों में बिना डाइनेमों के बिजली का प्रकाश पहुँचाने वालों को मेरा साष्टांग दण्डवत् कहिये।

विनीत
बनारसीदास

परिशिष्ट अ

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और उनके पत्र

(श्री वृन्दावनदास)

पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी को मैं बचपन से जानता हूँ। लगभग ४० वर्ष हुए एक बार जब मैं आगरा कालेज में विद्यार्थी था उनका किसी छात्रावास में भाषण हुआ था। उस समय सर्वप्रथम मैंने उनके दर्शन किये और भाषण भी सुना। उनकी विद्वत्ता और निरभिमानता से तो मैं उसी समय से प्रभावित हूँ। उसके बाद यदा कदा वे मथुरा भी आया करते थे। तब यद्यपि मुझे कभी-कभी उनके दर्शन हो जाया करते थे उनसे व्यक्तिगत परिचय न हुआ था।

यों तो मैं हिन्दी में चालीस वर्षों से लिखता रहा हूँ परन्तु चतुर्वेदी जी से व्यक्तिगत परिचय तो मुझे सन् १९६३ से ही हुआ है। सन् १९६३ में मैं अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल का कार्य-वाहक अध्यक्ष निर्वाचित हुआ था और सन् १९६४ से ब्रजभारती सम्पादक के रूप में हिन्दी की सेवा करता रहा हूँ। कदाचित् ब्रज-साहित्य मण्डल से सम्बन्धित एक हिन्दी सेवी होने के नाते चतुर्वेदी जी ने मुझे अपने निकटस्थ और घनिष्ट साहित्यिक परिचय तथा कृपा के लिये उपयुक्त समझा। उसी समय से चतुर्वेदी जी जिस आत्मीयता और घनिष्ठता से मेरे ऊपर कृपा करते रहे हैं उसका मैं आभारी हूँ।

चतुर्वेदी जी इस देश के उन महान व्यक्तियों में से एक हैं जो पत्र-व्यवहार द्वारा अपने मित्रों, परिचितों और सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं को सतत प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं, तथा क्या करणीय है इस दिशा की ओर सदैव इंगित करते रहते हैं। मैं चतुर्वेदी जी के उन आत्मीय परिचितों में से एक हूँ जिसको कभी-कभी तो प्रतिदिन एक पत्र प्राप्त होता रहता है और जिसकी कार्य-पूर्ति करना वह अपना अहोभाग्य समझता है।

चतुर्वेदी जी के पत्रों से उनका महान व्यक्तित्व अनायास ही परिलक्षित होता है। ये पत्र उनकी शालीनता, विद्वत्ता, नम्रता और सदाशयता को स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित करते हैं। भाई रामचरण जी हयारण मित्र ने ब्रजभारती के ज्येष्ठ अंक में चतुर्वेदी जी के पत्रों के विषय में अपने संस्मरण लिखे थे। स्वयं चतुर्वेदी जी ने स्वर्गवासी डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रों पर सम्मेलन

पत्रिका में एक विद्वत्तापूर्ण संस्मरणात्मक लेख लिखा है। मुझे भी ऐसा लगा कि जब मैं स्वयं चतुर्वेदी जी के पत्रों के रूप में एक स्थायी साहित्यिक निधि का स्वामी हूँ तो क्यों न उनके पत्रों के सम्बन्ध में एक गवेषणापूर्ण एवं विचारोद्दीपक निबन्ध लिख डालूँ।

पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी ब्रज-साहित्य मंडल के संस्थापकों में से हैं। ब्रज-साहित्य मंडल की स्थापना सन् १६४० ई० में हुई थी। वह दिन दूर नहीं है जब मण्डल का एक विस्तृत इतिवृत्त जनता के सम्मुख आवेगा जिसमें उसके दीर्घ जीवन की एक उज्ज्वल झाँकी प्रस्तुत होगी। उस झाँकी में निस्संदेह चतुर्वेदी जी का स्थान अत्यन्त उच्च होगा।

ब्रज-साहित्य मण्डल में कुछ वर्षों तक गतिरोध रहा। इधर जब से मैंने उसका कार्य भार सम्हाला और ब्रजभारती को पुनः चालू किया तब तो चतुर्वेदी जी के हर्ष का ठिकाना न रहा। उनका "ब्रज-साहित्य मण्डल का पुनरुद्धार" शीर्षक एक लेख अनेक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। उस लेख की एक प्रति उन्होंने मेरे पास भी भेजी तथा ब्रज-साहित्य मण्डल की स्थापना से सम्बन्धित समस्त उस पत्र-व्यवहार की प्रतिलिपियाँ भी भेजी जो उनके तथा स्थानीय साहित्य सेवियों के मध्य हुआ था। तद्विषयक अन्य पत्रों के अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण पत्रों को ही यहाँ उद्धृत किया जाता है।

२-३-६६

प्रियवर,

हमें ब्रजमण्डल के साधन सम्पन्न निवासियों से, कवियों तथा लेखकों से, प्रेस के मालिकों से और पत्रकारों से अपने कार्य में सहायता लेनी चाहिये। यह मैं जानता हूँ कि शायद दस फीसदी व्यक्ति भी सहायता न देंगे, फिर भी प्रयत्न तो करना ही है। मसलन क्या यह असम्भव है कि कोई प्रेसाध्यक्ष सत्यनारायण कविरत्न का देश-भक्त होरेशस पुनः छाप दे। उसमें दो सौ रुपये का भी व्यय न होगा। ब्रजभाषा की परीक्षाऐं यदि कभी चालू हों तो पाठ्य-पुस्तकें स्वयं मण्डल को ही छापनी चाहिये। जो भी महानुभाव असन्तुष्ट बैठे हों उनसे अनुनय विनय करके उन्हें पुनः मण्डल में लाना है।………… ब्रज के वर्तमान कवियों के नाम तथा पते आप अपने यहाँ रखिये।

विनीत

बनारसीदास

इस पत्र में चतुर्वेदी जी ने मण्डल के लिए अनेक स्रोतों से सहायता की कल्पना की है तथा एतदर्थ सुझाव भी प्रस्तुत किया है परन्तु वास्तविक स्थिति

से पूर्णतया भिज्ञ होते हुए अपना सन्देह भी प्रगट कर दिया है। कविरत्न सत्यनारायण रचित देश भक्त होरेशस के प्रकाशन के लिए उनके मन में कितनी व्याकुलता है ? मण्डल के पुनर्निर्माण के लिए उनके सुझाव कितने हृदयग्राही एवं आदर्शमयी भावना से प्रेरित हैं ? इस सम्बन्ध में ता० १९-३-६६ को पुनः एक पत्र प्राप्त हुआ।

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! ब्रजभारती के तृतीय अंक लिए आपका कृतज्ञ हूँ। आपने मुझे जिन शब्दों में याद किया है तदर्थ धन्यवाद।

कल के सैनिक में पढ़ा कि व्रज प्रदेश के लिए मथुरा में आन्दोलन शुरू हो गया है। मेरा ख्याल है कि पहले हमें साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आधार तैयार कर लेना चाहिये। केवल राजनैतिक विभाजन से काम नहीं चलेगा। अधिकार-लिप्सा, पदलोलुपता, राजनैतिक तिकड़म, गुटबन्दी, उपसाम्प्रदायिकता या जातिवाद की बीमारियाँ हमारे जीवन रूपी शरीर में बुरी तरह घर कर गई हैं और वे अच्छे से अच्छे यज्ञों का विनाश कर सकती हैं। कुछ मन्त्रियों, उपमन्त्रियों और सचिवों के बढ़ जाने से ब्रजमण्डल का उद्धार कदापि न होगा। क्या हमारे राजनैतिक नेताओं में ब्रजभूमि के प्रति, उसके साहित्य तथा संस्कृति के प्रति सच्ची लगन है ? यदि साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आधार शिला दृढ़तापूर्वक रक्खी जा सके तो यह आन्दोलन कल्याणकारी बन सकता है। आपकी क्या राय है ? विस्तार से फिर लिखूंगा।

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ब्रजप्रान्त-निर्माण के समर्थक हैं परन्तु उनका यह समर्थन ब्रजप्रान्त के साहित्यिक और सांस्कृतिक उन्नयन के हेतु ही है। यह तो स्पष्ट है कि ब्रज-साहित्य और संस्कृति के प्रति वर्तमान राज्यस्तर पर जो उपेक्षा और उदासीनता है उसी से खिन्न और उद्विग्न होकर लोग ब्रजप्रदेश के निर्माण की आवाज उठाते हैं। इस सम्बन्ध में चतुर्वेदी जी का दृष्टिकोण उनके पत्रों से पूर्णतया विदित हो जाता है। कुछ और पत्र भी उद्धृत करना उपयुक्त होगा।

फीरोजाबाद
५-७-६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! एक विचारोत्तेजक सरक्यूलर लैटर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भेजने की जरूरत है—ब्रजप्रान्त निर्माण के विषय में—जिससे प्रेरित होकर वे लोग अपनी सम्मति उस बारे में लिख भेजें।

प्रान्त बने या न बने पर चर्चा चलाने से कुछ जागृति तो आवेगी ही। वस्तुतः मेरी रुचि जितनी साहित्यिक तथा सांस्कृतिक जागरण में है उतनी राजनैतिक पुनर्गठन में नहीं।

एक दूसरा लेख साहित्य जगत की एक आवश्यकता—'छुटभइयों को प्रोत्साहन' इस विषय पर भी लिखना चाहता हूँ। सन् १६२८ से यानी विशाल भारत के प्रारम्भ से ही इस दिशा में काम करता रहा हूँ और आज हिन्दी जगत में जो चोटी के लेखक या कवि हैं उनमें कुछ 'विशाल भारत' के काफी ऋणी हैं।

विनीत
बनारसीदास

उपरोक्त पत्र में ब्रजप्रान्त-निर्माण के विषय के अतिरिक्त एक और विषय की चर्चा चतुर्वेदी जी ने की है और वह है उपेक्षित साहित्यिक बन्धुओं को प्रोत्साहन देने की। कहना न होगा यह विषय चतुर्वेदी जी को अत्यन्त प्रिय है। वास्तव में इसको और शहीदों के श्राद्ध को तो उन्होंने अपने जीवन का ध्येय ही बना रक्खा है। इन दोनों क्षेत्रों में चतुर्वेदी जी ने जो महान् कार्य किया है वह अविस्मरणीय है और समाज उनका चिर ऋणी रहेगा। चतुर्वेदी जी से जिस काल में कोई मेरा परिचय न था और वे कलकत्ते में 'विशाल भारत' के सम्पादक थे मैंने एक दो लेख उन्हें 'विशाल भारत' में प्रकाशनार्थ भेजे। उन्होंने न केवल उन्हें छापा वरन् उन पर पुरस्कार स्वरूप कुछ रुपया भी मनीआर्डर से भेजा। कहना न होगा कि 'विशाल भारत' के सौजन्य से अनेकों व्यक्ति साहित्यिक क्षेत्र में बढ़े और इसका श्रेय उस पत्र और उसके यशस्वी सम्पादक श्री चतुर्वेदी जी को है। अब हम ब्रज प्रदेश के निर्माण सम्बन्धी विषय पर चतुर्वेदी जी के कुछ और पत्र भी यहाँ देना चाहते हैं।

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! जब तक कि दो चार व्यक्ति भी ऐसे न हों जो ब्रजमण्डल के लिए जी जान से प्रयत्न करने को उद्यत हो जावें तब तक ब्रजप्रान्त की चर्चा उठाना सर्वथा निरर्थक होगा। एक अंग्रेजी कविता है If you give all and life retain I say that all your gift is in vain, वस्तुस्थिति यह है कि ब्रजभूमि में ऐसे बलिदानी आत्मोत्सर्ग करने वाले लोगों का अभाव है। फिर भी हमें निराश नहीं होना है। जो कुछ अपनी सीमित शक्ति के अनुसार कर सकें करते रहना चाहिए। भविष्य में कोई न कोई त्यागी युवक उत्पन्न होंगे।

२१ ता० को मथुरा रेडियो ने बुलाया है। मैं यात्रा कर नहीं पाता। करना चाहता भी नहीं। 'शहीदों का श्राद्ध' बस एक ही काम ले रक्खा है। उसी के लिये शेष दिन अर्पित हैं।

विनीत
बनारसीदास

फीरोजाबाद
३०-६-६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

ब्रजभारती का ६४ पृष्ठ का एक विशेषांक ब्रजप्रान्त निर्माण के विषय में निकालिये, जिसमें पक्ष तथा विपक्ष दोनों के लेख रहें। 'मधुकर' का मैंने बुन्देलखण्ड प्रान्त-निर्माण अंक निकाला था, उससे आन्दोलन में पर्याप्त सहायता मिली।

ब्रजभारती के प्रकाशन में काफी व्यय होता होगा। उसका प्रबन्ध आप किस प्रकार करते हैं?

डा० सत्येन्द्र प्रान्त निर्माण के पक्षपाती हैं। मेरी चिट्ठियाँ मिली होंगी, बम्बई से आपके पत्र मिले थे।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ने ब्रजप्रान्त के निर्माण पर और भी अपने अनेक पत्रों में चर्चा की है, विस्तार भय से उन सब पत्रों को उद्धृत करना सम्भव नहीं है। सारांश यह कि ब्रजप्रान्त के निर्माण से चतुर्वेदी जी का आशय ब्रज की सर्वांगीण उन्नति से है, उसके साहित्यिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान से हैं। वे इस आन्दोलन के द्वारा इस जनपद में एक चेतना, एक जाग्रति पैदा करना चाहते हैं जो स्तुत्य है।

ग्रन्थालोचना

चतुर्वेदी जी इस बात के पक्षपाती हैं कि अच्छी पुस्तकों की विधिवत् विस्तृत आलोचना होनी चाहिये। उन्होंने अपनी पुस्तक 'साहित्य सौरभ' एक बार मुझे ज्ञान मण्डल काशी से भिजवाई थी और मुझे उसकी आलोचना करने को लिखा था। मैंने उस पुस्तक पर अपनी तीन पृष्ठ की आलोचना ब्रजभारती में छाप दी थी। बाबू श्यामसुन्दर जी खत्री कलकत्ते वालों को तो वह बहुत

ही पसन्द आई तथा चतुर्वेदी जी ने भी मुझे लिखा था, "आपकी सहृदयतापूर्ण आलोचना के लिये बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ।"

चतुर्वेदी जी ने मुझे एक बार पत्र लिख कर डाक्टर सत्येन्द्र द्वारा लिखित "ब्रजभाषा-साहित्य का इतिहास" नामक ग्रन्थ की आलोचना करने का भी आदेश दिया था। उन्होंने लिखा था, "चूंकि सत्येन्द्र जी अपने प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता हैं उनकी पुस्तक की विधिवत् विस्तृत आलोचना होनी ही चाहिये।"

इसी प्रकार एक अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ श्री प्रभुदयाल मीतल रचित 'ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास' की आलोचना करने की बात भी उन्होंने मुझसे कही थी। इस प्रसंग में उन्होंने श्री मीतल जी को भी लिखा कि अपनी पुस्तक की खूबियाँ किसी से लिखवा भेजें। उन्होंने इस चीज को एक प्रकार का प्रोपेगैण्डा समझा और यही उनको लिख दिया। इस पर चतुर्वेदी जी ने जो पत्र मीतल जी को लिखा उसे हम उद्धृत करते हैं।

प्रिय भाई मीतल जी,

वन्दे! आप प्रोपेगैण्डा या प्रचार से इतना डरते क्यों हैं? यदि कोई जानकार व्यक्ति आपकी पुस्तक की खूबियाँ सप्रमाण लिख भेजे और मैं देखभाल कर उसका उपयोग कर लूं तो इसमें अनैतिकता तो कोई है नहीं।

आपको शायद पता न हो, चर्चिल के पास छः सहायक नौकर थे जो सम्पूर्ण सन्दर्भगत मसाला तैयार कर देते थे। तभी वे इतने महान ग्रन्थ लिख सके।

७५ वीं वर्ष में मुझे केवल एक आँख पर जोर डालकर लिखना पड़ता है। जब कोई सहायक नहीं, क्या किसी दूसरे से इस प्रकार की सहायता माँगने में कोई अनौचित्य है? इसके विषय में ज्यों की त्यों उस लेख की बातें उद्धृत नहीं कर दूंगा, अपनी अक्ल से भी काम लूंगा।

स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल जी ने आचार्य नरेन्द्रदेव जी से अपनी पुस्तक (शायद Discovery of India) में मदद ली थी। बेईमानी से या असत्य का आश्रय लेकर किया हुआ प्रचार-कार्य निन्दनीय है, पर सर्वथा सद्भाव से और ईमानदारी से किये हुए प्रचार कार्य में कोई दोष हरगिज नहीं।

अगर आपका ग्रन्थ साधारण कोटि का होता तो मैं उसकी चर्चा हरगिज न करता—चाहे कितने भी प्रलोभन क्यों न दिये जाते पर वह एक असाधारण कृति है और मेरे उद्देश्य की पूर्ति में सहायक भी। इसलिये दूसरों से मदद लेकर (यही पढ़ने लिखने की मदद) मैं उस पर लिखना चाहता हूँ, मैं ब्रजभूमि से

पूरे ५१ वर्ष (१९१३ से १९६४ तक) दूर ही रहा, इसके सिवाय मुझे ब्रज-भाषा या ब्रजभूमि के अध्ययन करने का मौका ही नहीं मिला। उसका शास्त्रीय ज्ञान मुझे है ही नहीं। उन सज्जनों के आप मुझे नाम तथा पते बतला दें, जो आपके ग्रन्थ के बारे में कुछ अधिकार पूर्वक लिख सकते हैं। इससे अधिक आपकी कोई जिम्मेदारी नहीं।

आपके ग्रंथ में यदि कुछ त्रुटियाँ मुझे दीख पड़ीं तो उन्हें भी निस्संकोच प्रगट कर दूँगा, आप निश्चिन्त रहें।

विनीत

बनारसीदास

पुनश्च—

आप मेरे जिजमान हैं सो मथुरा पहुँचने पर बढ़िया पेड़े लेने का मुझे जन्मसिद्ध अधिकार है। उससे अधिक कुछ नहीं चाहता। नवीन जी की वह कविता मैं प्रायः गुनगुनाया करता हूँ।

अरे ! सतत अर्पण ही अर्पण, यह जीवन का क्रम है।
और ग्रहण में मृत्यु निहित है, प्रतिफल केवल भ्रम है ॥"

वास्तव में हम चतुर्वेदी जी से पूर्णतया सहमत हैं कि अच्छी पुस्तकों की समालोचना होनी ही चाहिये। आलोचना द्वारा पुस्तक को अपेक्षित प्रचार प्राप्त होता है जिससे उस उद्देश्य की पूर्ति अनायास ही हो जाती है जिससे प्रेरित होकर पुस्तक लिखी गई थी। मीतल जी के ग्रंथ ने ब्रजक्षेत्र के इतिहास साहित्य की दिशा में एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति की है। मुझे उनके महत्व-पूर्ण ग्रंथ के इतिहास-खण्ड को अवलोकन करने का अवसर मिला है। उन्होंने ब्रज के मिस से समस्त भारतीय इतिहास को ही बड़ी ओजपूर्ण और प्रवाहमयी भाषा में लिख डाला है। उन्होंने इस इतिहास में इतनी नवीन मनोरंजक सामग्री का समावेश कर दिया है कि ग्रंथ को पढ़ने के लिए हाथ में लेने के बाद छोड़ने को जी नहीं चाहता। मीतल जी के इतिहास में हमें बहुत सी बातें इसलिये नई मालूम होती हैं चूंकि वे अन्य इतिहास ग्रंथों में सहसा उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे घटनाक्रम कल्पना के आधार पर लिखे गये हैं, मीतल जी ने अपने द्वारा प्रस्तुत किये हुए तथ्यों को आधार और साक्ष्य समन्वित किया है। मीतल जी का ग्रन्थ उनके कई दशकों के श्रम ओर खोज का सुफल है। उन्होंने अपने इस ग्रन्थ के द्वारा ब्रजक्षेत्र की जनता का जो उपकार किया है उससे वह सदा के लिये ऋणी रहेगी।

चतुर्वेदी जी का मतभेदों के प्रति उदारभाव

मैंने "हिन्दी-भवन निर्माण योजना" शीर्षक के अन्तर्गत ब्रजभारती के संपादकीय लेख में अपने विचार प्रकट किये थे। आदरणीय चतुर्वेदी जी ने उस पर एक समीक्षात्मक लेख अमर-उजाला में लिखा। उन दोनों लेखों को यहाँ विस्तारभय से देना सम्भव नहीं है, इसकी आवश्यकता भी नहीं है। इस प्रसंग में एक विशेष उल्लेखनीय बात ही प्रस्तुत करना अभीष्ट है। बात यह थी कि मेरे लेख का सामान्यतया समर्थन करते हुए चतुर्वेदी जी ने कुछ ऐसे तथ्य भी प्रस्तुत किये थे जिनसे मेरी प्रस्तावित योजना की उपादेयता में उनका सन्देह स्पष्ट प्रतीत होता था। मैंने उनके तथ्यों का विनम्र भाषा में खण्डन करते हुए प्रत्युत्तर स्वरूप एक लेख अमर उजाला में प्रकाशित कराया। लेख को अमर उजाला में भेजने के पूर्व मुझे संकोच तो हुआ कि ऐसे हितैषी और गुरुतुल्य कृपालु मित्र की बात काटना ठीक नहीं परन्तु चतुर्वेदी जी की निष्कलंक उदारता का ध्यान करके उसे भेज ही दिया। तदुपरान्त चतुर्वेदी जी ने जो पत्र लिखा उससे उनकी सहिष्णुता और शालीनता बोध होता है। वह पत्र इस प्रकार है।

फीरोजाबाद
१६-२-६७

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! आज के अमर उजाला में आपका सुन्दर लेख पढ़ा। "वादे वादे जायते तत्वबोधः" इस नीति के अनुसार हम लोगों के वाद-विवाद से कुछ लाभ ही होगा। मेरे हृदय में मतभेदों के लिये पूर्ण सम्मान है और सदैव रहेगा। हम दोनों ब्रज के भक्त हैं, ब्रजभाषा के भी—यह अटूट सम्बन्ध है। बहुत सम्भव है कि अगले रविवार को मैं भाई हरिशंकर जी के साथ वृन्दावन की यात्रा करूँ। भाई हरिशंकर जी के आग्रह से मैं श्रद्धेय प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के दर्शन करने वहाँ जाना चाहता हूँ। अमर उजाला में एक लेख ब्रजप्रान्त के निर्माण के विषय में भेजा है। कृपया उस पर अपने विचार प्रगट कीजियेगा।

बनारसीदास

चतुर्वेदी जी की गुणग्राहिणी प्रतिभा और आत्मीयता

इन दुर्लभ गुणों के प्रतीक कुछ ऐसे पत्र भी उद्धृत करने योग्य हैं।

प्रिय भाई वृन्दावनदास जी,

आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई और यह ख्याल आया कि हम लोगों को बहुत पहिले ही मिल लेना चाहिये था। अब तो ७५ वें वर्ष में मेरे पास

समय ही कम रह गया है। फिर भी जो कुछ वर्ष, महीने, दिन या क्षण बचे हैं उनका भरपूर सदुपयोग कर लेना चाहता हूँ।

अमर उजाला के ५ ता० के अंक में मेरा लेख छप गया है कृपया उसे पढ़कर संक्षेप में लिखिये भी। चर्चा चलने से कुछ लाभ ही होगा। संस्थाओं में तो मेरा विश्वास रहा नहीं। समानशील और परस्परपूरक व्यक्तियों को मिल कर काम करना चाहिये। भाई श्रीराम शर्मा का निधन वस्तुतः एक महान दुर्घटना है। उन पर एक लेख सैनिक में भेजा है। यदि ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी ब्रजभूमि के लिये कुछ कर सकें तो बड़ी बात हो।

विनीत
बनारसीदास
३०-५-६७

फीरोजाबाद
२१-९-६३

प्रियवर, जय जमुना मैया की।

ब्रजभारती मुझे बराबर मिल रही है और उसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। क्या ही अच्छा हो यदि आप इस पत्रिका में ब्रज के अन्य केन्द्रों की साहित्यिक प्रवृत्ति पर भी कुछ प्रकाश डाला करें। पत्रिका को अधिकाधिक शास्त्रीय बना देने से उसकी उपयोगिता कुछ कम हो जायगी। ब्रज-जनपद की बहुमुखी उन्नति ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। क्या पृथिवी-पुत्र (स्व० अग्रवाल कृत) आपके पास है, अग्रवाल जी इस विषय के आचार्य थे। कल ही उनके १०० पत्र टाइप होके दिल्ली से मथुरा आये हैं १८३ पृष्ठों में। ८०) रुपये से ऊपर टाइपिंग में ही खर्च हो गया। खैर, यह तो श्राद्धकर्म है और हमें तो करना ही था। स्व० अग्रवाल जी ने ब्रज के लिये बहुत कार्य किया था। ब्रजभारती में उनके बारे में विस्तार से लिखा जाना चाहिये। उनका बृहदाकार चित्र तो मण्डल में होना ही चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

फीरोजाबाद
५-६-६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

आपके दोनों कृपापत्र मिले। डाक्टर श्री चन्द्रभान जी रावत वाली मीटिंग में आपने जो कुछ कहा उससे मैं अक्षरशः सहमत हूँ। ब्रज-साहित्य-मण्डल

के पुनर्निर्माण के लिये इस प्रकार की गोष्ठियाँ नितान्त आवश्यक हैं। हमें ब्रज की सर्वांगीण उन्नति करनी है। आप डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक 'पृथिवी-पुत्र' को बार-बार पढ़िये। उसकी आलोचना भी करिये। वह हमारी बाइबिल है। निस्सन्देह हम अपनी पूरी शक्ति से राष्ट्रभाषा के लिए काम करेंगे परन्तु इससे हमारे मातृ-भाषा-प्रेम में कोई कमी न आनी चाहिये। आप लगन से काम करते रहें, परिणाम की चिन्ता न करें। "कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" यह बात किसी ब्रजवासी ने ही कही थी।

बनारसीदास

हिन्दी सम्वर्द्धिनी योजना

चतुर्वेदी जी का ब्रज-भारती के माध्यम से चलाई हुई हमारी इस योजना को आशीर्वाद प्राप्त है। उनकी कृपा से हम कितने ही ऐसे सज्जनों से सम्पर्क स्थापित कर चुके हैं जो इस विषय के ज्ञाता हैं तथा इसमें रुचि रखते हैं। लगभग तीस चालीस वर्ष पहिले डाक्टर वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने इस योजना को जनपदीय आन्दोलन के नाम से पण्डित बनारसीदास जी के माध्यम से ही चलाया था। उन्होंने चतुर्वेदी जी को इस विषय पर लगभग १०० ऐतिहासिक पत्र लिखे थे जिनमें से कुछ डा० अग्रवाल रचित पुस्तक 'पृथिवीपुत्र' में निकल चुके हैं और कुछ को स्वयं चतुर्वेदी जी ने लेखबद्ध करके सम्मेलन पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित कराया है। इस विषय पर चतुर्वेदी जी का हमारे पास आया हुआ पत्र इस प्रकार है।

४-१०-६६

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी, जै जमुना मैया की।

आपका कृपापत्र मिला। उसके लिये बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ। आपने जनपदीय आन्दोलन को हिन्दी सम्वर्द्धिनी योजना के नाम से आगे बढ़ाने का जो शुभ संकल्प किया है उसके लिये मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। 'मधुकर' के कुछ पुराने अंक अभी प्राप्य हैं। उन्हें तलाश करके भिजवा दूंगा। जनपद अंक तो अब बिल्कुल अप्राप्य हो गया है। रूस के एक विद्वान ने भी उसकी माँग की थी।

बनारसीदास

देशभक्त होरेशस

स्वर्गवासी सत्यनारायण कविरत्न कृत देशभक्त होरेशस की बावत चतुर्वेदी जी के पत्र में जिक्र आ चुका है। उनका फिर एक पत्र इस सम्बन्ध में आया जो इस प्रकार था।

२५-९-६६

प्रियवर,

प्रणाम ! सत्यनारायण कविरत्न कृत देशभक्त हारेशस टाइप किये हुए २८ पृष्ठों में आया है। टाइप दूर-दूर है। क्या ब्रज-भारती के दो अंकों में उसे छापा जा सकता है ? वह पुस्तिका अब अप्राप्य हो गई है। सत्यनारायण विषयक सारा सामान कोई प्रयाग के सम्मेलन की सत्यनारायण कुटीर से उठा ले गया। अब एक महिला उन पर शोध कर रही है। आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें अनुमति भी मिल गई है।

आप अपनी सुविधानुसार जैसे भी मुनासिब समझें करें। यदि लम्बी चीजों से ब्रज-भारती के पाठकों का मन ऊब जाने की आशंका हो तो न छापें। वैसे कविरत्न की कीर्तिरक्षा के लिए जो कुछ हम कर सकते हैं हमें करना ही चाहिये।

विनीत
बनारसीदास

प्राचीन कवियों की कीर्तिरक्षा, उपेक्षितों और छुटभइयों की यत्किंचित सेवा और शहीदों का श्राद्ध ये तीनों विषय ही ऐसे हैं जिनके ऊपर चिन्तन करने, लिखने पढ़ने और चेष्टा करने में ही आजकल चतुर्वेदी जी का सारा समय व्यतीत हो जाता है। वे ७५ वें वर्ष में भी इस सम्बन्ध में इतना परिश्रम कर रहे हैं कि अच्छे से अच्छे कर्मठ नवयुवक को भी वह प्रेरणा का विषय हो सकता है। हमने चतुर्वेदी जी की इच्छानुसार देशभक्त होरेशस को पुस्तक के रूप में मुद्रित कर प्रकाशित कर दिया है।

चतुर्वेदी जी साहित्यिक क्षेत्र में भी विकेन्द्रीकरण के पक्षपाती हैं। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित पत्र महत्वपूर्ण है।

फीरोजाबाद
९-७-६७

प्रिय श्री वृन्दावनदास जी,

वन्दे ! वेद का एक मन्त्र है—"कैवलाघौ भवति केवलादी" यानी जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। मैंने चतुर्वेदी होते हुए वेद नहीं पढ़े, पर अगर वेद के इस मन्त्र का ही जीवन में उपयोग कर सकूँ तो उन महान् ग्रन्थों को पढ़ने की आवश्यकता भी नहीं।

इस समय जो ईर्ष्या हिन्दी जगत में फैली हुई है उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि हमारे चोटी के लेखक तथा कवि आत्मकेन्द्रित हो गये हैं—मिल बाँट कर खाने की नीति में उनका यकीन नहीं रहा। उनकी आलोचना करने की जरूरत नहीं स्वयं हम लोग अपने को ठीक मार्ग पर रक्खें, बस इतना ही पर्याप्त है। ब्रजप्रान्त बने या न बने पर ब्रज जनपद तो बना ही रहेगा और उसकी सर्वांगीण उन्नति के लिये हम सबको मिलकर काम करना है। पारस्परिक ईर्ष्या विद्वेष से ब्रज-साहित्य-मण्डल की जो दशा हुई उससे हमें सबक लेना है।

विनीत
बनारसीदास

चतुर्वेदी जी ने मुझे अनेक पत्रों में उन विद्वानों के नाम व पते लिखकर भेजे जिनसे मुझे मन्डल और हिन्दी के हित में सम्पर्क स्थापित करना उन्होंने अभीष्ट समझा। मैंने उनकी प्रेरणा से अनेकों ऐसे विद्वानों से पत्र-व्यवहार किया जो बड़े सहृदय व्यक्ति थे और हिन्दी सेवा के प्रति जिनकी लगन सराहनीय थी, कुछ लोग तो इनमें चतुर्वेदी जी के अनन्य भक्त और कट्टर समर्थक थे और उन्होंने अपने पत्रों में चतुर्वेदी जो की सहृदयता, मनस्विता और सदाशयता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। पंडित पद्मसिंह शर्मा ने ठीक ही कहा था कि चतुर्वेदी जी की दीनबन्धुता और पर दुःखकातरता जगत्प्रसिद्ध है।

चतुर्वेदी जी का पत्र-साहित्य अगाध है। यह अभी और बढ़ेगा। इस सागर में अनगिनत बहुमूल्य मोती हैं। यदि वे किसी पारखी द्वारा सङ्कलित और संग्रहीत हो गये तो निस्सन्देह वे साहित्य की एक अमूल्य निधि के रूप में माने जायेंगे।

स्वर्गीय बापू के बाद कार्यकर्ताओं में सौहार्द स्थापित करके उनसे काम लेने वालों में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का नाम अग्रगण्य है। यदि श्रद्धेय बापू ने अपने जीवनकाल में राजनीतिक कार्यकर्ताओं की सेना तैयार कर दी तो चतुर्वेदी जी ने अनेक साहित्यिकों को सतत प्रेरणा से प्रोत्साहित किया और उनमें पारस्परिक सौहार्द की भी स्थापना की। चतुर्वेदी जी से प्रेरणा-प्राप्त साहित्यिकों का एक विशाल परिवार हिन्दी के क्षेत्र में अनुकरणीय सेवा कर रहा है।

चतुर्वेदी जी महामना हैं, उनमें सन्तों के से गुण हैं। वे मात्सर्यरहित, निर्वैर, पर दुःखकातर एवं सहयोगात्मक जीवन की ओर कार्यकर्ताओं को उत्प्रेरित करते हैं। वे इतने सरल, निरभिमानी एवं महान हैं कि उन्हें व्यक्ति-

गत रूप में इस बात का किंचित् भी आभास नहीं कि अपने जीवन के ७५ वें वर्ष में शारीरिक शक्तियों के स्वाभाविक ह्रास की दशा में वे फीरोजाबाद के अपने भवन में बैठे हुए भी एक ऐसा स्वस्थ नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम हो रहे हैं जिससे न केवल हिन्दी के हित साधन अपितु अनेक मानवीय गुणों के प्रतिष्ठापन में बड़ा योगदान मिल रहा है।

चतुर्वेदी जी की साहित्य साधना एक पक्षीय न होकर बहुमुखी है। चतुर्वेदी जी की साहित्यिकता में साहित्य के साथ मानव-जीवन के चहुँओर का वातावरण जैसे पशु, पक्षी, बन, उपवन, नगर, नागरिकों की नैतिक सामाजिक एवं आर्थिक दशा आदि भी सम्मिलित हैं। वे स्वयं इन सब विषयों पर अत्यन्त मौलिकता पूर्ण लेख लिखकर साहित्यिकों को इस सम्बन्ध में एक दिशाबोध करा रहे हैं। वे साहित्यिकों से अपेक्षा रखते हैं कि वे लोग साहित्य के अतिरिक्त अपने चारों ओर के फैले वातावरण पर भी अपनी दृष्टि रक्खें और उस पर अपनी लेखनी उठावें।

(ब्रजभारती अंक ३ सम्वत् २०२४ में प्रकाशित)

परिशिष्ट ब

ब्रजभूमि का पुर्ननिर्माण : चतुर्वेदी जी की दृष्टि में

(श्री वृन्दावनदास)

ब्रजभूमि का पुर्ननिर्माण श्रद्धेय पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी का सुख-स्वप्न है। वह इसके लिए सतत प्रयत्नशील हैं। उन्होंने अनेक लेखों तथा अपने मित्रों और प्रशंसकों को लिखे पत्रों में उसकी समय-समय पर रूप रेखा खींची है। उनके अनेक भाषणों में भी यह तत्व मुख्य रूप से विद्यमान है।

इस सम्बन्ध में वह प्रचार-कार्य बड़े अर्से से कर रहे हैं, कदाचित तब ही से जब से उन्होंने कलम उठाई है। आज ७७ वर्ष की अवस्था में भी वह फीरोजाबाद के अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे इस दिशा में जो महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप अनेक साहित्यिक बन्धुओं को पुष्कल प्रेरणा मिली है और वह ब्रजभूमि के उद्धार में लग पड़े हैं। कदाचित सहज सौजन्य से आपूरित अपने स्वभाव के कारण चतुर्वेदी जी को यह भान भी नहीं है कि वह इस प्रकार एक महान अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं।

ब्रजभूमि के पुर्ननिर्माण से चतुर्वेदी जी का आशय क्या है, यह बताने के लिये हमें ब्रजभूमि के पुर्ननिर्माण की कहानी चतुर्वेदी जी की जुबानी ही

सुनानी पड़ेगी। सर्व प्रथम लीजिये एक उद्धरण जो ब्रजकोकिल पं० सत्यनारायण कविरत्न अर्द्ध शताब्दी समारोह के अवसर पर चतुर्वेदी जी के अध्यक्षीय भाषण से लिया गया है।

"ब्रजभूमि शताब्दियों तक भारत की सांस्कृतिक केन्द्र रही है और ब्रजभाषा अखिल भारतीय भाषा, फिर भी उसकी एक निजी संस्कृति रही है। अपने जनपद की विशेषताओं की रक्षा करते हुए विश्व की सांस्कृतिक धारा से उसका मेल-मिलाप करने में ही हमारा कल्याण है आज से लगभग साठ वर्ष पहिले सत्यनारायण जी ने 'भ्रमर दूत' में कहा था।

पहिले कौ सो अब न तिहारौ यह वृन्दावन,
याके चारों ओर भये बहु विधि परिवर्तन।
बने खेत चौरस नये काटि घने बन-कुंज,
देखन को बस रहि गये, निधिबन सेवाकुंज।
कहाँ चरिहैं गऊ ?

"ब्रज का अर्थ है 'वह हरी-भरी भूमि जहाँ गउऐं चरती हैं।' ब्रज के हरे-भरे वन को कायम रखना और यहाँ गोसभ्यता का निर्माण करना है—पैट्रौल सभ्यता के आक्रमणों तथा अनाचारों से उसे बचाते हुए।"

उपरोक्त उद्धरण चतुर्वेदी जी के प्रकृति-प्रेम का तो द्योतक है ही, इससे उनकी ब्रजभूमि के विषय में एक ऐसी भूमि की कल्पना का भी पता चलता है, जो सुन्दर वन-उपवनों से पूर्ण, गौओं के प्राबल्य से युक्त और हरी-भरी शस्य-श्यामला हो।

चतुर्वेदी जी जहाँ वृक्षारोपण-पर्वों और वनमहोत्सवों का समर्थन करते रहते हैं और कहा करते हैं कि उद्यानों और बाग-बगीचो के स्वामियों तथा निर्माताओं की शतमुख से प्रशंसा की जानी चाहिए, वहाँ उन्हें वृक्षों के अनर्गल काटे जाने से बड़ी वेदना होती है। उसी अध्यक्षीण भाषण में वह अन्यत्र कहते हैं :

"रूसी लोगों ने अपनी राजधानी मास्को को संसार की सबसे हरी-भरी राजधानी बनाने का निश्चय किया था और उन्होंने उस दिशा में काफी सफलता प्राप्त की है। इधर हम लोग बिल्कुल उल्टी दिशा में चल रहे हैं। मुझे यह बात बड़ी लज्जा के साथ स्वीकार करनी पड़ती है कि ब्रज को रेगिस्तान बनाने में हमारे नगर फीरोजाबाद का जबर्दस्त हाथ है। लाखों मन लकड़ी फीरोजाबाद के कारखानों में कोयले की जगह जलती रही है और डेढ़ सौ वर्ग

मील के घेरे में वृक्षों का कत्लेआम होता रहता है। मैंने तो यहाँ तक सुना है कि देहरादून तक के जंगल फीरोजाबाद के कारखानों की बलिवेदियों पर कुर्बान हो गये। चकबन्दी के कानून की वजह से भी सहस्रों ही पेड़ कट गये। सड़क के किनारे के वृक्षों पर निरन्तर आघात होते रहते हैं। इन सब कार्रवाइयों को रोकना है और ब्रज को रेगिस्तान बनने से बचाना है।''

जिस प्रकार शरीर के बिना आत्मा रह ही नहीं सकती उसी प्रकार चतुर्वेदी जी की दृष्टि में ब्रजभूमि की संस्कृति की रक्षार्थ ब्रज के भौतिक शरीर की रक्षा तथा उसका पोषण तो किया ही जाना चाहिए। ब्रज की ओर बढ़ते हुए रेगिस्तान को रोकने का कार्य उनकी दृष्टि में किसी साहित्यिक आयोजन से कम महत्व का नहीं है।

ब्रज-संस्कृति और ब्रज-जीवन के जीते-जागते चित्र को आचार्य विनोबा भावे के निम्नलिखित शब्दों में चित्रित करते हैं।

''गोपाल कृष्ण ने गाँवों का वैभव बढ़ाया, गाँवों की सेवा की, गाँवों पर प्रेम किया। गांव ही उनका देवता था। आगे चलकर वह द्वारिकाधीश बने। लेकिन फिर भी गोकुल में आते थे, फिर गायें चराते थे, गोबर में हाथ डालते थे, गोशाला बुहारते थे—बनमाल पहिनते थे, वंशी बजाते थे, लड़कों के साथ—गोप-बालों के साथ खेलते थे। व्रजकिशोर उनका प्यारा नाम था। उन्होंने गोकुल में असीम आनन्द और सुख पैदा किया।''

''हमें देहातों को हरा-भरा गोकुल बनाना है—स्वाश्रयी, स्वावलम्बी, आरोग्य-सम्पन्न, उद्योगशील और प्रेमपूर्ण। ईख का कोल्हू चल रहा है, चरखा चल रहा है, धुनियाँ धुन रहा है, तेल का कोल्हू चर्र-चर्र बोल रहा है, कुएँ पर मोट चल रही है, चमार जूता बना रहा है और बंशी बजा रहा है—ऐसा गाँव बनने दो। अपनी गल्ती से हमने गाँवों को मरघट बना दिया। आइये उनको गोकुल बनावें।''

यह है चतुर्वेदी जी की कल्पना का व्रज और उसका जीवन, जिसे वह आचार्य विनोबा के शब्दों में हमारे सम्मुख रखते हैं।

एक बार एक सज्जन ने चतुर्वेदी जी से पूछा—''बुन्देलखण्ड है कहाँ ?'' यह बात उस समय की है जब चतुर्वेदी जी बुन्देलखण्ड का एक पृथक प्रान्त के रूप में निर्माण चाहते थे और उसके लिए अपने पत्र 'मधुकर' में आन्दोलन चला रहे थे। चतुर्वेदी जी ने उत्तर दिया, ''बुन्देलखण्ड है इस प्रान्त के लाखों साधारण स्त्री-पुरुषों के हृदयों में, किसानों-मजदूरों की भुजाओं में, इस प्रान्त

के लेखकों तथा कवियों की भावनाओं में, युवकों तथा युवतियों की आकांक्षाओं में। बुन्देलखण्ड है, 'साकेत', गढ़कुण्डार' और 'बापू' के रचयिताओं के हृदय में। और यदि भौतिक जगत की बात कहें तो बुन्देलखण्ड है वहीं के पशु-पक्षियों में, नदी-नद-सरोवरों और प्रपातों में, वृक्षों, क्षेत्रों, वनों-उपवनों में, वहाँ के जल में, वहाँ के वायु में और इस भूमि के कण-कण में।" यदि कोई व्यक्ति चतुर्वेदी जी से ब्रज के विषय में पूछे कि वह कहाँ है, तो भी उनका उत्तर कुछ हेर-फेर के साथ इसी प्रकार का होगा। वास्तव में एक प्रदेश का सबसे सुन्दर और वास्तविक चित्र वही है जो वहाँ के समाज की दशा और प्राकृतिक सौन्दर्य को सच्चे अर्थों में प्रस्तुत करता है। प्रदेश का एक नवीन चित्र उस दर्पण के सदृश है, जिसमें वहाँ की सामान्य जनता और उसके चारों ओर का वातावरण प्रतिबिम्बित होता है।

सन् १९४३ में एक बार चतुर्वेदी जी ने '२००० ईस्वी का बुन्देलखण्ड' शीर्षक एक लेख 'मधुकर' में लिखकर सत्तावन वर्ष बाद बुन्देलखण्ड की जिस दशा की कल्पना की थी उसका वृत्तान्त बड़ा हृदयग्राही है। पुनर्निर्माण के बाद ब्रजभूमि कैसी होनी चाहिए, इसका अनुमान चतुर्वेदी जी की उस कल्पना से लगा सकते हैं, जो उन्होंने २००० ई० के बुन्देलखण्ड से की थी। उन्होंने कल्पना की है कि सन् २००० ई० में एक यात्री-दल वसन्त ऋतु में वेत्रवती तट की यात्रा के लिए निकलता है। इस दल में विशाल वक्षस्थल और वृषभ स्कंध वाले पच्चीस युवकों की एक टोली है, जिसके साथ दो-तीन प्रौढ़ व्यक्ति भी हैं। दस-बारह मील रोज चलने का इनका नियम है। दूसरी टोली दशार्ण, तीसरी केन और चौथी जामनेर के तट पर भ्रमण करेगी। हमारे विद्यालयों ने पुराना अहमकपन (अर्थात बसन्त ऋतु में छात्रों को स्कूल की चहारदीवारी में बन्द रखना) छोड़ दिया है। बसन्त ऋतु से पाँच सप्ताह की छुट्टियाँ हुआ करती हैं। इसी ऋतु में बसन्त व्याख्यानमाला का प्रबन्ध होता है, इसलिए जितना उपयोगी व्यावहारिक ज्ञान वे स्कूल में साल भर में प्राप्त नहीं कर पाते उससे अधिक डेढ़ महीने के भ्रमण में प्राप्त कर लेते हैं।

ये यात्री-दल ओरछा के कृषि महाविद्यालय में जाकर निवास करते हैं। कृषि महाविद्यालय के साथ वहाँ पर ग्रामीण कार्यकर्ताओं का ट्रेनिंग स्कूल भी है। तुंगारण्य में प्रान्त की सबसे बड़ी गोशाला का निर्माण हो गया है। जिस वन में जामनेर-बेतवा संगम हुआ है वहाँ स्वास्थ्यागार (सैनीटोरियम) बना दिया गया है। देश-विदेश से यात्री यहाँ आकर ठहरते हैं। आज से चालीस वर्ष पहले ही राज्य ने यह निश्चय कर लिया था कि अनावश्यक वृक्षों को

छोड़कर एक डाली भी इस वन में से न काटी जायगी। प्राकृतिक और कृत्रिम सौन्दर्य का यहाँ अनुपम मेल पाया जाता है।

गोधूलि के समय यह वन बड़ा रम्य प्रतीत होता है। जिन्होंने पचास वर्ष पहले गाय-बैल देखे थे उनकी आँखें आज के गाय-बैल देखकर चौंधिया जायेंगी। तुलना के लिए उनके चित्र संग्रहालय में देखे जा सकते हैं। कहाँ छटाँक भर दूध देने वाली, सूखे थन और रूखे बदन वाली चित्रलिखित गाय और कहाँ यह सामने खड़ी हुई गंगा, यमुना, बेतवा और जामनेर नामक गोमाताएँ और उनके घड़ा-भर दूध देने वाले स्तन। घी अब ढाई सेर का बिकता है और दूध बीस सेर का। बुन्देलखण्ड अब भारतवर्ष का उपवन है। इस प्रान्त में सरोवरों और उपवनों की भरमार है। यहाँ के आमों, अमरूदों, आड़ुओं और नारंगियों ने आस-पास के बाजारों को पाट दिया है।

यहाँ उपवनों में नदियों और सरोवरों के तट पर ग्राम विद्यालय है। यहाँ आप ग्रामगीत सुन सकते हैं और ग्रामनृत्य देख सकते हैं। यहाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है, जिसका ग्राम वन से घनिष्ट सम्बन्ध है। यहाँ कुंजें, सड़क की दोनों ओर लगे मौलिश्री के वृक्ष और गुलाब के खेत दर्शनीय हैं। यहाँ के उपवनों के नाम उन महापुरुषों के नाम पर हैं, जिन्होंने उनकी उन्नति में योगदान दिया है। प्रान्तीय साहित्य संघ का कार्यालय और उसके साथ चित्रशाला द्रष्टव्य हैं, उसमें प्रान्त के सभी साहित्यिकों की कृतियाँ और उनके चित्र संगृहीत हैं।

इतिहास परिषद भी इसी संस्था से सम्बद्ध है। मूर्तियों का संग्रहालय अलग से है। राज्य के सभी महाराजाओं के जीवन-चरित छप चुके हैं और इस संग्रहालय में विद्यमान हैं। ऋतुओं के उत्सव होते हैं, जिनमें स्त्री-पुरुष आबाल वृद्ध सभी भाग लेते हैं।"

यही चतुर्वेदी जी की कल्पना अथवा उनका सुख-स्वप्न व्रजभूमि के सर्वांगीण विकास के लिये भी है। उनका हृदय उस व्रज के लिए अधीर है, जिसमें दूध बीस सेर और घी ढाई सेर का बिके; जिसकी गायों के स्तनों से दूध घड़ा-भर निकले, जिसके ग्रामीण विद्यालयों में विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा मिले, जिसका ग्रामीण जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध हो, जिसमें ऋतुओं के उत्सव मनाये जाते हों, जहाँ महापुरुषों का सम्मान हो, जहाँ साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना प्रबुद्ध रूप से विद्यमान हो, जहाँ रमणीक वन और उपवन हों, जहाँ अनावश्यक वृक्षों को छोड़कर एक डाली भी काटने पर निषेध हो, जहाँ की

नदियों और सरोवरों के तट सुरम्य हों, जिन पर स्वास्थ्यागार बने हों, जहाँ सड़कों पर दोनों ओर मौलिश्री के वृक्ष और अनेक गुलाब के खेत हों।

प्रश्न यह है क्या चतुर्वेदी जी की इन कल्पनाओं को हवाई महल की संज्ञा देकर इनको उपेक्षणीय समझा जाय? नहीं, कदापि नहीं। यदि हमारे युवकों में दृढ़ इच्छा-शक्ति है, हमारे लेखकों और कवियों के हृदय सरस और मस्तिष्क विकसित है, हमारे राजनीतिज्ञ सत्ता के खेल में ही मस्त न रह कर जनहित में व्यावहारिक चिन्तन करते हैं तो चतुर्वेदी जी कल्पना को साकार करना कोई कठिन कार्य नहीं है। चतुर्वेदी जी के ही शब्दों में आज एक ही ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है, जो कहे कि मैं स्वयं ही ब्रज हूँ जिसके जीवन और चिन्तन में ब्रज रमा हो। वह वाल्मीकि रामायण के एक प्रसंग :

"अयं हि लंका नगरी स्वयमेव प्लवंगम" (हे बन्दर ! मैं स्वयं ही लंका नगरी हूँ) की बड़ी सुन्दर व्याख्या करते हैं। उसका निष्कर्ष यह कि समस्त ब्रजभूमि में कम से कम एक तो ऐसा व्यक्ति हो, जो दृढ़तापूर्वक कह सके कि "मैं ब्रज हूँ।"

चतुर्वेदी जी का कथन है कि ब्रजभूमि का पुनर्निर्माण व्याख्यानों, रेडियो-वार्ताओं, और आयोजनों की व्यवस्था करने से न होगा। वह कहते हैं कि उसकी सर्वांगीण उन्नति के लिये अपने जीवन, अपने प्राण अर्पित करने वाले व्यक्ति जब तक इस भूमि में उत्पन्न नहीं होते तब तक यह स्वप्न अधूरा ही रहेगा। एक अंग्रेजी कवि की निम्नांकित उक्ति देते हुए :

It you give all and life retain
I say all your gift is invain

वह अपना मत प्रकट करते हैं कि चाहे आप अपना सर्वस्व दे दें, पर अपने जीवन, अपने प्राणों को बचाये रक्खें तो मैं कहूँगा आपका दान निरर्थक ही गया। 'ब्रज साहित्य मण्डल' के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का पद्य।

अरे समुद अर्पण ही अर्पण यह जीवन का क्रम है।
और ग्रहण में मृत्यु निहित है प्रतिफल केवल भ्रम है।।

चतुर्वेदी जी ब्रज के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए आदर्श-वाक्य के रूप में मानते हैं।

'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना मुख्यतया चतुर्वेदी जी के मस्तिष्क की उपज है। जिस समय टीकमगढ़ में वह 'मधुकर' के संपादन का कार्य कर

रहे थे उसी समय उन्होंने क्षेत्रीय अथवा प्रादेशिक स्तर पर साहित्यिक मण्डलों की स्थापना का एक मौलिक विचार प्रस्तुत किया था। विद्वानों का ध्यान उस सुझाव की ओर आकृष्ट हुआ और परिणाम स्वरूप 'ब्रजसाहित्य मण्डल' की स्थापना सन् १६४० ई० में हुई।

चतुर्वेदी जी मण्डल की स्थापना के समय उसके संस्थापकों के लिए मुख्य परामर्शदाता के रूप में समझे जाते थे। चतुर्वेदी जी ब्रजसाहित्य मण्डल के अध्यक्ष और उससे सम्बद्ध संस्था साहित्य परिषद के भी अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपनी अध्यक्षता के काल में मण्डल को एक प्रौढ़ नेतृत्व प्रदान किया।

चतुर्वेदी जी के हृदय में ब्रजभाषा के लिए बड़ा मृदुल स्थान है। वह ठीक ही कहते हैं कि किसी समय ब्रजभाषा समस्त उत्तर भारत के बोलचाल की भाषा थी। वह उस भाषा की उन्नति चाहते हैं। उनका दृढ़ मत है कि ब्रजभाषा का हितसम्वर्द्धन करने से, उसका संरक्षण-सम्वर्द्धन और उन्नयन करने से हिन्दी का, जिसके कि वह स्वयं एक अनन्य सेवक और साधक रहे हैं और जिसमें उनका एक अत्यन्त उच्च आसन सुरक्षित है, कोई अहित नहीं। चतुर्वेदी जी का मत है कि ब्रजभाषा हिन्दी के साहित्य की भाषा है। ब्रजभाषा हिन्दी से अलग हो ही नहीं सकती। ब्रजभाषा के कार्यकर्ता हिन्दी के अनिवार्यतः कार्यकर्ता हैं। ब्रजभाषा का पक्ष-समर्थन कर हम हिन्दी की उन्नति करने की दिशा में ही अग्रसर होते हैं। यहाँ पर यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि चतुर्वेदी जी का हिन्दी की अन्य उपभाषाओं के प्रति, जैसे भोजपुरी, अवधी, बुन्देली, राजस्थानी, मगधी, बघेली, मैथिली आदि के प्रति—भी यही दृष्टिकोण है। वह चाहते हैं कि इन सभी उपभाषाओं अथवा बोलियों के कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्र में इनका विकास करें, इनकी उन्नति की योजना बनावें, इनके साहित्यिक पक्ष को परिष्कृत और उन्नत बनावें तो इससे हिन्दी के अहित की कोई बात नहीं, अपितु इससे तो हिन्दी की समृद्धिशालिता बढ़ेगी। चतुर्वेदी जी के दृष्टिकोण में सदैव व्यापकता और एकरूपता रहती है। हमने उन्हें कभी संकीर्ण दायरों में सोचते नहीं देखा।

एक बार हमने समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रजभाषा-भाषियों को सम्बोधित करते हुए उनसे जनगणना के अवसर पर अपनी भाषा ब्रजभाषा (हिन्दी) लिखाने का आह्वान किया था। हमारे कुछ मित्रों ने इस पर आपत्ति की और इस कदम को हिन्दी के हित के विरुद्ध बताया। हम स्वयं अपने को हिन्दी का विनम्र कार्यकर्ता पहले और ब्रजभाषा का पीछे मानते हैं। हमें उस आपत्ति पर कुछ आश्चर्य हुआ। हमने आपत्तिकर्त्ताओं को समाचार पत्रों में

ही समुचित उत्तर दे दिया था और हमारे पक्ष में अनेक विद्वानों ने अपना मत प्रगट किया था। चतुर्वेदी जी ने भी हमें इस प्रकार लिखा, "ब्रजभाषा के विषय में जो कुछ आपने लिखा है, उससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ।···· ·······उर्दू, अवधी, भोजपुरी तथा बुन्देलखण्डी के लिए भी हमारा मण्डल भरपूर प्रयत्न करे, क्योंकि ब्रजभाषा सब की बड़ी बहिन है, उर्दू की तो माता भी।

दुइ बिटिया व्रजभाषा की हैं हिन्दी उर्दू सुन्दर नार।
जेठी महलन में है बैठी लहुरी बैठी जाइ बजार॥

मातृभाषा ब्रजभाषा अवश्य-अवश्य लिखाई जाय। इसमें डर किस बात का है। आखिर संख्या जान लेने का दूसरा उपाय है ही क्या? इस पवित्र कर्तव्य में संकोच किस बात का? इससे राष्ट्रभाषा हिन्दी को कोई हानि नहीं पहुँचती। कोष्टक में (हिन्दी) लिखाई जा सकती है।

जो लोग ब्रजभाषा को मातृभाषा लिखने में डरते हैं, या संकोच करते हैं, उनकी मोटी अक्ल पर मुझे तरस आता है। वे व्यर्थ का भूत खड़ा करते हैं। ब्रजभाषा तो खड़ी बोली की माँ है। उसे सौत समझना अव्वल नम्बर की नासमझी है। आपका पक्ष इतना प्रबल है कि उसकी विजय निश्चित है।"
(ता० १५-६-६६ का पत्र)

चतुर्वेदीजी सार्वजनिक संस्थाओं की अपेक्षा निजी प्रयास के रूप में ब्रज-संग्रहालयों के निर्माण के पक्ष में हैं। उनकी आकांक्षा है कि व्रजभूमि के प्रत्येक कार्यकर्ता का निवास स्थान एक छोटे-मोटे व्रज-संग्रहालय का रूप ही ग्रहण कर ले। उन्होंने मुझे लिखा, "आप अपने घर पर एक व्रज-संग्रहालय की नींव डाल दें, तो अत्युत्तम हो। आपका भवन कभी व्रजवासियों के लिये तीर्थ बन सकता है। यही बात आप श्री बालकृष्ण जी गुप्त से कह सकते हैं। जो भी सामग्री मेरे पास है उसकी नकल आपके संग्रहालय में रहनी ही चाहिए, यह कोई बहुत व्ययसाध्य कार्य भी नहीं हैं।

"चित्रों का पूरा-पूरा संग्रह आपको रखना ही है। श्री जगन्नाथ 'लहरी' से मैंने फीरोजाबाद संग्रहालय की नींव डलवा दी है। सरकारी संग्रहालय में तो चोरी होती रहती है, इसलिए मैं घरेलू संग्रहालय का प्रबल पक्षपाती बन गया हूँ।"

चतुर्वेदी जी नवीन मित्र बनाने के बड़े समर्थक हैं। उन्होंने इसी उद्देश्य से मेरा अनेक साहित्यिक बन्धुओं से पत्र-व्यवहार द्वारा परिचय कराया। उनका विश्वास है कि इस प्रकार सहयोगात्मक कार्यकलापों से व्रजभूमि के पुनर्निर्माण में

सुगमता होगी। उन्होंने लिखा, "सबसे अधिक आवश्यक कार्य है लोकसंग्रह। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी समालोचक डा० जॉनसन ने कहा था :

"Sir, I consider that day lost in which I do not make a new acquaintance."

अर्थात् श्रीमान, मैं उस दिन को व्यर्थ गया ही मानता हूँ जिसमें मैं कोई नई जान-पहचान नहीं करता।' सो हमें नवीन मित्र बनाते रहना है, जो हमारे कार्य के पूरक हों।"

"यदि ब्रजभूमि की डाइरेक्टरी आप बना सकें तो वह बड़े काम की चीज होगी। व्यापारिक दृष्टि से भी वह सफल होगी। ब्रज का सर्वांगीण रूप तो हमारे सामने आना ही चाहिए। युगधर्म का यही तकाजा है। ब्रजभूमि का हमें पुर्नानर्माण करना है। इस रेगिस्तान में जहाँ कहीं भी हमें हरियाली दीख पड़े उसकी रक्षा करनी है, फिर चाहे वह साहित्यिक हरियाली हो या कृषि-सम्बन्धी। छुटभइयों को प्रोत्साहन सबसे प्रथम मिलना चाहिए।

सम्पूर्ण ब्रज का साहित्यिक तथा सांस्कृतिक सर्वेक्षण हो जाना चाहिए। पर उसके साथ कृषि, व्यापार तथा उद्योग-धन्धों को भी हमें नहीं भूलना है। जिस किसी क्षेत्र में जो कुछ अच्छा काम हो रहा है उसकी कद्र होनी चाहिए।

यदि ब्रज की डाइरेक्टरी तैयार कर दी जाय, तो भविष्य में यह बड़े काम की चीज होगी। न जाने कितने व्यक्तियों की कीर्तिरक्षा उससे हो जायगी और कितनों का मार्ग-प्रदर्शन होगा।" (ता० २४-१-६६ का पत्र)

"ब्रजमण्डल के जनपदीय सर्वेक्षण के लिए एक समिति तुरन्त स्थापित कीजिये।

ग्राम-विभाग में·············· डा० सत्येन्द्र

आधुनिक काव्य विभाग में····सर्वश्री अमृतलाल चतुर्वेदी, डा० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी

कीर्तिरक्षा विभाग में·········· सर्वश्री प्रभुदयाल मीतल, जवाहरलाल चतुर्वेदी

तथा मेरी (श्री बनारसीदास चतुर्वेदी) सेवाऐं भी आप ले सकते हैं।

वन, उपवन, स्वास्थ्य विभाग में········आप (वृन्दावनदास)

अखाड़े का सचित्र वृत्त आना ही चाहिए। औद्योगिक विभाग श्री बालकृष्ण गुप्त के अधीन रहे। यमुना जी तथा अन्य छोटी-मोटी नदियों पर लेख रहने चाहिए आप इस सर्वेक्षण के मुख्य सचिव रहे—उसकी चलती-फिरती आत्मा के रूप में।" (ता० २१-७-६६ का पत्र)

ब्रजभूमि की सर्वांगीण उन्नति के लिए यह जरूरी है कि हम लोग कुछ भ्रमण करें। अब की बार फीरोजाबाद-यात्रा के अवसर पर कोटला जरूर जाइये। वहाँ भाई बालकृष्ण जी का बढ़िया बगीचा है, जिसके आम गतवर्ष २० हजार में बिके थे। भाई बालकृष्ण जी ने फीरोजाबाद में घर से एक मील दूर एक उपवन की नींव डाली है। उस पर वे पचास हजार व्यय करेंगे। स्नानागार भी उसमें होगा। उन्हें बधाई का पत्र तो भेज ही दीजिये।" (ता० २६-८-६६ का पत्र)

"अपने जनपद से प्रेम करने के लिए यह अनिवार्यतः आवश्यक है कि हम उसकी प्रकृति से, पुरुषों से, नदी-नद, सरोवर, वृक्ष, वन, पशु, पक्षी, द्रव्य साधन, खनिज पदार्थ और लोकवार्ता तथा सामाजिक जीवन इत्यादि से भली-भाँति परिचित हों।" चतुर्वेदी जी अपने मित्रों को लिखे हुए अनेक पत्रों में तथा अपने लेखों में कुछ रमणीय स्थलों और उपयोगी संस्थाओं का बार-बार उल्लेख करते हैं और उनकी प्रशंसा करते नहीं अघाते। ये स्थल जिनको वे बहुधा तीर्थ कहकर पुकारते हैं उनके ब्रजभूमि के उस चित्र के अन्तर्गत आ जाते हैं, जिसको उन्होंने अपने हृदय और मस्तिष्क में संजोकर रक्खा है। वह लिखते हैं :

"ब्रजभूमि में जहाँ जो भी अंकुर उग रहे हों, जिनमें आगे चलकर वृक्ष बनने की संभावना हो, उन्हें पल्लवित करना हमारा कर्त्तव्य है। हमें ब्रज में नवीन तीर्थों का निर्माण करना है। यदि गोवर्द्धन में वृक्षारोपण सफलता पूर्वक हुआ है, तो वह हमारे लिए डबल तीर्थ है और ब्रजसाहित्य मण्डल का भावी भवन भी कभी तीर्थ का रूप धारण कर सकता है। आचार्य ब्रह्मचारी स्वर्गीय जीवनदत्त जी का 'नरवर संस्कृत महाविद्यालय' तो महान तीर्थ ही है। महाकवि शंकर का हरदुआगंज तीर्थ है। धाँधूपुरा में सत्यनारायण कुटीर और जौंधरी में श्रीधर पाठक का स्मारक आज नहीं तो कल बन ही जावेगा।"

इनके अतिरिक्त गुरुकुल सिरसागंज, नागरी प्रचारिणी सभा आगरा, भारती-भवन फीरोजाबाद, माथुर चतुर्वेद पुस्तकालय मैनपुरी, हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर आदि साहित्यिक संस्थाओं को चतुर्वेदी जी सदैव स्नेहमयी दृष्टि से देखते हैं और इनके लिए उनके पास सदैव प्रशंसा के चार शब्द रहते हैं। संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का कृषि फार्म, श्रीराम शर्मा का नवजीवन फार्म, छलेसर का बबूल वन, बा० प्रतापनारायण अग्रवाल (राजाबाबू) का इटौरा वाला बाग तथा श्री बालकृष्ण गुप्त का कोटले का उपवन—को तो चतुर्वेदी जी ब्रजभूमि के तीर्थ स्थान मानते हैं।

इन तीर्थों की झलक दिखाते हुए वह लिखते हैं, "हमने इन तीर्थों की एक अधूरी झलक ही यहाँ दिखलाई है—अधूरी इसलिए कि उसमें न तो नदी माताओं का उल्लेख हुआ है, न सरोवरों का और न पहाड़ियों का। आशा है कि दूसरे ब्रजवासी भी अपने-अपने प्रिय स्थानों पर लिखेंगे।

इस जनपद में स्वस्थान-प्रेम को विकसित करने की आवश्यकता है। यदि हम अपने-अपने स्थान को सुन्दर बना सकें तो हमारा जनपद अत्यन्त रमणीक बन सकता है। देश का भविष्य जनपदों के सर्वांगीण दृष्टि से रचनात्मक पुर्ननिर्माण पर निर्भर है। ब्रजभूमि का पुर्ननिर्माण ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।"

चतुर्वेदी जी जनपदीय आन्दोलन के नेता रहे हैं। उनका विश्वास है कि जनपदीय बोलियाँ अमर वाणियाँ हैं, उनके आश्रय से हम अपना निरुक्त समृद्ध बना सकते हैं। वह स्वर्गीय डा० वासुदेवशरण अग्रवाल को इस आन्दोलन का प्रवर्तक मानते हैं तथा उनकी पुस्तक 'पृथिवी-पुत्र' को जनपदीय आन्दोलन की बाइबिल। उन्होंने लिखा, "आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल की पुस्तक 'पृथिवी-पुत्र' हमारी बाइबिल है और उसे साथ लेकर और उसके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करते हुए हमें अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना है।"

रक्त-हीनता के कारण पैरों में सूजन आ गई थी इसलिए कुछ दिनों के लिए टहलना बन्द हो गया था। परन्तु चतुर्वेदी जी पड़े-पड़े ब्रजभूमि का ही चिन्तन करते रहे। उन्होंने हमें लिखा, "इस बीच में आप लोगों का चिन्तन करता रहा। इस बसंत ऋतु को ब्रजमण्डल के लिए चिरस्मरणीय बनाना है। बसंत पंचमी से रामनवमी तक का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम बना लेना चाहिए। केवल मथुरा में ही नहीं; फीरोजाबाद, एटा, मैनपुरी, इटावा, अलीगढ़ इत्यादि में साहित्यिक उत्सव होने चाहिए। ये उत्सव कम से कम खर्च में हों। ज्यादा खर्च हम ब्रजवासी कर ही नहीं सकते :

१. बसन्त व्याख्यानमाला
२. आसपास के सुन्दर स्थानों में गोष्ठियां
३. छोटे-छोटे ट्रैक्टों का प्रकाशन
४. हस्तलिखित अभिनन्दन-ग्रन्थों तथा स्मृति-ग्रन्थों की तैयारी
५. खयालगो लोगों का संगठन

इत्यदि विषयों पर विचार कीजिये। सबसे जरूरी चीज लोक-संग्रह है। अच्छे कार्य-कर्ताओं को जुटाना है। यजमानों का भी संग्रह करना है।" (दिनांक १७-१-६६ का पत्र)

पौरुष ग्रंथि के लिए के शल्यक्रिया कराने के पूर्व चतुर्वेदी जी ऑपरेशन की सफलता के प्रति आश्वस्त थे। यह उनकी दृढ़ इच्छा-शक्ति का ही एक उदाहरण है। परन्तु ब्रजभूमि के लिए मार्मिक भावों का उद्‌घाटन करते हुए उन्होंने लिखा था, "ब्रजभूमि के लिए आप लोग प्रयत्नशील हैं, इस आशाप्रद भावना के साथ ही मैं परलोक-यात्रा करना चाहता हूँ। यदि कुछ समय और भी मिल जाय तो ब्रजभूमि की सेवा में ही उसे बिताऊँगा।" (ता० ४-७-६६ का पत्र)

चतुर्वेदी जी का ऑपरेशन पूर्णरूप से सफल हो गया। उनके भावी कार्यक्रम में निस्संदेह ब्रजभूमि के पुनर्निर्माण को ही प्राथमिकता प्राप्त है। सर्व-शक्तिमान से यही प्रार्थना है कि चतुर्वेदी जी चिरायु हों और इसी प्रकार ब्रजभूमि के सर्वांगीण विकास के प्रति मार्ग-दर्शन करते रहें। ●

(श्री बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित)
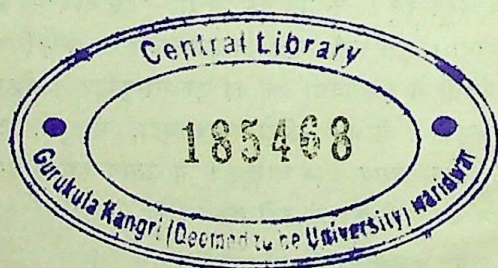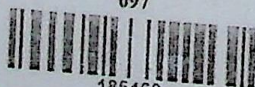
डा० बनारसीदास चतुर्वेदी

जन्म सन् १८९२, देश के प्रतिष्ठित पत्रकार, विशाल भारत के भू० पू० सम्पादक, अखिल भारतीय पत्रकार संघ के अध्यक्ष; जीवनी, संस्मरण और रेखा चित्रों के अद्वितीय लेखक, अनेक ग्रन्थों के प्रणेता, ५८ वर्ष से निरन्तर लेखन कार्य में रत, पत्र-लेखन कला के आचार्य; देशकी शिखरस्थ विभूतियों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त, उपेक्षितों और छुटभइयों के आश्रयदाता, शहीदों के श्राद्ध कार्य में निरन्तर कर्मशील; साहित्य वारिधि, साहित्य वाचस्पति और डी० लिट० आदि अनेक उपाधियों से सम्मानित ।

बाबू वृन्दावनदास

जन्म सन् १९०६, शिक्षा बी० ए०, एल्-एल्० बी०, लगभग पेंतालीस वर्ष से हिन्दी में लेखन कार्य, अंग्रेजी में भी लेखन परन्तु १०-१५ वर्ष से केवल हिन्दी को ही पूरा समय अर्पित. अनेक ग्रन्थों के प्रणेता; व्रजभारती त्रैमासिक शोध पत्रिका के लगभग ८ वर्ष से सम्पादक; व्रज साहित्य मण्डल के के अध्यक्ष, उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के फीरोजाबाद में होने वाले १५ वें अधिवेशन के सभापति ।

हिन्दी के अतिरिक्त स्वायत्त शासन, शिक्षा और सहकारिता के क्षेत्रों में भी यथेष्ट सार्वजनिक सेवा उल्लेखनीय है । उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन से साहित्य वारिधि की उपाधि से अलंकृत।